दीवान रामदयाल

उपन्यासकार

श्री यज्ञदत्त शर्मा

१९५६

साहित्य प्रकाशन

मालीवाड़ा, दिल्ली

: १ :

मेरठ-पुलिस-लाइन का ठाट हिन्दुस्तान के सब ज़िलों की पुलिस-लाइनों से निराला है। यहाँ के अफ़सर भी शौकीन हैं और सिपाही भी। अफ़सरों और सिपाहियों में आपसी मेल-मोहोब्बत भी कमाल की है। क्या मजाल जो यहाँ का कोई अफ़सर अपने किसी मातहत सिपाही को आँच आ जाने दे, या कोई सिपाही अपने अफ़सर की हुकुम उदूली करे। महकमे के नाम और उसकी शान पर महकमे का हर अफ़सर, हर सिपाही, जान देता है।

सिपाही यों एक-से-एक जीदार और रंगीला है, लेकिन रामदयाल जरा अफ़सरों के ज्यादा सिर चढ़ा है, ज्यादा मुँह लगा है। आजकल किसी खास कारगुज़ारी के लिए उसे लाइन-सुपुर्द कर दिया गया है, लेकिन एस. पी. से लेकर अपने ऊपर के दीवान तक, सभी उसे याराना नज़र से देखते हैं। याराना नजर से इस मायने में कि वह समय-बे-समय सभी के साथ हमप्याला-हमनिवाला होता रहता है, हो चुका है।

पुलिस-लाइन में जो जशन मनाये जाते हैं उनका इन्तज़ाम उसी के सपुर्द रहता है और खास तौर पर अफ़सरों के लिए शराब और महफ़िल के लिए नाँचने वाली का इन्तज़ाम करना उसी का काम है। ये दोनों काम राम-दयाल अपनी काली मूँछों पर शान के साथ मरोड़ी देकर अपनाता है। आज भी उसने दारोगा हातमसिंह से कहा, "बस, ये ही दो काम मेरे सुपुर्द किये हैं हुजूर ने ? वह माकूल इन्तजाम किया जायगा कि आप भी वाह-वाह कह उठें। क्या एस. पी. साहब भी तशरीफ ला रहे हैं कल के जशन में ?"

"मय मेम साहब के आ रहे हैं। उनकी मेम साहब विलायत से आई हैं। उन्हीं की खुशी में तो यह पार्टी दी जा रही है। मेम साहब को डाली देनी है।" दारोग़ा हातमसिंह बोले।

"तो हुजूर डाली देने का काम रामदयाल के ही हाथों होना चाहिए।" रामदयाल ज़रा लहजे के साथ बोला।

"यह काम तू नहीं करेगा तो और कौन करेगा ? लाइन भर के

सिपाहियों में एक तुझे ही इतनी तमीज़ है कि चीजों को डाली में क़ोने के साथ रख कर साहब के सामने पेश कर सके।" दारोग़ा हातमाह ने कहा।

रामदयाल के सीने में ज़रा उभार आ गया। उसकी छाती दो अ और फूल कर चौड़ी हो गई। ज़रा गर्व के साथ उभर कर बोल "दारोग़ा जी! जशन तो आपने बहुत किये और देखे होंगे लेकिन ज़रा का की महफ़िल भी देखना। बड़ी बात नहीं कहता आपके सामने, लेकिन इतन तो आप समझ ही लें कि जिस पर भी नज़र रख दूँगा, बिंधी हुई चली आयगी।"

दारोग़ा जी मुस्करा कर यह कहते हुए दूसरी तरफ़ को चल दिये, "अच्छा जाओ, काम पर लगो। आज और कल की परेड से तुम्हें छुट्टी दी जाती है। लेकिन इन्तजाम में ख़ामी न आने पाये।"

रामदयाल अपनी बारक की तरफ़ मस्ती में झूमता और गुनगुनाता हुआ चल दिया। बारक में पहुँच कर उसने देखा उसके पास वाली चारपाई पर उसका यार क़रीमख़ाँ लेटा बीड़ी सुट्या रहा है और हल्की-हल्की आवाज़ में गा रहा है:

"माशूक बेवफ़ा हैं अबके ज़माने वाले,"

... ...

"सच कहा है किसी शायर ने यार क़रीमख़ाँ!" क़रीमख़ाँ की कमर थपथपाते हुए रामदयाल बोला, "लेकिन उस्तादों ने भी वे फन्दे तैयार किये हैं यार क़रीमख़ाँ, कि बेचारा माशूक एक बार फन्दे में गर्दन डाल दे और बस फिर वह जिन्दगी भर को यारों का गुलाम हो गया।"

क़रीमख़ाँ के बदन में रामदयाल को देखते ही ताज़गी सी आगई और वह उसकी बात को अनसुनी-सी करके खाट पर बैठ कर बोला, "क्या आज परेड नहीं है तुम्हारी रामदयाल?"

"है तो, लेकिन 'जो दर्द देता है दवा भी तो वही करता है।' अगर परमात्मा ने लाइन में भेजने की बदनसीबी मुक़द्दर में लिख कर भेजी थी तो हातमसिंह जैसा जीदार अफ़सर भी उसने पहले से ही यहाँ भेज दिया है।" ज़रा मुस्कराकर रौबीली मूँछों पर तनाव चढ़ाता हुआ रामदयाल बोला।

"दारोग़ा हातमसिंह के तो वाक़ई क्या कहने हैं। बस यों समझो कि हीरा-है-हीरा। ग़ज़ब का कलेजा पाया है।" क़रीमख़ाँ ने दाद दी।

"बड़े-बड़े पीने वालों की सोहबत कर चुका हूँ क़रीमखाँ ! लेकिन जो कमाल हातमसिंह को हासिल है वह कम आदमियों में देखने को मिलेगा।" हातमसिंह की दिलेरी और दिल खोल कर पीने और उसे पचा जाने की जाँबज़ी की दाद तहे दिल से देते हुए रामदयाल का दिल गुलाम की तरह खिल उठा।

"सुना है कल जशन मनाया जायगा। एस. पी. साहब भी तशरीफ़ ला रहे हैं। उनकी मेम साहब विलायत से आई हैं।" करीमखाँ ने पूछा।

"यही तो बात है जनाब ! उसी जशन के इन्तज़ाम की बदौलत तो आज की परेड से छुट्टी मिली है। उसी पार्टी में तक्सीम की जाने वाली शराब और महफ़िल में नाँचने वाली का इन्तज़ाम करने का काम दारोग़ाजी ने मेरे सुपुर्द किया है।" ज़रा अभिमान के साथ रामदयाल बोला।

"तो बस मज़ा आ गया यार रामदयाल ! अपने लोगों की भी एक हल्की मोटी ठाटदार दावत उड़ेगी। यार के हाथों में जब समंदर लहरायगा तो क्या दो-चार क़तरे यारों के सूखे हलक़ में नहीं पड़ेंगे ?"

"क्यों नहीं पड़ेंगे यार करीमखाँ ! इन्तज़ाम तो सब तुम्हें ही करना है। लेकिन अब वक्त ख़राब करने से काम नहीं चलेगा। आज-आज का ही तो दिन है, अपने पास।" रामदयाल बोला।

"आज-आज में तो दुनियाँ बदली जा सकती है रामदयाल ! तेरी दिलरुबा रामप्यारी भी क्या याद रखेगी कि तूने उसकी इतने बड़े-बड़े अफ़-सरों से मुलाकात कराई। अफ़सरों के साथ-साथ शहर के अमीर-उमरा लोगों में भी उसकी रप्त-ज़प्त बनती जा रही है। तेरी एहसानमन्द है वह छोकरी।" करीमखाँ बोला।

"एहसानमन्दी की बात जाने दो यार ! इस दुनियाँ में कोई किसी का एहसानमन्द नहीं है। बस चलती जा रही है दुनियाँ एक रविश के साथ और उसी में हम भी बहते जा रहे हैं। गुपच्चियाँ लगाते जा रहे हैं। कभी उन गुपच्चियों में दम घुटने लगता है और कभी मज़ा आने लगता है। जब मज़ा आता है तो ज़बान से निकलता है कि हे परवरदिगार तेरी हज़ार नियामतें हैं और जब दम घुटने लगता है तो मन कहता है कि इस ज़िन्दगी से तो मर जाना हज़ार दर्जे अच्छा है।" रामदयाल ज़रा ग़मगीन-सा होकर बोला।

"मालूम देता है रामप्यारी से इधर कुछ ना चाकी चल रही है राम-दयाल !" ज़रा मुस्कराकर करीमखाँ बोला। 'इसी लिए ये फ़िलासफ़ी छाँटी जा रही है।"

रामदयाल एक लम्बा साँस खींच कर बोला, "करीमखाँ रामप्यारी के भी अब पर लगने लगे हैं। वह दिन तुम्हें याद है जिस दिन उस फटी चारखाने की बदबूदार धोती और फ़टी कमीज़ में नंगे पैर में इसे उस दस नम्बरी के चंगुल से छुड़ाकर लाया था।"

'अरे, कल-परसों की ही तो बात है रामदयाल! क्या इतनी जल्दी भी चीजें भूली जा सकती हैं? लेकिन तेरा ख़याल है कि वह तुझसे नाराज़ है। सच जान ले बेचारी जान देती है तुझ पर। ज़रा बहुत नख़रा करना तो इनकी अदा है, अदा।"

'किसी की जान जाती है,
किसी की दिल्लगी ठहरी।'

ज़रा लहजे के साथ रामदयाल गुनगुनाता हुआ गा उठा और फिर दोनों यारों ने अपने चारखाने के रेशमी तेहमद बाँध लिये। ऊपर वर्दी की कलफ़दार नुकेले कालरों वाली कमीजें पहनीं और पैरों में पिशावरी चप्पलें। हाथों में बेंत पर चमड़ा चढ़े दो गोल डंडे लिये।

एक अंदाज़ के साथ दोनों यार पुलिस-लाइन से निकले। पहले शराब वाले की दूकान पर पहुँचे और रामदयाल को वहाँ बड़ी आव-भगत के साथ बिठलाया गया। कांस्टेबिल होने पर भी ठेके का मुंशी बोला, "आइये दीवानजी! यहाँ बैठिये।" और अपनी थली छोड़कर खड़ा हो गया।

"कल दावत है ठेकेदार साहब आपकी।" रामदयाल बोला।

इसी समय ठेकेदार भी वहीं पर आ गया।

"दावत कैसी है दीवान जी?" ठेकेदार ने पूछा।

"कल एस० पी० साहब की मेम साहब को पार्टी दी जायगी लाइन में। शराब का सब इन्तज़ाम तुम्हीं को करना है। मेम साहब के लिए एक बोतल एक्शा नं० वन......।"

सुनकर ठेकेदार साहब का दिल अन्दर-ही-अन्दर घुट गया। तीन चार सौ की करारी चोट बेचारे पर पड़ गई, लेकिन ऊपर से मुस्कराकर उसे यही कहना पड़ा, "आप मालिक हैं दीवान जी! आप लोगों की बदौलत ही तो हमारा कारबार चलता है। लेकिन क्या......"

"अरे सब मुफ्त नहीं होगा, लेकिन इस समय मुफ़्त ही समझो। दारोगा हातमसिंह से याराना करा दूँगा। कौन जाने कब और कहाँ क्या काम आजायें। शराब की बोतल मेम साहब को तुम खुद पेश करना। इस बार

मुफ़्त देकर हमेशा के लिए अपनी गाहक बना लेना। सुना है बड़ी पीने वाली है।" रामदयाल ने कहा।

"अरे क्यों मरे जा रहे हो ठेकेदार साहब! पिछले जुम्मे की बात भूल गये। अगर मैं उस वक्त यहाँ न आ जाता तो वे दस नम्बरी गुण्डे तुम्हारी दूकान में एक भी बोतल सही सलामत न छोड़ते।" ज़रा रौब के साथ करीमखाँ बोला।

"और फिर तुम्हें दिक्कत हो तो मैं दूसरी जगह इन्तजाम करूँ। मैं तो तुम्हें अपना समझकर इधर चला आया हूँ। वरने इतना पैसे तो दारोगा हातमसिंह की एक मुलाकात के होते हैं लाला! कौन जाने महीने में कै-कै बार भरने पड़ जायें तुम्हें?" ज़रा अकड़ के साथ खड़े होने की कोशिश करते हुए रामदयाल बोला।

ठेकेदार को पसीना आ गया। रामदयाल की घुड़की को सहन कर लेना मजाक नहीं है। वह जानता है कि उससे विगाड़-खाता करके वह अपनी दूकान मेरठ में नहीं चला सकता।

वह गिड़गिड़ाकर बोला, "दीवान जी, आप तो ज़रा सी बात पर नाराज़ हो जाते हैं। हम तो आपको ही अपना माँ-बाप समझते हैं। आपसे अपने दुख-दर्द की बात न कहें तो भला किससे कहने जायें?"

"फिर कह तो दिया हमने कि पीछे से हम सब समझलेंगे। क्या दस्तावेज़ लिखें इन दो चार सौ रपूलियों की? किसी भी मूज़ी को पकड़ कर दो चार सौ दिला देंगे। मौक़ा लगा तो हो सकता है कल ही कोई काठ का उल्लू हाथ आजाये।" उसी रौबीले अंदाज़ के साथ रामदयाल बोला।

ठेकेदार ने रामदयाल की मिन्नत करके उसे वहीं बिठला लिया और फिर ज़रा मुस्करा कर बोला, "आज तो संतरे को पियेंगे दीवान जी!"

"नहीं आज नहीं पियेंगे।" ऊपरी अकड़ के साथ रामदयाल बैठता हुआ बोला।

"अरे पी भी ले यार!" करीम खाँ बोला। उसके होठ शराब का लबालब भरा जाम पाजाने के लिए लपलपा रहे हैं। "ठेकेदार साहब भी अपने यार आदमी हैं। इनसे तुम नाराज़ न हुआ करो रामदयाल! और देखना, ये सब बातें दारोग़ा हातमसिंह से न कहना, वरना लाला उनकी नज़रों से गिर जायेंगे। लाला को चढ़ाना है अफ़सरों की नज़रों में।"

"करीमखाँ, सच जानो, मैं तो खुद ठेकेदार साहब का बड़ा ख़याल

रखता हूँ लेकिन ये ऐसे मिच्चू क़िस्म के आदमी हैं कि कभी-कभी अदना-सी बातों पर जी ख़राब कर देते हैं।" ज़रा मुलायम पड़ते हुए रामदयाल बोला ।

शंतरे की बोतल खुल चुकी थी इस समय तक। रामदयाल और करीमखाँ ने देखते-ही-देखते पूरी बोतल चढ़ाली और फिर उसके सरूर में उनका बदन फूल जैसा हल्ला हो गया । आँखों में खुमारी का लाल डोरा खिंच गया, मन मौज की बहारों में नाँच उठा।

'अच्छा ठेकेदारजी अब यार लोग चले।" कहकर करीमखाँ रामदयाल के साथ जरा सँभल कर खड़ा हो गया।

"शराब की बोतलें आज रात को ही लाइन में पहुँच जानी चाहिएँ । रामदयाल मूछों पर ताव देता हुआ बोला।

"आप निसाखातिर रहें दीवानजी ! लेकिन मुझ गरीब का भी जरा ख़याल रखना।" हाथ जोड़कर ठेकेदार बोला।

"मरे मत जाओ ठेकेदार ! ज्यादा पैसा जोड़-जोड़ कर तिजोरियाँ भरते जा रहे हो, ये साथ नहीं जायेंगी। मैं तो कहता हूँ एक और बोतल खोलकर तुम भी पीओ। दुनियाँ के जो मज़े लिये जा सकें ले लो ठेकेदार! पता नहीं अगले जनम में आदमी का जनम मिले या न मिले।"

इतनी बात कहकर बिना ठेकेदार का जवाब सुने ही रामदयाल करीमखाँ की पीठ ठोकता हुए, बोला, 'करीमखाँ अब चलो, काफी वक्त यहाँ ख़राब हो गया। असल चीज़ का इन्तजाम करना तो अभी बाकी ही है।"

"वह भी हो जायगा रामदयाल! तेरा सितारा आजकल बुलन्दी पर है। जिस चीज़ के लिए तू हाँ कर दे वह हाँ हो ही जाती है । दरोगा हातमसिंह तेरे इशारे पर नाचते हैं।" करीमखाँ रास्ते में लड़खड़ाते हुए चलते-चलते बोला।

"अबे नाँचते क्या यूँही हैं, नचाने में भी खर्च करना पड़ता है। तूने देखा है कभी मुझे अपने घर को एक कौड़ी भेजते हुए ? जो कुछ कमाता हूँ यहाँ यारबाशी में खर्च हो जा जाता है। दरोगा जी और रामप्यारी, रामप्यारी और दारोगाजी, बस अपनी कमाई करने के तो ये ही दो मक़सद हैं।" ज़रा गर्व के साथ रामदयाल बोला।

दोनों झूमते हुए बाजार की तरफ चल पड़े। बातों-ही-बातों में सब रास्ता तै होगया। थोड़ी देर बाद दोनों रामप्यारी के कोठे के नीचे जाखड़े हुए। लेकिन रामदयाल आखिर किस बहाने से रामप्यारी के कोठे पर जाये। अभी

कल परसों ही तो वह यहाँ से नाराज़ होकर गया है।

रामदयाल ने कुछ रुपया इधर-उधर से करके रामप्यारी का कारबार जमवा दिया था। सैर तफ़री के लिए अपने यार-दोस्तों को वहाँ ले जाकर कुछ आमदनी का ज़रिया भी उसीने पैदा किया। लेकिन वह बराबर उसे अपनी जेब से पैसे देता रहे, यह बात उससे लिए कठिन है: आखिर है तो बेचारा एक मामूली पुलिस का कांस्टेबिल ही।

जब वह पुलिस-चौकी पर तैनात था और शहर के ख़ास चौरस्ते पर उसकी ड्यूटी रहती थी, तो वह एक रईस आदमी था; बीड़ी नहीं, वह सिग्रेट पीता था; एक पैसे का नहीं, दो पैसे का पान खाता था; हर ताँगे वाला उसे सलाम करके निकलता था; हर बदमाश गुंडा उसके नाम से थर्राता था उससे याराना रखने के फिराक में रहता था; कोई जुआ सट्टा खेलाने वाला बिला रामदयाल की मर्जी एक दाव नहीं लगा सकता था। लेकिन रामदयाल जब से लाइन-सुपुर्द हुआ है तब से उसकी आमदनी सूखी तनखा-मात्र ही रह गई है। सूखी तनखा की रपूलियों में से क्या तो वह अपने शौक पूरे करले और क्या रामप्यारी को.........।

"करीमखाँ मैं ऊपर कोठे पर नहीं जाऊँगा और यह भी जान लें कि आज यहाँ तेरे कहने पर चला आया हूँ; अगर आज यहाँ से बेइज़्ज़त होकर जाना पड़ा तो फिर समझ लेना कि इसे मेरठ में नहीं रहने दूँगा।"

रामदयाल अपने को मेरठ का बादशाह समझता है। उसकी नाखुशी से यहाँ बसना, उसकी शान के खिलाफ है।

"अमा क्या कहने लगे तुम भी यार रामदयाल! रामप्यारी यह सुनकर कि तुम नीचे खड़े हो, कोठे से न उतरी चली आये, यह भला कभी मुमकिन हो सकता है? क्या शामत ने धक्का दिया है उसको?"

कहता हुआ करीमखाँ रामप्यारी के कोठे पर चढ़ गया।

रामप्यारी के कोठे पर ठाट की मजलिस जमी हुई है। करीमखाँ भी जाकर एक कोने में खड़ा हो गया। शौकीन तमाशबीन फूलों के गजरे हाथों में लिये गोल तकियों से कमर लगाये गोलाकार बैठे हैं। रामप्यारी नाँचने के लिए तय्यार है।

करीमखाँ ने रामप्यारी को एक तरफ बुलाकर रामदयाल के नीचे खड़े रहने की बात सुनाई और कहा "कल लाइन में जशन है। एस० पी० साहब की मेम साहब को पार्टी दी जा रही है। उसी में मुजरे के लिये तुम्हें

चलना है।"

"लेकिन कल तो मुझे एक सेठ के यहाँ का बुलावा है। वहाँ जाना बहुत जरूरी है। पाँच सौ रुपया पेशगी दे गये हैं सेठ साहब।" कह कर हाँ नाँ कुछ भी कहे बिना रामप्यारी अपने कमरे में चली गई।

करीमखाँ देखता ही रह गया। रामदयाल के बारे में एक शब्द भी रामप्यारी ने नहीं कहा। उसके कोठे के नीचे कौन कुत्ता-बिल्ली खड़ा है, इसकी उसने परवाह नहीं की। उसके रसूक अब बड़े लोगों से बन चुके हैं फिर वह एक अदना से कांस्टेबिल रामदयाल की भला क्या परवाह करती।

करीमखाँ अपना-सा मुँह लेकर कमरे से नीचे उतर आया। उसका मुँह उतरा हुआ देखकर रामदयाल बोला, "आखिर हुई ना वही बात। नहीं आई हरामजादी नीचे उतर कर।" फिर जरा ठहर कर बोला, "चलो कोई बात नहीं। इसे फिर देखा जायगा। इस समय कल के जशन का इन्तजाम करना है।"

यहाँ से चल कर दोनों गुलाब बाई के कमरे पर गये। गुलाब रामप्यारी के बाद दूसरे नम्बर की नाचने-गाने वाली है मेरठ में। वह यह भी जानती है कि उस बाजार में रामप्यारी को लाकर जमाना रामदयाल का ही काम है। रामदयाल को देखकर जरा तपाक के साथ बोली, "आज दीवान जी इस नाचीज के ग़रीबख़ाने पर कैसे भूल कर आ गये?"

"भूलकर नहीं गुलाब, मैं जान कर यहाँ लाया हूँ इन्हें। जा तो यह रामप्यारी के ही यहाँ रहे थे लेकिन मैंने इनसे कहा कि आप अफसर हैं और अफसर को सबका खयाल रखना चाहिये। गुलाब क्या रामप्यारी से किसी बात में कम है, हुस्न में, नाजोअंदाज़ में, नाच-गाने में, मुस्कराहट में, सलीके और बर्त्ताव में, बल्कि मैं तो यही कहूंगा कि हर बात में बढ़ी-चढ़ी ही है। यह एक खांदानी पेशेवर ठहरी और रामप्यारी एक जंगल का फूल है जिसे दीवान जी ने अपनी मेहराबनी बख्श कर इस गुलशन में खिला दिया है।"

गुलाव अपनी तारीफ करीमखाँ के मुँह से सुन कर खिल उठी और एक अंदाज से बोली, "तशरीफ रखिए दीवान जी! मैं जिस क़ाबिल हूँ, आपकी खिदमत के लिये तैयार हूँ। आपका हुक्म हमेशा मेरे सिर आँखों पर रहेगा।"

गुलाब ने दूसरे दिन मुजरे में आना मंजूर कर लिया। रामदयाल और करीमखाँ बात पक्की करके पुलिस-लाइन लौटे।

६

करीमखाँ मस्त है क्योंकि सब इन्तजाम ठीक हो गया। लेकिन रामदयाल के दिल में रामप्यारी ने उसका अपमान करके जो काँटा चुभो दिया वह बराबर कसक पैदा कर रहा है, बराबर दर्द पैदा कर रहा है। उस दर्द को दबाने के लिये वह लौटते समय फिर शराब के ठेके के पास से निकला और शंतरे की देसी शराब का एक और अद्धा लेकर गम गलत कर लिया। शराब का नशा जरा और तेज हो गया और उसकी छाया में दर्द और अपमान दोनों को विश्राम मिला।

: २ :

मेरठ पुलिस-लाइन का यह जशन बहुत शानदार रहा। दावत भी खूब मजे की रही और मुजरा भी लाजवाब रहा। सभी तमाशबीनों ने तारीफ की और इन्तजाम की दाद दी। साहब बहादुर एस. पी. साहब ने भी तारीफ की और वह बहुत खुश हुए।

हातिमसिंह दारोगा मुस्करा कर बोले, "रामदयाल तुम्हारी यह गुलाब भी अच्छा-खासा नाच लेती है। लेकिन आज रामप्यारी को क्या हो गया ? मैं तो समझता था कि वही आयगी मुजरे से लिये।"

"सरकार नखरे हो गये हैं हरामजादी के। और आप जानते ही हैं कि रामदयाल ने आज तक किसी का नखरा बरदाश्त करना नहीं सीखा। एक बार यदि हुजूर मुझे फिर उस चौकी पर भेज दें तो देखिये क्या गत बनाता हूँ उसकी।" जरा तन कर रामदयाल बोला। रामदयाल की आँखों का डोरा और लाल हो गया यह बात कहते हुए।

"अरे जाने भी दे इन बातों को, आज तो एस. पी. साहब से हाथ मिलवा दिया तेरा। मेम साहब को भी एक्शा नम्बर वन की बोतल पर नजर डालकर आधी बोतल का नशा हो गया था। तू जो चाहेगा अब वही होगा रामदयाल ! बस मेम साहब को खुश रखना तेरा काम है।" दारोगा हातमसिंह ने कहा।

दारोगा हातिमसिंह की भी नामवरी कम नहीं हुई और एस. पी. ने दो तीन बार मेहरबान नजरें डालीं उनके ऊपर।

"मेम साहब की आप फिक्र न करें दारोगा जी। शराब का शौकीन मेरा यार न बने, यह नामुकिन है।" गर्व के साथ रामदयाल बोला। राम-दयाल के सीने में विजय का उभार आया और चारों तरफ से तारीफें सुन-सुन कर उसमें हवा भर गई।

रामदयाल अभी तक मामूली कॉंस्टेबिल ही है लेकिन उसकी शोहरत तमाम जिले के पुलिस-अफ़सरों, दारोगाओं और दीवानों में हो चुकी है। इस

राज से भी सब वाकिफ हो गये हैं कि वह एस. पी साहब की मेम साहब के पास सीधा बिला रोक-टोक के जा सकता है, वह अपनी हर बात, हर फरयाद, साहब के पास तक पहुँचा सकता है। तमाम पुलिस-लाइन में रामदयाल का अभी तक सिर्फ एक ही यार था करीमखाँ। लेकिन अब यारों की तादात बढ़ती जा रही है। लोगों को रामदयाल में मिठास दिखलाई देने लगा है और चींटियाँ मिठास की तरफ अपने आप बढ़ती आ रही हैं। रामदयाल भी अपने पास आने वालों की इच्छा को खूब समझता है और किसी का जरा-सा काम कर देने से पहले उसके बदले में अपने दस काम निकाल लेने की कला में वह माहिर होता चला जा रहा है।

रामदयाल बहुत जल्द लाइन से बदल कर पुलिस की उसी चौकी पर तायनात हो गया जिसके इलाके में नाँचने गाने वालियों का बाजार पड़ता है। चौकी के दीवान खानअब्दुल बेग से उसका पुराना याराना है। रामदयाल जैसे सिपाही को अपनी मातहती में पाकर अब्दुल बेग बहुत खुश हुआ। रामदयाल के साथ शायद उसे भी कभी अपनी बात मेम साहब की मार्फत एस.-पी. साहब के पास तक पहुँचाने का अवसर मिल सके, यह उसे खयाल हुआ। जिन्दगी बीती जा रही है इसी दीवानी में और दारोगाई के कई मौके उसके हाथ के पास तक आ-आकर निकल गये । एस. पी. की सिफारिश वह न पा सका, यही कमी रह जाती है हर बार।

अब्दुलबेग की इस ख्वाइश को ताड़ लेने में रामदयाल को ज़रा भी देर न लगी। यह अब्दुल बेग के राज़ की बात है और किसी के राज़ को जान लेने के बाद उसका दामाद बन जाने की कला में रामदयाल बहुत निपुण है।

"चौकी के मालिक बन कर रहो रामदयाल!" दीवान अब्दुल बेग बोले।

"जब तक रोज़नामचा मेरे हाथों में है, तुम्हारे सात खून माफ़ हैं।"

"बस ठीक है दीवान जी! आप भी जानते हैं कि रामदयाल नमक-हलाल सिपाही है। वह कभी किसी अफसर के एहसान को भुलाता नहीं। अगर इलाके में आप मेरा साथ देंगे तो ऊपर के कामों से आप निसाखातिर रहें। आप जानते ही हैं कि मेम साहब मुझ पर कितनी मेहरबान हैं।" रामदयाल बोला।

"भय्या रामदयाल ये सब मुकद्दर की बातें हैं। दारोगा हातम सिंह

के मुँह चढ़े सिपाही हो, इसी लिये तो एस. पी. साहब को डाली पेश करने का तुम्हें मौका मिला। खुदा की कसम जो मौका तुम्हें मिला है वह अच्छे-अच्छों को नसीब नहीं हो सकता।" रामदयाल की नामवरी पर अन्दर-ही-अन्दर हसद और ऊपर से खुशी जाहिर करते हुए दीवान जी बोले।

रामदयाल ने पुलिस-चौकी की बारक में एक खाट पर अपना बिस्तर लगा लिया। ठाट के साथ दीवान जी का दामाद बन कर उसने लेट लगाया और उसके यारों ने भी वहीं पर आना-जाना शुरू कर दिया। यह चौकी, और सिपाहियों के लिए चौकी है लेकिन रामदयाल के लिए वह वही अपने गाँव की चौपाल है जिस पर बैठ कर वह शान से हुक्का पिया करता है।

शाम को करीमखाँ ने आकर पहले दीवान अब्दुलबेग को सलाम झुकाया और उनके पास ही जमीन पर बिछी दरी पर बैठता हुआ बोला, "दीवान जी क्या रामदयाल को कहीं काम पर भेजा है आपने ? दिखलाई नहीं दे रहा यहाँ।"

"अबे करीमखाँ ! क्या बातें करता है तू भी ? रामदयाल और काम पर जायगा किसी के ? अन्दर बारक में लेट लगा रहा होगा। वह भला किसका काम करने लगा है ? काम ही करना होता तो घर की जमींदारी छोड़कर पुलिस की कुत्ता नौकरी करने न निकलता।"

"यह बात नहीं है दीवान जी ! जरा बातें बनाते हुए करीमखाँ बोला। "आपकी बड़ी इज्जत करता है रामदयाल। यह सच है कि वह अच्छे-अच्छे दारोगाओं को भी मुँह नहीं लगाता लेकिन आप सच जानिये कि आपका बड़ा खयाल रखता है। यह बात उसकी पीठ के पीछे कह रहा हूँ आपसे।"

करीमखाँ के मुँह से ये शब्द सुन कर दीवान अब्दुल बेग रामदयाल पर और भी लट्टू हो गये। रोजनामचे में दस्तखत करने भर से अब राम-दयाल की ड्यूटी पूरी हो जाती है। वह एक हफ्ते में शायद एक बार भी वर्दी पहन कर तैनाती के साथ किसी जगह खड़ा नहीं होता। अपनी चौकी और बारक की खाट को छोड़कर भी वह बहुत कम इधर-उधर जाता है।

रामदयाल को फुर्सत ही कहाँ है इस तरह पाबन्दी से एक जगह खड़ी ड्यूटी देने की। उसकी जान को तो इलाके के झगड़े और उनके फैसले ही न जाने कितने लगे रहते हैं। जब देखो उसकी अदालत लगी ही रहती है।

ये झगड़े तीन किस्म के होते हैं। पहली किस्म के झगड़े तो वह खुद ही निपटा देता है, दूसरी किस्म के झगड़ों का निपटारा दीवान अब्दुल बेग

को बीच में डालकर किया जाता है तथा तीसरी किस्म के झगड़े जो ज़रा और अहम होते हैं, उन्हें दारोगा हातमसिंह की मदद से सुलझाया जाता है।

रामदयाल की खूबी यही है कि उसके झगड़े उससे आगे बढ़ने नहीं पाते। फिर मिल बाँटकर खाने का वह शुरू से हामी रहा है। खुदगर्जी को इस मामले में वह ज़रा भी पास तक फटकने नहीं देता। पैसे को हाथ का मैल समझता है और उसे बहाता भी पानी की तरह ही है। उसके खुले दिल की उसके अफसर भी दाद देते हैं।

रामदयाल के इस इलाके में तायनात होने की खबर बिजली की तरह शहर-भर में फैल गई। नाचने-गाने वालियों के बाजार में आज सनसनी है। रामप्यारी को जब से इस बात की खबर मिली है, उसे पसीना आ रहा है। रामदयाल के वे शब्द जो करीम खाँ ने उससे जाकर कहे हैं, उसके कानों में बज रहे हैं। उसके दिल की धड़कन बढ़ गई है और घबराहट बेइन्तिहा है उसको।

करीम खाँ के सामने वह गिड़गिड़ा कर बोली, "दीवान जी को खुश करना तुम्हारा काम है करीम खाँ! क्या तुम उन्हें एक बार यहाँ नहीं ला सकते?"

"पगली हो गई है रामप्यारी! रामदयाल और तेरे यहाँ आयगा। तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है। तेरे हुस्न का जादू रामदयाल पर नहीं चल सकता। वह जितना रहमदिल इन्सान है उतना ही संगदिल भी है। तूने उसे ग़लत समझा है। किसी भी आदमी को वह एक बार ही परख कर देखता है, दो बार नहीं। वह कह चुका है कि रामप्यारी को अगर उसने उसी फटे हाल करके एक बार मेरठ के बाजार से न निकाल दिया तो उसका नाम भी रामदयाल नहीं।" करीमखाँ गरज कर बोला।

आज ही रात को रामप्यारी के कोठे पर उन सेठ जी के बेटे को, जिनके पिता का अभी कुछ दिन पूर्व अन्तकाल हुआ है, और जिनके घर पर मुजरे में जाने की वजह से रामप्यारी ने पुलिस-लाइन में होने वाले मुजरे में जाने से इन्कार कर दिया था, गिरफ़तार कर लिया गया।

रामदयाल ने खुद जाकर दो कांस्टेबिलों को हुक्म दिया, "गिरफ़तार करलो इस बदमाश को और साथ में इस हरामजादी को भी चौकी पर ले चलो।"

बात की बात में वहाँ की भीड़ छँट गई। तमाशबीन लोग आनन-

कानन में नौ-दो-ग्यारह हो गये। जिस कमरे में अभी चन्द मिनट पूर्व मधुर संगीत का स्वर भरा हुआ था और नृत्य को पैरों में बँधे घुंघरुओं की झंकार लहरा रही थी, वहीं रामदयाल के ये कर्कश शब्द गूँज रहे हैं।

सेठ के बेटे की दशा तो उस समय देखते ही बनी। मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं और दिल धड़धड़ करके काँपने लगा। तमाम शरीर पसीने में सराबोर हो गया और सिर में चक्कर आने लगा।

उसे क्या पता था कि रामप्यारी के हुस्न का फंदा किसी दिन पुलिस की हथकड़ियों का फंदा भी बन सकता है। वह एड़ी से चोटी तक पसीज गया। जबान पर तो मानो ताला ही पड़ गया। एक शब्द भी वह नहीं बोल सका। पैसा बाप जरूर तिजोरी में काफ़ी छोड़ गया था परन्तु दिलेरी के नाम पर सेठ शून्य हैं। इसीलिए रामदयाल ने उस पर हावी होकर उसे ऐसे धर दबोचा जैसे चूहे को बिल्ली अपने खूंखार पंजों में जकड़ लेती है।

रामप्यारी गिड़गिड़ा कर रामदयाल के पैर पकड़ती हुई बोली, "दीवान जी इस बार गलती माफ कर दीजिये, फिर कभी जिन्दगी भर ऐसी गलती नहीं होगी।"

"काठ की हाँडी एक बार ही आग पर चढ़ती है।" कड़ककर रामदयाला बोला और सिपाहियों को हुक्म दिया, "ले चलो इस बदमाश को। मुंह क्या देखते हो मेरा? हाथों में हथकड़ियाँ लगाकर जरा बाजार में घुमाते हुए चौकी पर ले आओ।"

"दीवान जी! इतने सख्त न बनो बेचारी रामप्यारी पर।" करीमखाँ बीच में पड़ता हुआ बड़ी संजीदगी के साथ बोला।

"बको मत, करीमखाँ!" उसे डपते हुए रामदयाल ने कहा। "उस रोज तुम्हारे ही कहने से मैं इस कमीनी के दरवाजे तक चला आया था और यह बेहया इतनी एहसानफ़रामोश निकली कि इसने जीने के नीचे तक आने की तकलीफ़ गवारा न की। दिल की वह जलन क्या जिन्दगी में कभी बुझाई जा सकेगी?" तैश खाकर रामदयाल बोला। "मुझे देखना है कि अब यह मेरठ के बाजार में कैसे अपना अड्डा जमा पाती है?"

"यह तो वाक़ई इसकी गलती हुई रामदयाल जी! लेकिन औरतों के इस तरह मुँह नहीं लगा जाता। आप अपनी ही जगह रहेंगे और यह अपनी ही जगह। रामप्यारी लाख नालायकी करे, लेकिन आपको अपनी उन मेहरबानियों की खातिर सब कुछ भूल जाना चाहिए, जो आपने इस औरत-

जात पर की हैं।" करीम खाँ रामदयाल की ठोड़ी में हाथ डालता हुआ गिड़-गिड़ाकर बोला।

रामदयाल ने ज़रा नर्म होकर कहा, "तो चलो, छोड़ दो इसे, लेकिन इस सेठ के बच्चे को तो हवालात में बन्द करके ही दम लूंगा। इसी तरह के बदमाशों ने इस नाँचने-गाने के बाज़ार में बदमनी फैलाई हुई है। रोज़ाना के ये सब झगड़े मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। अपने इलाक़े में मैं यह सब कुछ नहीं होने दूँगा।" और फिर रौब के साथ रामदयाल ने मूंछों पर ताव चढ़ाया।

रामप्यारी फिर रामदयाल के पैरों पर गिर पड़ी और गिड़गिड़ा कर बोली. "दीवान जी! इन्हें आप मेरी ख़ातिर छोड़ दें। इनका कोई क़ुसूर नहीं है। बेचारे गऊ आदमी हैं, गऊ। इनकी जिसने भी आपसे शिकायत की है, वह ग़लत की है। यह आपसे किसी भी बात में बाहर नहीं है।" रामप्यारी ने आख़री वाक्य में वह बात भी कह डाली जिसका सबक़ उसे रामदयाल ने शुरू-शुरू में सिखाया था।

करीमखाँ रामदयाल के इशारे पर कमरे के अन्दर रामप्यारी से बातें करने चला गया।

रामप्यारी बोली, "करीम खाँ दीवान जी से तुमने मुझे माफ़ करा दिया, इसके लिए मैं तुम्हारी एहसानमन्द हूँ। अब इस सेठ के बच्चे को जैसा कहो वैसा पाठ पढ़ादूँ।"

"पाठ क्या पढ़ाना है इसे, नकद नारायण की बात करो रामप्यारी! इस वक्त तो रामदयाल पाँचसौ रुपये से एक कौड़ी भी कम नहीं लेगा।" ज़रा तुनक मिजाज़ी के साथ करीमखाँ बोला।

"पाँच सौ?" आश्चर्य दिखलाते हुए रामप्यारी ने कहा और फिर मुँह का भाव बदलकर बोली, "अच्छा करीम खाँ! तुम भी क्या याद रखोगे राम-प्यारी को। आज पाँच सौ ही न दिलवाये तो मेरा नाम भी रामप्यारी नहीं।"

ये बातें करके करीम खाँ कमरे से बाहर चला आया।

रामप्यारी फिर ज़रा उतरे-से-दिल से बाहर आई और सेठ को एक तरफ़ लेजाकर उसी कमरे में अन्दर ले गई।

रामप्यारी ने इस समय ऐसा मुँह बनाया मानो उसे करीमखाँ और रामदयाल से सख्त नफ़रत है। पुलिस के रौब में आकर डर की वजह से वह यह सब कुछ कह रहीं है, लेकिन इन लोगों के लिए उसके दिल में कतन गुंजाइश नहीं है।

सेठ ने रामप्यारी के मुँह पर देखकर कहा, "क्या बातें हुई इन लोगों से रामप्यारी। क्या चाहते हैं ये लोग ?"

रामप्यारी ने सहमे से स्वर का कलापूर्ण अभिनय करके कहा, "देखीं आपने इन पुलिस के कमीन कुत्तों की हरकतें। लेकिन कितने खूंखार होते हैं ये भी। इनसे जान बचाने के लिए जितना चाँदी का जूता कामयाब होता है उतना और कुछ नहीं होता।" भयभीत-स्वर में रामप्यारी ने कहा। उसका तमाम शरीर अभी तक काँप रहा है।

"जैसा तुम कहो हम इस समय अपनी इज्जत बचाने के लिए वैसा ही करें। यहाँ से अगर यह कमीना हमारे हाथों में हथकड़ियाँ डालकर बाजार के बीच से ले गया तो हम कहीं मुँह दिखाने के काबिल भी नहीं रहेंगें। रिश्ते-दारों और दोस्त-अहबाबों में दो कोड़ी की इज्जत हो जायगी।"

"इसमें क्या शक है।" रामप्यारी गम्भीरता-पूर्वक बोली। "आपकी लाखों की इज्जत खाक में मिल जायगी। हमारी तो खैर कुछ इज्जत ही नहीं, हमारे दिल को तो आपका ही खयाल परेशान किये दे रहा है।"

"तो फिर हमारा ख्याल यह है रामप्यारी कि चार-पाँच सौ रुपया देकर क्यों न इस रामदयाल कुत्ते को ही खरीद लिया जाय ?" बातों का रुख बदलते हुए सेठ का लड़का बोला।

रामप्यारी सेठ के लड़के की यह बात सुनकर दंग रह गई। उसने उससे नजरें मिलाईं तो वह मुस्करा उठा। तनिक भी परेशानी अब उसके मुख-मण्डल पर देखने को नहीं मिली है और न वह पसीना ही उसके शरीर पर है।

सेठका लड़का अब पूरा गद्दीदार सेठ है; अपनी बाप की पूरी सम्पत्ति का मालिक। उसका रोका-टोका कोई भी उसके घर में नहीं है। उस सम्पत्ति की पूरी ताक़त की तरफ़ उसकी नज़र गई और फिर उसने फटीचर रामदयाल की शक्ल देखी तो समझ लिया कि कुल खेल पैसे का है।

रामप्यारी को फटे हाल लाकर, फिर सजाकर मेरठ के बाजार में रामदयाल ने बिठाया था। सेठ का बेटा रामप्यारी के मुख से सुन चुका है।

सेठ के बेटे के यहाँ जाने के ऊपर एक दिन रामप्यारी ने रामदयाल को अपने कोठे के जीने के नीचे खड़े सुनकर भी सलाम नहीं झुकाया; यह बात भी वह सुन चुका है।

सेठ का लड़का जहाँ एक ओर इस तरह तमाशबीनी में फँसा है

वहाँ दूसरी ओर वह अपने कारबार की भी देखभाल कर रहा है। अपने मुनीमों की कारगुजारियों पर भी उसकी कम नज़र नहीं है।

घर के दूसरे कारबारों के दौरान में शहर की हर फ़िज़ा से वह दिलचस्पी रखता है। पिछले दिनों हमेशा ही उसके वालिद को पुलिस की हर दावत में बुलाया जाता रहा था। लेकिन उनका अन्तकाल होने के बाद अभी तक वह दर्जा उसे हासिल नहीं हो सका।

कलक्टर साहब ने उसके वालिद को मेरठ-ज़िले की अमनसभा का प्रधान बनाया था और उन्होंने अमन सभा के लिए बीस हजार रुपया कलक्टर साहब को दिया था। ये सभी बातें सेठ के बेटे को याद आईं।

वह खड़ा-खड़ा गुनगुनाने लगा और फिर जरा गम्भीरता के साथ बोला, "रामप्यारी ! क्या कहूँ? वालिद साहब का अन्तकाल हो गया; वरना तो आज के इस हादसे का नतीजा ही दूसरा होता। इस रामदयाल को अगर इसी वक्त बरखास्त न करा दिया होता तो मेरा भी नाम सेठ दामोदर प्रशाद न लेतीं। लेकिन अब उन बातों को जाने दो। इस वक्त तो तुम्हारा ही खयाल ठीक है। इस कुत्ते के मुँह पर चाँदी का ही जूता मारना चाहिए।"

रामप्यारी ने यह रुपया देने की बात रामदयाल की तरफ़ को झुक कर कही थी। रामदयाल अब उसके इलाके की चौकी पर तायनात होकर आ गया था। इस लिए उसका झुकाव अब रामदयाल की तरफ़ अधिक होना स्वाभाविक था।

रामदयाल इस समय उसका मौजूदा हाकिम है और यह हकूमत का जमाना है। हाकिम की बात हाकिम मानता है, उनके बीच में कोई और आकर दखल-अंदाजी कर ही नहीं सकता। उन हाकिमों से पाने की चीज है केवल मेहरबानी, और इस मेहरबानी की एक कीमत है।

सेठ दामोदर प्रशाद ने यह क़ीमत अदा कर दी।

रामदयाल उसी दिन से सेठ दामोदर प्रशाद का यार बन गया।

कमरे के जीने के दरवाजे बन्द कर दिये गये। जो दो कांस्टेबिल रामदयाल के साथ हथकड़ियाँ लेकर आये थे उन्हें दस-दस रुपये इनाम देकर बिदा कर दिया गया और वहाँ रह गये सेठ दामोदर प्रशाद, रामदयाल, करीमखाँ, रामप्यारी और उसके साज़िन्दे।

सेठ ने सोचा कि जब पाँच सौ रुपयों में इस कुत्ते को ख़रीद ही लिया तो फिर क्यों न इसके मन की तह तक पहुँचा जाय।

गर्मी के दिन थे। बढ़िया जिन की दो बोतलें मँगाने का उसने रामप्यारी को हुक्म दिया; और बोतलें आ गई।

रामदयाल और करीमखाँ ने इस जिन जैसी साफ शराब पहले कभी नहीं पी थी। देसी जरूर थी कई बार और जी भी ललचाया था, परन्तु वह इतनी अकरी थी कि वे पीने का साहस न कर सके।

आज मूज़ी की शराब मिली थी पीने के लिए, फिर क्यों न खुल कर हाथ साफ़ करते ? बे अंदाज पी, बेहद पी, जी खोल कर पी और पीते-पीते जब शरीर हल्का होकर ऊपर को उड़ने लगा तो हँसकर रामदयाल बोला, "यार दामोदर सेठ ! तूने मज़ेदार शराब पिला दी आज। आज तू जो कुछ भी माँगे माँग सकता है। यह रामदयाल बैठा है तेरी बगल में। यह है तो अदना सा पुलिस का सिपाही ही, लेकिन इस वक्त तू इसे अपने जिले के एस० पी० की नाँक की नकेल समझ।

रामप्यारी भी समझ गई रामदयाल की इस महत्वपूर्ण बात को और सेठ दामोदर प्रशाद ने तो उसकी गाँठ बाँध ली और हाथ मिला कर रामदयाल से बोला, "तो याराना पक्का रहा हमारा तुम्हारा। तुम भी क्या याद रखोगें कि किसी सेठ-बच्चे से कभी याराना हुआ था।"

रामप्यारी के पैरों में बँधें घुँघरू धीरे-धीरे दोनों के कानों में रस घोलने लगें। शराब के नशे में रामप्यारी जब नृत्य करती हुई दोनों के सामने आई तो सेठ दामोदर प्रशाद ने कहा, "रामप्पारी ! हमने दीवान जी को अपना यार मान लिया है। आज से इनकी भी खातिर तवाजै उसी तरह होगी जिस तरह हमारे ख़ास यार दोस्तों की होती है।"

"उससे भी आला लीजिये सरकार !" रामप्यारी ने एक अन्दाज़ के साथ कहा।

रामदयाल के दिल पर दामोदर प्रशाद के ये शब्द तीर की तरह लगे। रामप्यारी का मेरठ में इस समय मालिक दामोदर प्रशाद नहीं है, रामदयाल हैं। फिर रामदयाल की ख़ातिर करने की बात कहने का उसे क्या हक है।

लेकिन एक पैसे वाला यार मिल जाने पर रामदयाल नें दिल पर वह घाव भी मुस्कराते हुए खाया और मुस्करा कर ही नशे में बोला, "कोई बात नहीं सेठ दामोदर प्रशाद ! हम तमाशबीन अफ़सर ठहरे। इश्क लड़ाना

हमारा काम नहीं है। हम लोग तो अपने काम-से-काम रखते हैं। तुम्हारी दिलरुबा तुम्हें मुबारिक रहे। हम तो मेहमान ही बनना ज्यादा पसंद करेंगे।"

रात को सेठ दामोदर प्रशाद रामदयाल को अपनी फ़िटन में बिठलाकर उसकी चौकी पर छोड़ने के लिए गया।

: ३ :

रामदयाल का दबदबा मेरठ में जमता जा रहा है। शहर की एक चौकी का अदना-सा सिपाही और रसूक़ उसके एस. पी. की मेम साहब तक है। महकमे का हर अफ़सर उसका ख़याल करके उससे बातें करता है।

पुलिस-लाइन में दी गई एस. पी. की पार्टी के तुफ़ैल में दारोगा हातमसिंह को मेरठ की शहर-कोतवाली नसीब हुई। हातमसिंह की शहर कोतवाली, रामदयाल की शहर कोतवाली है। सुनते ही वह हातमसिंह के पास पहुँचा और मुबारिकबाद देने के बाद बोला, "दारोगाजी अब देखियेगा आप अपना दबदबा। मेरठ के बाशिन्दे भी क्या याद करेंगे कि कोई शहर कोतवाल आया है।"

'सब तुम्हीं लोगों पर मुनहसिर है रामदयाल! लेकिन अब ज्यादा नौकरी करने का इरादा नहीं है। मैं चाहता हूँ कि ब स यहीं से इज्जत के साथ घर चला जाऊँ।" हातमसिंह बोले।

"आप जैसा चाहेंगे वैसा ही हो जायगा। वैसे तो जब ऊपर के अफ़-सरों पर आपका असर है तो घर जाने की बात ही नहीं उठती।" रामदयाल बोला।

"भाई इस पुलिस की नौकरी का कुछ भरोसा नहीं है। आज अफ़सर खुश दिखलाई देते हैं तो कल नाराज भी हो सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि बाल-बच्चों के लिए लाख-दो-लाख रुपया ऐसे ही वक्त में जमा कर लूँ जब अफ़सर लोग खुश हैं।" हातिमसिंह बोले।

"ख़याल तो आपका नेक है और इसमें कुछ दिक्कत भी दिखाई नहीं देती। मेरठ की शहर-कोतवाली में लाख-दो-लाख रुपया भी न बनाया तो फिर आपने क्या किया?" एक अंदाज और लहजे के साथ रामदयाल बोला।

उसी समय दफ्तर की डाक हातमसिंह के हाथों में आई और वह एस. पी. साहब की कही गई बात को याद करते हुए बोले, "रामदयाल, मुझे तो खयाल ही नहीं रहा था तुमसे कहने का। परसों एस. पी. साहब से

जो भेंट हुई थी उसमें उन्होंने मेरठ में अमन-सभा क़ायम क़रने की बात कही थी। अगर तुम चाहो तो सेठ दामोदर प्रशाद को उसके वालिद की जगह अमन-सभा का प्रधान बना सकती है सरकार।"

"बात तो आपने बड़े पते की कही दारोगा जी! और मेरा खयाल है कि वह काठ का उल्लू आपके इस फंदे में फँस भी जरूर जायगा। आप कहें तो मैं आज उससे बातें करके देख लूँ।" रामदयाल बोला।

"जरूर देख लो, जरूर देख लो। यह निशाना वह नहीं है जो खाली जायगा। लेकिन दस-पन्द्रह हज़ार से कम का काम नहीं है। तुम उसी दिन गलती खा गये कि रामप्यारी के कोठे पर उसे पाँच सौ रुपये लेकर ही छोड़ दिया।" दारोगा हातमसिंह बोले।

"आप हैं तो बड़े, दारोगा जी! लेकिन मैं मुर्गी को एक ही बार में हलाल करके खा जाने की नीति को नहीं मानता। अंडे दे रही है मुर्गी और जब तक हमारे दड़बे में रहेगी देती ही रहेगी। आप दड़बा तोड़-ताड़ कर, नौकरी छोड़, घर चले जाना चाहते हैं, इसीलिए ऐसी नीति को अपना रहे हैं। लेकिन यह नीति नुक़सानदे भी हो सकती है।" बड़ी ही गम्भीरता के साथ रामदयाल बोला।

दारोगा हातमसिंह को रामदयाल की नेक सलाह के सामने सिर झुकाना पड़ा और वह मुस्कराते हुए बोले, "अच्छा भाई रामदयाल, तू जैसा मुनासिब समझे, करता रह। मेरे बाल-बच्चे भी तेरे ही बाल-बच्चे हैं।"

"यह कहने की बात नहीं है दारोगा जी! मैं आपके बेटे हिम्मतसिंह को अपने बच्चे की तरह समझता हूँ।" रामदयाल बोला।

और उसी समय हिम्मतसिंह कोतवाली के मैदान से खेलता-खेलता दफ्तर में घुस आया। धूल-भरे हिम्मतसिंह को रामदयाल ने गोद में उठा लिया और प्यार से पूछा, "आज क्या बनाया है अम्मी जान ने?"

"कठहल की सब्ज़ी बनी है चचा, और दमदार प्याज़ के आलू। कहें तो ले आऊं दो रकाबियों में?"

"हाँ-हाँ क्यों नहीं?" हातमसिंह बोले। "यहाँ क्या लाओगे, कोठी पर ही लेजाकर खाना खिलाओ चचा को। तुम्हारे लिए यह इतने फल, मिठाई और मेवे वगैरा लाते हैं और तुम कभी इनके खाने तक की बात नहीं पूछते।" हातमसिंह ने मुस्करा कर अपने बेटे से कहा।

"यह बात नहीं है दारोगा जी! हिम्मतसिंह और इसकी अम्मी ज-

कभी भी मैं कोठी पर पहुँच जाता हूँ तो बिना कुछ खाये-पिये वहाँ से नहीं आने देतीं। हिम्मतसिंह में अपने वालिद की तमीज़ कूट-कूट कर भरी है। और मेरी तो यह उतनी ही इज्ज़त करता है जितनी आपकी।"

बेटे की तारीफ़ सुनकर हातमसिंह का दिल खिल गया। जो बच्चा उनके यार-दोस्तों और मिलने वालों की इतनी इज्ज़त करता है वह भला उनकी कितनी करेगा। भविष्य का एक काल्पनिक स्वर्ग उनकी आँखों के सामने नाँचने लगा।

रामदयाल कोतवाल साहब के पास से उठकर सीधा अपनी चौकी पर आया। वहाँ से वह दीवान जी से यह कह कर कि वह ज़रा कलक्टर साहब के किसी ज़रूरी काम से जा रहा है, चलने ही वाला था कि सामने से करीमखाँ आता दिखाई दिया।

"किधर को सवारी बढ़ी ?" करीमखाँ ने पूछा।

"शहर में अमन-सभा क़ायम की जायगी। इन कांग्रेसी हरामज़ादों ने नाक में दम किया हुआ है सरकार का। हुल्लड़बाज़ी और गुंडागर्दी से राज हासिल करने चले हैं। पागल कहीं के। अंग्रेज़ी तोप-बन्दूकों के सामने यह हुल्लड़बाज़ी काम नहीं दे सकती।" रामदयाल गम्भीरता पूर्वक बोला।

करीमखाँ की समझ में कुछ भी न आ सका। सोच लिया, जो होगा होता रहेगा। अपने को इन बातों से क्या मतलब। बड़ी-बड़ी अहम बातों से उलझने के लिए उसका यार रामदयाल काफी है।

"इस अमन-सभा का क्या होगा रामदयाल ?" अब्दुलबेग दीवान ने क़लम डेस्क पर टिका कर रोज़नामचा बन्द करते हुए पूछा।

"ये राजनीति की बातें हैं दीवान जी ! इसमें सरकार शहर के बड़े-बड़े आदमियों को शामिल करेगी। उन्हें इज्ज़त बख्शेगी और वे लोग अपने-अपने असर से अपने-अपने इलाकों में अमन क़ायम करेंगे। लोगों को कहेंगे कि वे इस कांग्रेसी आवारों की टोलियों में शामिल होना तो दूर की बात रही, इनके मुँह पर थूकें भी नहीं।"

"ख़ुदा की क़सम तब तो हम लोगों की भी जान बच जाये। वरना तो नाक में दम कर दिया है इन बदमाशों ने। जिस दिन भी कोई हुल्लड़बाज़ी खड़ी कर देते हैं उसी दिन हम लोगों के तस्मे खिच जाते हैं।" बड़े दर्द के साथ दीवान जी ने कहा।

"आपका फ़रमाना बजा है। इसी की रोक-थाम के लिए सरकार अमन-

सभाएँ क़ायम करती जा रही है। इनमें शहर के सभी इज्ज़तदार आदमियों को शामिल होने की दावत दी जायगी और यह अहम काम कोतवाल साहब ने मेरे सुपुर्द किया है।" रामदयाल बोला।

रामदयाल को अब देर हो रही थी। वह करीमखाँ को साथ लेकर सेठ दामोदर प्रशाद के मकान की तरफ़ चल पड़ा। रास्ते में करीमखाँ की पीठ पर हाथ फेरता हुआ बोला, "कहो कैसी चल रही है करीमखाँ ?"

"खूब रौब-दौब की। मज़े की छन रही है यारों की। सारे-का-सारा अमला तुम्हारा एहसानमन्द है। हर आदमी खुले दिल से कहता है कि तुमसे ज्यादा ईमानदारी के साथ ऊपरी आमदनी की तक़सीम आज तक मेरठ में नहीं हुई।" ज़रा बढ़ावा देते हुए करीमखाँ ने कहा।

"करीमखाँ तू मेरी हालत जानता है। भला तुझे पता है कि मैंने कितना रुपया कमाया है ?" मुस्कराकर रामदयाल बोला।

"तुम बादशाह आदमी ठहरे। घर के पूरे ज़मींदार हो। तुम्हें करना ही क्या है ? नाम पैदा कर रहे हो, यह क्या कुछ कम चीज़ है ? किसी दिन सच कहता हूँ कि तुम एक बड़े अफ़सर बनोगे।" करीमखाँ बोला।

बातों-ही-बातों में सेठ दामोदर प्रशाद का मकान आ गया। रामदयाल रुक कर बोला, "अच्छा करीमखाँ ! अब तुम जाओ। संध्या को आ जाना। आज गुलाब के यहाँ रात को महफ़िल जमेगी। खाना-पीना भी वहीं पर होगा। हाँ इतना करना कि एक बार वहाँ दिन में जाकर पूछ आना कि किसी सामान की तो ज़रूरत नहीं है। अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो उसे बाजार से लाकर दे आना।" एक दस रुपये का नोट करीमखाँ के हाथ में थमाता हुआ बोला।

"बहुत अच्छा, लेकिन आज तो रामप्यारी ने भी पीने की दावत दी है आपको।" याद दिलाते हुए करीमखाँ ने कहा।

"मुझे सब याद है। तुम पहले चौकी पर आना। वहीं से चला जायगा। पहले रामप्यारी के यहाँ ही चलेंगे। वहाँ से दो-चार पेग लेकर फिर गुलाब की तरफ चलना है और फिर शाम अपनी है, रात अपनी है, किसी के गुलाम तो नहीं हैं हम। फिर क्यों किसी की बंदिश में बँधकर रहें ?"

करीमखाँ के चले जाने पर रामदयाल सेठ दामोदर प्रशाद की ड्योढी

में घुस गया। सेठ जी ज़नानखाने में थे और किसी बात पर अपनी बीवी से उनकी झौड़-झपट हो रही थी।

मुनीमजी ने रामदयाल को आदर-भाव के साथ मसनद पर बिठलाया। एक गोल तकिया उसे कमर टिकाने को दिया और पान तथा लौंगों की तश्तरी उसके सामने करते हुए कहा, "सेठ जी अभी तशरीफ़ ला रहे हैं, आप पान का बीड़ा खाइये। सिग्रेट कहें तो सिग्रेट मंगाऊँ।"

"नहीं-नहीं मुनीमजी! इतने तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं है। दामोदर प्रशाद जी की और हमारी तो घर की सी बात है।" रामदयाल ज़रा करीने के साथ मसनद पर बैठता हुआ बोला।

नाचने-गाने वालियों के यहाँ आने-जाने से रामदयाल को बड़े आदमियों के यहाँ जाने-आने, बैठने-उठने और बातें करने का सलीक़ा आ गया था। यों वह खुद भी दर्जा चार पास है और मिडिल स्कूल की छटी जमायत से भाग कर पुलिस की नौकरी में आया है।

उर्दू की ख़ासी तालीम भी है उसकी और उसका ख़ांदान-का-ख़ांदान ही पढ़ा-लिखा है। उस तालीम का असर भी उसकी ज़िंदगी पर स्पष्ट दिखाई देता है।

रामदयाल ने क़रीने के साथ सेठ की मसनद पर बैठ कर गोल तकिये से कमर लगाई और फिर पानों का बीड़ा दाढ़ में दबाते हुए मुनीमजी से बोला, "मुझे ज़रा जल्दी है। कलक्टर साहब का एक संदेश लेकर दामोदर प्रशाद के पास आया हूँ। उनसे कहो, ज़रा जल्दी करें।"

कलक्टर साहब का नाम सुनकर मुनीमजी लबड़-झबड़ अपनी तोंद को सँभालते हुए खड़े हो गये। फिर उन्होंने चिकन के कुर्ते को, जो बैठने की वजह से सलवटें खा कर कलफ़ के बल पर टूंडी से ऊपर खिसक गया था, खींच कर धोती की फेंठ से ज़रा नीचे तक किया और ज़नानखाने की तरफ़ लपके।

सेठ दामोदर प्रशाद से जाकर बोले, "दीवान रामदयाल आये हैं। कहते हैं कि ज़रूरी काम है कोई कलक्टर साहब का।"

"कलक्टर साहब का!" आश्चर्य-चकित होकर सेठ ने प्रसन्नता से कहा और फिर ज़रा पलंग पर बैठते हुए बोले, "मैंने कहा न था मुनीम जी उस दिन कि ये पाँच सौ रुपये किसी दिन पचास हज़ार बनकर लौटेंगे।"

"पचास हज़ार?" अभी तक लड़ने-झगड़ने वाली सेठ की ललवाइन

ने पास आकर कहा । ललवाइन ने मुनीमजी से ज़रा पर्दा किया हुआ था बारीक सा ।'

"और नहीं तो क्या ? कलक्टर साहब की एक मुलाकात के होते हैं पचास हज़ार तो। अफ़सर हैं वह अपने ज़िले के। क्या जाने क्या बख्श दें ?"

"तुम ठीक कहते हो बेटा ! दीवान रामदयाल तेरी बड़ी इज्ज़त करते हैं और। तेरा खयाल भी बहुत रखते हैं। बस इन्हें खुश बनाये रहना। हमने भी सब पता निकाल लिया है बेटा !" बूढ़े मुनीमजी बोले। यह मुनीमजी सेठ दामोदर प्रशाद के वालिद के खास दोस्तों में से थे। इनकी दामोदर प्रशाद अपने पिता की ही तरह इज्ज़त करता है।

"आपने क्या पता निकाल लिया है मुनीमजी ?" दामोदर प्रशाद ने पूछा। मुनीमजी ने जो राज निकाले थे, उन्हें सुनने के लिए उसके कान उत्सुक हो उठे।

"बड़े राज़ की बात है बेटा ! एस. पी. साहब की मेम साहब को रामदयाल ने खुश कर रखा है। उसे शराब पिलाने का काम इसी का है। इसीलिए वह इसकी हर बात साहब से मनवा देती है। बड़े काम का आदमी है यह।" मुनीमजी ने कहा।

सेठ दामोदर प्रशाद ने मुनीमजी की बात गम्भीरता पूर्वक सुनी और फिर तुरन्त गले में कुर्त्ता डालता हुआ वह बाहर अपनी गद्दी पर आ गया।

रामदयाल ने खड़े होकर सेठ का स्वागत किया। दोनों दो यारों की तरह मिले। सेठ दामोदर प्रशाद बोले, "अब तो ईद के चाँद होते जा रहे हो भैय्या रामदयाल ! तीन-चार बार चौकी पर भी मुनीमजी को भेजा, लेकिन पता चला कि तुम वहाँ हो ही नहीं।"

"ईद के चाँद की बात नहीं है दामोदर प्रशाद जी ! काम ही कुछ ऐसा आ गया है। हम लोग आपकी तरह गद्दीदार सेठ तो हैं नहीं, नौकरी-पेशा ठहरे। हाकिम ने जिधर को भी हुकुम चढ़ा दिया, बस उधर को ही घूम जाना पड़ता है। जब से कोतवाली में हातमसिंह आये हैं तब से तो एक दम फुर्सत ही नहीं रही। क्या कहूँ कम्बख्त को मेरे अलावा किसी पर यकीन ही नहीं। अदना-से-अदना बात से लेकर अहम-से-अहम बातों तक की तहकीकात के लिए मुझे ही जाना पड़ता है। और तो क्या, अपने नायब तक पर भी उन्हें यक़ीन नहीं है।"

"सुना है आज कल तो आपका कलक्टर साहब के पास तक भी आना-जाना बन गया है ?" सेठ दामोदर प्रशाद ने, यह जानते हुए भी कि रामदयाल का आखरी रसूक एस. पी. साहब की मेम साहब हैं, उसका सम्बन्ध कलक्टर साहब से जोड़ दिया।

दामोदर प्रशाद की यह बात सुनकर रामदयाल का दिल खिल गया। ये शब्द उसके कानों के अन्दर घुसकर नशीले बन गये। उनके खुमार ने उसके दिमाग से पुराने सब नक्शे हटा कर नए नक्शे टाँग दिये। इस नये नक्शे में रामदयाल ने अपने को कलक्टर साहब के खास कारकुन के रूप में देखा।

जरा मुस्करा कर बोला, "दामोदरप्रशाद जी ! यह सब यार-दोस्तों की मेहरबानी का नतीजा है। ईमानदारी से काम करने वाले के रसूक़ बढ़ते ही जाते हैं। हर काम में रामदयाल ने अपने ही लिए नुकसान उठाना सीखा है। अपने को चाहे पाई न बचे लेकिन अफ़सर को नाराज़ करना रामदयाल ने नहीं सीखा। रामदयाल अपनी ज़िंदगी के उसूलों पर सचाई के साथ चलता है। इसीलिए उसके कहने की आज दुनियाँ कद्र करती है।"

"इसमें क्या शक है।" सेठ दामोदर प्रशाद के साथ उनके पुराने मुनीम भी रामदयाल की बात को दाद देते हुए बोले।

"अफ़सर लोग भी कुछ कम अक्ल वाले नहीं होते हैं दामोदर प्रशाद जी। फ़य्याज़ दिल तो जरूर होते हैं, लेकिन समझते सब कुछ हैं। इस मामले में आप देखेंगे कि अंग्रेज़ बच्चा हिन्दुस्तानी से लाख दर्जे अच्छा होता है। एस. पी. साहब की मेम साहब एक बोतल में ही खुश हो जाती हैं बेचारी, और अमले के मामूली-मामूली दारोगाओं को रक़म काट कर देनी पड़ती है।" रामदयाल ने गम्भीरता के साथ कहा।

'बस असल बात कह दी दीवान जी ने।" मुनीमजी बोले। "पिछली बार जब नहर के जंगल का हमारे बड़े सेठजी ने ठेका लिया था तो इंजीनियर अंग्रेज बच्चा ही था। उसकी मेम साहब के अर्दली ने ही हमारा सब काम करा दिया था। दीवान जी ! वह भी बेचारा आपकी ही तरह बहुत भला आदमी था।" मुनीमजी ने बहुत सादगी और बुर्दबाना अन्दाज से कहा।

उन्हें पता नहीं था कि रामदयाल इंजीनियर साहब का अर्दली नहीं है। वह चालबाजी, हिम्मत और दरियादिली का मजमुआ है। उसने सेठ दामोदर प्रशाद से उसके हाथों में हथकड़ियाँ डाल और खोल कर याराना

किया है। पाँच सौ रुपया सेठ ने अपनी इज्ज़त बचाने के लिए दिया है, कोई एहसान नहीं किया रामदयाल पर। बल्कि रामदयाल ने ही उसे बहुत कम दामों पर छोड़ दिया है। यह कम दामों पर छोड़ देना उस वक्त शहर कोतवाल हातमसिंह को भी खटका था।

मुनीमजी की बात रामदयाल के कलेजे को चीरती हुई चली गई। सेठ से याराने का लालच उसे उसके मुनीमजी की यह बात सुनने तक नहीं गिरा सका। रामदयाल मुनीमजी की बजुर्गी को एक तरफ़ रख कर जरा कड़क के साथ बोला, "तो आपने मेरा दर्जा इंजीनियर साहब के अर्दली जैसा समझा मुनीमजी ! मैं आपको और आपके सेठजी को दो कौड़ी का आदमी समझता हूँ। आप लोगों से में कोई ताल्लुक नहीं रखना चाहता।"

और इतना कह कर रामदयाल खड़ा हो गया।

बातों का रंग ही बदल गया। सेठ और मुनीमजी की हवा खिसक गई। दोनों रामदयाल के सामने हाथ जोड़कर पेश आये। "बेटा रामदयाल मुझसे ना-समझी में जो ग़लती हो गई हो, उसे माफ़ कर दो। मैंने जान-बूझ कर कोई ऐसी बात नहीं कही, जो तुम्हारी शान के खिलाफ़ हो।"

"हाँ-हाँ भाई रामदयाल जी मुनीमजी की बजुर्गी का ही ख़याल करके इन्हें माफ़ कर दो। इनका मक़सद वह नहीं है जो तुम समझ गये।" दामोदर प्रशाद बोले और उन्होंने रामदयाल को वहीं ठंडा करके पास में बिठला लिया।

फिर खातिरदारी के बोझ से उसे इतना लाद दिया कि उसके नीचे रामदयाल के दिल में धधकने वाले ज्वाला के अंगारे दब कर राख बन गये।

"तुम भी यार ज़रा-ज़रा-सी बातों पर बिगड़ बैठते हो।" सेठ दामोदर प्रशाद बोले। "आख़िर अफसर हो, थोड़ी तो सहनशीलता से काम लिया करो।"

"अपनी बेईज्ज़ती के सामने मैं पागल हो जाता हूँ दामोदर प्रशाद। फिर सोचने-समझने के लिए कोई बात नहीं रहती मेरे पास। मैं दो टूक बात करने वाला आदमी हूँ।" रामदयाल बोला।

सेठ दामोदर प्रशाद ने आज बातों को आगे बढ़ाना पसन्द नहीं किया। रामदयाल का इस तरह बिगड़ा हुआ मूड यों ही ठीक नहीं हो सकता था।

बातों का रुख बदलते हुए दामोदर प्रशाद बोला, "आज रात का क्या 'प्रोग्राम' है ?"

"कोई ख़ास नहीं !" रामदयाल माथे पर सलवटें लिए हुए बोला। "तुम्हारे मुनीमजी ने सब मजा किरकिरा कर दिया। वरना तो आज बड़ी-बड़ी चीजें लाया था तुम्हारे पास।" गम्भीरता पूर्वक रामदयाल बोला।

इस समय तक यहाँ से सब मुनीम वगैरा बाहर चले गये। दामोदर प्रशाद ने आँखों के ही इशारे से सब को बाहर खिसक जाने के लिए कह दिया।

"जो बड़ी-बड़ी चीजें मेरा यार रामदयाल मेरे लिए लाया है, उन्हें वह वापस लौटाकर ले जाने वाला नहीं है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। यार को पहचानने में सेठ दामोदर प्रशाद जिन्दगी में भूल नहीं कर सकता।" कह कर दामोदर प्रशाद ने रामदयाल के कंधे पर हाथ रखा।

रामदयाल के मुख पर भी मुस्कराहट खेल गई। जरा संवर कर बैठ गया वह। कुछ कहने को ही था कि बीच में दामोदर प्रशाद बोल उठे, "इस समय काम की कोई बात नहीं होगी रामदयाल ! पहले यह बतलाओ कि क्या पीओगे ?"

"यह पीने का वख्त नहीं है दामोदर प्रशाद ! मैं बेवख्त कभी नहीं पीता। पीने का वख्त रात का है और आज रात को रामप्यारी और गुलाब दोनों के यहाँ दावत है। रामप्यारी के यहाँ दो-चार पैग पीकर फिर गुलाब के यहाँ जमकर खाना-पीना चलेगा।"

सेठ दामोदर प्रशाद ने सध्या को रामप्यारी के यहाँ मिलने का वचन दिया। इससे आगे कोई बात इस समय न बढ़ सकी। रामदयाल को ड्योढी तक छोड़ने के लिए सेठ दामोदर प्रशाद गये।

मेरठ के बाजारों से होता हुआ आज कांग्रेस का एक ढाई मील लम्बा जलूस निकला। तमाम शहर में ज़बरदस्त हड़ताल मनाई गई। शहर की हर दूकान बन्द रही, क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, सभी ने दूकानें बन्द करके इस जलूस को देखा। जो ज़रा हिम्मत वाले लोग थे वे जलूस में शामिल थे।

स्कूलों के छात्रों की संख्या जुलूस में सबसे अधिक रही। शहर की कचहरी के कुछ वकील भी उसमें शामिल हुए। सरकारी नौकरों में से भी बहुतों की हमदर्दी जुलूस के साथ है लेकिन अपने-अपने पेटों की गुलामी ने उन्हें खुलकर सामने आने से मजबूर कर दिया है।

डॉडी में नमक-कानून तोड़ने के अपराध में अपने साथियों के साथ महात्मा गाँधी को सरकार ने गिरफ्तार कर लिया है। यह खबर एक ज़बर-दस्त सनसनी फैलाती हुई देश के कोने-कोने में फैल गई है।

देश के सभी नगरों में कांग्रेस की ओर से जुलूस निकाले गये और बाज़ारों में हड़तालें की गईं। अधिकांश लोगों की हमदर्दी कांग्रेस के साथ है। आज़ादी का प्यारा शब्द सभी के कानों में रस घोलता है। 'इनक़लाब जिंदाबाद' का नारा मुर्दा दिलों में भी एक बार को तड़पन-सी पैदा कर देता है।

कांग्रेस खिलाफ़ कानून क़रार दी जा चुकी है, और उसकी हर कार्यवाही को बुरी तरह कुचलने का सरकार ने तहइया कर लिया है।

मेरठ के बाज़ारों की यह दशा देखकर हातमसिंह परेशान हो उठे। उन्हें कलक्टर साहब की तरफ़ से हुक्म है कि वह इस तरह की बदमनी को दबाने के लिए हर तरह की ताक़त का इस्तेमाल कर सकते हैं।

कांग्रेस का जुलूस बहुत शांति के साथ महात्मा गाँधी की जै के नारे लगाता हुआ बाज़ारों के बीच से गुज़रा। कहीं से भी किसी झगड़े-फ़िसाद की बात हातमसिंह के कानों में नहीं आई।

हातमसिंह सोचते रहे कि अगर कहीं से भी किसी झगड़े की कोई सूचना उन्हें मिल जाय तो वह अपनी ताक़त का जौहर दिखलाकर एस. पी. और कलक्टर साहब की गुड-बुक्स में अपना दर्जा और आला बना लें।

इसी समय रामदयाल उन्हें कोतवाली के दरवाजे पर आता दिखलाई दिया। रामदयाल को लेकर वह अकेले अपने कमरे में चले गये और ज़रा घबराहट के साथ बोले, 'क्या हाल है रामदयाल ! सुना है जुलूस बड़ी ही शांति के साथ निकल रहा है। कोई झगड़ा-फिसाद होने की तो सम्भावना नहीं है ?"

"बात तो यही है कोतवाल साहब ! लेकिन झगड़ा खड़ा कर देना कोई बड़ी बात नहीं है। आप जरा भी फ़िक्र न करें किसी बात की। सब इन्तज़ाम ठीक-ठाक करके चला आ रहा हूँ।" बहुत गम्भीरता के साथ रामदयाल बोला।

"ज़रा मैं भी तो सुनूँ तुमने क्या कुछ किया है रामदयाल ! मेरी तो सब उम्मीदें तुम्हीं पर रहती हैं। अभी-अभी नायब साहब से मैंने पूछा तो उन्होंने साफ़-साफ़ जवाब दे दिया। कहने लगे कि ऐसी हालत में हो ही क्या सकता है। मेरा तो खयाल है कि हमारे नायब साहब ज़रूर इन काँग्रेसियों से मिले हुए हैं।" हातमसिंह बोले।

"हो सकता है कोतवाल साहब ! बड़े-बड़े लाले लोग कांग्रेस को चंदा दे रहे हैं। माला-माल कर दिया है उन्होंने उन वालंटरों को भी जिनके घरों में दो वक्त रोटी का भी इन्तज़ाम नहीं था। ये जो कांग्रेस के सिकरेटरी बने फिरते हैं, लाला छज्जूमल, इन्हें मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। चार कौड़ी की भी आमदनी नहीं थी इनकी और अब ऐश की छन रही है।" रामदयाल बोला।

"धंधा बनाया लिया है हरामज़ादों ने। 'आजादी' बेंचते हैं साले। आँख के अंधों और गाँठ के पूरों की भी कोई कमी नहीं है जमाने में। खूब मिल जाते हैं इन लोगों को।" ज़रा कुढ़कर हातमसिंह बोले, "हम लोगों से अमन-सभा में आने के लिए कहते हैं और कलक्टर साहब से मुलाकात कराने की बात करते हैं तो हमारे लिए दो-चार हज़ार भी देते पाजियों का दम टूटता है और अपने बाप उस गांधी के नाम पर हज़ारों की रक़में आँख मींच कर फेंक देते हैं।" कहकर हातमसिंह ने एक लम्बा साँस खींचा।

"आप चिन्ता न करें कोतवाल साहब ! रामदयाल के रहते आपका कोई काम रुकने वाला नहीं है।......"

ये बातें कर ही रहा था रामदयाल कि नायब साहब घबराये हुए अन्दर घुसे चले आये और घबराहट की ही दशा में बोले, "ज़बरस्त फिसाद हो गया शहर में। कस्साबखाने के पास कुछ गुण्डों ने जुलूस की किसी औरत को छेड़ दिया। इस पर जुलूस में आग भड़क उठी और कुछ नौजवानों के साथ उन गुण्डों की हाथापाई भी हो गई।"

"वे गुण्डे लोग मुसलमान तो नहीं हैं ?" हातमसिंह ने पूछा।

"हैं तो मुसलमान ही।" नायब साहब बोले।

"तब तो हिन्दू-मुस्लिम दंगा होने का ज़बरदस्त अंदेशा पैदा हो गया। आप फ़ौरन घुड़सवार सिपाहियों को लेकर मौके पर पहुँच जाइये और बदमनी को सख्ती के साथ दबा डालिये। हिन्दू और मुसलमान दोनों को कुचल डालिये। मैं अपने शहर में यह सब गन्दगी नहीं बढ़ने दूँगा।" आँखें चढ़ाकर हातमसिंह बोले।

"जैसा आप कहें।" कह कर नायब साहब चले गये।

"कमाल कर दिया तुमने रामदयाल !" हातमसिंह बोले। "इसी को कहते हैं 'घर में आग लगाय जमालो दूर खड़ी।" एक गुनगुनाहट के साथ उनकी ज़बान से निकला।

"कोतवाल साहब ! यह काम मामूली नहीं है। इसी में आपकी दस-पाँच हज़ार की गोली बनवा दूँगा। आप भी क्या याद रखेंगे कि किसी सिपाही से मुलाक़ात हुई है। अब मौक़े पर पहुँच कर शहर के खाते-पीते लोगों के लड़कों को गिरफ्तार कर-करके हवालातों में भर देना आपका काम है और फिर उनके माँ-बापों को दूह लेना रामदयाल का ?" एक अंदाज़ के साथ रामदयाल बोला।

रामदयाल का काम खत्म हो चुका। वह यहाँ से सीधा गुलाब के कमरे पर पहुँचा। आजकल गुलाब का कमरा ही रामदयाल का ख़ास अड्डा है। रामप्यारी को वह सेठ दामोदर प्रशाद के हवाले कर चुका है। यार की चीज़ पर हाथ डालना वह अपनी शान के खिलाफ़ समझता है।

गुलाब ने रामदयाल का मुस्कराकर स्वागत किया और फिर अपने ख़ास कमरे में ले जाकर पलंग पर बिठलाती हुई बोली, "दीवानजी ! आप आ जाते हैं, तो सच जानिये, जिंदगी लौट आती है इस ग़रीबखाने में और आप

चले जाते हैं तो दीया बुझ जाता है इस दिल का। दीवान बहुत देखे हैं पुलिस के, लेकिन आप जैसा देखने में नहीं आया।"

"क्यों, ऐसी क्या खूबी देखी तुमने हमारे अन्दर गुलाब !" गुलाब को अपनी बगल में बिठलाते हुए आँखें चार करके रामदयाल ने पूछा।

"आपकी ख़ूबियाँ बयान करने की ताक़त नहीं है मुझमें दीवानजी ! जो कुछ मेरा दिल मुझसे कहता है उसे आपके सामने पेश कर देती हूँ।" गुलाब ने कहा।

"बातें करने का अन्दाज़ तुम्हें ख़ूब आता है गुलाब ! करीमखाँ ने सच कहा था कि खांदानी पेशेवर होने के नाते तौर-तरीकों में, नाज़ो-अन्दाज़ में, मुस्कराने में तुम रामप्यारी से कहीं बहतर हो।" रामदयाल ने कहा।

"यह सब आपकी हुस्नोनवाज़िश है दीवानजी ! वरना तो मैं किस क़ाबिल हूँ ? ख़ाक हूँ आपके क़दमों की। मुझे आपने जो इज्ज़त बख्शी है उसके लिए मैं आपकी तहे-दिल से शुक्रगुज़ार हूँ।" एक अदा के साथ गुलाब बोली।

"ये ही तो तुम्हारी क़त्ल करने की बातें हैं गुलाब ! खाकसारी में ही तुम्हारी तमीज़ दमकती है। मैं औरत से बहुत दूर रहने वाला इन्सान हूँ गुलाब ! लेकिन तुम्हारी ..बस क्या कहूँ, सभी बातें ऐसी हैं जो एक-दूसरी का जवाब नहीं रखतीं।"

इतना कह कर रामदयाल गुलाब को अपने पहलू में समेट कर उसके गुलाबी होठों को प्यार से चुमकार देना चाहता था कि उसने सुना कोई कमरे के जीने पर चढ़ा चला आ रहा है। चढ़ने वाले के पैरों की आवाज़ जीने पर काफ़ी भारी मालूम दी।

थोड़ी ही देर में आने वाला कमरे के आँगन में आ गया और रामदयाल ने देखा कि काला तहमद बाँधे, चिकन का कुर्त्ता पहने, काला भिड़याल कल्लू पहलवान है।

"ज़रा अन्दर बुला लो कल्लू पहलवान को।" रामदयाल ने गुलाब से कहा।

कल्लू पहलवान ने अन्दर आकर रामदयाल को सलाम झुकाया और फिर मुस्कराकर बोला, "सरकार का काम पूरा हो गया दीवानजी !"

"क्या कुछ हो गया ?" अनजान बन कर रामदयाल ने पूछा।

"एक माशूक लड़की को भीड़ से गायब करा दिया दीवानजी ! तुम

भी क्या याद रखोगे कि किसी से कुछ करने के लिये कहा था आपने। फिर वह जूता-पजार शुरू हुई दोनों तरफ़ से कि अभी तक बराबर तनातनी चल रही है। पुलिस भी ठीक वक्त पर पहुँच गई और वह डंडेबाजी हुई कि मिजाज ठिकाने से आ गया उन जुलूस वालों का।" अभिमान के साथ कुर्ते की आस्तीनें चढ़ाता हुआ कल्लू पहलवान बोला।

"शाबाश कल्लू पहलवान! एक बात का खयाल रखना जरा। मार-पीट के बाद आज धर-पकड़ बड़ी जोरों की होने वाली है। अगर तुम्हारा कोई जान-पहचान का पकड़ा जाय तो फौरन मुझे इत्तला दे देना। और खुश तो हो न तुम! तुम लोगों के इनामात भी जल्द दिये जायेंगे।" राम-दयाल ने कहा।

"आप मालिक हैं दीवानजी! हम लोगों के यहाँ कोई खेती-बाड़ी तो होती नहीं है। और न हम लोग कोई नौकरी-पेशा ही हैं। आज़ाद पहलवान लोग हैं और आप जैसे हाकिम लोगों के दम पर ही अपनी जिंदगियाँ काट रहे हैं।" हाथ जोड़कर कल्लू पहलवान ने कहा।

"मजा किये जाओ कल्लू पहलवान! जब तक रामदयाल मेरठ में है तब तक तुम्हें आँच आने वाली नहीं। फिलहाल तुम सेठ दामोदर प्रशाद के पास चले जाओ। वह तुम्हें दो सौ रुपया दे देगा। उससे रामदयाल का नाम लेना। यह रुपया अपने पट्ठों में बाँट देना।" कहकर रामदयाल मुस्करा रहा था।

कल्लू पहलवान रामदयाल को सलाम झुका कर कमरे की चिक उठाता हुआ बाहर हो गया और फिर धीरे-धीरे अपने भारी बदन को लेकर जीने से नीचे चला गया।

"क्या कोई झगड़ा हो गया आज बाजार में?" गुलाब ने पूछा।

"हो गया होगा गुलाब! तुझे क्या लेना है इन बातों से? झगड़े तो जिन्दगी के साथ लगे ही रहते हैं, लेकिन तू क्यों झगड़ों की बात सुनती है गुलाब? जरा खिड़की खोल दे और प्यारी-प्यारी हवा को कमरे में घुसने दे। और सामने बैठकर शराब की बोतल खोल ले।" पलंग के सिरहाने से कमर लगा कर आराम के साथ बैठते हुए रामदयाल बोला।

"शराब बहुत पीने लगे हो इधर तुम।" रामदयाल के पास से उठ कर आलमारी से बोतल निकालती हुई गुलाब बोली, "मुझे पिलाने में कोई एतराज़ नहीं, बल्कि और खुशी ही हासिल होती है। मुझे तो खुदा ने पैदा ही तुम्हारे लिए किया है दीवानजी!"

रामदयाल को इधर कुछ दिन से गुलाब की बातें सुन-सुन कर ही गुलाबी नशा होने लगता है। और फिर उसके हाथ से जाम लेकर पीने पर तो वह स्वर्ग में पहुँच जाता है। जिन्दगी में मज़ा-ही-मज़ा है बस, यही उसे दिखलाई देता है।

कमरे में इस समय उसके सामने शराब है, गुलाब है और वह खुद है। दुनियाँ की कोई रुकावट, कोई कमजोरी, कोई चिंता, कोई शर्म, कोई हया, कोई दुनियांदारी उसे छू तक नहीं गई है।

जिन्दगी का यह मज़ा उसे उसकी पुलिस काँस्टेबिली ने दिया है, यह बात भी इस समय उसके खयालातों की दुनियाँ से दूर हट चुकी है।

"प्यारी गुलाब ! तू कितनी मीठी है, यह भला तुझसे क्या कहूँ मैं ?" नशे में चूर रामदयाल बोला।

"और तुम क्या कुछ कम मीठे हो दीवानजी ?" उसी अंदाज़ के साथ गुलाब बोली।

नौजवान रामदयाल गुलाब की आँखों की पुतलियों में उतर आया। गुलाब का दिल इस समय खिला हुआ है। यों एक पेशेवर नाँचने वाली है वह, लेकिन रामदयाल के जिस्म की बनावट, उसकी फ़य्याज़-दिली और मोहब्बत ने उसे अपने वश में कर लिया है।

गुलाब की अम्मी ने मरते वक्त जो नसीहत गुलाब को दी थी, वह यह थी कि कभी किसी तमाशबीन से इश्क न करना। इस समय गुलाब अपनी अम्मी की नसीहत को छोड़ कर इश्क के खेल खेल रही है।

रामदयाल भी गुलाब की ख़ातिरदारी का गुलाम बनता जा रहा है और उसके दिल में गुलाब के लिए जगह भी बन चुकी है, लेकिन उसकी जिन्दगी के दो पहलू अलग-अलग चल रहे हैं। जिन्दगी का जो पहलू गुलाब के निकट आया है उसमें उसके खांदान की इज़्ज़त, जात-बिरादरी की बंदिशें, बाप, चचा, ताया, माँ और अन्य रिश्तेदारों का कहीं पर नामोनिशान भी नहीं है। इन्हें पूछ कर रामदयाल की जिन्दगी का यह पहलू नहीं पनपा है। रामदयाल की जिन्दगी के इस पहलू में इस समय सिर्फ गुलाब और रामदयाल ही हैं।

इनके पारस्परिक मेल-मिलाप को कोई रोकने वाला नहीं है। दोनों के बीच में रखी है शराब की बोतल, जो दोनों को और भी प्यार के साथ एक-दूसरे से आबद्ध करने वाली है।

"रामदयाल का दिल तूने ही हिलाया है गुलाब ! रामप्यारी के साथ मैंने लाख सुलूक किये और उसने लाख अपने हुस्न का जादू मुझ पर फेंका, लेकिन सच जान ले गुलाब कि कभी उसका मुँह चूम लेने को भी मेरी तबियत नहीं चाही ।"

रामप्यारी नाचने वालियों के इस बाजार में गुलाब से बढ़ी-चढ़ी ही है । उसकी निन्दा रामदयाल के मुँह से सुनकर गुलाब को बेहद खुशी हासिल हुई । वह रामदयाल के पास को सिमटकर बोली, "दीवानजी ! मैं आपके अहसानों से बहुत दब चकी हूँ । अब और तारीफ़ करके मुझे शरमिन्दा न कीजिये । लौंडी हूँ मैं तो आप आपकी ?"

इस बाज़ार की चौकी का मालिक आजकल रामदयाल है और वैसे तो वह आज शहर-कोतवाल ही है मेरठ का । उसके बिना हिलाये पत्ता भी नहीं हिल सकता और उसके एक इशारे पर शहर में तूफ़ान आ सकता है ।

इसी समय रामदयाल को खयाल आया कि एक वार कोतवाली की भी खबर ले आये कि क्या कुछ गुल खिला दिया है हातमसिंह ने ।

गुलाब से ठंडा पानी मंगवाकर रामदयाल ने मुँह-हाथ धोये और फिर कुल्ला करके एक नया बीड़ा पान का दाढ़ के नीचे रखते हुए बोला, "अब जरा काम पर जाना है मुझे । कह नहीं सकता रात को किस समय तक लौटना हो । तुम सो जाना । मेरा इन्तज़ार करने की जरूरत नहीं है गुलाब !"

"बस ये ही बातें न किया करो दीवानजी ! जिस वक्त भी आना हो, आपको दरवाजा खुला मिलेगा और मैं आपकी खातिरदारी के लिए हाज़िर मिलूँगी ।" गुलाब बोली ।

रामदयाल गुलाब की बात का कोई जवाब न देकर कमरे से नीचे उतर गया ।

: ५ :

कोतवाल हातमसिंह ने आज कांग्रेस के जुलूस पर क़हर बरपा कर दिया। कितने ही लोग घोड़ों की टापों के नीचे कुचले गये। औरतों को पुलिस के ज़ोरावर सिपाहियों ने बिना शरमोहया के सड़कों पर घसीटा, नौजवान लड़कों पर कड़ाकड़ डंडे बरसाये गये। शहर में कोहराम मच गया। भय से लोगों के कलेजे काँप उठे।

कोतवाल हातमसिंह अपनी पूरी नौकरी का इनाम इसी मौके पर कलक्टर साहब और एस. पी. साहब को खुश करके पा जाने के फिराक़ में थे। वह अपनी करनी में कोई चूक रहने देने वाले नहीं हैं। कांग्रेस की तहरीक को मेरठ से उखाड़ फेंकने का उन्होंने अपने मन में तहइया कर लिया है।

मारपीट के बाद ज़ोरदार धर-पकड़ शुरू हुई। रात को बहुत से घरों पर पुलिस ने छापे मारे और बहुत से नौजवान लड़के और लड़कियों को हवालातों में बंद कर दिया गया। पुलिस के कारकुनों को इस समय शहर के अपने दुश्मनों से काँटे निकालने का अच्छा खासा अवसर मिल गया। सिपाहियों ने भी उन सभी लोगों से बदले लिये जो उनकी रोज़ाना की आमदनी में रुकावट पैदा करते हैं।

रामदयाल शराब में मस्त गुलाब के कमरे से उतर कर कोतवाली में पहुँचा। कोतवाल हातमसिंह अभी-अभी शहर के गश्त से लौटे थे। रामदयाल के आने की सूचना पाकर तुरन्त बाहर निकल आये और फिर उसे साथ लेकर कोतवाली की ऊपरी मंजिल में चले गये, जहाँ उन्होंने अपना निजी दफ्तर बनाया हुआ है। जब कोई राज़ की बात करनी होती है तो वह अपने इसी दफ्तर में बैठ कर करते हैं।

"कहिये कोतवाल साहब! काम कुछ करके दिखाया या नहीं रामदयाल ने? सब हवालातें ठसाठस भर दीजिये गिरफ्तारियाँ करके। तमाम शहर में सनसनी फैल जाये। फिर कोई हरामज़ादा कांग्रेस के जुलूसों में जाने की हिम्मत नहीं करेगा और जो लोग हवालातों में बन्द हो गये हैं, वे सभी

कुछ-न-कुछ कोतवाल साहब को भेंट देकर ही जायेंगे यहाँ से।" रामदयाल ज़रा कुर्सी पर बैठता हुआ बोला।

'काम तो तुमने लाजवाब किया है रामदयाल! मुझे तुमसे ऐसी ही उम्मीद थी। अब इस मौके से फ़ायदा उठा लेने की बात है। कलक्टर साहब और एस. पी. साहब तो दिल से बहुत ही खुश होंगे इस हादसे से। उन्होंने तो पहले ही कड़ाई के साथ हर मामले को दबाने का हुक्म दिया हुआ है।"

"क्यों नहीं होंगे भला कोतवाल साहब? लेकिन ज़रा अफ़सरान को यह भी मालूम हो जाना चाहिए कि उनकी इस खुशी का पौदा रामदयाल के हाथों से लगाया गया है।" रामदयाल मूँछें चढ़ाता हुआ बोला।

"ज़रूर-ज़रूर।" हातमसिंह ने कहा। "रामदयाल तुम्हारा नाम हम सबसे पहले लेंगें कलक्टर और एस. पी. साहब के सामने। और वायदा नहीं करते, लेकिन हो सकता है कि हम तुम्हें काँस्टेबिल से मुंशी के दर्जे पर भी भिजवादें।"

मुंशीगीरी की बात सोचकर रामदयाल को अपने दीवान होने में कोई दिक्कत दिखाई नहीं दी। बात तो हमेशा वह एक दर्जा आगे की ही सोचता आया है।

"ये सब बातें आप जानें कोतवाल साहब!" मन-ही-मन लड्डू फोड़ता हुआ रामदयाल बोला। "मैं तो अपने काम-से-काम रखता हूँ! अब देखिये शहर के दुधाल लोगों को कैसे आपके सामने ही रामदयाल दुह-दुह कर आपकी दुहावनी भरता है। मरी-गिरी भी दस-पन्द्रह हज़ार की गोली बनवा ही देगा यह मामूली-सा काँग्रेस का जुलूस भी।"

"यह सब कुछ तुम जानो रामदयाल! हमने तो हवालातों को मुलज़िमों से ठसा-ठस भर दिया है और शहर के काफ़ी आसूदा लोगों के घरों पर छापा मारा है।" कोतवाल हातमसिंह ने कहा।

देखते-ही-देखते कोतवाली के सामने लोगों का हुजूम जुड़ना शुरू हो गया। कुछ अपने बेटों के लिए चीख-पुकार कर रहे हैं तो कुछ अपने और सम्बन्धियों के लिए।

कुछ लोग वहाँ ड्यूटी पर लगे सिपाहियों से पूछते हैं, "हमारा बेटा काँग्रेस के फेर में आकर पकड़ा गया है। उसके बारे में भला किससे मिलें हम?"

ऐसे लोगों को काँस्टेबिलों से यही जवाब मिलता है, "देखो भय्या, तुम्हारे भले की बात बतलाते हैं। तुम जाकर रामदयाल से मिलो। वही तुम्हें सही रास्ता सुझा सकता है। उससे जल्द तुम्हारा काम कोई नहीं करा सकता।" गम्भीरतापूर्वक कहा।

फिर उन लोगों ने रामदयाल की खोज की, और रामदयाल उनसे ठसके के साथ मिला। उसका सबसे एक ही सवाल है, "अपने बेटे को बचाने के लिए कुछ पैसा भी खर्च कर सकते हो जनाब ! या कोरा सलाम ही झुकाने आये हो यहाँ ?"

"हम सब बात के लिए हाजिर हैं सरकार ! लड़के ने बड़ी नालायकी की जो कांग्रेसियों के फेर में पड़ गया।" मिलने वालों ने कहा।

"तो फी आदमी सौ-सौ रुपया खर्च होगा भय्या ! अपना-अपना इन्त-ज़ाम करके आ जाओ और आपके लड़कों को आगे कभी ऐसी हरकत न करने के लिए माफी माँगनी होगी।"

रामदयाल ने एक दिन में पचास सौदे बनाये। दूसरे दिन उसने सौदे की दर में काफी कमी कर दी। अब केवल पच्चीस रुपये देकर भी कोई अपने किसी रिश्तेदार को छुड़वा सकता है। आखीर में दस-दस रुपये में भी राम-दयाल ने कुछ गरीबों पर दया करके उन्हें हवालात से छुड़ाया। दो-चार को, जो ज्यादा गरीब देखे, उन्हें बिना पैसा लिए भी हवालात से उसकी सिफ़ारिश पर मुक्त कर दिया गया।

जहाँ रुपये लेकर छोड़ने की बात मेरठ शहर में फैली वहाँ मुफ्त छोड़ देने की भी चर्चा कुछ कम नहीं हुई। रामदयाल की सभी ने तारीफ़ की। शहर में उसकी नामवरी हद दर्जे को पहुँच गई। शहर के ग़रीब-अमीर सभी की ज़बान पर रहमदिल रामदयाल का नाम चढ़ गया।

कोतवाल हातमसिंह के दमन-चक्र के सामने मेरठ का वातावरण एक-दम मौन हो गया। जो लोग माफ़ी माँग कर चले गये, वे चले गये। बाकी का चालान कर दिया गया। पकड़े जाने वालों में तमाशबीनों के अलावा कुछ खुद्दार लोग भी थे जो देश-भक्ति के लिए जुलूस में शामिल हुए थे और पुलिस की लारी में बैठकर जेल की तरफ जाते हुए भी वे उसी जोश के साथ नारे लगा रहे हैं जिस जोश के साथ शहर की सड़क पर उन्होंने कल पुलिस के डंडों से पिटते हुए नारे लगाये थे।

इन लोगों ने हज़ार तरह की परेशानियाँ उठाईं और फिर भी माफ़ी नहीं माँगी, जेल जाना पसन्द किया।

इसी दौरान में रामदयाल एस. पी. साहब की कोठी पर भी गया। मेम साहब ने अपनी नई सीखी हुई लड़खड़ाती हिन्दुस्तानी भाषा में पूछा, "वैल रामडयाल आज टुमारा शेहर का केशा हाल-चाल ऐ। शुना ऐ टुमारा गाँडी बाबा का लोगों ने बौट बडमाशी फलाया ऐ। अमारा अफ़सर लोग भी बौट जोर से लरा। शुना है होश खेराब कर डिया गाँडी का लरने वाला का।"

"बिलकुल खराब कर दिया मेम साहब, बिलकुल खराब। अब एका-एकी कोई मेरठ में गाँधी और कांग्रेस का नाम लेने की भी हिम्मत नहीं करेगा। कोतवाल हातमसिंह साहब ने सब बदमाशों को ठीक कर दिया है। क्या मजाल किसी की जो उनके सामने सिर उठा सके।" सीना उभार कर शराब की बोतल मेम साहब की मेज पर रखता हुआ रामदयाल बोला।

"टुम बोट अच्चा आडमी ऐ रामडयाल?" शराब की बोतल पर नजर जाते ही मेम साहब की जबान से निकला। "अम शाहब को वोलकर टुमको बौट जल्द टरक्की डिलायगा।"

यह बात मेम साहब रामदयाल से हर बार जब वह शराब की वोतल उन्हें पेश करने आता था, कहती थीं; लेकिन आज तक, और चाहे जो भी हो, रामदयाल काँस्टेबिल से मुंशी के पद तक नहीं पहुँच पाया।

रामदयाल ज्यों-ही शराब की बोतल वहाँ रखकर कोठी से बाहर होता था त्यों ही मेम साहब अपने वायदे को भूल जाती थीं।

एस. पी. साहब जब तशरीफ़ लाते थे तो मेज पर खाने से पहले दो पेग रखे हुए होते थे।

ड्यूटी से आफ़ होते ही साहब मेम-साहब से मिलते, प्यार की बातें करते और सीधे मेज पर रखे जामों के पास चले जाते। फिर जाम-पर-जाम उड़ेलते-उड़ेलते दोनों चिरानन्द की सीमा में प्रवेश कर जाते।

बेचारे रामदयाल की तरक्की की बात इस आनन्द की दुनियाँ में न जाने कहाँ दबी-दबाई रह जाती।

आज रामदयाल ने जरा हिम्मत करके कहा, "मेम साहब अगर नाराज़ न हों तो आज एक गुस्ताखी करने की हिम्मत करूँ।"

"जरूर करो, जरूर करो रामडयाल, टुम गुस्टाकी जरूर करो। अम टुमको गुस्टाकी करने का इजाजत डेटा ऐ।" मेम साहब ने कहा।

"मैं जब भी आपके पास आता हूँ तो हमेशा ही आप मेरी तरक्की कराने का वायदा करती हैं लेकिन साहब ने आज तक कभी खादिम की तरक्की की तरफ ध्यान ही नहीं दिया।" रामदयाल निहायत डरता-डरता बोला।

"अम शमझा रामडयाल! टुम टीक केटा ऐ। शाब बेचारा ही क्या करटा। गलटी अमारा ऐ। सच केटा ऐ रामडयाल अम खुड बूल जाटा ऐ टुमारा चला जाना के बाद। फिर जब टुम आटा ऐ टो बाट फिर याड आटा ऐ। अब अम जेरूर-जेरूर टुमारा सिफारिश करेगा।"

रामदयाल की हिम्मत अब अंग्रेज अफ़सरों के सामने भी बातचीत करने की खुलती जा रही है। आज मेम साहब से उसने अपनी तरक्की की बात दोहरा कर अपने अन्दर एक ज़बरदस्त मज़बूती का अहसास किया।

रामदयाल मेम साहब को सलाम झुका कर बँगले से चला आया।

× × × ×

इधर जब से रामदयाल खान अब्दुलबेग की चौकी पर आया है, चौकी की हालत सुधर गई है। चौकी के सामने जहाँ पहले ऊजड़ पड़ा रहता था, रामदयाल ने एक बागीचा लगवा दिया है। इधर-उधर से फूटी-टूटी ईंटों और सीमेन्ट को भी उसने अपने इलाके के किसी ठेकेदार से कहकर ठीक करा दिया है। चौकी पर सफेदी भी उसने कराई है और वहाँ पर बैठने वालों की चौकड़ियाँ भी अब कई-कई किस्म की लगने लगी हैं। कई-कई किमाश के लोग अब रामदयाल को पूछने के लिये आते हैं।

सरकारी इमारत को भी रामदयाल अपनी इमारत समझता है। जहाँ रहता है सफ़ाई के साथ रहता है। आखिर यह चौकी उसका ठिकाना है। इसी की बदौलत तो वह यहाँ सब दुनियाँ भर का खेल खेलता है।

रामदयाल के आने से चौकी की आमदनी पहले से दस गुनी बढ़ गई। जिन सिपाहियों को कभी कुछ भी नसीब नहीं होता था, उन्हें भी अब अपने वेतन से तिगुने-चौगुने रुपये ऊपर की आमदनी से मिल जाते हैं। सभी रामदयाल की तन्दुरुस्ती की दुआएँ देते हैं। सन्ध्या को चौकी के सामने छिड़काव किये हुए लान में जब वह खटिया डाल कर बैठता है तो उसका ठाट ही निराला रहता है। तहमद मारे, सिर पर चार खाने का लाल अँगोछा बाँधे वह चारपाई पर बैठता है और फिर किसी को हुक्का ताज़ा करके लाने का हुक्म फ़रमाता है।

आज रामदयाल के बैठते ही अब्दुल बेग भी वहीं अपना मूढ़ा डलवा

कर आ जमे। चौकी पर आज ये दोनों ही थे केवल। मुस्करा कर रामदयाल ने पूछा, "कहिये दीवान जी ! मेरे यहाँ आने से आप नाराज़ तो नहीं हैं ? आपकी नाखुशी की तो कोई बात मैंने नहीं की ?"

"नाराज़ ! नाराज़ कहोगे रामदयाल ! सच पूछो तो चौकी वालों के बाल-बच्चे भी दुआ दे रहे हैं तुम्हारी यहाँ आमद को। इस वीरान पड़ी चौकी को आबाद कर दिया तुमने। सूखे पड़े बंजड़ को गुलशन बना दिया।" शायराना अन्दाज़ के साथ शेख अब्दुल बेग ने जवाब दिया और फिर अन्दाज़ के साथ अपनी गुम्फेदार दाढ़ी दोनों हाथों से सहलाई।

"तो कोई नाराज़ नहीं है न रामदयाल से दीवान जी ! बस यही बात सुनने के लिये हर वक्त मेरे कान तड़पते रहते हैं। यह ज़िन्दगी जितनी भी औरों के काम आजाये उतना ही अच्छा है। रामदयाल यारों का है और यारों पर ही उसे हमेशा नाज़ रहा है।

सच कहता हूँ दीवान जी, आज तक मेरे साथ जो एक बार बैठ कर शराब पी चुका है, उसने कभी मुझे ज़िन्दगी में धोखा नहीं दिया और मैंने भी कभी उसको नहीं भुलाया। जिसका मेल-मिलाप मुझसे शराब की बोतल पर होता है उसे मैं अपना छोटा या बड़ा भाई समझता हूँ।"

"बहुत खूब रामदयाल, बहुत खूब ! यही तो यार की खूबी है। जाम-से-जाम लड़ा कर जो यार बनाया जाता है वह भाई से क्या कम है ? साथ-साथ पीने की वह शक्ल ही ऐसी होती है जो दिमाग से कभी भुलाई नहीं जा सकती।"

"लेकिन दीवान जी ! अब ऐसा लग रहा है कि हमारा और तुम्हारा साथ छूटने वाला है।" गम्भीरता के साथ रामदयाल ने कहा। "कोतवाल साहब रिटायर होने वाले हैं। आखिरी दिनों में हमने तो उनका साथ निभा दिया। दो साल में एक लाख की गोली बनवा दीं। अब मौज के साथ रिटायर हों और उस रुपये से कुछ भी कारबार करें, या बैठ कर खायें।

यह सब काम याराने में किया है मैंने। कसम दिला लो जो आज तक एक पैसा भी कभी मैंने अपने घर भेजा हो।"

"तुम वाक़ई यार हो रामदयाल ! यह मैं नहीं कह रहा हूँ, सारा महकमा कहता है, हर अफसर और हर कांस्टेबिल कहता है। कोतवाल हातमसिंह के साथ तुमने जो कुछ भी सुलूक किया है, उसका बदला वह तीन जनम में भी नहीं उतार सकते।"

"बदला उतरवाने के लिये रामदयाल ने कभी कुछ नहीं किया दीवान जी !" और भी गम्भीर होते हुए रामदयाल बोला। "हाँ, तो मैं आपसे कह रहा था कि अब हमारा और आपका मेल शायद टूटने वाला है।"

"ऐसा मत कहो रामदयाल ! अगर कुछ दिन और बने रहोगे चौकी पर तो सभी कांस्टेबिल दुआ देंगे तुम्हें। बेचारे सिपाहियों की तो ज़िन्दगियाँ ही सुधर गयीं तुम्हारे यहाँ आने से। बेचारे कर्ज़ में दबे जा रहे थे। तुम्हारे सहारे से उनके घर-बार बच गये, नहीं तो कर्ज़ों में नीलाम हो जाते।"

रामदयाल ने खान अब्दुल बेग के कान में कुछ मुस्कराते हुए कहा तो अब्दुल बेग खुशी से उछल पड़े और हाथ मिलाते हुए बोले "मुबारक हो पुलिस की दीवानी रामदयाल ! मैं तहेदिल से तुम्हारी तरक्की पर खुशी का इज़हार करता हूँ।"

इसके बाद दोनों बाज़ार की सैर को निकल गये। जब रात का झुट-पुटा हुआ तो दोनों गुलाब के कमरे पर जा पहुँचे।

गुलाब ने दोनों की जी खोल कर ख़ातिरदारी की।

पिछले महीने की आमदनी का रुपया आज ही रामदयाल ने तक्सीम किया था। दीवान अब्दुल बेग की जेब में सौ रुपये का करारा पत्ता था। इसीलिए रामदयाल उसे आज खास तौर पर गुलाब के यहाँ लाया है।

रामदयाल को जहाँ अपने साथियों का ख़याल रहता है वहाँ वह गुलाब को भी कभी नहीं भूलता। सबकी नेक कमाई में वह गुलाब का भी कुछ-न-कुछ हिस्सा समझता है।

: ६ :

सन्ध्या समय जब रामदयाल कोतवाल हातमसिंह से मिलने गया तो वह रामदयाल से मुस्करा कर हाथ मिलाते हुए बोले, " रामदयाल लो अब हम तुम्हारी पुलिस की नौकरी से स्तीफ़ा दे रहे हैं। एक लाख रुपया जो तुमने कमवा दिया है बस वही हमारी जमा-पूँजी है। उसी से अब सोचा है कि खेती का फ़ार्म चलाया जायगा।"

"लेकिन आपने अपने रिटायर होने की बात पहले मुझसे कभी नहीं कही।"

"कही कैसे नहीं रामदयाल ! तुमसे तो साफ-साफ कहा था कि मैं अब स्तीफ़ा देना चाहता हूँ। अगर नौकरी करना चाहूँ तो अभी और पाँच साल कर सकता हूँ लेकिन अब नौकरी करने की इच्छा ही नहीं होती।

और हाँ रामदयाल, तुम्हें मैंने एस० पी० साहब से कहकर सीधे ही दीवानगिरी पर भिजवा दिया है। उर्दू तुम्हें अच्छी-खासी आती ही है। और फिर ओहदा खुद आदमी को तजुरबेकार बना देता है। जैसा-जैसा वक्त आता है वैसी-वैसी अक्ल पैदा हो जाती है।

मेम साहब ने भी तुम्हारे लिये साहब से बोला है। एस० पी० साहब खुद भी तुमसे बहुत खुश हैं।"

रामदयाल ने याराना नज़र से कोतवाल हातमसिंह के चेहरे पर देखा और कृतज्ञता प्रकट करते हुए बोला "छोटा भाई समझा है, मैंने अपने को आज तक आपका। बड़े भाई का मैं अहसानमन्द हूँ। रामदयाल को नौकरी छोड़ने के बाद भी आप वैसा ही पायेंगे। आपके काम के लिए वह हज़ार काम छोड़ कर भी आयगा।"

"मुझे यकीन है रामदयाल !"

हातमसिंह यों रामदयाल से लाभ उठाते थे लेकिन वह दिल से उसकी बहादुरी, होशियारी और सचाई के क़ायल हो गए थे।

रामदयाल ने कभी किसी काम में इन्हें धोखा नहीं दिया। कोतवाल हातमसिंह का जो काम कोई दारोगा तक नहीं कर सका वह काम रामदयाल ने करके दिखा दिया।

रामदयाल का हर काम सफ़ाई के साथ पूरा होता है। वह लेने वाले

और देने वाले, दोनों को खुश कर देता है। किसी के मन में भी बाद के लिए कसक नहीं रहने देता।

रामदयाल को दीवान बना कर सबसे पहले उसी चौकी पर तायनात किया गया जिस पर वह कांस्टेबिल के बतौर काम कर रहा था और खान अब्दुलबेग को किसी क़स्बे की चौकी पर भेज दिया गया। खान अब्दुल बेग खुद भी यहाँ से कहीं बाहर जाना चाहते थे क्योंकि शहर में हर वक्त अफ़सरों का डर लगा रहता है।

मेरठ में आजकल मुजरों की भरमार हो रही है। जहाँ शादी विवाहों के मौकों पर नाच-गाने होते हैं, वहाँ अब बच्चे होने, नौकरी लगने, और अफ़सरों के सही सलामती से नौकरी ख़त्म करने पर भी जशन मनाये जाते हैं।

कोतवाल हातमसिंह को अभी परसों ही बिदाई-पत्र मेरठ पुलिस की तरफ़ से दिया गया है और उसमें अच्छा-खासा एक शानदार मुजरा भी हुआ है। शहर की सभी उम्दा नाच-गाने वालियों ने उसमें हिस्सा लिया है।

आज दीवान रामदयाल असली तरीके पर दीवान रामदयाल बना है। अभी तक कांस्टेबिल होने पर भी उसकी इज्जत बढ़ाने के लिए उसे दीवान जी कह दिया जाता था लेकिन आज अफ़सर के हुक्म से रामदयाल पुलिस की चौकी का दीवान बना है।

दीवान एक अफ़सर का ओहदा है, जिस पर बैठने का हुक्म पाकर रामदयाल का दिल न जाने आस्मान में कहाँ-से-कहाँ पहुँच गया।

रामदयाल के पिता ने एक दिन उसे प्यार से कहा था, 'बेटा रामदयाल तू एक दिन ज़रूर दीवान बनेगा।"

दीवान रोज़नामचे का मालिक होता है। उसके हाथों में खुदा की कलम होती है। उसके लिखे को खुदा के फरिश्ते ही बदल सकते हैं। दुनियाँ की अदालतों के लिए वह खुदा का फ़रमान माना जाता है।

रामदयाल कल तक ज़बान का ही मालिक था। ज़बान की बदौलत ही वह ये सब उलट-फेर करता चला आ रहा था। अब सरकार ने उसके हाथों में क़लम भी दे दी है और उसकी क़लम के नीचे हलाक़ किए जाने के लिये पूरे इलाके-के-इलाके को बाँध दिया है। वह खुद ही कलमा पढ़ सकता है और खुद ही क़लम चला सकता है।

चौकी पर रामदयाल पहुँचा तो कौन जाने कैसे करीमखाँ ने यह

खबर वह पहले से ही पहुँचाई हुई है। चौकी का इस समय ठाट ही निराला है। सभी सिपाहियों के हाथों में चमेली की कई-कई मालाएँ हैं और दीवान अब्दुल बेग के हाथों में गुलाब के फूलों का एक बड़ा हार है।

रामदयाल के वहाँ पहुँचने पर सबसे पहले शेख अब्दुल बेग ने आगे बढ़ कर अपनी माला पहना दी। इसके बाद और सिपाहियों ने भी रामदयाल के गले में मालाएँ डालीं।

अभी तक ये लोग पूरी तरह से बैठ भी नहीं पाये कि सेठ दामोदर-प्रशाद के मुनीम जी चार थाल मिठाई के लेकर आ गये। मिठाई सामने रख कर मुनीम जी बोले, "सरकार मिठाई भेजी है सेठ जी ने और आपकी तरक्की पर मुबारिकबाद भेजा है।"

"बहुत अच्छा मुनीम जी! मिठाई करीमखाँ को दे दीजिये और सेठ जी को हमारी राम-राम कहिये। इधर कई दिन से मुलाकात नहीं हुई सेठ जी से।" रामदयाल ने कहा।

"सेठ जी आज ही बाहर से आये हैं। आते ही आपकी तरक्की की खबर मिली तो सच जानिये दीवान जी, बिला कपड़े उतारे पहले मिठाई का इन्तज़ाम करके मुझे इधर भेजा है और तब जनानखाने में गये हैं।" मुनीम जी ने कहा।

दीवान रामदयाल ने मिठाई चौकी के सिपाहियो में तकसीम कर दी और एक थाल कोतवाल हातमसिंह के यहाँ भिजवा दिया।

दीवान रामदयाल के दीवान होने की खुशी में सेठ दामोदर प्रशाद ने एक शानदार जशन मनाया। इस जशन में रामदयाल ने एस० पी० साहब को भी बुलाया। मेम साहब ने भी जशन में आने का वायदा किया। कोत-वाल हातमसिंह तो पाँच दिन बाद भी यहाँ केवल इसी जशन में शामिल होने के लिये ठहरे हुए हैं। सामान उनका सब जा चुका है।

कासिममिरज़ा भी, जो मेरठ के नये शहर-कोतवाल बन कर आये हैं, जशन में शामिल हुए।

इसी जशन के दौरान में हातमसिंह ने कासिम मिरजा की मुलाक़ात दीवान रामदयाल से कराते हुए कहा, 'आपका जो काम किसी से न निकल सके उसे दीवान रामदयाल के सुपुर्द करके आप चैन की नींद सो सकते हैं। काम सोलह आने पूरा होगा।"

"क्या कहते हो रामदयाल? क्या तुम पर मैं भी कोतवाल साहब की

तरह यकीन कर सकता हूँ ?" कासिम मिरज़ा ने दीवान रामदयाल की तरफ मुख़ातिब होकर पूछा।

"कोतवाल साहब, यही तो आज तक कमाई की है रामदयाल ने। पास चाहे एक पाई न बची हो लेकिन महकमे का हर आदमी मेरी ज़बान की क़ीमत समझता है। जो बात इस जबान से एक बार हाँ होकर निकल जायगी वह नाँ नहीं हो सकती और जो नाँ बनकर निकल जायगी, वह हाँ होनी नामुमकिन है।" रामदयाल ने मजबूती के साथ कहा।

कासिम मिरज़ा ने रामदयाल के मुँह पर नज़र डाली और फिर गम्भीरता के साथ कहा, "तो हाथ मिलाओ और वायदा करो कि कभी मेरे राज़ को अपने से बाहर नहीं जाने दोगे।"

"वायदा करता हूँ।" हाथ मिलाकर दीवान रामदयाल ने कहा।

"सूखा हाथ नहीं मिलाया जाता है कासिम मिरज़ा! यह दीवान रामदयाल नहीं है, मेरा छोटा भाई रामदयाल है। इसे जब जो हुक्म दोगे वह इसके सर आँखों पर रहेगा और क्या मजाल जो इसका निशाना कभी चूक सके।" मूँछों पर ताव देकर हातमसिंह ने कहा।

हातमसिंह की इस जबरदस्त सिफ़ारिश के बाद और कुछ कहने की गुंजाइश ही नहीं रह गई।

महफ़िल आज की शानदार जमी। एस. पी. साहब और मेम साहब तो थोड़ी देर में बिदा हो गये, लेकिन कोतवाल हातमसिंह और कासिम मिरज़ा ख़ूब देर तक जमे। नाचने वाली गुलाब और रमाप्यारी दोनों ही थी जशन में। अपना-अपना कमाल पेश कर रही है और दोनों के ही साजिन्दे लोग अपने-अपने हाथ दिखा रहे हैं।

करीमख़ाँ अपनी मस्ती में आज किसी को बद ही नहीं रहा है। मस्ती में झूम-झूम कर उसकी ज़बान से यही निकला :

यार भया कुतवाल,
अब डर काहे का।

करीमख़ाँ की ज़बान पर ये शब्द आये और गुलाब ने इन्हीं दो पंक्तियों को गाना शुरू किया।

गुलाब की आवाज रामप्यारी से ज्यादा सुरीली है, लेकिन हुस्न में रामप्यारी ही दो चार नम्बर आगे है। नाचना भी रामप्यारी को गुलाब से बेहतर आता है। दोनों अपना-अपना कमाल दिखाने में जीजान से जुटी हुई हैं।

यों तमाशा देखने वालों की कमी नहीं है लेकिन जिनकी तरफ़ गुलाब और रामप्यारी की मेहरबान नजरें जाती हैं वे सिर्फ चार ही आदमी हैं, हातमसिंह, कासिम मिरज़ा, दीवान रामदयाल और सेठ दामोदर प्रशाद।

इन्हीं के सामने नई-नई अदा के साथ गाने का बंद छेड़ा जाता है और इन्हीं के हाथों से पाँच-दस रुपये के नोटों से गाने का इनाम मिलता है।

मुजरा रात के दो बजे तक चलता रहा। कासिम मिरज़ा ने घड़ी देखी तो उसमें दो बजे थे। वह सकपका कर हातमसिंह से बोले, "आज तो ग़ज़ब हो गया। तमाम रात निकल गई। दो बजे हैं।"

"यह मेरठ की कोतवाली है कासिम मिरज़ा। यहाँ तुम्हें जन्नत के नजारे देखने को मिलेंगे। जन्नत की हूरें क्या गुलाब और रामप्यारी से कुछ बेहतर होंगी तुम्हारे ख़याल से? बजे की फ़िक्र महफिल में बैठ कर नहीं करनी चाहिए।" कोतवाल हातमसिंह ज़रा और सुधर कर बैठते हुए बोले।

फिर रामप्यारी की तरफ़ मुख़ातिब होकर हातिमसिंह ने कहा, "रामप्यारी, क्या थक गई हो? तुम्हारे नये शहर-कोतवाल को नींद आने लगी। जरा एक बार ऐसा नाच नाँच दो कि इनका मन भी नाँच उठे और नींद काफ़ूर हो जाय।

"ऐसा ही लीजिये हुजूर!" रामप्यारी ने कहा और फिर सुधर कर बैठते हुए उसने अपने पैरों के घुँघरुओं को ठीक से बाँधते हुए साजिन्दों की तरफ़ देखा।

फिर तबलची की तरफ़ रामप्यारी की नजरें गईं और उसने हथेली से ताल लेते हुए कहा :

ता धिन धिन ना, ता धिन धिन ना,
ता धिन धिन ना, ता धिन धिन ना।

मजलिस में एकदम शान्ति छा गई। नृत्य का वातावरण वहाँ के वायुमंडल में आच्छादित होगया।

कासिम मिरज़ा भी जरा सुधर कर बैठ गये।

एक तरफ़ रामप्यारी नाच रही है और दूसरी तरफ़ रामदयाल का इशारा पाकर गुलाब पानों की तश्तरी लेकर कासिम मिरज़ा के पास आ पहुँची। ज़रा अदा के साथ बोली, "हुजूर पान नोश फ़रमाइये।"

"हाँ-हाँ लीजिये कासिम मिरज़ा! यह आपके इलाके में गुलाब का फूल खिला दिया है। इसकी रौनक को बढ़ाना आपका काम है। हाकिम को चाहिए कि वह अपने इलाक़े की रौनक को बढ़ाये।"

कासिम मिरजा मुस्करा कर पान लेते हुए बोले, "मेरठ के बागीचे में तो कोतवाल साहब आपने सचमुच बड़े ही खूबसूरत फूल खिलाये हुए हैं। आपकी भला मैं क्या तारीफ़ कर सकता हूँ ?"

"मेरी तारीफ़ करने की जरूरत नहीं है कासिम मिरज़ा ! तारीफ़ इस गुलाब की कीजिये।" जरा गुलाब को अपने पास बिठलाते हुए उसके चेहरे को ठोड़ी से ऊपर उठाकर हातमसिंह बोले। "तारीफ़ के क़ाबिल ये फूल हैं। जो बाग़ीचा मैंने लगाया है उसे आपके सुपुर्द कर रहा हूँ। इसकी देखभाल अब आप पर मुनहसिर करती है।"

"आपका लगाया हुआ बाग़ीचा सदा हरा-भरा रहेगा कोतवाल साहब ! अपनी ताक़त भर इसे कभी नहीं सूखने दूँगा। और नये खूबसूरत गुलाब ही इसमें खिलाने की कोशिश करूँगा।" मुस्कराते हुए कासिम मिरजा बोले।

इस मजलिस के दौरान में कोतवाल हातमसिंह ने कासिम मिरजा की मुलाकात सेठ दामोदर प्रशाद से कराते हुए कहा, "आप सेठ दिगम्बर प्रशाद के सुपुत्र श्री दामोदर प्रशाद हैं। बड़े-बड़े कारोबार हैं आपके। आपके वालिद शहर की अमन सभा के प्रधान थे और आप भी सरकार के ख़ास मददगारों में से हैं।"

"ओह, आप हैं सेठ दामोदार प्रशाद !" हाथ मिलाते हुए कासिम मिरजा ने कहा, "आपका नाम तो मैंने काफ़ी सुना है।" यों ही व्यर्थ को सेठ के पेट में बड़प्पन की हवा भरने के लिए कासिम मिरज़ा ने कहा। कासिम मिरज़ा इस तरह का बढ़ावा देने में बड़े माहिर हैं।

"अगर आपको फिर शहर में अमन-सभा बनाने के लिए कलक्टर साहब का हुक्म मिले तो आप सेठ दामोदर प्रशाद से उस काम में पूरी-पूरी मदद ले सकते हैं।"

सेठ दामोदर प्रशाद बोले, "मैं जिस लायक भी हूँ कोतवाल साहब, आपके हमेशा काम आता रहूँगा।"

इसके बाद कासिम मिरज़ा और कोतवाल हातमसिंह, दोनों एक ही कार में बैठकर चले गये। भीड़-भाड़ भी सब छँट गई।

आख़ीर में बैठे रह गये सिर्फ़ रामदयाल और दामोदर प्रशाद। दीवान रामदयाल का नशा अब टूट चुका है और उसका बदन गिरने लगा है। बाहर से करीमखाँ को आवाज़ देता हुआ बोला, "करीमखाँ, कोई

बोतल बची हो तो इधर ले आओ।"

"बची क्यों नहीं है दीवानजी ! आपके लिए तो मैंने खास तौर पर बचाकर रख छोड़ी है। वरना रात की फय्याज़ी में अगर आप दस बोतलें भी और मँगा लेते तो उनका भी कहीं पता न चलता।" करीमखाँ ने अदब के साथ कहा। रामदयाल अब उस चौकी का अफ़सर है और उसका अदब भी करना ज़रूरी हो गया है।

दीवान रामदयाल और सेठ दामोदर प्रशाद ने थोड़ी-थोड़ी शराब ली और जब उसके सरूर से उनका थकान कुछ दूर हुआ तो रामदयाल बोला, "अफ़सर हो तो कोतवाल हातमसिंह जैसा हो सेठ ! रिटायर होने पर भी आने वाले अफ़सर से वे ही ताल्लुक़ात बना दिये जो अपने से चले आ रहे थे।"

"कोतवाल हातमसिंह के क्या कहने ! जिस ठसके की कोतवाली हातमसिंह मेरठ में कर गये वैसी आज तक किसी ने नहीं की। फिर सब से बड़ी बात यह है कि बेचारे किसी के बुरे में कभी नहीं रहे। अपनी चार पैसे की आमदनी तो दुनियाँ में सभी करते हैं और उसे मैं पाप भी नहीं मानता। आखिर अपना और अपने बाल-बच्चों के पेट भरने का तो सभी को हक़ है।" निहायत संजीदगी के साथ सेठ दामोदर प्रशाद ने कहा।

"यही बात है सेठ दामोदर प्रशाद, बिलकुल यही बात है। कोतवाल हातमसिंह रिआयापरवर अफसर थे। मेरा कितना खयाल रखते थे, यह क्या तुमसे छिपा हुआ है ?" रामदयाल बोला।

"अब दीवान रामदयाल ! तुम्हें कासिम मिरज़ा को अपने हाथों में रखने की कोशिश करनी चाहिए।" सेठ दामोदर प्रशाद बोले।

"कोशिश मुझे करनी चाहिए ! आखिर यह क्यों ? कासिम मिरज़ा मुझसे बनाकर मालामाल हो सकते हैं। मुझसे बिगाड़खाता करके अगर कोई अफ़सर यहाँ से दो कौड़ी भी कमाले तो मेरा नाम रामदयाल नहीं।" अकड़ के साथ दीवान रामदयाल बोला और अपने सामने रखी बोतल से थोड़ी शराब लेकर उसमें सोड़ा मिलाते हुए हलक़ से नीचे उतार ली।

"अफ़सर से जहाँ तक भी बन सके बनाकर रखने में ही फ़ायदा है।"

"यह मैं जानता हूँ। अपने काम में मैं किसी की राय नहीं लेता सेठ ! वक्त खुद बतलाता है कि उस समय क्या करना चाहिए। यों देखती आँखों पहाड़ से टकराने का रामदयाल को भी शौक नहीं है।" इतना कहकर दीवान रामदयाल उठकर बाहर चला गया।

करीमखाँ को बाहर दीवान रामदयाल ने घूमते देखा। उसे देखकर

रामदयाल बोला, "अरे करीमखाँ, तुम अभी तक यहीं घूम रहे हो। चौकी पर क्यों नहीं चले गये ?"

"चौकी पर भला कैसे चला जाता दीवान जी ? आपको यहाँ अकेला कैसे छोड़ देता ? यों आप सेठ जी को अपना यार समझते हैं, लेकिन मैं ऐसा नहीं समझता। जिस आदमी के हाथों में आप एक बार हथकड़ियाँ पहना चुके हैं उसका यार बन जाना बिलकुल नामुमकिन है।" करीमखाँ ने बड़ी संजीदगी से कहा।

रामदयाल खरामा-खरामा करीमखाँ की बात पर ग़ौर करता हुआ उसके साथ चौकी की तरफ़ चल दिया।

सेठ दामोदर प्रशाद वहीं सोफ़े पर बैठे शराब के नशे में झूमते रह गये।

: ७ :

रामदयाल ने चौकी का दीवान होकर शान के साथ वहाँ का रोज़-नामचा सँभाला। पुलिस के रोज़नामचे की ताक़त का अन्दाज़ कभी-कभी रामदयाल अपनी कांस्टेबिली के जमाने में भी लगाया करता था। रोज़नामचे में लिखी बात को खुदा भी ग़लत साबित नहीं कर सकता, यह उसका ख़याल था और उसी के आधार पर अदालत में सेंकड़ों को जेल जाते और फाँसी के तख्ते पर झूलते हुए वह सुन चुका था।

रामदयाल कभी-कभी रौब में आकर करीमखाँ से कहा करता था "करीमखाँ! मैं आज के दीवान लोगों को बेवकूफ़ समझता हूँ। ये लोग अपनी ताक़त का सही अन्दाज़ भी नहीं लगा सकते। देखना, किसी दिन जब रोज़-नामचा मेरे हाथों में आयगा, तो मेरा इलाका तो क्या, मेरे अफ़सरान भी मेरे इशारे पर नाँचते दिखाई देंगे।"

करीमखाँ पूँछता, "भाई रामदयाल! आख़िर रोज़नामचे में ऐसी क्या करामात है जो सब अफ़सरों को तुम्हारा गुलाम बना देगी और सब तुम्हारे सामने नाँचते नज़र आयेंगे।"

रामदयाल जवाब देता "यह तुम नहीं समझ सकोगे करीमखाँ! यह मेरे समझने की बात है। तुम मज़ा किये जाओ बस! जब तक राम-दयाल का साया तुम्हारे ऊपर है तब तक तुम्हारे कहे को उलाँकने वाला मेरठ शहर में पैदा नहीं हुआ।"

आज दीवान रामदयाल के हाथों में रोज़नामचा देख कर करीमखाँ बोला, "आज तो रोज़नामचे के मालिक बने बैठे हो दीवानजी? कभी इसी रोज़नामचे के बारे में आप कहा करते थे कि इसमें बड़ी-बड़ी करामातें हैं।"

"रोज़नामचे की करामातों का अब तुम्हें कुछ-कुछ पता चलेगा करीमखाँ! जब मेरा क़लम रोज़नामचे पर चलेगा तो तुम्हारे क़दम समझ लो कि किसी मुलज़िम की तालाश में बढ़ेंगे और जितने भी ज्यादा मुलज़िम यह रोज़नामचा तैयार करता जायगा उतनी ही अपनी आमदनी भी बढ़ती जायगी। समझे करीमखाँ! लेकिन तुम समझने की कोशिश भी न करना। तुम बस यही करना कि जब मैं तुम्हें इस बार बाहरी आमदनी के रुपये दूँ तो

उनसे हमारी भाभी जान को एक नया सिलवार और रेशमी कुर्ता सिलवा देना।" मुस्कराकर रामदयाल ने कहा।

करीमखाँ उम्र में रामदयाल से एक-दो साल बड़ा है, लेकिन उसकी बीवी अभी नई-नई है। न जाने कहाँ से अपना पुलिस का दाँव-पेंच भिड़ाकर वह ले आया है। करीमखाँ की बीबी पर एक दिन दीवान रामदयाल की भी हल्की-सी नजर चली गई। 'बीवी हसीन लाया है करीमखाँ कहीं से।' उसकी जबान से निकला और उसी दिन से वह करीमखाँ से बातचीत के दौरान में अक्सर मजाकिया ढंग से उस पर ढाल कर कुछ-न-कुछ कह ही देते हैं।

करीमखाँ रामदयाल के इस तरह कहने को अपने ऊपर दिखलाया गया यार की मोहब्बत का नमूना समझता है। उसने भी मुस्कराकर जवाब दिया, "दीवानजी आप दीजिये तो सही रुपया। फिर जिस मद में भी आप कहेंगे खर्च कर दूँगा।"

दीवान रामदयाल परमात्मा को मानने वाले कट्टर हिन्दू हैं लेकिन यारबाशी में मुसलमानों के साथ भी मेल-मिलाप उनका अव्वल दर्जे का है। हिन्दू और मुसलमान सभी से घुल-मिलकर उनका खाना-पीना चलता है।

पुलिस-चौकी पर तायनात होते ही दीवान रामदयाल ने अपने इलाके में तीन जुआ-खेलने के नये अड्डे क़ायम कराये और इनमें से एक अड्डा कल्लू पहलवान को खुलवाया। सट्टे के काम में भी तरक्की हुई। नाँचने वालियों के बाजार में रात को तमाशबीनों की भी रौनक़ बढ़ी। शहर के रईस लोगों के नौजवान लड़कों में नाँच-गाना सुनने और ऐशपसंदी की आदत पैदा हुई। नाँचने-गाने के हुनर को तरक्की देना दीवान रामदयाल अपना फ़र्ज समझते हैं।

दीवान रामदयाल अपने मन में समझते हैं कि वह मेरठ की रिआया के साथ नेक व्यवहार कर रहे हैं। वह कहा भी करते हैं कभी-कभी करीमखाँ से, "करीमखाँ मैं जो कुछ भी करता हूँ वह औरों की भलाई के लिए ही करता हूँ। अमीर लोगों का पैसा ग़रीब लोगों तक कैसे पहुँच जाये, मैं इसी तालमेल में रहता हूँ। बेचारी नाँचने-गाने वालियों के पास तक अगर ये रईसों के छोकरे न जायें तो वे बेचारी कैसे जिन्दा रहें?"

"और इसी तालमेल में तुम अपना दाव गाँठ लेते हो दीवानजी! आज समझ पाया हूँ आपकी कारीगरी। वैसे रुपया गरीब से आये तो क्या और

अमीर से आये तो क्या, आप तो अपनी मेहनत का फल ही लेते हैं। उससे ज्यादा तो आप खुद भी बढ़ना नहीं चाहते।" करीमखाँ ने निहायत अदब और संजीदगी से कहा।

"परमात्मा जाने, बिलकुल नहीं। मैं तो बड़े सब्र का आदमी हूँ। तुमसे मेरा कुछ छिपा नहीं है करीमखाँ।"

"अब आप रोजनामचे के मालिक हैं दीवानजी! देखें क्या-क्या करामात दिखलाता है आपका रोजनामचा।" करीमखाँ ने आशाभरी आवाज में कहा।

"आजकल कैसी फ़िज़ा है नाचने-गाने वालियों के बाजार की?" बातों का रुख बदलते हुए दीवान रामदयाल ने पूछा।

'बड़ी रौनक है उधर तो दीवानजी! बजार बहुत अच्छा चल रहा है। मामूली-से-मामूली टखियारी भी अपना पेट चला लेती है। और गुलाब ने तो सुना है जायदाद खड़ी कर ली है।" करीमखाँ ने जरा अन्दाज के साथ कहा।

"तो यों कहो कि इनका पेशा अच्छा-खासा तरक्की कर रहा है। सुना है गुलाब कोई नई छोकरी कहीं से उड़ा लाई है।" रामदयाल ने पूछा।

"सुना तो मैंने भी है दीवानजी! लेकिन मैं अभी मुस्तकिल तरीके से कुछ नहीं कह सकता।" करीमखाँ बोला।

"गुलाब को यह बात हमसे आज तक नहीं छुपानी चाहिए थी। उसी दिन उसे यह राज हमारे पास खोल देना चाहिए था।" दीवान रामदयाल ने नजरें कड़ी करते हुए कहा और फिर जरा सोचकर बोले, "ज़रा वर्दी तो पहन आओ करीमखाँ।"

करीमखाँ बिला यह पूछे कि कहाँ चलना है और क्या करना है, बारक में जाकर वर्दी पहन आया। दीवान रामदयाल के हुक्म के बाद क्या, क्यों का कोई सवाल ही नहीं रहता।

चन्द मिनटों के अन्दर एक ताँगे पर बैठकर दोनों बैली बाजार के चौरस्ते पर पहुँच गये और ठीक गुलाब के जीने के नीचे उतर कर कोठे पर चढ़ते चले गये।

करीमखाँ ने गुलाब का कुण्डा खटखटाया और किसी लड़की ने आकर दरवाज़ा खोल दिया।

करीमखाँ उस लड़की से बोला, "गुलाब को ड्योढी पर भेज दो।

दीवानजी को बयान लेना है गुलाब का ।"

लड़की ने जाकर जो यह सूचना गुलाब को दी तो उसके पैरों के नीचे से जमीन निकल गई । वह भयभीत हो उठी । दीवान रामदयाल को वह अपने चंगुल में समझती थी और इसीलिए उसने इस लड़की के आने की सूचना पुलिस में नहीं दी ।

गुलाब घबराई हुई दीवान रामदयाल के पास तक पहुँच जाना चाहती थी कि करीमखाँ ने उसे वहीं पर बीच में ही रोकते हुए कड़क कर कहा, "यह नई लड़की कौन आई है तुम्हारे यहाँ ? कहाँ से आई है ? इसकी इत्तला तुमने चौकी पर क्यों नहीं दी ?"

गुलाब चुप थी । गुलाब के पीछे खड़ी लड़की आगे बढ़कर बोली, "दीवान जी मैं अपनी कहानी आपको खुद सुनाती हूँ, इनसे आप मेरी कहानी क्या पूँछते हैं ? मैं यहीं की रहने वाली एक लड़की हूँ । काँग्रेस के एक जुलूस में मैं आफ़त की मारी शामिल हो गई ।

जुलूस पर रास्ते में पुलिस ने बहुत बेरहमी से मार बरसाई । उसी झगड़े में मुझे तीन बदमाश उठा कर ले गये । उन बदमाशों ने मुझे इधर-उधर छिपाकर रखा और अब चन्द दिन पहले मुझे उन्होंने इनके हाथों बेच दिया ।

मैं यहाँ इनकी जरख़रीद गुलाम हूँ । क्या आप मुझे आज़ादी दिला सकते हैं ?"

दीवान रामदयाल को काँग्रेस के जुलूस पर बरसाई गई मार की याद आई और फिर कल्लू पहलवान ने जो लड़की भीड़ से उठाई थी, उसकी भी याद आ गई । दीवान रामदयाल ने सोचा हो-न-हो यह लड़की वही है ।

दीवान रामदयाल गुलाब से बोले, "करीमखाँ के साथ लड़की को लेकर फौरन चौकी पर पहुँचो ।"

"जो हुकुम दीवानजी !" कहकर गुलाब और करीमखाँ ऊपर चले गये और दीवान रामदयाल चौकी पर लौट आये ।

चौकी पर पहुँच कर दीवान रामदयाल ने कल्लू पहलवान को बुलवाया और इसी बीच में गुलाब और करीमखाँ भी उस लड़की को लेकर चौकी पर आ गये ।

पुलिस की चौकी पर आकर उस लड़की ने समझा कि चलो उस खंदक से यह रौशनी तो मिली । यों पुलिस भी बड़ी बदमाश होती है, लेकिन फिर भी सरकारी हकूमत है । शायद इन दीवानजी के ही दिल में भगवान् का

निवास हो।

दीवान रामदयाल कल्लू पहलवान से बोले, "क्यों पहलवान, क्या इस लड़की को तुमने गुलाब को दिया है ?"

"जी दीवानजी !" हाथ जोड़कर मंजूर करते हुए कल्लू पहलवान ने कहा, 'दिया तो मैंने ही है।"

"तो तुम एक काम करो पहलवान ! जो रुपया तुम्हें गुलाब ने दिया है वह उसे वापस कर दो और इस लड़की को हमें दे दो। कोई ऐतराज तो नहीं है तुम्हें।" दीवान रामदयाल ने सबके सामने पूछा।

कल्लू पहलवान ने उसी जगह अपनी फेंठ से रुपये निकालकर गुलाब को गिन दिये और लड़की को दीवानजी ने अपने क्वार्टर में भेज दिया।

दीवान रामदयाल अब अपने क्वार्टर में अपनी औरत के साथ रहते हैं। दीवान रामदयाल की औरत हमेशा की बीमार है। शादी होने के तुरन्त बाद से बीमार हो गई थी। दीवान रामदयाल उसकी बीमारी का खास ख़याल रखते हैं। उनकी आधी आमदनी बीवी की बीमारी में लगती है और आधी में वह अपने शौक पूरे करते हैं।

यह लड़की मेरठ के एक भले घर की लड़की है। इसे इस तरह निकाल कर दीवान रामदयाल ने उसके घर वालों के पास तक पहुँचा दिया कि किसी को कानों-कान भी ख़बर न मिली।

जब यह ख़बर कासिम मिरज़ा के पास पहुँची तो उससे पहले दीवान रामदयाल अपने रोज़नामचे में उसके घर वालों की यह रपट दर्ज कर चुके थे "हमारी लड़की बिना कहे अपने मामा के यहाँ चली गई थी। आज उसके मामा उसे लेकर खुद ही यहाँ आ गये। हमारी खोई हुई लड़की मिल गई।"

दीवान रामदयाल की यह कारगुज़ारी शहर की हिन्दू जनता के बीच एक ज़बरदस्त बात समझी गई। हिन्दू-महासभा के मंत्री पंडित राम खिलावन खुद दीवानजी के पास धन्यवाद देने के लिए आये और सेठ दामोदर प्रशाद से जाकर उन्होंने इनकी बड़ी तारीफ़ की।

पुलिस के मुसलमान दारोग़ाओं और दीवानों ने मिलकर एक मीटिंग की और फिर सब मिलकर कासिम मिरज़ा से मिले। सबने इल्तजा की, "कोतवाल साहब दीवान रामदयाल ने एक लड़की गुलाब के कोठे से उठाकर अपने शहर के हिन्दुओं को दे दी। आपके कोतवाल रहते हुए क्या मेरठ के हिन्दू इस तरह मुसलमानों पर हावी हो जायेंगे ? यह तो बड़ा भारी जुल्म है मुसलमानों पर। आज जो बात गुलाब के कमरे पर हुई है कल वही बात किसी

और मुसलमान के घर पर भी हो सकती है।"

कासिम मिरज़ा ज़रा सोच-समझ कर चलने वाले इन्सान ठहरे। तालीमयाफ्ता आदमी हैं, मुसलमानियत उनके दिमाग़ में इस कदर नहीं घुसी हुई है कि उन लोगों की बात सुनकर एकदम आग-बगूला हो उठते और आँखें मींचकर कोई कार्यवाही कर डालते।

उन्होंने सबको समझाकर वापिस कर दिया और अपने अर्दली को भेज कर दीवान रामदयाल को बंगले पर बुलवाया।

कासिम मिरज़ा का संदेशा पाकर दीवान रामदयाल मुस्कराये और अर्दली से कहा "कोतवाल साहब से कहना मैं दो बजे के करीब हाज़िर हूँगा।"

ठीक दो बजे दीवान रामदयाल कासिम मिरज़ा की कोठी पर पहुँचे, आज कासिम साहब की त्योरी ज़रा चढ़ी हुई थी। दीवान रामदयाल को देख कर बोले, "कहिये दीवानजी! क्या हाल-चाल है? अब तो आपके पास मिलने-जुलने के लिए भी वक्त नहीं रहा।"

"आपके हुक्म पर कभी न आया हूँ। ऐसा तो मुझे याद नहीं पड़ता कोतवाल साहब, लेकिन एक बात कह दूँ और सब बातों से पहले। ये कान भरने वाले लोग बड़े ज़लील होते हैं। मुझे जो कुछ भी कभी कहना होता है, या होगा, सब के मुँह पर कहूँगा। क्या आप मेरी शिकायत करने वालों में से किसी को भी मेरे मुँह पर बुला सकते हैं?" बात को सीधी पकड़ते हुए दीवान रामदयाल बोले।

"लेकिन तुम्हें यह कैसे पता चला कि तुम्हारी किसी ने मुझसे शिकायत की है।" कासिम मिरज़ा ने पूछा।

"सरकार! भला यह भी कुछ पूछने की बात है। जो लोग आपके पास शिकायत करने आते हैं वे ही मुझे जाकर सब खबर दे देते हैं। दीवान राम-दयाल से छिपाकर पेट में कोई बात रखेगा तो क्या उसकी शामत ने धक्का दिया है उसे?"

"तो हरामज़ादे दोनों तरफ़ की बजाकर हमारा आपस में झगड़ा करा देना चाहते हैं। कोतवाल हातमसिंह ने ठीक कहा था कि इन्हें मुँह नहीं लगाना चाहिए।

लेकिन वह लड़की वाला मामला क्या है, ज़रा मैं भी तो जान लूं।"

"मामला ही क्या है कोतवाल साहब! आपसे मैं कभी कोई बात छिपा नहीं सकता। एक बार शराब की बोतल पर क़सम खाने के बाद फिर छिपाना नामुमकिन है।

"कोई हिन्दू हो या मुसलमान, इससे हमारा कोई सरोकार नहीं। हमारे सामने तो सरकार और अपना पेट, बस ये ही दो चीजें रहती हैं। सरकार इसलिए कि वह हमें रोज़ी देती है और इसी रोज़ी के पीछे दुनियाँ के सब कारबार चलते हैं।"

कासिम मिरज़ा दीवान रामदयाल की बात सुनकर बोले, "तो तुमने कोई लड़की गुलाब के कमरे से निकाली तो जरूर है।"

"ठीक है कोतवाल साहब ! मैंने जरूर निकाली है, लेकिन उसे वहाँ फँसाने वाला भी मैं ही था। जो लोग आपसे आकर मुसलमानियत के नाम पर मेरी शिकायत कर गये हैं, ज़रा उनसे पूछिये कि क्या वे लाये थे उस लड़की को वहाँ या गुलाब के पेट से निकली थी वह लड़की ?

काँग्रेस के जुलूस से कल्लू पहलवान को कह कर मैंने एक लड़की उठवा दी थी। वह भी इसलिए नहीं कि वह हिन्दू है या मुसलमान। जुलूस में झगड़ा पैदा करना था और उसी झगड़े की बदौलत कोतवाल हातमसिंह को नक़द बीस-पच्चीस हज़ार रुपया कमा कर दिया। ये सब तो तरीके हैं दीवान रामदयाल के। आप जैसे बड़े अफ़सरों को इन अदना-सी बातों में दिमाग़ नहीं लगाना चाहिए।"

दीवान रामदयाल के मुख़ालिफ़ लोग समझ रहे थे कि उन्होंने कोतवाल साहब से चुगली करके उसके मेरठ जिले से पैर उखाड़ दिये। लेकिन जब तीन-चार दिन तक दीवान रामदयाल उसी चौकी पर बने रहे और उनका तबादला होना तो दूर की बात रही कोई चारशीट भी उन्हें नहीं मिली, तो उनमें से एक-एक ने आकर दीवान रामदयाल से कहना शुरू किया, "मैंने कहा दीवानजी आदाबे अर्ज।"

"आदाबे अर्ज़ दारोग़ाजी !" दीवान रामदयाल ने बैठे-ही-बैठे जवाब दिया, "आइये, तशरीफ़ लाइये दारोग़ाजी।"

दारोग़ा करीम बेग़ ज़रा सुधर कर मूढ़े पर बैठते हुए बोले, "आजकल तो बड़े ऐश की छन रही है दीवान रामदयाल ! मुकद्दर का तुम्हें भी अल्लाह-ताला ने बादशाह बनाकर भेजा है।"

"सब आप अफ़सरान की मेहरबानी है दारोग़ाजी !" निहायत अदब और मिठास के साथ दीवान रामदयाल बोले, "मैं तो आप अफ़सरान को ही अपना ख़ुदा मानता आया हूँ, लेकिन कभी-कभी देखता हूँ कि ख़ुदा कोई और भी है।" तीखा व्यंग्य करते हुए दीवान रामदयाल बोले।

"दीवान रामदयाल, तुम ग़लत समझ रहे हो कि कोतवाल साहब से

मैंने तुम्हारी शिकायत की। कुछ लोगों के मजबूर करने पर मैं उनके साथ चला ज़रूर गया था लेकिन खुदा की कसम जो मैंने अपनी जबान से तुम्हारे खिलाफ़ एक भी बात कही हो।"

"इसमें क्या शक है दारोगाजी ! आप तो मेरे शुरू से ही मेहरबान रहे हैं। फिर भला आप मेरे खिलाफ़ शिकायत कैसे कर सकते हैं ?" मन में कदूरत और नफ़रत की आँधी लिये हुए दीवान रामदयाल ने कहा।

उसी दिन संध्या को रामदयाल जब एस. पी. साहब की कोठी पर शराब की बोतल पहुँचाने गया तो साहब बाहर बग़ीचे में टहल रहे थे। साहब ने दीवान रामदयाल को बुलाकर पूछा, "बेल डीवान रामडयाल टुमारा आल-चाल केशा ऐ। टुमारा इलाका में सब लोग खुस मालूम डेटा ऐ।"

"सब ठीक-ठाक है साहब बहादुर ! आपके साये में खुश न होंगे तो भला फिर कब होंगे !"

"टुमारा नेया कोटवाल मिरजा बी टुमारा बोट टारीफ़ करटा ऐ।" साहब ने कहा।

"कोतवाल साहब बड़े ही नेक दिल अफ़सर हैं। उनकी मेहरबानी है सब, वरना मैं किस काबिल हूँ।"

"अमने आज टक जब से अम यहाँ आया ऐ, सिरफ डारोगा करीमबेग को टुमारी बुराई करटे सुना ऐ। एक लरकी का बाट करटा टा वो। क्या बाट टा वो ? जरा सुनें टो।" साहब ने अपनी तहकीकात को पूरा करने के लिए पूछा।

"हुजूर हम तो दारोगा करीमबेग को भी अपना अफ़सर ही गिनते हैं। वह जो कुछ भी कहें हमारे सिर-माथे पर, लेकिन जब हुजूर पूछ ही रहे है तो सही सही बात का बयान करना हमारा फ़र्ज है।"

"टुम अमको टीक-टीक बाट का पटा डो रामडयाल। तुम जानटा ऐ कि अम शच बाट शे किटना खुश होटा ऐ !" साहब बोले।

"तो हूजूर, मैंने, एक लड़की को, जिसे एक गुण्डे बदमाश ने शहर से उड़ा कर एक वेश्या के यहाँ बेच दिया था, छुड़ा कर उसके माँ-बाप के हवाले कर दिया। अंग्रेज़ी राज में जुल्म नहीं हो सकता, मैंने यह साबित कर दिया और लड़की वालों से कह दिया कि जब तक मेरठ में साहब बहादुर एस. पी. हैं तब तक वे आनन्द के साथ पैर फैला कर सो सकते हैं। यह अंग्रेजी राज है, गुण्डों का राज नहीं है।" दीवान रामदयाल ने यह बात जरा करीने के

साथ कही ।

एस. पी. साहब की तारीफ़ के साथ-साथ अंग्रेजी सरकार की तारीफ़ ने साहब के दिमाग़ पर गुलावी नशा छा दिया और वह जरा सीना उभार कर दिलेरी के साथ बोले, "शावाश डीवान रामडयाल टुमने अंग्रेजी शरकार का इज्जत वराया ऐ । टुमने जो कुच किया ऐ बौत टीक किया ऐ । डारोगा करीमबेग हमें बडमाश आडमी मालूम डेटा ऐ । उशका टबाडला हम गैर जिला को करेगा ।"

"हुजूर जो कुछ भी ठीक समझें, लेकिन दीवान रामदयाल कभी कोई काम ऐसा नहीं करेगा जो अंग्रेजी सरकार और साहब बहादुर की शान के खिलाफ़ हो । आपकी शान बढ़ाने में दीवान रामदयाल की जान की भी अगर कभी जरूरत पड़ेगी तो वह भी हाजिर रहेगी ।"

"अम जानटा ऐ, अम कूब जानटा ऐ । काम करना वाला को और आरामकोर को अम कूब पैचानटा ऐ । टुम मजा के शाट अपना काम करो ।

और हाँ, टुमारा इलाका में कहीं काँग्रेश का टो कोई गुलगपाड़ा नहीं होटा ऐ ! पिछले कांग्रेश के जुलूस में टुमने जो कारगुजारी किया वो अमको कोटवाल आटमसिंह ने सब बटला डिया टा । अमने टुमारा हिस्ट्री शीट में ऐशा बरिया रिमार्क डिया ऐ कि टुमारा हिस्ट्री शीट सबसे अलग चमकटा ऐ ।"

"सरकार की मेहरबानी की बदौलत ही मैं सब कुछ करने में कामयाब हो जाता हूँ । मेरे इलाके में काँग्रेसी लोग क्या खाकर गुलगपाड़ा करेंगे ? दीवान रामदयाल का नाम सुनकर ही उनके दम खुश्क हो जाते हैं ।"

"बौट अच्छा, बौट अच्छा ! अम टुमसे बौट खुश ऐ । मेम शाह बी टुमारा बौट टारीफ़ करटा ऐ । टुम मेम शाहब को बौट बरिया शेराब पिलाटा ऐ । अमारा मेम शाहब जब पीकर मजे में आटा ऐ तो टुमारा नाम लेना नहीं बूलटा । केटा ऐ कि इन्दुस्टान का आडमी बौट अच्छा होटा ऐ । बौट बरिया शेराब पिलाटा ऐ।"

दीवान रामदयाल आज साहब की कोठी से लौटकर अपनी चौकी पर आये तो उनका दिल खुशी से फूला नहीं समा रहा था । करीमखाँ ने उन्हें आते ही सूचना दी, "सेठ दामोदर प्रशाद के यहाँ से मुनीमजी आये थे । किसी बहुत ज़रूरी काम से आपको याद किया है सेठजी ने ।"

"किया होगा ।" करीमखाँ की बात को अनसुनी-सी करके बोले, "करीमखाँ भला क्या बजा होगा अब ?"

"साढ़े सात बज चुके दीवानजी! आपने बड़ी देर कर दी कहीं पर। यहाँ आपके चले जाने पर मिलने वाले मुझे परेशान कर डालते हैं। किस-किस को क्या-क्या जवाब दूँ, मेरी समझ में ही नहीं आता।" करीमखाँ बोला।

"सभी का जवाब देना जरूरी नहीं होता है करीमखाँ! तुम जरा जाकर हुक्का ताजा कर लाओ और बाहर बागीचे में मूढ़े डलवा कर पेचवानी वहीं पर रख आओ। मैं अभी जंगल-फ़रागत से निपट कर आता हूँ।" कह कर दीवान रामदयाल अपने क्वार्टर में चले गये।

: ८ :

मेरठ की पुलिस में आजकल मुसलमान अफ़सरों का ज़ोर है। शहर-कोतवाल मुसलमान है और हलकों के दारोगा भी अधिकाश में मुसलमान ही हैं। लेकिन चौकियों पर तायनात दीवान नब्बें फ़ी सदी हिन्दू हैं।

मेरठ के हिन्दुओं की सुरक्षा आजकल इन्हीं दीवान लोगों के हाथों में है और इनका मुखिया दीवान रामदयाल है।

सेठ दामोदर प्रशाद के भी खुफिया ख़बर देने वाले रहते हैं। दीवान रामदयाल के ख़िलाफ़ शहर के सब मुसलमान दारोग़ा मिलकर शहर-कोतवाल कासिम मिरज़ा से मिले, यह खबर जब से सेठ जी को मिली है, उन्हें चैन नहीं आ रही। फ़ौरन ही उन्होंने अपने मुनीमजी को दीवान रामदयाल की चौकी पर भेजा, लेकिन वहाँ दीवानजी न मिले।

सेठ दामोदर प्रशाद खुद यह सूचना लेकर दीवानजी के पास जाने को तय्यार हुए तो उन्हें सामने से मुस्कराते हुए दीवान रामदयाल आते दिखलाई दिये। दीवान रामदयाल का मुस्कराता हुआ रौबीला चेहरा देखकर उनके दिल को शांति मिली।

सेठ जी ने खड़े होकर तपाक के साथ दीवान जी को मसनद पर बिठलाया और मुनीमजी को दो गिलास खस का शर्बत मँगाने को कहा।

जब दोनों आराम से बैठ गये तो दीवान रामदयाल बोले, "किस लिए याद फ़रमाया है सेठजी ने? ख़ादिम हाज़िर है हुजूर में।"

"फिर वही शरमिन्दा करने वाली गुफ़्तगू करने लगे दीवान जी! हर वक्त तुम्हें तो मजाक ही सूझता रहता है। गम्भीरता पूर्वक सेठ दामोदर प्रशाद बोले।

सब कुछ जानते हुए भी दीवान रामदयाल ने ज़रा गम्भीर होकर पूछा, "क्यों, क्या कोई नया गुल खिल रहा है मेरठ में? क्या दीवान रामदयाल के ख़िलाफ़ कोई नया जाल रचा जा रहा है?"

'बिलकुल नया दीवान जी! बिलकुल नया! दारोगा करीम बेग ने शहर के सब मुसलमान दरोग़ाओं को अपने साथ लेकर तुम्हारी कोतवाल कासिम मिरज़ा से बड़ी ज़बरदस्त शिकायत की है।"

"भला क्या शिकायत की होगी दारोगा करीम बेग ने हमारी । ज़रा यह भी तो जान लें !"

"बात क्या है दीवान जी ! बेबात की बात खड़ी कर ली है दरोगा जी ने । गुलाब के कोठे से जिस लड़की को आपने छुड़ा दिया है, उसी को लेकर बात का बतंगड़ बना लिया है । कहते हैं एक मुसलमान लड़की को दीवान रामदयाल ने हिन्दुओं को दे दिया ।'

"हूँ !" कहकर बड़ा ही संजीदा मुँह बनाते हुए दीवान रामदयाल ने सुना और फिर गम्भीरतापूर्वक बोले,"अब देख लिया आपने सेठजी ! कितने ख़तरे का काम करते हैं हम लोग भी । धरम की ख़ातिर हमने सब को अपना दुश्मन बना लिया है । मेरठशहर के हिन्दुओं में इस बात की कैसी चर्चा है ?"

"चर्चा की बात कुछ न पूछिये दीवान रामदयाल ! तुम पर आज मेरठ का हिन्दू बच्चा-बच्चा जान देने को तय्यार है । सच कहता हूँ कि लोगों में तुम्हारे इस लड़की को निकाल लाने के काम से, तुम्हारी बड़ी इज़्ज़त हो गई है । हिन्दू महासभा के मंत्री पंडित रामखिलावन तुम्हारी इस कारगुजारी पर लट्टू हुए फिरते हैं । कहाँ-कहाँ कितनी-कितनी तारीफ़ की है उन्होंने यह मैं बयान नहीं कर सकता ।"

'तो ठीक है सेठ दामोदर प्रशाद !" मुस्करा कर दीवान रामदयाल बोले । "दारोगा करीम बेग जैसे कीड़े-मकौड़ों को दीवान रामदयाल समझता ही क्या है । नाखून के मैल के बराबर भी मैं उसे नहीं समझता । इसी हफ़्ते अगर उसे मेरठ न छोड़ना पड़े तो मेरा नाम भी दीवान रामदयाल नहीं ।" सीना उभार कर कहा ।

सेठ दामोदर प्रशाद के गोलमटोल चेहरे पर खुशी की रेखाएँ खिच गईं । उनका डूबता हुआ दिल दो-चार हाथ मारकर पानी की ऊपरी सतह पर आगया और खुशी में फुरबालियाँ लेते हुए बोले, "मैं तो पहले ही जानता था कि दीवान रामदयाल पर हाथ डालकर बेवकूफ़ी की है दारोगा करीम बेग ने । अच्छी ख़ासी आमदनी काट रहा था तुम्हारे तुफ़ैल से । गधे ने खुद ही अपनी आमदनी पर लात मार दी ।"

दारोगा करीम बेग को अचानक अपने तबादले की सूचना मिली तो उसे पसीना आगया । कासिम मिरज़ा के हाथ में करीम बेग के तबादले का हुक्म पहुँचा तो उसने खुदा का लाख-लाख शुक्रिया भेजा कि उसने दीवान रामदयाल के ख़िलाफ़ एस० पी० साहब से कुछ न कहकर उल्टी उसकी तारीफ़ ही की ।

दारोगा करीम बेग का तबादला मेरठ की पुलिस और यहाँ की जनता

में एक सनसनी थी, एक तहलका था। आज पुलिस के कांस्टेबिलों के पास आपस में मिल-बैठकर बातें करने को इसके अलावा और कोई बात ही न थी।

दारोगा करीमबेग ने अपनी बात के समर्थन के लिए कल्लू पहलवान को भी अपनी तरफ़ तोड़ लिया था। सब लोगों के साथ वह भी कासिम मिरज़ा से जाकर मिला था। लेकिन इस तबादले की ख़बर ने उसके पैरों के नीचे से भी ज़मीन खिसका दी।

उसी दिन दोपहर बाद दीवान रामदयाल ने करीम खाँ को चार कांस्टेबिलों के साथ कल्लू पहलवान को बुलाने भेजा।

कल्लू पहलवान समझ गया कि दीवान रामदयाल को उसकी दारोगा करीम बेग से की गई साँठ-गाँठ का पता चल गया है।

कल्लू पहलवान आते ही दीवान रामदयाल के पैरों पर गिर पड़ा लेकिन रामदयाल ने अपने पैर पीछे खींचते हुए कहा, "मुझे मालूम नहीं था कल्लू कि तु इतना नमकहराम निकलेगा। इसी वक्त मेरठ शहर छोड़कर चला जा, वरना तीन दिन के अन्दर जेल खाने में नजर आयगा।

"दीवान जी············" गिड़ागिड़ाकर कल्लू पहलवान ने कुछ कहना चाहा लेकिन रामदयाल ने एक शब्द भी न सुना। दीवान रामदयाल फ़ौलादी इरादे का आदमी है।

करीम खाँ की कुछ समझ में न आया। इतना बड़ा तूफ़ान मेरठ शहर में आया और सिर पर से गुजर गया। इस तूफ़ान में केवल दो ही पेड़ गिरे और उखड़ कर मेरठ ज़िले की सीमाओं से बाहर चले गये, एक दारोगा करीम बेग और दूसरा कल्लू पहलवान। करीम खाँ को अभी तक इन राज़ों का कुछ भी पता नहीं था। कभी-कभी कुछ बातों की हल्की-हल्की आवाज उसके कानों में ज़रूर पड़ जाती थी लेकिन सही तरीके पर हो क्या रहा है, यह उसे कुछ पता नहीं था।

जब सब चले गये तो करीमखाँ ने पूछा, "दीवानजी! कई दिन से बड़ी चिंता में लगे हो। आखिर मैं भी तो सुनूँ मामला क्या है? मेरी तो हिम्मत ही नहीं हुई, पिछले चार दिन में आपसे कोई बात पूछने की।"

"तुमने अच्छा ही किया करीम खाँ, जो इस बीच में मेरा दिमाग़ नहीं चाटा, वरना तो मेरे सामने तुम्हें जवाब देने की मुसीबत और आखड़ी होती।

आज मैं बिलकुल बेफिक्र हूँ। तुम जैसा चाहो सवाल कर सकने हो। अब तुम्हें भाभी का रेशमी सूट बनवाने के लिए बहुत जल्द कोई मोटी रक़म

कटवाऊँगा।"

"वह सब तो होता रहेगा। लेकिन ज़रा यह तो बताओ कि आखिर मामला क्या है? इन बेचारे दारोगा करीम बेग पर बैठे-बिठाये यह बिजली कैसे गिरी और ठेकेदार कल्लू पहलवान पर आपकी इतनी सख्त नज़र किस लिए हुई?"

"यह इन दोनों को इनकी नमकहरामी की सज़ा दी गई है। ये लोग कहते हैं कि मैं हिन्दू हूँ और मुसलमानों पर जुल्म करता हूँ, उनकी लड़कियों को भगाकर हिन्दुओं को दे देता हूँ।

क्यों करीमखाँ, क्या यह सच है? तुम एक सच्चे मुसलमान हो। पाँच वक्त की नमाज पढ़ते हो और तीस के तीस रोज़े रखते हो। क्या तुमने मुझे कभी हिन्दू-मुसलमानों का सवाल उठाते देखा? तुम लोगों के साथ हिल-मिलकर रहने वाला मुझ जैसा हिन्दू क्या कहीं तुम्हें और कोई मिलने वाला है?"

"दीवान रामदयाल के बारे में अगर कोई मुसलमान इस तरह की बातें करता है तो वह झूठ बोलता है।" याराना उभार के साथ करीमखाँ ने कहा।

करीमखाँ ने दीवान रामदयाल का यार-स्वरूप देखा है और उसमें उसे कहीं पर भी कोई खराबी दिखाई नहीं दी। वह उसे एक सच्चे भाई और सरपरस्त के रूप में देखता है और सच तो यह है कि उसकी ज़िन्दगी में जो यह बेफिक्री और ऐश दिखाई दे रही है सब दीवान रामदयाल की ही बदौलत है। वरना तो वह अपने खान्दान के कंधों पर से अपने बाप-दादों का खाया हुआ कर्ज़ भी ज़िन्दगी भर कांस्टेबिली करके न उतार पाता।

करीमखाँ के दिल की आँखें कभी भी दीवान रामदयाल में कोई खामी नहीं देख सकतीं।

करीमखाँ ने पुलिस के मुसलमान सिपाहियों और दीवानों के बीच बैठ कर दूसरे ही दिन खुम ठोककर यह बात कही, "आप लोग दीवान रामदयाल को क़तन नहीं पहचानते। वह शख्स न तो हिन्दू है और न मुसलमान ही। एक नेक इन्सान है वह। जिसको वह अपना यार कह देता है, उसके लिए मिटना जानता है और जिसके सिर पर हाथ रख देता है उसके लिए सब कुछ कर गज़रता है। मेरे देखने में ऐसा नेक नीयत और सच्चा इन्सान दूसरा नहीं आया।

"एक बात तो हम भी कहेंगे," उन्हीं में से एक दीवान बोला, "दीवान रामदयाल वाक़ई यार आदमी है। मिल-बाँट कर खाने को वह अपना धर्म

समझते हैं। किसी दूसरे का हक़ खा जाने की उस नेकनीयत इन्सान की कभी इच्छा ही नहीं होती।"

"दीवान रामदयाल के मैं कई वाक़े आपको बतला सकता हूँ, जब उन्होंने मुसलमानों को हिन्दुओं से बचाया है। पाँच साल पहले की बात आप लोग भूल गये, उसी का दम था जो उन बदमाशों से उन तीन मुसलमान लड़कियों को छुड़ा कर लाया था। जान पर खेल कर वह काम किया था उसने। काम को जीदारी से करने वाला मैंने दीवान रामदयाल अपनी ज़िंदगी में अकेला ही आदमी देखा है।" करीमखाँ बोला।

जो लोग मिलकर कासिम मिरज़ा के पास दीवान रामदयाल की शिकायत लेकर गये थे, वे सब चुप हैं। सभी अपनी-अपनी कारगुज़ारी पर शरमिन्दा हैं। सभी ने दीवान रामदयाल से बहाने-बे-बहाने अपनी उस हरकत की माफ़ी माँग ली।

दीवान रामदयाल के दिल पर उस हर आदमी का नाम नक्श है जो मिरज़ा के पास उनकी चुगली करने गया था। उनमें से जो-जो आकर माफ़ी माँगता गया, उस-उस का नाम वह अपनी लिस्ट से काटता गया।

दीवान रामदयाल का सितारा दिन दूनी रात चौगनी बुलन्दी पर चढ़ता चला जा रहा है। दीवान होने पर भी वह मामूली महकमे के दारोगाओं को कुछ नहीं समझते। अपने ताल्लुकात वह एस. पी. साहब से सीधे बनाते जा रहे हैं।

एस. पी. साहब से ताल्लुकात बनाने में वह जितना भी रुपया कमाते हैं, सब खर्च कर देते हैं। दीवान रामदयाल आज देर तक साहब की कोठी पर उनसे बातें करते रहे।

साहब बोले, "बैल डीवान रामडयाल! टुमारे गर पर क्या काम ओटा ऐ?"

"हम ज़मींदार लोग हैं सरकार! लेंड-लार्ड जिसे आप अंग्रेजी में कहते हैं।" नौकरी के दौरान में दो-चार अक्षर अंग्रेज़ी के भी दीवान रामदयाल ने सीख लिये हैं।

"टुम ज़मींदार ओकर नौकरी ज़रूर शौक के लिए करटा ओगा।" एस. पी. साहब ने कहा।

"बिलकुल ठीक फरमाया हुज़ूर ने। मैं नौकरी पेट पालने के लिए नहीं करता। मैं घर का ज़मीदार बच्चा हूँ। मुझे पुलिस की नौकरी का शौक है सरकार! अगर आपकी नज़रेइनायत बनी रहेगी और आप मुझे किसी

काबिल समझेंगे तो तरक्की जरूर देंगे।" दीवान रामदयाल ने कहा।

"जरूर-जरूर डीवान रामडयाल अम टुमको जरूर टरक्की डेगा। टुम वौट काबिल आडमी ऐ।" साहब बोले।

दीवान रामदयाल अपने एस. पी. साहब के मुख से अपनी प्रशंसा के ये शब्द सुनकर हवा में उड़ने लगे। उनके दिल का गुलाब खिलता जा रहा है। उनकी खुशियाँ उनके इशारे पर नाच रही हैं। जो कुछ वह चाह रहे हैं वह सब होता जा रहा है।

गनीमत यही है कि दीवान रामदयाल का ऊँचे उठने का मयार सिर्फ दारोग़ाई तक है, वह दारोग़ाई जिसे दीवान रामदयाल एक ऐसा ओहदा समझते हैं कि जो उनके सोचने की आखरी मंजिल है।

दीवान रामदयाल अब जवानी के दूसरे क़दम पर खड़े हैं। पहला क़दम उन्होंने शराब और अय्याशी के गुलशन में रखा। घर की कोई जिम्मेदारी सर पर नहीं थी। जो कुछ कमाया यारबाशी और अय्याशी में उड़ाया और इसी उड़ाने की बदौलत कुछ बड़े-बड़े रसूक भी पैदा किये।

लकिन जवानी के दूसरे क़दम पर ही दीवान रामदयाल के वालिद उन्हें धोखा दे गये।

उनके गाँव के घर का, वालिद के मरते ही, खील बखेड़ा हो गया। उनकी माँ जो अपने बाप की अकेली सन्तान है, अपने बाप के घर चली गईं। अपनी औरत को दीवान रामदयाल अपने साथ ले आये।

दीवान रामदयाल की स्त्री बिना पढ़ी-लिखी, दयालू और जिस दिन से व्याही आई है, बराबर बीमार है। उसके पास आ जाने से भी दीवान रामदयाल के तौर-तरीकों में कोई फर्क नहीं आया।

दीवान रामदयाल को जिस रात को घर नहीं जाना होता है तो वह करीमखाँ को चुपके से अपनी स्त्री के पास भेजकर कहलवा देते हैं, "आज दीवानजी गश्त पर जा रहे हैं। इसलिए रात को नहीं आयेंगे। आप खाने का इन्तजार न करें।"

आज दीवान रामदयाल इतने खुश थे कि साहब की कोठी से सीधे गुलाब के यहाँ ही पहुँच गये। घर जाने की उनकी तबीयत ही न हुई।

गुलाब ने दीवान रामदयाल को शराब पिलाई और खुद भी पी उनके सामने बैठकर।

फिर जरा अंदाज के साथ बोली, "दीवानजी! यह बात आपने मुझे पहले कभी नहीं बतलाई।" उसका मतलब दीवानजी की शादी से था। गुलाब अभी तक दीवानजी को बिना शादीशुदा ही समझ रही थी।

"तुमने पूछी भी तो पहले कभी नहीं गुलाब ! क्या मैं आप-से-आप अपनी पूरी हिस्ट्री तुम्हें सुनाने लगता ?" सचाई के साथ दीवान रामदयाल ने कहा।

"तो कोई बात नहीं सरकार ! हम तो पेशेवर ठहरीं। दीवाननजी को हमारा सलाम कहना और खुदा करे आपके लड़का हो, तो वह नाँच नाचूं, वह नाँच नाचूं कि मेरठ के लोग देखकर दंग रह जायें।"

उसी खुमारी में दीवान रामदयाल गुलाब को पास बिठला कर जरा उसके दोनों कंधों को अपनी दो चौड़ी हथेलियों से दबाकर भींचते हुए बोले, "गुलाब ! तेरी दीवानन भी क्या है, चार हड्डियों का ढाँचा है आज। लेकिन जिस दिन मैं उसे ब्याह कर लाया था, तो क्या मालूम हुस्न था उसका, वह सब ख्वाब बन गया है अब।"

"सुना है बेचारी बीमार रहती हैं।" गुलाब ने पूछा।

"बारहों महीने की बीमार है गुलाब ! लेकिन बड़ी रहमदिल औरत है। तू कभी मिलेगी उससे तो तुझे खुशी होगी।"

"मैं जरूर मिलूँगी दीवानजी ! और जैसा मैंने पहले कहा, खुदा वह दिन दिखाये जब उस नेकबख्त के पेट से बेटा पैदा हो और मैं उसमें खुशियाँ मनाऊँ। सच जानो दीवान जी ऐसी दावत करूँगी जैसी अपने पेट जायेंगे की लड़की के पैदा होने पर करती।"

यह कहकर गुलाब ने अपना सिर दीवान रामदयाल के सीने पर टिका दिया और अपनी अंगड़ाई में फैली बाहों के अन्दर दीवानजी को कसकर बोली, "दीवानजी ! एक बात पूछ लूँ आपसे ?"

"एक नहीं, तुम दो बात पूछ सकती हो गुलाब !" प्यार के साथ सिर पर हाथ फेर कर उलझे बालों को सुलझाने के लिए उनमें ऊँगलियाँ डालते हुए दीवान रामदयाल ने कहा।

"तो सच-सच कहना क्या तुमने कभी उनके सामने मेरा नाम लिया है ? अगर न लिया हो तो खुदा के वास्ते एक नाँचने वाली ही मुझे रहने देना।"

दीवान रामदयाल ने गुलाब को कभी ग़लत नहीं समझा, लेकिन उन्होंने अपने को भी हमेशा ठीक ही रहने दिया। गुलाब ने अब इस क़रीने के साथ अपने को वापिस खींचा कि दीवान रामदयाल को ज़रा भी तकलीफ़ न हुई। बात भी बनी-की-बनी रह गई और काम भी चलता रहा।

दीवान रामदयाल गुलाब के कमरे पर हर चीज़ के मालिक हैं।

गुलाब उनकी खिदमत करने में मज़ा लेती है।

इसी पीने और पिलाने में रात के दस बज गये।

तभी किसी ने ज़ीने के दरवाजे पर दस्तक दी। गुलाब ज़ीने पर गई तो देखा करीमखाँ खड़े हैं। गुलाब ने धीरे से कहा, "दीवानन जी से कह देना दीवानजी गश्त पर गये हैं।"

करीमखाँ गुलाब को सलाम करके वापस चला गया और गुलाब आलमारी से नई बोतल निकालकर दीवान रामदयाल के पास पहुँच गई।

दो गिलासों में शराब उड़ेलकर एक दीवान रामदयाल के हाथ में दिया और दूसरे को अपने हाथ में सँभाल कर बोली, "दीवान जी मैंने बड़े-बड़े पीने वाले देखे हैं। यहाँ सभी किस्म के लोग आते हैं, लेकिन आपके पासंग भी कोई नहीं चढ़ता। सच जानिये दीवानजी! जब से आपके साथ पीना शुरू किया है तब से किसी ऐरा-ग़ैरा के साथ हाथ में गिलास सँभालते भी शर्म आती है।"

"गुलाब! वह दिन याद है तुझे, जिस दिन हम रामप्यारी के यहाँ से तेरे पास आये थे।" बात बदलते हुए दीवान रामदयाल ने कहा।

मेरे दिल पर आपकी हर बात नक्श है दीवानजी! आप कहें तो एक-एक गिना दूँ आपको।"

"वह दिन है और आज का दिन है गुलाब! दीवान रामदयाल के शरीर को वह नहीं छू सकी। सेठ दामोदर प्रशाद उसे पैसा जरूर मुझसे ज्यादा दे सकता है, लेकिन जिंदगी का जो मजा मैं दे सकता हूँ, वह उसके पास कहाँ?" दीवान रामदयाल ने गुलाब की आँखों में आँखें डालकर उसे अपनी प्यार की भुजाओं में कस कर कहा।

"लेकिन इस जिन्दगी के मजे को समझने की तमीज़ भी तो होनी चाहिए दीवान जी! इसीलिए तो करीमखाँ ने उस दिन कहा था कि हम पेशे-वर नाचने वाली हैं और वह एक जंगल का फूल है जिसे दीवान जी की मेहरबानी ने लाकर गुलशन में खिला दिया है।

देखते नहीं हो क्या, चेहरे पर हवाइयाँ उड़ती जा रही हैं। मैं पूछती हूँ, कहाँ है वह हुस्न का जलाल, कहाँ है वह नाज़ और अन्दाज़, कहाँ है वह चेहरे की बनावट, कहाँ है वह होठों की मुस्कराहट और आपकी गुलाब ज्यों-की त्यों है।" एक ठसके के साथ गुलाब ने तनकर कहा।

"यानी हुस्न को कैद कर लिया है तूने? गुलाब तू बड़ी ही खतरनाक है। तेरा काटा पानी नहीं माँग सकता। लेकिन दीवान रामदयाल भी कुछ

कम जहरीला नहीं है। इसलिये बस यही याद रखना कि एक साँप को छोड़कर दूसरे से लिपटने की कोशिश न करना।"

"तोबाह, तोबाह! क्या कह रहे हो दीवानजी! गुलाब का यह सिर जो दीवान रामदयाल की गोद में रखा है, वह किसी ऐरा-गैरा की गोद में रखा जाने वाला नहीं है।"

दीवान रामदयाल जहाँ एक ओर अपनी ऐश की जिन्दगी बिताते हैं, वहाँ दूसरी ओर अपनी औरत का भी पूरा-पूरा ख़याल रखते हैं।

मेरठ में लाते ही दीवान जी ने अपनी औरत का इलाज पुलिस-हस्पताल के बड़े डाक्टर से कराना शुरू किया और डाक्टर ने भी पूरी निगहबानी से उसका इलाज करना शुरू कर दिया।

दीवान रामदयाल के इसी बीमार औरत से दो लड़के और दो लड़कियों ने जन्म लिया। जब पहला लड़का हुआ तो खूब शानदार लड्डू-कचौरी की दावत की गई।दीवान जी की माता जी भी आईं।

लेकिन दुर्भाग्य ऐसा ज़बरदस्त रहा कि इन बच्चों में से एक भी ज़िन्दा न रह सका और दीवान जी की औरत की हालत पहले से भी ज्यादा खराब होती चली गई। शरीर हड्डियों का ढाँचा रह गया। देखने पर मालूम होता था कि मानो खून सूख गया है।

दीवान रामदयाल की माँ ने देखा कि उनके लड़के की जिन्दगी बहू की बीमारी ने बरबाद कर दी। रामदयाल से बोलीं, 'बेटा रामदयाल, करेगा तो तू अपने ही मन की, लेकिन क्या हर्ज है अगर बहू की छोटी बहन से तू अपनी दूसरी शादी कर ले। बहू को भी इसमें कोई ऐतराज़ नहीं होगा। और मेरी आत्मा को शांति मिलेगी।"

दीवान रामदयाल के नाना की भी यही मंशा थी।

दीवान रामदयाल दोनों की बातें सुनकर हँसते हुए बोले, "आप दोनों मेरे बजुर्ग हैं और जो कुछ भी कह रहे हैं मेरी भलाई की खातिर कह रहे हैं। लेकिन अगर बहू की बहन भी यहाँ आकर इसी तरह बीमार पड़ गई तो मैं दोनों का इलाज कराने के लिए कहाँ से रुपया लाऊँगा? देख नहीं रहे हो कि जो कुछ भी कमाता हूँ, सब इसी की बीमारी में लग जाता है।"

इस बात की भनक बहू के कानों में पड़ी तो उसने अकेले में ही रोना शुरू कर दिया। अपने दिल की बात उसने किसी से न कही। दिल में जो कुछ भी गुबार आये उन्हें आँसुओं से धोकर आँखों से निकाल दिया।

दीवान रामदयाल क्वार्टर से बाहर निकल आये। घरके झमेलों में इससे ज़्यादा वक्त खराब करने के लिए उनके पास नहीं था।

चौकी पर पहुँचे तो करीम खाँ ने इत्तला दी, "सुना है आज काँगरे-सियों ने बड़ा बवंडर खड़ा किया हुआ है। हमारे इलाक़े के किसी मकान में आज नमक बनाया जायगा। सुना है उसमें इन लोगों ने नमक बनाने की मिट्टी के बोरे न जाने कहाँ से लाकर लगा लिये हैं।"

"तुम्हें किसने इत्तला दी है इस बात की ?" दीवान रामदयाल ने पूछा।

करीम खाँ ने एक छपा हुआ इश्तहार दीवान रामदयाल के हाथ में दे दिया। दीवान रामदयाल इश्तहार को पढ़कर आगबगूला हो उठे और जरा तैश खाकर बोले, "हरामज़ादे कहीं के। मेरी ही हिस्ट्रीशीट पर धब्बा लगवाने पर तुले हैं। इन्हें भी शहर के सब इलाक़े छोड़ कर मेरा ही इलाका पसंद आया है। एक-एक की चमड़ी न उधड़वा डालूँ तो मेरा नाम भी दीवान रामदयाल नहीं।"

"सुना है कहीं नाँचने वालियों के बीच में ही किसी मकान में यह सब होने वाला है।" करीमखाँ बोला।

"कोई बात नहीं। जहाँ भी होगा, देखा जायगा। आख़िर जो होगा, आयेगा तो सामने ही और जो करेगा उसे भी खुलकर मैदान में आना होगा।"

"इसमें क्या शक है।"

इसी समय कोतवाली का एक सिपाही आता हुआ दिखाई दिया। कोतवाली के सिपाही ने आकर दीवान रामदयाल को तपाक के साथ सलाम झुकाया और फिर कोतवाल कासिम मिरज़ा का संदेश देते हुए कहा, "कोतवाली में गारद की कमी नहीं है। तुम्हारे इशारे पर घुड़सवार और पैदल सिपाही जहाँ चाहोगे, चले आयेंगे।"

"कोतवाल साहब से कह देना कि यहाँ उनकी पल्टन की जरूरत नहीं पड़ेगी। मेरे पास भी उनकी दया से कुछ कम इन्तज़ाम नहीं रहता और अगर बात हद से गुज़री तो ख़बर पहुँचा दूँगा।" दीवान रामदयाल बोले।

फिर फ़ौरन ही करीम खाँ की तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा, "जरा लीले पहलवान को तो बुला लाओ। कहना कि जिस हालत में भी हो, उठा चला आये।"

कोतवाल का सिपाही अपना संदेश देकर और दीवान जी का संदेश लेकर वापस चला गया।

थोड़ी ही देर में लीले पहलवान करीमखाँ के साथ आता दिखलाई दिया।

लीले पहलवान रंग का लीला ही है। नाटा क़द, पेट डेढ़ हाथ छाती से बाहर निकला हुआ, चलते वक्त दोनों साँतलें एक दूसरे से रगड़ खाती हैं, सिर और मूछें घुटे हुए साफ़ हैं, नीले रंग के तेहमद पर सुफ़ैद मलमल का कुर्ता पहनता है और पैर ग्राम तौर पर नंगे ही रहते हैं।

दीवान जी का संदेश सुनकर लीले पहलवान अखाड़े की मिट्टी-लगे शरीर पर यों ही मलमल का कुर्ता डालकर, लंगोट पर तेहमद मारे नंगे पैरों चौकी पर चला आया और सलाम झुकाता हुआ बोला, "किस लिए याद फ़रमाया है हुजूर ने।"

"तुम आगये लीले पहलवान! क्या हाल-चाल है तुम्हारे अखाड़े का? कितने पट्ठे पाले हुए हैं आजकल?" दीवान रामदयाल ने पूछा।

"ये ही बीस-पच्चीस पट्ठे हैं दीवान जी लेकिन ग़ज़ब के लौंडे हैं, बिच्छू के बच्चे हैं। एकबार कह दो तो पूरे मेरठ शहर को अपनी लाठियों के दम पर भेड़-बकरियों की तरह हाँक-हाँक कर आगे करलें।" सीना उभार कर लीले पहलवान ने कहा।

"और कल्लू पहलवान के अखाड़े क्या हाल है आजकल?" दीवान रामदयाल ने ज़रा मुस्करा कर पूछा।

"वह तो कभी का खत्म हो चुका दीवानजी! अखाड़े सूखे पड़े हैं, कौन जायेगा वहाँ अब और यह जानकर कि दीवान रामदयाल की नजरे इनायत है उस अखाड़े पर, तो परिन्दा भी पर नहीं मार सकता।" मुस्करा कर लीले पहलवान बोला।

"अपने पट्ठों को लेकर गुलाब के कमरे पर पहुँच जाओ और जब तक मेरा इशारा न हो वहीं पर ठहरे रहो। तुम्हारे पट्ठों के पीने के लिए बीस बोतले शंतरे की शराब वहाँ भेज दी गई हैं। और किसी चीज़ की जरूरत हो तो गुलाब को बोल देना, वह मँगा देगी।" दीवान रामदयाल बोले।

लीले पहलवान की खुशी का पारावार नहीं रहा। उसके पट्ठे तो उससे कई दिन से शराब पीने की इच्छा ज़ाहिर कर रहे थे। खुदाबन्दे क़रीम ने यह मौक़ा उसे अपने आप अता किया।

एक बार लीले पहलवान ने अपने खुश्क होठों पर जीभ फेरी और फिर मुस्करा कर बोला, "दीवान जी! आप मेरे मन की बात ताड़ जाने में बड़े ही माहिर हैं। सच! आपने कैसे जान लिया कि मेरे पट्ठे कई दिन से मुझे शराब के लिए तंग कर रहे हैं?"

'मैं अपने आदमी के मन की बात खूब पहचानता हूँ लीले पहलवान! मेरे साथ वफ़ा करने वाला इन्सान कभी धोखा नहीं खा सकता और मुझसे

बेवफ़ाई करके कोई पनप नहीं सकता।

लेकिन अब देर मत करो तुम लीले ! फ़ौरन मय अपने पट्ठों के गुलाब के कोठे पर पहुँच जाओ।" कहकर दीवान रामदयाल मूढ़े से उठ खड़े हुए और बाग़ीचे के छोटे से लॉन में घूमना शुरू कर दिया।

दीवान रामदयाल को रह-रह कर इन काँगरेसियों पर खीज आ रही थी। अपने इलाके के अमन में हायल होने वाले इन गुण्डों को वह बिलकुल नापसंद करते हैं। आज़ादी की बात उन्हें मज़ाक़ मालूम देती है। जिस सल्तनत को हासिल करने के लिए इतने दिन तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जद्दोजहद की, खूंखार लड़ाइयाँ लड़ीं, धोखे और चालबाजियों का भी पूरा-पूरा इस्तेमाल किया, आख़ीर में सन् सत्तावन के विद्रोह का भी मुक़ाबला किया, उसे ये दो अंगुल की टोपी लगाने वाले गाँधी के गुलमटे भला कैसे पा जायेंगे, यह बात उनकी समझ में ही नहीं आती।

ऐसी हुड़दंगेबाज़ी को अपने इलाक़े में दीवान रामदयाल नहीं पनपने दे सकते। उन्होंने तहइयार कर लिया कि कोतवाल हातमसिंह ने जुलूस पर क्या क़हर ढाया होगा जो वह आज की इस नमक-कानून तोड़ने वाली सभा ढायेंगे।

संध्या को चार बजे, ठीक उसी समय जो इश्तहार में छपा था, काँगरेस का एक जत्था महात्मा गाँधी की जै, भारत माता की जै, इन्क़लाब-ज़िन्दाबाद के नारे लगाता हुआ आया। मेरठ शहर के घंटाघर से चल कर टाउन-हाल में चला गया। टाउन-हाल में पहले से भी कुछ लोग इकट्ठे हो गये थे।

इस जत्थे ने टाउन-हाल के मैदान में जाकर अपना झंडा गाड़ दिया। जत्थे के जत्थेदार ने छोटी सी तक़रीर की। उसके बाद उसने अपने झोले से निकाल कर नमक की एक पुड़िया का नीलाम किया। शहर के तमाशबीनों ने इस छोटी सी पुड़िया को नक़द पाँच सौ रुपयों में ख़रीदा।

करीम खाँ ने दीवान रामदयाल को इस जत्थे की कार्रवाही की जाकर सूचना दी। दीवान रामदयाल ने पूछा, "सभा पूरी तरह से जुट गई क्या करीम खाँ ?"

"बिलकुल पूरी तरह। नमक की पुड़ियों का नीलाम हो रहा है। दो टके की पुड़िया पाँच सौ में खरीदी है तमाशबीनों ने।" करीम खाँ ने जवाब दिया।

"पाँच सौ में," आश्चर्य-चकित होकर दीवान रामदयाल के मुँह से निकला।

दीवान रामदयाल करीम खाँ और चौकी के तीन कांस्टेबिलों को साथ लेकर गुलाब के कमरे पर, पहुँचे।

लीले पहलवान के पट्ठे शराब में दुत पड़े लेट लगा रहे थे। दीवान रामदयाल को देखकर सब एकदम खड़े हो गये और लीले पहलवान ने सलाम झुकाते हुए कहा, "सब पट्ठे तय्यार हैं दीवान जी!"

"तो ठीक है। तुम लोग सब इन हमारे कांस्टेबिलों के साथ चले जाओ और सामने के पार्क में जो जलसा हो रहा है उसके बीच में घुस जाओ। इन लो .ों की मेज़ कुर्सियाँ उठा कर फेंक दो और जो आदमी लेक्चर दे रहा है उसकी गर्दन पकड़ कर जमीन पर खींच लो। फिर जितने भी तख्तों पर बैठे हों उन्हें इतनी मार लगाओ कि सब अधमरे हो जायें। एक बात का ख़याल रखना बस, कोई लाश न होने पाये।"

"ऐसा ही होगा दीवान जी!" लीले पहलवान ने कहा, "आप निसाखातिर रहें।"

"मार पीट के बाद सबको रस्सियों में बाँध-बाँध कर चौकी पर ले आना करीम खाँ! मैं चौकी की तरफ़ ही जा रहा हूँ।" दीवान रामदयाल बोले।

"बहुत अच्छा दीवान जी!" करीम खाँ ने कहा और वह लीले पहलवान के बीस पट्ठे और तीन काँस्टेबिलों को लेकर वहाँ पहुँच गया जहाँ नमक की पुड़ियों का नीलाम हो रहा था।

इनकी शक्ल देखकर स्टेज से बोलने वाला काँगरेसी जत्थेदार बोला, "भाइयो और बहनों, अब आप लोगों के इमतहान का वक्त आ गया। पुलिस के कुत्ते आ चुके हैं। जो लोग उनसे डरते हों वे चुपचाप अपने-अपने घरों को चले जायें। हो सकता है अब यहाँ भी जलियाँ वाले बाग़ का ही छोटा-मोटा नमूना पेश किया जाय।"

लीले पहलवान के पट्ठे दनदनाते हुए भीड़ में घुसते चले गये और उन्होंने सबके देखते-देखते स्टेज पर शान्त बैठे हुए लोगों पर डंडे बरसाने शुरू कर दिये। उनका किसी ने मुकाबला नहीं किया और न किसी क़िस्म की भगदड़ ही मची। तमाशबीन लोगों की भीड़ जरूर कुछ कम हो गई लेकिन जमकर मार खानेवालों की भी तादाद कुछ कम नहीं थी।

दीवान रामदयाल अपनी चौकी के सामने मूछों पर ताव चढ़ाते हुए घूम रहे हैं।

कोतवाली में कासिम मिरज़ा बड़े परेशान हैं। उनकी समझ में नहीं आ रहा कि दीवान रामदयाल आखिर कर क्या रहे हैं। उन्होंने फिर एक रुक्का लिखकर दीवान रामदयाल के पास भेजना चाहा और इसमें सख्ती से

लिखा, "काँगरेस को सरकार ने खिलाफ़ कानून करार दे दिया है। ऐसी हालत में अगर शहर में काँगरेस का जल्सा हो गया तो मेरी कितनी वदनामी होगी। मेरी हिस्ट्री-शीट खराब हो जायगी। मेरी हिस्ट्री-शीट पर कमज़ोरी और कमहिम्मती का काला धब्बा लग जायगा।"

लेकिन खत लिख कर उन्हें सब्र नहीं आया। उसे वहीं फाड़ कर पुलिस की छोटी गाड़ी मँगाई और उसमें बैठकर सीधे दीवान रामदयाल की की चौकी पर पहुँचे।

देखा, दीवान रामदयाल मौज से अपनी चौकी के बाहर घूम रहे हैं। शहर-कोतवाल साहब को परेशानी में कार से उतरते देखकर दीवान जी ने आगे बढ़कर सलाम किया।

'तुम यहाँ घूम रहे हो ?" कासिम मिरज़ा ने पूछा।

'और जहाँ आप हुक्म करें वहाँ चला जाऊँ।" मुस्करा कर दीवान रामदयाल बोले।

'मेरा मतलब है कि तुमने उस काँगरेस के जुलूस और जलसे को न होने देने के लिए क्या किया ?" कासिम मिरज़ा ने पूछा।

"जो कुछ भी किया जा सकता है, वह सभी कुछ कर दिया गया है कोतवाल साहब ! दीवान रामदयाल के इलाके के लिए कोतवाल साहब को फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं है और यह भी समझ लें कि दीवान रामदयाल के किसी काम से कभी कोतवाल साहब को बदनामी नहीं आयगी।" दीवान रामदयाल सीना उभारकर बोले।

इसी समय उन्हें सामने से रस्सियों में बँधे बीस-पच्चीस काँगरेसी वालेंटियर और बीस-तीस शहर के तमाशबीन आते दिखाई दिये।

'लीजिये कोतवाल साहब ! यह आ रहा है काँगरेस का वह जुलूस और जलसा जिसके लिए आप परेशान हो रहे हैं। अब आप कहें तो इसका यहीं पर निपटारा कर दूँ और चाहें तो आपकी कोतवाली की हवालातों में इसे भेज दूँ।" मुस्करा कर दीवान रामदयाल बोले।

यह नज़ारा देखकर कासिम मिरज़ा की जान-में-जान आ गई। अब ज़रा उनके चेहरे पर भी मुस्कराहट दिखाई दी और उन्हें अपने उन काम करने वाले लोगों की अक्ल पर हँसी आई जो हमेशा ही उन्हें दीवान रामदयाल के खिलाफ़ उकसाते रहे हैं।

कासिम मिरज़ा कार में बैठते हुए बोले, 'दीवान रामदयाल, तुम यहीं पर इसका निपटारा कर दो। कोतवाली में तो सिर्फ़ उन लोगों को ही भेजना जिनको चालान काटकर जेलखाने भेज देना हो।"

"यही होगा सरकार ! आप बेफ़िक्री के साथ ऐश से लम्बी चादर तानकर सो सकते हैं। दीवान रामदयाल के रहते आपको परेशान होने की क़तन जरूरत नहीं है। दर असल बात यह है कि आपको आपके कान भरने वाले परेशान करते हैं। अगर एक बार आप सख्ती से उनके साथ पेश आ जायें तो सच कहता हूँ आपकी आधी दिमाग़ी परेशानी उसी वक्त दूर हो सकती है।"

"तुम ठीक कहते हो दीवान रामदयाल !" उनकी बात को तस्लीम करते हुए कासिम मिरज़ा ने कहा। "सब बात यही है दीवानजी, कि लोगों में क़ाबलियत तो है नहीं आप जितनी और आपकी तरक्की देखकर हसद सब के मन में होती है। इसलिए ये सब मुझे खामखा आकर परेशान करते हैं। लेकिन आज मैने भी तहइया कर लिया है कि किसी चुग़लखोर को पास नहीं फटकने दूँगा।"

कोतवाल साहब कार में बैठकर कोतवाली की तरफ़ रवाना हो गये।

लीले पहलवान के पट्ठों ने रस्सियों में बँधे काँगरेसियों और दूसरे लोगों को लाकर चौकी के सामने खड़ा कर दिया।

दीवान रामदयाल क़ैदियों के सामने आकर गरजते हुए बोले, "हराम जादो ! बतलाओ किस-किस को सुराज चाहिए। मै तुम्हें सुराज देने के लिए आया हूँ यहाँ।"

दीवान रामदयाल की जबान से ये शब्द सुनकर काँगरेसी जत्थेदार बोला "आज़ादी जिन्दाबाद।" और उसके बोलते ही सब रस्सियों में बँध वालेंटियरों ने नारा लगाया, 'आज़ादी जिन्दाबाद ! इन्क़लाब जिन्दाबाद !"

यह नारा सुनकर दीवान रामदयाल का दिल भक्क-भक्क करके ऐसे जल उठा जैसे फूँस के जलते छप्पर पर किसी ने स्प्रिट के घड़े धुधका दिये हों। दीवान रामदयाल का पारा सातवें आसमान पर पहुँच गया। गुस्से में पागल होकर बोले, "क़रीम खाँ ! क्या देख रहे हो। इन पाजियों की ज़रा करारी मरम्मत हो जानी चाहिये, तब अक्ल अपने आप ठिकाने आ जायेगी। शायद अभी इनकी हड्डियाँ सही सलामत बनी हुई हैं। जब तक दो चार की हड्डियाँ चकनाचूर नहीं हो जायेंगी तब तक इनके दिमाग़ों की दुरुस्ती नहीं होगी।"

लीले पहलवान को बुलाकर दीवान जी ने कहा, "अब ज़रा बेंते निकाल लो और ऐसी सड़ासड़ बरसाओ कि इन हरामखोरों के जिस्म सूज जायें।"

"जैसा हुक्म सरकार का।" कहकर लीले पहलवान ने अपने पट्ठों को बेतों से लैस कर दिया और फिर पाँच मिनट तक इतनी ज़ोर से बेंतें बरसीं

कि कई वालेंटियर बेहोश होकर ज़मींन पर गिर पड़े । उनकी बेहोशी की दशा में भी उनका अचेत शरीर इन पट्ठों की बेंतों से रूई की तरह पिबड़ाया जाता रहा ।

जब बेंतों की मार का यह दौर खत्म हुआ तो दीवान रामदयाल फिर बाहर निकल कर आये और मूछों पर ताव देते हुए गरजकर बोले, "अब आजादी जिन्दाबाद है या मुर्दाबाद ! कोई जमामर्द अब भी जिन्दाबाद कहने वाला हो तो जरा जबान निकले। दीवान रामदयाल के सामने ज़बान निकालने वाले की ज़बान खींच ली जाती है।"

काँगरेसी जत्थेदार बेंतों की मार खाकर बेहोश हो गया था और दो और जीदार वालेंटियरों को भी अब होश नहीं रहा। किसी में भी जबान हिलाने की ताकत न रही।

दीवान रामदयाल के चित्त को शांति मिली कि एक भी ज़बान उसकी बात का जवाब देने के लिए नहीं निकली। अपना मुक़ाबला करने वाले को दीवान रामदयाल बरदाश्त नहीं कर सकते ।

लीले पहलवान के पट्ठों को आज की जमामर्दी दिखाने के लिए दीवान रामदयाल ने दो-दो रुपये इनाम दिलाया। लीले पहलवान से कह दिया, "जाओ सेठ दामोदर प्रशाद से पचास रुपये हमारा नाम लेकर ले लेना। तुम्हारे काम से आज हम बहुत खुश हुए।"

"दीवान जी की नज़रे इनायत होनी चाहिए। आपके हर काम के लिए ख़ादिम हमेशा आपको तय्यार मिलेगा।" लीले पहलवान ने कहा।

"ज़रा अखाड़े में पट्ठों की तादाद बढ़ाने की कोशिश करो। कम-से-कम पचास पट्ठे तो हर वक्त तय्यार रहने ही चाहिएँ।" दीवान जी बोले।

"पट्ठे तो मैं आज पचास करलूँ दीवानजी ! लेकिन उनके खाने-पीने के खर्च का भी तो सवाल रहता है।" लीले पहलवान ने कहा।

"अबे ! कुछ करके तो दिखा लीले ! खर्च भी भगवान् देता ही है। खुदा पर भरोसा रख ज़रा। जो बीस का ख़र्चा चलाता है, वह पचास का भी ज़रूर चलायगा।" दीवान रामदयाल मुस्करा कर बोले।

दीवान रामदयाल के मुस्कराते आश्वासन पर लीले पहलवान क्या कुछ नहीं कर सकता। सलाम झुकाते हुए बोला, "इस बार जब सरकार अखाड़े में तशरीफ़ लायेंगे तो आपको पचास से कम पट्ठे नजर नहीं आयेंगे।"

"तो उनका इन्तज़ाम भी हो जायगा।" दीवान जी ने कहा।

"मुझे आपसे पूरी-पूरी उम्मीद है। आपके ही दम पर तो मैं मेरठ का उस्ताद कहलाता हूँ।" जाता हुआ लीले पहलवान बोला।

: १० :

दीवान रामदयाल को मेरठ ने एक यार के रूप में देखा, एक मेहरबान के रूप में देखा, एक संरक्षक के रूप में देखा, एक हिन्दू के रूप में देखा, एक तमाशबीन के रूप में देखा, एक शराबीन के रूप में देखा, एक रसिया के रूप में देखा, लेकिन जिस रूप में उसे कल मेरठ ने देखा, वह एक जल्लाद का रूप था।

काँग्रेस के निहत्थे जल्से पर जिस बेदर्दी के साथ उसने लाठी बरसवाई, वह एक देखने की चीज़ थी। शहर की आबरू के मालिक दीवान रामदयाल ने शहर के छँटे हुए गुण्डों के हाथों शहरकी बहू-बेटियों और शहर के नौजवानों को आबरू खाक में मिलवाई।

मेरठ का नौजवान खून उबाल खा उठा दीवान रामदयाल की इस हरकत पर। देवनागरी हाई स्कूल के चार लड़कों ने मिलकर क़सम खाई कि मेरठ में या तो वे नहीं रहेंगे या दीवान रामदयाल नहीं रहेगा।

अंधी जवानी और खुद्दारी ने इन चार फूलों को पहाड़ से टकराने के लिए हवा भर कर उड़ाना शुरू कर दिया और शहर की इज्जत के तूफ़ान में ये पागल होकर अपने मासूम रास्ते बनाने लगे।

दूसरे दिन दीवान रामदयाल संध्या के झुटपुटे में कासिम मिरज़ा से उनकी कोठी पर मिले और दो हजार के नोट पेश करते हुए बोले, "सरकार कोई बदअमनी तो नहीं नजर आई आपको मेरे इलाके में ? किसी बदनामी का बाइस तो नहीं बना मैं आपके लिए ?"

दो हज़ार के नोट सीधे हाथ में कासिम मिरज़ा ने लेकर उल्टे हाथ पर फटकारे। देखा सभी सौ-सौ के हैं। गिनने की जरूरत नहीं समझी और मुस्करा कर बोले, "कोतवाल हातमसिंह ने जो कुछ भी तुम्हारे बारे में कहा था, दीवान रामदयाल तुमने सब सच कर दिखाया। तुम्हारी हिम्मत, होशियारी और सचाई का मैं क़ायल हूँ। एस. पी. साहब कहते थे कि तुमने मेरी उनसे बड़ी तारीफ़ की है। मैं तुमसे तहे दिल से खुश हूँ !"

दीवान रामदयाल का दिल बाग़-बाग़ हो गया कोतवाल साहब के मुँह

से अपनी तारीफ़ सुनकर और फिर यह सुनकर कि एस. पी. साहब ने भी उनसे उनकी तारीफ की है, वह खुशी में पागल हो उठे।

"आप अफ़सर हैं कोतवाल साहब ! मेरी हिम्मत तो आप लोगों के बूते पर ही है। अगर आप लोग मौक़ा ही न दें तो मैं हिम्मत कहाँ से दिखलाऊँ ? लेकिन हाँ, जहाँ तक सचाई का सवाल है, मैंने जाने कितने लाख का वारा न्यारा किया है और फिर भी मेरे पास कोई रोकड़ जमा नहीं है। जहाँ से जो दौलत कमाता हूँ वहाँ की वहीं पर लुटा देता हूँ। किसी शहर की चोरी में कभी नहीं करता। मेरठ से जिस दिन जाऊँगा, उस दिन आप चाहें तो मेरी तालाशी ले लें। क्या मजाल जो यहाँ से एक कौड़ी भी लेकर चलूँ।

परमात्मा से हमेशा यही मनाता रहता हूँ कि हर रोज़ इज्जत से आये और इज्जत से जाये। रुपया-पैसा तो हाथों का मैल है।"

कासिम मिरज़ा दीवान रामदयाल की बात सुनकर बहुत खुश हुए। दीवान जी के खर्चों को देखकर वह यह अंदाज़ लगा चुके हैं कि दीवान रामदयाल के खर्चे शाहाना हैं।

दीवान रामदयाल कोतवाल साहब का हक उन्हें पेश करके सीधे चौकी पर आये तो देखा क़रीमखाँ के पैर में पट्टी बँधी है और वह खाट पर पड़ा-पड़ा कराह रहा है।

दीवान रामदयाल ने आगे बढ़कर एक कांस्टेबिल से पूछा, "क्या माजरा है ? करीमखाँ को चोट कैसे लगी ?"

"अजी बस जान बच गई, यही ग़नीमत समझिये। करीमखाँ आपके मूढ़े पर बैठे हुक्का पी रहे थे कि इतने में चार लड़के इधर से गुज़रे। बड़े ही तेज़ तर्रार थे चारों।"

"फिर कुछ हुआ भी ? यह भी कहेगा या नहीं। यह बतलाओ कि करीमखाँ के चोट कैसे लगी ?" दीवान रामदयाल ने पूछा।

"दीवान जी क्या कहें, उन लड़कों ने एक हाथ का बना बम इतनी ज़ोर से फेंका कि करीमखाँ ज़रा-ज़रा ही बच गये। फिर भी वह इनके पैरों के पास ही आकर फटा और उसमें से निकलने वाली कीलों और काँच के टुकड़ों ने इनके दोनों पैर घायल कर दिये।"

"फिर क्या किया तुमने ?" दीवान रामदयाल ने दाँत किटकिटा कर मूँछें चढ़ाते हुए पूछा।

"हम लोग कर ही क्या सकते थे दीवानजी ! फ़ौरन करीमखाँ को हस्पताल ले गये और दोनों पैरों में पट्टियाँ बँधवा कर ले आये। डाक्टर साहब ने

कहा है.....''

दीवान रामदयाल को तैश आ गया कांस्टेबिल की बात सुनकर। वह गरज कर बोले, "मैं यह नहीं पूछता कि डाक्टर ने क्या किया और करीमखाँ का क्या हुआ ? मैं पूछता हूँ कि उन बदमाश लड़कों का क्या बना जो दीवान रामदयाल की चौकी पर आकर ऐसी खतरनाक हरकत कर गये।"

"हम लोगों ने बहुत कोशिश की उन्हें पकड़ने की लेकिन बस क्या कहें, हवा थे वे तो दीवान जी, बिलकुल हवा। इतनी तेज़ी से भागकर गलियों में लापता हो गये कि पकड़ना मुश्किल हो गया और शहर की भीड़ ने उन्हें अपने सीने में इस तरह छिपा लिया जैसे माँ अपने बेटे को छिपा लेती है।" निहायत सादगी से कांस्टेबिल बोला।

"तब तुम लोग सब एक-एक चुल्लू पानी में डूब कर मर जाओ। मुझे मुंह दिखाने की जरूरत नहीं है। शेर की माँद में आकर वे नाचीज बच्चे करीमखाँ को घायल कर गये, यह कुछ कम शर्म की बात नहीं है।" दीवान रामदयाल के लिए यह हतक की बात थी।

लेकिन साथ ही दीवान रामदयाल ने यह भी सोचा कि वे लड़के हों-न-हों दीवान रामदयाल पर ही हमला करने आये हों, करीमखाँ जैसे कीड़े-मकौड़े पर भला बम कौन खराब करने लगा है।

दीवान रामदयाल का दिमाग़ उन चार लड़कों की खोज से में लग गया और अब वह कहीं भी जाते समय उन्हें दिमाग़ से निकाल कर नहीं चल सकते।

दूसरे दिन जब वह एस. पी. साहब की मेमसाहब को शराब की बोतल पहुँचाने गये तो साहब बहादुर ने बड़ी इज्जत के साथ उन्हें बाग़ीचे में बुलाया और बोले, "डीवान रामडयाल, अमने शुना ऐं कि कल टुमारा चौकी पर किशी बडमाश ने कोई हाट का बना गोला पेंक डिया। उस बडमाश ने हमला टुम पर ही किया ओगा, क्योंकि टुमने कांग्रेश की मीटिंग पर लाठी-चार्ज किया टा।"

"यही खयाल मेरा भी है सरकार!" दीवान रामदयाल बोले।

"टुम को अब हर वक्ट हिफ़ाजट से चलना चाहिए। अम टुमको बंदूक का लाइसेंस डेगा। डुनाली बंडूक का।" साहब ने कहा।

"आपकी मेहरबानी होगी सरकार! लेकिन मैं इन लोगों को नाचीज समझता हूँ। किसी दिन अगर मेरी नजर के नीचे आ जायेंगे तो आप सुनेंगे कि शहर की किसी खंदक में पड़ी चार लाशें सड़ रही थीं।" दीवान रामदयाल एक अकड़ के साथ बोले।

"टुम बोट होशियार आडमी ऐ डीवान रामडयाल! अम टुमशे बौट खुश ऐ।" ठहाका मारते हुए हँसकर साहब ने कहा और मेम साहब से जो हिन्दी बहुत कम समझती थीं, अंग्रेजी में कुछ गिटपिट की। दीवान रामदयाल समझ गये कि निश्चय ही साहब ने उसकी तारीफ़ की होगी।

"मेम शाब आज टुम डीवान रामडयाल को अपना हाट शे एक पेग शराब पिलाओ। ये बौट काम का आडमी ऐ। अंग्रेजी शरकार का वरा खैरखा आडमी ऐ। इचको अम बौट टरक्की डेगा।

अमारा मटलब ऐ अम इशे अपना पेशकार बनाएगा। टुमारा क्या खयाल ऐ मेम शाब?" साहब बोले।

'एटवन्स" मेम साहब ने कहा और फूलदार काँच के गिलास में एक पेग ढाल कर उसमें सोडा मिलाकर मेम साहब ने दीवान रामदयाल को दिया।

दीवान रामदयाल बोले, "सरकार, मैं शराब पीने में गुरेज़ नहीं करता लेकिन हमारे देश में शराब अकेले नहीं पी जाती। अगर आप अपने खादिम को शराब ही पिलाना ही चाहते हैं तो अपने गिलासों में भी एक-एक पेग ले-लें।"

डीवान रामडयाल टीक केटा ऐ मेम साहब! अपना गिलाश में और अमारा गिलाश में भी शराब डाल लो।" साहब बोले।

"दीवान रामदयाल ने आज एस. पी. साहब की मेज पर बैठकर मेम साहब और साहब के साथ शराब पी और जब तीनों नशे में चूर हो गये तो मेम साहब दीवान रामदयाल की तरफ़ देखती हुई साहब से बोली, "डीवान रामडयाल वाक़ई एक बोट खूबसूरट नौजवान आडमी है।' उसकी आँखों की पुतलियों में खुमारी के डोरे खिच गये और शरीर शराब के नशे में फूल जैसा हलका और मुलायम हो गया।

एस. पी. साहब फौज के रिटायर्ड अफ़सर हैं। सन् चौदह के महायुद्ध में अंग्रेजी सरकार ने उन्हें लड़ाई पर भेजा था। लड़ाई के बाद रिट्रेंचमेन्ट में आने से उनकी नौकरी छूट गई। सरकारी खैरख्वाह नौकर होने की हैसियत से उन्हें फिर हिन्दुस्तान में एस पी. बनाकर भेज दिया गया।

एस. पी. साहब की उम्र लगभग सेंतालीस साल की है लेकिन उनकी मेम साहब की उम्र सिर्फ इक्कीस साल की है। एस. पी. साहब ने यह शादी इंग्लैंड से हिन्दुस्तान आते समय ही की थी और चलते समय मेम साहब से कहते आये थे कि वह बहुत जल्द उन्हें हिन्दुस्तान बुला लेंगे।

साहब ने हिन्दुस्तान आकर अपना वायदा पूरा किया और मेम साहब को

हिन्दुस्तान बुला लिया।

हिन्दुस्तान में आकर मेम साहब की जो खातिर-तवाजै दीवान रामदयाल ने की, वह कोई और नहीं कर सका।

दीवान रामदयाल तबियतदार आदमी है। हुस्नपरस्ती का उसे शौक है और औरत की जवानी की तरफ़ वह न झुके, यह बात नामुमकिन है। खूबसूरत औरत किसी भी ज़ात, बिरादर की चाहे क्यों न हो, दीवान रामदयाल के दिल में एक मीठी-मीठी हरकत और तीखी-तीखी चसक-सी पैदा कर ही देती है।

आज पहली बार दीवान रामदयाल ने मेम साहब से नजरें मिलाईं और देखा कि उनकी नज़रों में अतृप्त वासना झाँक रही है। मेम साहब की जवानी एक नौजवान पुरुष के पुरुषत्व की भूखी थी और उस भूख की खूराक उसे पचास साले साहब बहादुर के ढाँचे में मिल नहीं रही थी।

दीवान रामदयाल की नजर फिर साहब की तरफ़ गई और उसका कलेजा अन्दर तक हिल उठा। उसे डर लगा कि कहीं साहब को उसके नज़र मिलाने में उन दोनों के मेल-मिलाप की बू न आने लगे। वह घबराया कि कहीं इस आज की शराब पीने का नतीजा पेशकारी मिलने के बजाय बरखास्तगी न हो जाय।

लेकिन उसने आश्चर्यजनक तरीके पर साहब को कहते सुना, "वेल रामडयाल ! टुम बौट अच्छा आडमी ऐ ! अमारा मेम शाब टुमें बौट पशंड करटा ऐ। टुम अगर डाँश जानटा ऐ टो मेम शाब को डाँश केरा शकटा ऐ। अमारा बाडी में अब उटना टाकट नईं ऐ।"

"हुजूर में डाँस नहीं जानता लेकिन शराब मैं ज़रूर पिला सकता हूँ मेम साहब को। आपका शरीर पुराना पड़ चुका है और आप उतनी शराब पीने में मेम साहब का साथ भी नहीं दे सकते जितनी इन्हें पीनी दरकार ह। हुजूर का हुकुम हो तो मैं साथ दे सकता हूँ।" दीवान रामदयाल ने अपने दोनों हाथ जोड़कर तपाक के साथ कहा।

"वेल डीवान रामडयाल टुम बौट बरिया आडमी ऐ। अम और अमारा मेम शाब टुम शे बौट खुश ऐ। टुम मेम शाब को खुश करो। मेम शाब का खुश रेना श अम खुश रैटा ऐ।" साहब बहादुर बोले।

दीवान रामदयाल ने अब तक सिर्फ पाँच ही पेग लिये थे। ये पाँच पेग उसके लिए तो कुछ थे ही नहीं लेकिन एस. पी. साहब उन्हें पीकर लड़खड़ा चुके थे।

"शाब बाडुर इटना शे जादा शेराब नईं पी शेकटा।" मेम साहब ने

दीवान रामदयाल की तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा, "और अमारा शाथ टूट जाने शे अम भी रुक जाटा ऐ। अकेला पीने का टबियट नईं ओटा।"

"आपका फ़रमाना बजा है मेम साहब ! शराब अकेले पीने की चीज है भी नहीं है। कोई मीठा शरवत तो है नहीं शराब ! कड़वी चीज़ ठहरी। कलेजे तक को छीलती चली जाती है। जब तक इस कलेजे को छीलने वाली चीज़ के साथ-साथ उस पर मरहम लगाने वाली दूसरी कोई चीज़ सामने न हो, तब तक पीने का मज़ा ही क्या है ?" दीवान रामदयाल बोले।

साहब को अब नशे में अपनी सुध नहीं थी। दीवान रामदयाल और मेमसाहब ने उन्हें उठा कर पलंग पर लिटा दिया और ऊपर से बिजली का पंखा खोल दिया। बिजली के पंखे की हवा में नशा और गहरा होकर साहब बहादुर को नशीली दुनियाँ के स्वर्गिक झूले पर झुलाने लगा। ख़ुमारी के स्वर्ग में थे इस समय साहब बहादुर।

उनकी दुनियाँ में अब सिर्फ वह हैं और उनकी शराब।

मेम साहब और दीवान रामदयाल आमने-सामने बैठ गये। मेम साहब ने दो पेग और ढाले और गिलास उठाकर होठों से एक चुस्की लगा कर बोलीं, "टुम बौट मीटा-मीटा बेडमाश आडमी मालूम डेटा ऐ डीवान रामडयाल ! टुमने अमे आज तक नईं बटलाया कि टुम इटना बरिया शराव पिलाना जानटा ऐ।"

"बतलाता क्या सरकार, आप लोग बड़े आदमी हैं, अफ़सर ठहरे। डर लगता है आप लोगों से। हम बेचारे पुलिस के मामूली दीवान, डरते हैं कि कहीं खुशी-खुशी में आप नाराज़ न हो बैठें।" दीवान रामदयाल बोले।

"टुम बौट बाट बेनाना जानटा ऐ डीवान रामडयाल ! अमने उस रोज मेफ़िल में टुमारा गुलाब और राम......अम बूल गेया उशका नाम, डेका टा। अच्चा टा वो बी, लेकिन क्या टुमारा मेम शाब अच्चा नईं लगटा टुमें ?" नशीली आँखों वाले चेहरे को, मेज पर रखी अपने दोनों हाथ की कोहनियों पर टिके दोनों हाथों के बीच सँभालती हुई मेम साहब बोलीं।

दीवान रामदयाल भी आखिर पत्थर का बना हुआ इन्सान नहीं है, रति उसके सामने नंगी नृत्य करे और वह अपने ब्रह्मचर्य पर काबू किये बैठा रहे, ऐसा योग भी तो उन्होंने नहीं सीखा। साहब का थोड़ा सा डर है उन्हें, लेकिन शराब के गुलाबी नशे के रंगों में वह डर भी घुल-मिल कर न जाने किधर बह गया।

दीवान रामदयाल ने मेम साहब की आँखों की तरफ़ हल्की-सी निगाह डाली तो उन्हें दिखलाई दिया कि वहाँ पिपासा का गहरा समुद्र लहरें मार रहा

है। जरा संभल कर वह बोले, "क्या पीने-पिलाने का काम खत्म हो चुका मेम साहब ?"

"टुम और माँगटा ऐ डीवान रामडयाल ! अमारा टाकट टो अब और लेने का नई ऐ" मेम साहब ने कहा।

"तो मुझे इजाज़त मिलनी चाहिए ! साहब बहादुर ने मुझे आपको शराब पिलाने की ही इजाजत दी है।" और इतना कहकर दीवान रामदयाल कुर्सी से खड़े हो गये।

मेम साहब की तरसती आँखें दीवान रामदयाल की जवानी पर लल-चाती रह गईं।

मेम साहब बोलीं, "टुम जाटा ऐ डीवान रामडयाल ! अमारा ड्राइवर टुमें चौकी पर चोर आयेगा। चेलो अम बोल डेटा है अपना ड्राइवर को।"

"मैं पैदल ही चला जाऊँगा मेम साहब ! आप तकलीफ़ न करें। अब जरा आप साहब बहादुर की खबर लें। बेचारे कितनी देर से नशे में चुप-चाप पड़े सो रहे हैं।" दीवान रामदयाल दरवाजे की तरफ़ बढ़ते हुए बोले।

मेम साहब भी साथ-साथ होलीं और दीवान रामदयाल का हाथ अपने हाथ में लेकर बोलीं, "शाब का खेबर अम क्या लें डीवान रामडयाल ! जब टुम अमारा खेबर नई लेटा ऐ। जवानी का खेबर जवानी ले शकटा है। बुढ़ापे का खेबर जेवानी क्या लेगा और जेवानी का खेबर बुढ़ापा क्या लेगा ?"

दीवान रामदयाल ने मेम साहब का मुलायम हाथ धीरे से अपने दोनों हाथों की हथेलियों के बीच रखकर दबा दिया और न जाने कैसे दोनों के तरसते होंठ एक दूसरे से मिलते-मिलते रह गये।

: ११ :

दीवान रामदयाल साहब की कोठी से कार में बैठकर चौकी पर आये। एस० पी० साहब की कार को पुलिस का हर आदमी पहचानता है। उसके हार्न की आवाज़ से भी हर सिपाही वाकिफ़ है।

चौकी के पास आकर ड्राइवर ने हार्न बजाया और मोटर की चाल हल्की की तो चौकी के पहरे के सिपाही ने आगे बढ़कर राइफल से सेल्यूट दी।

कार रुकी और उसके अन्दर से दीवान रामदयाल निकले। दीवान रामदयाल को देखकर सिपाही की जान-में-जान आई।

दीवान रामदयाल ने उतर कर एक पाँच रुपये का नोट ड्राइवर के हाथ में थमाया और बड़ी मोहब्बत के साथ कहा, "चौहान भय्या, मजे में रहो। कोई चीज़ की दरकार हो तो दीवान रामदयाल को याद कर लेना। रामदयाल जब तक मेरठ में है, किसी बात की तकलीफ़ न उठाना।"

'आपके रहते भला किसी को तकलीफ़ हो सकती है दीवानजी ! आप जैसा परवरदिगार अफसर तो आज तक नज़र से गुज़रा ही नहीं।" बड़े अदब के साथ एस० पी० साहब के ड्राइवर ने कहा। "साहब की कोठी के सभी नौकर-चाकर आपके गुण गाते हैं; दुआ माँगते हैं परमात्मा से आपकी अफसरी की।"

दीवान रामदयाल अपने क्वार्टर पर जाने से पहले करीम खाँ के क्वार्टर पर गये। करीम खाँ चारपाई पर लेटा हुआ हुक्का पीता मिला। इस समय उसकी तबियत ठीक थी और पैरों के ज़ख्मों में चीस भी नहीं थी।

"करीम खाँ ! तुम पर आज खुदा ने नाहक़ ही आफ़त ढादी !"

"आदाबे अर्ज दीवानजी ! बड़ी देर से आ रहे हैं। इस तरह रात को अकेले जाना-आना ख़तरनाक है। देख नहीं रहे हो कैसा घायल हुआ पड़ा हूँ।" करीम खाँ बोला।

"बात तो तुम पते की कहते हो करीम खाँ, लेकिन मैं भी अपनी आदत से मजबूर हूँ। बिना ख़तरनाक काम किये चैन ही नहीं पड़ती। आख़िर तुम ही कहो, कौन-कौन से कामों को स्तीफ़ा दे-दूँ ? कोतवाल साहब की हाज़री न बजाऊँ या एस० पी० साहब की ?" दीवान रामदयाल बोले।

'काम तो सभी करने होते हैं दीवानजी! लेकिन जानबूझ कर अपनी जान को खतरे में धकेल देना भी कुछ दानिशमन्दी नहीं। कांगरेस का जो यह तूफ़ान दिखाई देता है, इसमें माना कि गाल पिटवाने वाले लाले लोग ही भरे पड़े हैं लेकिन इसके पीछे एक खूंखार लोगों का गुट मिल रहा है। वे चार लड़के जो तुम्हारी चौकी पर आये थे, क्या तुम समझते हो इस नाचीज़ करीम खाँ की टाँगें जख्मी करने आये थे ?"

"मैं सब कुछ समझता हूँ करीम खाँ और इन अपने को क्रांतिकारी कहने वालों की भी नब्ज़ खूब पहचानता हूँ। क्रांति के नाम पर लड़कियाँ खूब फिसलती हैं, बेवकूफ़ होती हैं न औरतें। औरतों की अक्ल गुद्दी के पीछे होती है।" दीवान रामदयाल बोले।

"यार दीवान जी! क्या कह दिया तुमने। मेरे होठों की बात छीनली बस! इन औरतों के दिमाग़ में भेजा तो होता ही नहीं। जिधर को हाँकती हैं, सरपट हाँकती हैं। रुक कर सोचने समझने का मौक़ा ही नहीं रहता।" करीम खाँ ने कहा।

"इसीलिए तो कहता हूँ करीम खाँ, यह, क्रांति-भ्रांति का ढोंग सब लड़कियों की मजलिस में जाकर खत्म हो जाता है। मैंने कितने ही घुँघराले बालों वाले, चपटे गालों वाले नाक पर डोरी दार चश्मा चढ़ाने वाले, नाज़ुक क़लाई पर सोने की चेन वाली घड़ी बाँधने वाले बिना शिकन के रेशमी कुर्ते की जेब में तीन-तीन फ़ोन्टेनपेन लगाने वाले, चुनट दार सुपरफ़ाइन की बारीक धोती पर मखमली चप्पल पहनने वाले क्रांतिकारी देखे हैं।

करीम खाँ, अगर फूंक मार दूँ तो एक फूँक के धक्के से ऐसे चार-चार क्रांतिकारी तलमुंडी ऊपर पाँव हो सकते हैं।" सीने में उभार लाकर दीवान रामदयाल कड़क कर बोले और वाक़ई उनकी ज़बान से निकलने वाले हर शब्द में जीदारी भरी हुई थी।

"इसमें भी क्या कुछ शक है दीवान जी!" लेटे से बैठा होता हुआ करीम खाँ बोला, "लेकिन फिर भी होशियार रहना अच्छा ही है हर हालत में। मुझे वे लौंडे जो उस दिन बारूद का गोला फेंक गये थे, खतरनाक मालूम देते हैं।" करीम खाँ बोला। उसके दिमाग़ पर उस गोले का खतरनाक शब्द अभी तक छाया हुआ था।

दीवान रामदयाल भी लाख अपने मन से उन चार लड़कों की छाया को भगा देने का प्रयत्न कर रहे हैं लेकिन उनकी छाया भूत की तरह उनकी छाती पर सवार है। यहाँ तक कि जब मेम साहब से बातें कर रहे थे तो तब भी वह उन्हें नहीं भूले थे।

करीम खाँ के पास से लगभग दस बजे दीवान जी अपने क्वार्टर में पहुँचे। दीवानजी की बीमार बीवी ने खाट से खड़े होकर उनका स्वागत किया। खाना उसने अभी तक नहीं खाया था और खाया दीवान रामदयाल ने भी नहीं।

फिर भी दीवानजी ने पूछा, 'खाना खा लिया तूने !"

स्त्री मुस्कुराई और धीरे से बोली, "तुम रोज कह जाते हो कि मैं खाना बनते ही खा लिया करूँ, लेकिन क्या करूँ, खाया नहीं जाता।"

"लेकिन यह पुलिस की नौकरी है। इसमें समय-बे-समय चलता ही रहता है। परमात्मा ने क़िस्मत में यह बदनसीब नौकरी लिख दी कि आराम से बैठकर औरत का इलाज भी नहीं करा सकता।" दीवान रामदयाल ने कहा।

शीला खाट पर बैठकर बोली, "इलाज तो सब ठीक चल रहा है मेरा। उसकी आप क्यों इतनी चिन्ता करते हैं ? मेरे नसीब में अगर तन्दु-रुस्ती है ही नहीं तो इसमें आप क्या कर सकते हैं ?"

"पुलिस की मुलाजमत में आदमी की ज़िन्दगी मशीन बन जाती है। चौबीस घंटे की गुलामी है यह। चचा रेल में मुलाज़िम करा रहे थे। उस वक्त हकूमत की बू इधर खींच लाई। वरना तो लाख दर्जे अच्छा रहता रेल की नौकरी में। दुनियाँ भर की सैर करने को मिलती।" दीवान जी नशे की झोंक में जिधर की भी बात दिमाग़ में आ जाती है, उधर की ही फटकारने लगते हैं। शीला चुप-चाप इन्हें भावुकता में आकर सुनती चली जाती है।

शराब के नशे में इधर-उधर की परेशानियों को डुबाये हुए क्वार्टर के बीच में पड़ी खाट पर आलथी-पालथी लगाकर दीवान रामदयाल बैठ गये। शीला ने फिर खड़ी होकर थाली में खाना परसा और खाट पर ही लाकर थाली रख दी।

दीवान रामदयाल ने खाना खाते समय शीला को अपने पास ही बिठला लिया और जरा उसकी कमज़ोर कमर को सहलाते हुए बोले, "शीला आज सच-सच कहना, तू मुझसे नाराज़ तो नहीं रहती। मैं तेरे पास ज़्यादा नहीं बैठ सकता, क्योंकि नौकरी ही ऐसी है, लेकिन तू सच समझ कि मुझे चौबीस घंटे तेरे आराम का ख़याल रहता है।"

"क्या कह रहे हैं आप ? आपसे नाख़ुश होने की तो कोई वजह ही ही नहीं है मेरे पास। दुनियाँ में बहुत बुरे-बुरे लोग होते हैं। औरतों को शादी करके निभाना कोई मामूली बात नहीं है। और फिर मेरे जैसी बारह महीने की बीमार औरत की गाड़ी घसीटना तो और भी मुश्किल है।

मैं तो, आप सच जानिये, भगवान् से यही प्रार्थना करती हूँ कि वह हर औरत को मेरे जैसा पति दे।" शीला ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए दीवान

रामदयाल के पास को सिमटते हुए कहा ।

"ऐसी बात न कहो शीला ! तुम मेरे दिल की रानी हो । जिस दिल को मैं एक बार अपनी शीला को दे चुका, वह उसके साथ-ही-साथ उसकी चिता की ज्वाला में जलकर राख हो जायगा ।

शीला, तेरे अलावा इस दुनियाँ में सब धोखा-ही-धोखा है । माँ को मैंने एक-एक रुपये पर आजमा कर देखा है । रुपया पास होने पर भी एक-एक रुपये के लिए मैंने उन्हें धरम खाते सुना है ।

और एक तू है जिसके हाथों से लाखों रुपया निकल गया, लेकिन तूने कभी एक पैसा इधर-उधर नहीं किया ।

छोटा भाई है, उसका अभी कहना ही क्या है ? बेटे के समान है वह । देखें कैसा निकलता है ?"

"अच्छे ही निकलेंगे मेरे देवर जी ! उनके पढ़ाने-लिखाने में आप कोई कोताई न करें । और मैं तो कहती हूँ कि आप माजी को भी खर्चा भेजें । उन्हें जो आपने नानाजी के पास छोड़ा हुआ है, वह मुझे अच्छा नहीं लगता ।" शीला ने कहा ।

दीवान रामदयाल का जी चाहा कि वह शीला की सिधाई पर उसका मुँह चूम लें । वह क्या जाने कि दीवान रामदयाल अपने नाना का भी नाना है, अपनी माँ की भी वह माँ है, वह दुनियाँ में हर एक को अपने पहलू से परख कर देखता है ।

दीवान रामदयाल ने अपनी माँ को अपने नाना जी के यहाँ छोड़ा हुआ है । उनकी माँ अपने पिता की अकेली संतान हैं । इसलिए अगर वह वहाँ रहती हैं तो उस घर पर दीवान रामदयाल का पूरा-पूरा हक़ रहता है ।

दीवान रामदयाल को यहाँ चाहे लाखों की आमदनी रही है, लेकिन अपने नाना को वह हमेशा यही ज़ाहिर करते हैं कि उनका गुज़ारा भी बड़ी मुश्किल से होता है । उनकी इस बात पर खीज कर उनके बूढ़े नाना कहा करते हैं, "अबे जा, रामू तू भी यूँ ही रहा । पुलिस की भी क्या नौकरी है ? दो-दो चार-चार रपूलियों पर हर वक्त हाथ फैलाये रहते हैं ।"

इसे सुनकर दीवान रामदयाल मुस्कराते और कहते हैं, "आपने ठीक कहा है नाना जी ! पुलिस की नौकरी में किसी का पोतपूरा नहीं पड़ता । लाइये पाँच रुपये किराये के लिए । बड़ी मुश्किल से यहाँ तक आने का किराया जुटा पाया था ।"

"तो भय्या रामू, आने की ज़रूरत ही क्या थी ? तीन पैसे का कारट ही काम दे जाता । पाँच रुपये तूने अपने खराब किये और पाँच की चपत

बुढ़ापे में इस नाना को लगा दी। तू ही समझ, क्या मेरे बेटे हैं कमाने वाले, जो कमाकर दे जाते हैं ?"

"आप तो ऐसी ही बातें किया करते हैं नानाजी !" इस पर दीवान रामदयाल खिल-खिलाकर हँसते हुए कहते और उन्हीं से पाँच रुपये लेकर वापस मेरठ आने का टिकट लेते।

दीवान रामदयाल अन्दर-ही-अन्दर बहुत-सी बातें सोच-समझ कर शीला से बोले, "तू भी बावली है शीला ! अम्मा जी को अगर मैं खर्च दूँगा तो क्या नाना जी कभी लेने देंगे ? यह उनकी तौहीन की बात है। और मैं अगर माँ को ले आऊँ तो नाना जी का खाना खराब हो जायगा।"

'यह तो मैं भी सोचती हूँ।" शीला ने कहा।

शीला को दीवान रामदयाल वाक़ई बहुत चाहते हैं। उसके इलाज में दीवान रामदयाल ने कोई कसर उठा नहीं रखी, लेकिन बीमारी शरीर में कुछ ऐसी रम चुकी है कि कोई भी दवा कारगर नहीं होती।

दवाइयों के बल पर शीला का शरीर उम्र पकड़ता जा रहा है। जब वह मेरठ आई थी तो केवल चंद हड्डियों का ढाँचा मात्र थी। लेकिन अब वह कई-कई घंटे बैठ सकती है और आराम से मियाँ बीवी का खाना पका सकती है।

दीवान रामदयाल ने घर, वह घर जिसमें उसकी एक औरत रहती है, वह औरत रहती है जिसका जीवन उसके जीवन की छाया है, देखा। यह उसका दुर्भाग्य है कि वह एक स्वस्थ औरत से भरा-पुरा घर न देख सका।

दीवान रामदयाल की घर की बगिया में चार कलियाँ मुस्कराईं, लेकिन उनमें से एक भी खिलकर फूल न बन सका। घर का लहलहाता हुआ पौदा दो ठूँठों से आगे न बढ़ सका। उसमें न तो नये पौदे ही उगे और न नये फूल ही खिले।

घर और बाल बच्चों की तरफ़ बढ़ती हुई दीवान रामदयाल की इच्छा चकना-चूर हो गई। केवल शीला ही थी उनकी आँखों के सामने।

दीवान रामदयाल एक आज़ाद पंछी है, लेकिन इधर वालिद के मर जाने से उनकी कुछ जिम्मेदारियाँ हो गई हैं। भाई की तालीम में भी उन्हें हर महीने कुछ रुपया भेजना पड़ता है।

दूसरा बोझा जो उनके सिर पर है, वह बहन की शादी का बोझा है। आजकल दीवान रामदयाल के सिर पर उसी की फ़िक्र सवार है। लेकिन अपनी फ़िक्र को किसी के सामने रखने वाले कमज़ोर इन्सानों में से दीवान रामदयाल नहीं हैं।

दीवान रामदयाल को दूसरे ही दिन एस० पी० साहब ने दफ्तर में बुलाया और बोले, "वेल डीवान रामडयाल, अमने टुमको अपना पेशकार की जगह टैनाट किया। टुम आज से यहाँ काम करेगा।"

दीवान रामदयाल साहब के दफ्तर से सीधे अपने क्वार्टर पहुँचे। उनका ख़याल है कि उन्हें जो यह बड़े-बड़े पद मिलते जा रहे हैं, ये सब शीला की परमात्मा के चरणों में की गई प्रार्थना के ही फल-स्वरूप हैं। वरना तो वह खुद तो जो कुछ भी हैं, वह उससे छिपा नहीं है।

दीवान रामदयाल शीला की ठोड़ी को प्यार से ऊपर उठाते हुए बोले, "शीला तेरा दीवान आज पेशकार रामदयाल हो गया। साहब की पेशी में साल भर भी जम गया, तो वारे-न्यारे कर दूँगा।"

शीला मंत्र-मुग्ध होकर, भगवान् के चरणों में नतमस्तक हो गई। भगवान् ने उसके पति को ऐसे बड़े ओहदे पर बिठला दिया।

: १२ .

दीवान रामदयाल के पेशकार बनने की खबर मेरठ शहर के चप्पे-चप्पे में फैल गई। क्या कोतवाली, क्या पुलिस लाइन और क्या शहर की दीगर चौकियां। यहाँ तक कि पुलिस-क्लब में ठहरे हुए जिले के अन्य थानों के दारोग़ाओं और दीवानों के द्वारा जिले के थानों और इलाकों में फैल गई।

सेठ दामोदर प्रशाद को जब यह सूचना मिली तो उनका दिल बाग़-बाग़ हो उठा। दीवान रामदयाल एस. पी. साहब की पेशकारी पर चले गये तो मानो उन्होंने मेरठ शहर की पुलिस को ही खरीद लिया। दीवान रामदयाल के यार सेठ दामोदर प्रशाद को भी अब पुलिस की हर चौकी का सिपाही जानता है। जानता ही नहीं बल्कि खड़ा होकर सलाम झुकाता है और सेठजी का भी यह रवैया है कि वह साल भर में एक बार पुलिस की सब चौकियों पर मिठाई तकसीम कराते हैं, राज्य के कर्मचारियों को हाकिम कहकर भी वह अपना जरखरीद गुलाम ही समझते हैं।

दीवान रामदयाल ने देखा कि सेठ दामोदर प्रशाद अपनी फिटन से उतर कर चौकी की तरफ़ मुस्कराते चले आ रहे हैं। उनके हाथ में चमेली के फूलों का बड़ा-सा हार है और पीछे-पीछे मुनीम जी मिठाई की टोकरी लिये चले आ रहे हैं।

सेठजी आकर दीवान जी से गले मिले और यह गले मिलना पहले के गले मिलने से बहुत भिन्न रहा।

"बैठिये सेठजी! आप तो बड़ी ही तकलीफ़ करते हैं इस नाचीज के लिए।" दीवान रामदयाल बोले।

"जितने बड़े होते जा रहे हो दीवान रामदयाल उतने ही झुक कर बातें करना आपको शोभा देता है। लेकिन सच कहता हूँ कि मेरठ में आज तक किसी ने पुलिस में इतने जल्द नामवरी पाई होगी, यह मैं नहीं जानता। आपका इख्लाक ही आपको तरक्की के इस ऊँचे शिखर पर ले जा रहा है।"

"यार-दोस्तों की दुआएँ काम दे रही हैं सेठ दामोदर प्रशाद! और अफ़सरों की मेहरबानी है। फिर जो सब से बड़ी चीज है वह है नेकनीयती से सब के साथ ईमानदारी बरतना। क्या अफ़सर, क्या आपस के महकमे के लोग

और क्या रिआया, किसी को रामदयाल से यह शिकायत नहीं हो सकती कि उससे दीवान रामदयाल ने कोई वायदा किया और उसे पूरा करके नहीं दिखाया।" मूढ़े पर बैठकर सीधे पैर को उलटे पैर के घुटने पर रखकर हिलाते हुए कहा।

पास में खड़ा करीमखाँ बीच में ही बोल उठा, "तभी तो अफ़सर भी आपके गुलाम हैं और अमले के लोग तो आपको अपना वारिस समझते हैं। रिआया को भी हम लोग रोजाना यही कहते सुनते हैं कि दीवान रामदयाल जैसा परवरदिगार अफ़सर मेरठ में नहीं आया।"

"तुमने बिलकुल सच कहा है करीमखाँ! रिआया में दीवान रामदयाल का नाम पुजता है। सभी के काम आने वाला अफ़सर दिलों में घर कर लेता है।" सेठ जी बोले।

आज दिन भर दीवान रामदयाल के पास मिलनें वालों का ताँता लगा रहा। दीवान अब्दुलबेग, जो गढ़मुक्तेश्वर के थाने मे दीवान थे, एक टोकरा ख़रबूज़े लेकर मिलने के लिए आये। ख़रबूज़े उनके इलाके की सबसे आला पैदावार है।

"दीवान रामदयाल तुमने कमाल कर दिया! इसे कहते हैं मुकद्दर और इसे कहते हैं होशियारी और जीदारी! भय्या अब मेरी नौकरी का सिर्फ एक साल बाकी रह गया है। इसमें अगर तुम मेरे लिये साहब से कह कर कुछ करादो तो मेरे बाल-बच्चे भी जिन्दगी भर तुम्हें दुआ देंगे।" दीवान अब्दुल-बेग बोले।

दीवान रामदयाल ने मुस्करा कर कहा, "जिस दिन से बदल कर गये हो दीवानजी! आज दर्शन दिये हैं आपने। ये ख़रबूजे क्या आपके इलाके में इसी साल पैदा होने शुरू हुए हैं?

लेकिन दीवान रामदयाल कभी किसी के एहसान को भूलता नहीं है। तुम मेरे अफ़सर रह चुके हो और उसी नजर से मैं आज भी तुम्हें देखता हूँ। परमात्मा ने चाहा तो तुम दीवानी से नहीं, दारोगाई से रिटायर होगे।"

दीवान अब्दुलबेग शरमिन्दा थे कि जिस दिन से वह इस चौकी से तब्दील होकर गढ़मुक्टेश्वर गये, तब से कितने ही बार मेरठ आये, लेकिन कभी दीवान रामदयाल की चौकी पर नहीं आये।

दीवान रामदयाल दूसरे दिन ठसके के साथ पेशकारी की कुर्सी पर जाकर बैठे। ज़िले के थानों से आज जो-जो दारोगा या दीवान मेरठ आये, वे अपने-अपने इलाकों का तोफ़ा पेशकार साहब के लिए लाये।

आज पेशकार साहब के यहाँ ज़िले की फ़सलों के उम्दा-से-उम्दा नमूने

लाकर पेश किये गये। शाहजहाँपुर का पौंडा, महलवाले का खरबूज़ा, बागपत और रटौल के बेफ़स्ली ग्राम, निवाड़ी का केला आडू और फ़ासला और इसी तरह और भी सब्जियों का ढेर लग गया। जहाँ फल और सब्जियाँ नहीं होती थीं वहाँ से घी, दूध की सौगात लाई गई।

आज की सौगातों में मुर्गे और उनके अंडे भी शामिल थे। बकरों और सूअरों के बारे में भी पेशकार साहब से पूछा गया लेकिन फ़िलहाल उन्होंने इनके लिए मना कर दिया।

यह सब सामान पेशकार रामदयाल के क्वार्टर पर आज इतना इकट्ठा हुआ कि उसे रखने के लिए जगह नहीं रही।

शीला अपने पति की इस तरक्की को देखकर दंग रह गई। उसे क्या पता था कि दीवान रामदयाल से पेशकार रामदयाल बनते ही उसका घर परमात्मा की इन नियामतों से ऐसे भरपूर हो जायगा।

शीला के दिल की प्रसन्नता का आज पारावार नहीं है।

शीला ने आज भगवान् की पूजा भी पाँच दस मिनट न करके पूरे एक घंटे तक की और राधा-कृष्ण की मूर्तियों के सामने अनेकों बार मस्तक टिका कर हृदय से कहा, "हे भगवान् तुम बड़े दयालु हो। मुझ बीमार-दुखिया की तुम ही सुध लेने वाले हो। मेरे पति का तो यही विश्वास है कि मेरी पूजा के ही फलस्वरूप आपने उन्हें यह ओहदा प्रदान किया है। इस अपाहज़ और बीमार औरत की इज्जत उसके पति के दिल में बनाने वाले आप ही हैं। आपके चरणों में मैं बार-बार नतमस्तक होती हूँ।".

शीला ने घर में आये हुए सभी पदार्थों में से थोड़ा-बहुत लेकर राधा-कृष्ण को भोग लगाया और फिर सभी में से थोड़ा-थोड़ा अपने पास काम करने के लिए आने वाली गरीब औरतों को दिया, उनके बच्चों को दिया, द्वार पर भीख माँगने आने वालों को दिया।

शीला को आशीश देती हुई गरीब औरतें बोलीं, "दीवाननजी ! तुम आस-औलाद वाली हो। तुम्हारा सुहाग सदा बना रहे। दीवानन जी, हम तो यही कहते हैं, तुम सदा फलो-फूलो और तुम्हारा घर सदा भरा पूरा रहे।"

आस-औलाद की बात सुन कर शीला के दिल में टीस-सी उठ खड़ी हुई। उसने चार बच्चों को जन्म दिया था, लेकिन भगवान् ने एक को भी ज़िन्दा नहीं रहने दिया।

फिर भी शीला होठों पर मुस्कराहट लाकर बोली, 'आस-औलाद का तो अब ज़माना ही चला गया डोकरी ! अब तो भगवान् से यही कहो कि मेरा सिरताज बना रहे और उसके हाथों से मेरी हड्डियाँ ठिकाने लगादी जायें।

बस यही वर माँगती हूँ मैं भगवान् से।"

"सानसोबन ऐसा मत कहो बहू रानी ! बीमारी ने शरीर दबा लिया है, वरना तो अभी उम्र ही क्या है तुम्हारी ?" भारी मन करके करीमखाँ की बूढ़ी माँ बोली।

संध्या को पेशकार रामदयाल ने घर पर आकर यह ठाट-बाट देखा तो उनका भी दिल हरा हो गया और मुस्कराते हुए शीला से बोले, "शीला, कुछ खाया भी तूने इनमें से, या नहीं। देख कितने बढ़िया खरबूजे हैं। केले की गहलें तो बहुत ही उम्दा हैं और पौंडों की तो कम्बख्त पूलियाँ ही काट लाये।"

"खाया तो नहीं है लेकिन हाँ बरताया ज़रूर है आपसे बिना पूछे। द्वार पर आने वाले फ़क़ीरों को बरता दिया और कुछ बूढ़ी डोकरियों को।"

"इसमें पूछने की भला क्या ज़रूरत थी। तू चाहे तो सबको बरता डाल। रामदयाल क्या अपनी शीला से कभी कुछ कहने वाला है। तू सच जान शीला ! यह सब मेरे भाग्य से नहीं, तेरे ही भाग्य से आया है।" दिल से रामदयाल बोले।

पेशकार रामदयाल ने दफ्तर के कपड़े उतार कर तेहमद बाँधा और अपनी मख़मली पंजाबी जूतियाँ पहन कर सिल्क की सोने के बटनों वाली कमीज़ गले में डाल ली। फिर मकान के चौक में एक खटिया डाल कर उस पर बैठते हुए बोले "अच्छा ला शीला, ज़रा हम भी तो देखें ये बाहर के इलाकों वाले क्या-क्या सौगात लाये हैं ? दो बढ़िया से ख़रबूजे और कुछ आड़ू, फालसे और केले निकाल लाओ।"

शीला ने कुछ फल पहले से ही एक बाल्टी ठंडे पानी में डाले हुए थे। उन्हें लेकर वह पेशकार साहब की खाट के पास पड़े पीढ़े पर बैठकर ख़रबूजा तराशती हुई बोली, "महँक तो मीठे ख़रबूजे की है। देखिये खाने में कैसा निकलता है।"

ख़रबूजे की मंहक तो तू खूब पहचानती है शीला। आख़िर तू भी तो जमना-किनारे के खादर की रहने वाली है और वहाँ ख़रबूजे भी खूब होते हैं। लेकिन यह महलवाले का ख़रबूजा है। लखनऊ के ख़रबूज़ों को भी आज-कल मात करते हैं महलवाले के ख़रबूजे।" पेशकार रामदयाल बोले।

शीला ने ख़रबूज़े की फाँकें काट कर पेशकार रामदयाल के हाथ में दीं और वह दूसरी फाँक काटने में लग गई।

पेशकार रामदयाल उस फाँक को शीला के होठों से लगाते हुए प्यार से बोले, "शीला, पहले तू ज़रा-सी खाकर बता मीठी भी है या नहीं, तब खाऊँगा

में। पहले मैं ही अपना मुँह क्यों खराब करूँ ?'

शीला का खरबूजा छीलता हुआ हाथ प्रेमाद्र-भाव से रुक गया और वह पेशकार रामदयाल के चेहरे पर देखती हुई बोली, "आप भी ये क्या बच्चों की सी बातें किया करते हैं। मुझे तपेदिक की बीमारी है और डाक्टर ने मेरा जूठा खाने के लिए सब को मना किया हुआ है। आप मेरा जूठा खायेंगे, यह मुझसे बरदाश्त नहीं होगा।"

पेशकार रामदयाल ने शीला का हाथ पकड़ कर उसे पीछे से उठाते हुए अपने पास बिठला लिया और फिर प्यार से वह खरबूजे की फाँक उसके होठों से लगाकर बोले, "शीला तेरी तपेदिक की जूठन किसी और पर असर कर सकती है, रामदयाल पर तेरे जूठन का असर नहीं होगा।"

प्रेमविह्वल होकर शीला की आँखों से दो बूँद आँसू लुढ़क आये और उसने जरा-सी खरबूजे की फाँक अपने दांतों से काट ली।

इसके बाद पेशकार रामदयाल ने डटकर फलाहार किया और फिर मूँछों पर ताव देकर वह क्वार्टर से बाहर निकले। जवानी और तरक्की की मस्ती थी उनके शरीर में।

पेशकार साहब के क्वार्टर से बाहर करीमखाँ ने पहले ही छिड़काव करा कर मूढ़े डलवा दिये थे। कई लोग उनसे मुलाकात के लिए बैठे थे।

क्वार्टर से बाहर आते ही सब लोगों ने खड़े होकर आदाब किया, और पेशकार साहब ने चेहरे की हरकत से ही सबको एक बार में उनके आदाब का जवाब दे दिया। फिर करीमखाँ को एक तरफ़ बुलाकर बोले, 'इन लोगों से कहो कि आज पेशकार साहब को फुर्सत नहीं है बातें करने की। उन्हें अभी साहब की कोठी पर जाना है। ये लोग कल सुबह सात बजे आ सकते हैं, और हाँ, तुम भी उस वक्त आना न भूल जाना।"

करीमखाँ ने पेशकार साहब की सूचना इन्तजार करने वालों को दे दी और वे सब वहाँ से विदा हो गये।

उनके चले जाने पर पेशकार रामदयाल करीमखाँ से बोले, "करीमखाँ, पहले कुछ फल और सब्जियाँ कोतवाल साहब की कोठी पर पहुँचा आओ, फिर साहब की कोठी पर चलना है।

मेरा ख़याल है, कुछ अंडे और मुर्गियाँ भी कोतवाल साहब के लिए लेते जाओ।"

पेशकार रामदयाल के पास जो-जो सौगातें आई थीं उन्होंने थोड़ी बहुत अपने यहाँ रखकर बाकी सब तकसीम करा दीं। खाने-पीने की चीज़ों को खाने-पीने के लिए बाँट दिया।

शीला का भी मन औरों को तकसीम करने में बहुत रहता है। अपना कोई बाल-बच्चा न होने से दुनियाँ भर के बच्चों को शीला अपना ही बाल-बच्चा समझती है।

पेशकार रामदयाल को जहाँ अफ़सरों और पुलिस के अमले के दारोगाओं, दीवानों और कांस्टेबिलों में चीजें तकसीम करने में मज़ा आता है वहाँ उसे उन गरीब बूढ़ी डोकरियों और उनके बच्चों को देने में मज़ा आता है जो दिन-भर उसके पास पड़ी रह कर उसका मन बहलाती हैं, उसके चार काम आती हैं।

करीमखाँ कोतवाल साहब की कोठी पर पेशकार रामदयाल की भेजी हुई सौग़ात पहुँचा कर लौटा तो देखा कि साहब के यहाँ जाने वाली डाली क़रीने के साथ सजी हुई है। पेशकार रामदयाल ने आज अपना पूरा हुनर इसकी सजावट में लगाया।

"खूब करीने से सजाया है आपने।" करीमखाँ बोला।

"अभी कसर बाकी है करीमखाँ। डाली की जान शराब की बोतल तो इसमें है ही नहीं। ज़रा साइकिल पर दो पैडिल मारकर दो बोतल भी ठेकेदार के यहाँ से उठा ला और रास्ते से दो ताँगे वालों को भी पकड़ते लाना।" पेशकार साहब बोले।

"बस गया और आया।" पैरों में साइकिल दबाते हुए करीमखाँ बोला और लौटकर आने में भी उसने कमाल ही किया।

पेशकार साहब खरबूज़ों पर चाँदी के वर्क चिपका रहे थे। उसे आता देखकर बोले, "करीमखाँ सच कहता हूँ अगर तुम जैसे सिर्फ चार आदमी और हों मेरे पास तो एस. पी. साहब से कह दूँ कि आपको अब कोठी से बाहर निकलने की ज़रूरत नहीं है। पेशकार रामदयाल के रहते तुम तकलीफ़ उठाओ, यह मैं बरदाश्त नहीं कर सकता।"

अपनी तारीफ़ सुनकर करीमखाँ का दिल खिल गया। करीमखाँ ने नौकरी पर आकर रामदयाल से याराना किया था और उस याराने को वह दिलोजान से निभा रहा है। पेशकार रामदयाल का वह यार है, साथी है, गुप्तचर है, नौकर है और एक हमदर्द वारिस भी है।

साहब के यहाँ जाने वाली सब चीज़ें ताँगे में रख ली गईं और आखिर में वह मुर्गियों का कठघरा और अंडों का पिटारा भी करीमखाँ ने ताँगे के पास पायदान पर रख दिया।

करीमखाँ ने पिटाने के अंडों को देखा और उसकी नज़र कुकड़ूँ कूँ करती हुई मुर्गियों पर गई तो उसकी ज़बान पानी दे गई। इधर काफ़ी दिनों से उसने

मुर्गा नहीं चखा था ।

एक दिन उसने कोतवाल कासिम मिरजा को मुर्गमुसल्लम खाते देखा था तो उसके दिल की क्या दशा हुई थी, यह वही जानता था । आज ये अण्डे और मुर्गे हाथ में आये हुए निकलते देख कर उसका दिल ज़रा भारी सा होने लगा ।

पेशकार रामदयाल ने करीमखाँ की नज़रों को पहचान लिया । उन्होंने करीमखाँ के यहाँ सब चीजें पहुँचा दी थीं, लेकिन अण्डों का पिटारा और मुर्गियों का कठघरा नहीं खोले थे । करीमखाँ की नज़रें देख कर वह मुस्कराते हुए बोले, "कोतवाल साहब का खाया हुआ मुर्गमुसल्लम याद आ रहा है करीमखाँ ? कठघरा तोड़ डालो और जितनी मुर्गियाँ चाहो निकाल लो । अंडों के पिटारे से भी खोल कर जितने अंडे चाहो रख लो । भाभी से कहना ज़रा लज़ीज़ बनाये । दो-चार कौर शायद हम भी चख लें ।"

"पेशकार साहब ! आपने मेरे मन की बात भाँप ली । बेगम वह लाजवाब मुर्गा बनाकर खिलायेगी कि ऊँगलियाँ चाटते ही रह जाओ । मुर्गी और अंडों के अलावा अगर हुक्म हो जाये तो एक छोटा टीन घी का भी भर लूँ ।" करीमखाँ बोला ।

"भरलो-भरलो करीमखाँ, मगर ज़रा जल्दी करो । रात होती जा रही है । शायद गुलाब साहब की कोठी पर पहुँच गई हो । मैंने सोचा यह सब पेश करते वक्त क्यों न एक छोटा-सा मुजरा भी हो जाये ?" पेशकार साहब बोले ।

"ख़याल तो नेक है आपका । एस. पी. साहब भी क्या समझेंगे कि किसी रईसज़ादे से पाला पड़ा है ।" करीमखाँ बोला ।

"सो तो तुम्हारी दुआ से मैंने साहब पर काफ़ी रौब डाल रखा है । वह जानते हैं कि पेशकार रामदयाल रोटी के लिए नौकरी नहीं करता । पेशकार रामदयाल अंग्रेजी सरकार की ख़िदमत करने के लिए नौकरी करता है । अपने शौक और हकूमत के लिए नौकरी करता है । " पेशकार रामदयाल बोले ।

"आपकी इस बात की कोतवाल कासिम मिरजा भी तारीफ़ करते हैं । बड़ा अदब करते हैं आपका । अपने बराबर की हैसियत समझते हैं । मुझसे कई बार तारीफ़ कर चुके हैं आपकी ।" करीमखाँ ने बड़े ही अदब के साथ कहा ।

करीमखाँ ने मुर्गियों के कठघरे से तीन उम्दा मुर्गियाँ और अंडों के पिटारे से दो दर्जन अंडे निकाल कर दोनों को बन्द कर दिया ।

दोनों ताँगे एस. पी. साहब की कोठी पर पहुँचे और फिर साहब के बड़े कमरे में उन तोफ़ों को सजाया गया ।

जब सब सज कर तैयार हो गया तो साहब और मेम साहब ने आकर देखा और देख कर खुश होते हुए बोले, "डीवान रामडयाल अमे टुमारा ये शोगाट बौट पशंड ऐ। टुमने एक डिन में कमाल कर डिया।"

गुलाब ने अंदाज़ के साथ एक-एक चीज़ मेम साहब और साहब के सामने पेश करते हुए उसकी खूबी बयान की और हिन्दुस्तान के उन तोफ़ों को साहब और मेम साहब ने देख कर उनकी तारीफ़ की।

पेशकार रामदयाल ने सबसे बाद में मेम साहब के सामने शराब की बोतलें खुद पेश की और मुस्करा कर कहा, "यह सौगात आपके लिए है। साहब तो बेचारे बेकार के लिए ही पीने वालों में नाम लिखा कर शहीद हो जाते है।"

पेशकार रामदयाल की बात सुन कर साहब और मेम साहब दोनों ठहाका मार कर हँस पड़े और फिर मेम साहब ने मुस्करा कर कहा, "वैल, पेशकार टुम बरा खेराब आडमी ऐ। वरा मीटा मेजाक करटा ऐं।"

पेशकार रामदयाल ने मेम साहब की आँखों पर मुस्करा कर देखा और धीरे से बोले, "आप जो कुछ भी कहें मै वही हूँ मेम साहब! अच्छा कहें तो अच्छा, और ख़राब कहें तो ख़राब। एक बार जब अपने को आपकी ख़िदमत में पेश ही कर चुका तो फिर किसी बात का गिला ही क्या?"

"फिर अम को आज शेराब पिलानी ओगी टुमें। कल टुमनें बोट वरिया शेराब पिलाई। अमारा टवियट बोट खुश उआ।"

"जेरूर पिलानी ओगी।" साहब ने अपनी बाल उड़ी खोपड़ी पर हाथ फेरते हुए कहा। "मेम शाब टुम शे बोट कुश ऐ। अम टुमशे बोट कुश ऐ।"

"मैं तो पहले ही कह चुका, ख़ादिम हूँ आपका। साहब का जो कुछ भी हुक्म होगा, बन्दा बजा लायगा।" पेशकार साहब ने कहा।

गुलाब के मुजरे की बात वहीं पर ख़त्म हो गई। करीमखाँ और गुलाब को पेशकार रामदयाल ने बिदा कर दिया और आप पीने-पिलाने के लिए कोठी पर रह गये।

करीमखाँ को बिदा करते समय पेशकार साहब बोले, "घर पर शीला से कह देना कि हमें आने में देर लगेगी। साहब ने अपने किसी खास काम से रोक लिया है। कौन जाने यहाँ से कब छुट्टी मिले।"

गुलाब और करीमखाँ दोनों ताँगे में बैठ कर शहर की तरफ़ चल दिये।

रास्ते में गुलाब बोली, "करीमखाँ, ऐसा लगता है, जैसे साहब की मेम पेशकार साहब से फँसी हो।"

"फँसी होगी गुलाब! अपने को इन बातों से क्या लेना-देना। ये सब दुनियाँ के चक्कर तो चलते ही रहते हैं। आखिर क्या करें बेचारे पेशकार

साहब भी ! जवान आदमी हैं। खुदा ने औरत दी, तो वह ऐसी कि बारहों महीने की बीमार ! और बीमारी भी तपेदिक़ की। मैं तो कहूँगा कि यह पेशकार रामदयाल का ही कलेजा है जो ऐसी औरत को निभा रहा है।

लेकिन औरत भी देवी है बेचारी।" करीमखाँ ने चार जुमलों में सारी बात कह दी। उसके नज़दीक पेशकार रामदयाल को खुले भैंसे की तरह घूमने-फिरने, अय्याशी करने और मेम साहब से याराना करने की खुली छुट्टी है। वह उन्हें कोई बुरा काम नहीं समझता।

लेकिन गुलाब के दिल में न जाने क्यों एक जलन-सी पैदा हो गई। वह लाख उसे भुलाने की कोशिश करती रही, लेकिन पेशकार और मेम साहब की मुस्कराती नजरें जो उसने एक बार मिल कर एक दूसरी में घुसती देखी थीं; उन्हें वह न भुला सकी। उसके दिल से एक गहरी साँस निकली और उसने मन-ही-मन कहा, 'मर्द कितना बेवफ़ा होता है ?"

: १३ :

मेरठ शहर और जिले में काँग्रेस का आन्दोलन ज़ोर पकड़ता जा रहा है। सरकार अपनी दमन-नीति को काम में ला रही है। पुलिस जहाँ भी काँग्रेस की तहरीक़ देखती है उसे कुचल डालने के लिए कुछ उठा नहीं रखती।

एस० पी० साहब फ़ौजी जवान हैं। उन्हें किसी भी तरह की बदमनी बरदाश्त नहीं है। रिआया को सरकार का हुक्म मानना चाहिए, न कि इन काँग्रेसी बदमाश गुण्डों का। जो रिआया बदमाश गुण्डों का साथ देती है उसे भी कुचल डालने में देर नहीं करनी चाहिए। बदमनी को न दबाना, सरकार को कमज़ोर करना है।

काँग्रेस की आग जो फैलती जा रही है, यह बदमनी की चीज़ है। इससे व्यापार का नुक़सान होता है, गुण्डों को इनकी आड़ में सिर उठाने का मौक़ा मिलता है। इसी लिए शहरों के शरीफ़ रईस और गाँवों के इज्ज़तदार ज़मीदारों को यह सब कुछ पसन्द नहीं है।

कलक्टर और कमिश्नर साहब के हुक्म से एस. पी. साहब इन्हीं लोगों की अमन-सभाएँ बनाते जा रहे हैं।

सेठ दामोदर प्रशाद को पेशकार रामदयाल की बदौलत ज़िले की अमन सभा के प्रधान का ओहदा बख्शा गया और सेठ साहब ने गर्दन झुका कर यह ख़िदमत मंजूर करते हुए कहा, "हुज़ूर, जी-जान से अमन क़ायम करने में मदद करने की कोशिश करूँगा।"

"अमारा शरकार टुमारा शाट ऐ। अमारा पुलिश और फ़ौज टुमारा शाट ऐ। अम चाहें तो बडमनी करना वाला को एक मिनट में खेटम कर शेकटा ऐ। अम बडमनी और बडमाशी को नई पनपने डेगा। अम बौट बुरा आदमी है इश माने में।" एस. पी. साहब ने कहा।

सेठ दामोदर प्रशाद का दिल जहाँ अन्दर-ही-अन्दर इस इज्ज़त को पाकर खुश हुआ वहाँ बाहर से उनके चेहरे पर भय के लक्षण भी कुछ कम दिखाई नहीं दिये।

सेठ दामोदर प्रशाद जब दूसरे दिन सुबह सोकर उठे तो उनके सामने जो नज़ारा आया वह अजीब ही क़िस्म का रहा। उनकी ड्योढ़ी के सामने

एक अर्थी रखी हुई है और उस पर एक लाश बँधी है। उस लाश पर एक गत्ते की तख्ती लगी है और उस पर लिखा है "देश के गद्दार, अमन सभा के ठेकेदार, सेठ दामोदर प्रशाद मुर्दाबाद, तेरा खान्दान मुर्दाबाद।" और ये मुर्दाबाद के नारे मुहल्ले भर के वातावरण को चीरते हुए सड़कों पर भी गूँज रहे हैं।

सेठ दामोदर प्रशाद के कानों में ये मुर्दाबाद के नारे पड़े तो उनका दिल काँपने लगा। लेकिन तुरन्त ही उन्हें एस. पी. साहब की पुलिस और फ़ौज का ध्यान आया तो जरा मजबूती से उन्होंने टेलीफ़ोन उठाया और सीधा एस. पी. साहब से मिला कर कहा, "साहब! बड़ी मुश्किल में जान फँस गई है। भीड़ ने मेरा मकान बुरी तरह घेर लिया है। आप ही बचायें तो जान बच सकती है। वरना तो यह भीड़ मुझे मय मेरे खान्दान और घर के जला कर खाक कर देगी।"

"वैल, जान का कौन खटरा आगया। अम अभी पुलिश भेजटा ऐ। इतना चोटा-चोटा बाट टुम कोटवाल को रेफ़र कर शकटा ऐ। अमे ज़िला भर का काम रेटा ऐ।" कह कर एस. पी. साहब ने रिसीवर रख दिया।

लेकिन चन्द मिनटों में ही कोतवाली से पुलिस सेठ दामोदर प्रशाद के मकान पर पहुँच गई और पुलिस को देख कर भीड़ भी नौ-दो-ग्यारह हो गई। कासिम मिरज़ा खुद मौक़े पर आये।

भीड़ का वहाँ अब न मोनिशान भी न रहा। सिर्फ़ एक अर्थी ड्योढी के बाहर पड़ी हुई मिली। अर्थी को पुलिस ने टटोल कर देखा तो उस पर लाश की जगह एक पुराना लिहाफ़ बँधा हुआ था।

पुलिस के आने पर सेठ दामोदर प्रशाद भी घर से बाहर निकल आये और अपने मलमल के कुर्ते की आस्तीनें चढ़ा कर कासिम मिरज़ा से हाथ मिलाते हुए बोले, "कोतवाल साहब आदाब अर्ज़! आपको तकलीफ़ देनी पड़ी, इसका मुझे दुःख है, लेकिन मैं देख रहा हूँ कि गुण्डागर्दी बढ़ती जा रही है। लोग-बाग भी गुण्डों का ही साथ देते हैं और शरीफ़ आदमी का मज़ाक उड़ाते हैं। पता नहीं क्या, सब मोहल्ले वालों का ही दिमाग़ ख़राब हो गया है। काँग्रेस का फ़ितूर सभी के दिमागों पर सवार है।"

"इसमें क्या शक है?" मुस्करा कर कासिम मिरज़ा बोले। "और सूझती भी इन बदमाशों को खूब है। कुछ और नहीं हुआ तो आपका जनाज़ा ही तय्यार कर लाये। समझ में नहीं आ रहा कि काँग्रेस की इस फैलती हुई तहरीक को कैसे रोका जाय। जितना इसे दबाने की कोशिश की जाती है, आग उतनी ही तेज धधकती है।"

"चलिये इस बहाने से आज कासिम साहब ने मेरे ग़रीब खाने को

पवित्र कर दिया।" सेठ दामोदर प्रशाद बोले।

"अगर ग़रीबखाने ऐसे होते हैं सेठ जी," मकान की तरफ़ नज़रें घुमाते कहा, "तो अमीरखाने आपकी नजरों में कैसे होते होंगे?" ज़रा मसखरी के साथ बोले।

"कासिम साहब की कुछ मजाकिया आदत मालूम पड़ती है।" सेठ दामोदर प्रशाद ने कहा। "मेरठ शहर की यह वह ठेक है कासिम साहब, ज़हाँ मेरठ को मेरठ नाम देने वाला इन्सान शुरू में आकर बसा था। यह हवेली जो आपको आज चार मंज़िली दिखाई दे रही है, इसी जगह उसने अपना फूँस का छप्पर डाल कर पीछे उसकी कच्ची चारदीवारी खींची थी।

यह चारदीवारी धीरे-धीरे पास-पड़ौस में फैलती गई और एक दिन पक्की बन गई। फिर यह आलीशान हवेली बनी और उस वक्त तक यह खांदान सेंकड़ों आदमियों का बन चुका था। सेंकड़ों आदमी थे इस खादान में कमाने और खाने वाले।

लेकिन आज यह दिन भी है कि उस तमाम खांदान में मैं अकेला आदमी आपको दिखाई दे रहा हूँ। आगे के लिए एक बच्चा भी भगवान् ने नहीं दिया।" अपनी पूरी कहानी कह कर सेठ दामोदर प्रशाद ने कासिम मिर्जा को गद्दी की उस मसनद पर बिठाया जहाँ पेशकार रामदयाल रोजाना आकर बैठते हैं।

"तो उन सेंकड़ों आदमियों के खांदान में तुम अकेले ही बचे हो सेठ जी!" कासिम मिरज़ा के दिमाग़ में वही बात घूम रही थी और वह उसे दबा कर न रख सके।

बोले, "तब तो वाकई इस ग़रीबखाने में सेंकड़ों ही तिजोरियाँ होंगी और उनमें उतनी ही बहुओं के जेवरात रखे होंगे। खुदा करे अगर एक साथ सौ-दो-सौ बहुएँ इस घर में आ जाएँ तो सभी को सुनहरा ज़ेवर आप पहना सकते हैं।"

सेठ दामोदर प्रशाद के मन का भाव तुरन्त ही बदल गया। पुलिस को उन्होंने फ़ौरन पुलिस के रूप में देखा और बात बदलते हुए बोले, "यह बड़े दर्द की कहानी है कासिम मिरजा! इसकी याद मत दिलाओ। क्या रखा है अब इस हवेली में। एक-एक बहू की बीमारी में दो-दो बहुओं का ज़ेवर स्वाहा हो गया। अब तो लुटा-लुटाया सेठ बैठा है आपके सामने।"

कासिम मिरज़ा मुस्कराये और सेठ दामोदर प्रशाद की पीठ पर याराना हाथ फेरते हुए बोले, "तुम वाक़ई सेठ बने रहने के क़ाबिल हो दामोदर प्रशाद! बात को पचा जाने से, ज्यादा मुश्किल है पैसे और ज़ेवर को

पचा जाना।

पेशकार रामदयाल बात को पचा जाते हैं और इसी लिए वह बात के धनी हैं। तुमने पैसे और जेवर को पचा लिया है इसलिए तुम पैसे और जेवर के धनी हो।"

इसी समय पेशकार रामदयाल भी वहाँ आ पहुँचे। पेशकार रामदयाल से सेठ दामोदर प्रशाद और कासिम मिरज़ा, दोनों ही खड़े होकर मिले।

सेठ दामोदर प्रशाद को खड़े होते देख कर उन्होंने कुछ भी महसूस नहीं किया; लेकिन जब कासिम मिरजा भी उठे तो पेशकार रामदयाल को वह दिन याद आ गया जब एक मामूली चौकी के दीवान की हैसीयत से कोतवाल हातम सिंह ने कासिम मिरज़ा से उनका तारुफ़ कराया था।

कासिम मिरज़ा से हाथ मिलाते हुए पेशकार रामदयाल बोले, "कोतवाल साहब, मेरे आने पर खड़े होकर आज आपने मुझे शर्मिंदा कर दिया। पेशकार रामदयाल कोतवाल कासिम मिरज़ा का वही दीवान है जिसे वह जब चाहें कान से पकड़वाकर अपनी कोठी पर बुलवा सकते हैं।"

"यह मैं जानता हूँ पेशकार साहब, लेकिन हमारा-आपका सम्बन्ध कोतवाल हातमसिंह ने चलते समय दूसरा ही बना दिया था। क्या भूल गये आप उनके आखरी जुमले को? उन्होंने कहा था कि मैं अपना भाई तुम्हारे सपुर्द किये जा रहा हूँ।"

"भाई ज़रूर कहा था कोतवाल हातमसिंह ने कासिम मिरज़ा, लेकिन छोटा भाई कहा था, बड़ा भाई नहीं। इसलिए मेरे आने पर आपका उठना शोभा नहीं देता।"

पेशकार रामदयाल की इस बात पर कासिम मिरज़ा को चुप हो जाना पड़ा और वह मुस्कराते हुए बोले, "अच्छा भाई रामदयाल, तुम जो कहो सो ही ठीक है। छोटे भाई के आने पर क्या प्यार से नहीं उठा जा सकता?'

सेठ दामोदर प्रशाद ने आज संध्या को कोतवाल कासिम मिरज़ा और पेशकार रामदयाल को दावत दी। दावत छावनी के एक होटल में दी गई। सिर्फ़ तीन आदमियों के अलावा और उसमें कोई शरीक नहीं किया।

चार खूँट का बड़ा कमरा है। कमरे के फ़र्श पर खूबसूरत दरी बिछी है। कमरे के बीचोंबीच एक गोल मेज रखी है। मेज पर एक सुनहरे रंग की, शीशे की, सुराही है और उसके पास चार गिलास हैं, फूलदार शीशे के।

फ़र्श पर बढ़िया जिन और सोड़े की बोतलें रखी हैं। मेज़ के चारों ओर चार आराम कुर्सियाँ पड़ी हैं।

सेठ दामोदर प्रशाद, पेशकार रामदयाल और कासिम मिरजा आकर

कुर्सियों पर बैठ गये।

"यह चौथी कुर्सी किसकी खाली रह गई सेठ दामोदर प्रशाद !" कासिम मिरज़ा ने पूछा।

"यह भी कुछ पूछने की चीज़ है कासिम मिरज़ा ! आख़िर क्या बिना साक़ी के भी कभी पीना-पिलाना चलता है ? और फिर चल सकता है हम तुम जैसे नौकरीपेशा लोगों का, क्योंकि हम लोग शराब खाली शौक के लिए तो नहीं पीते। ज़िन्दगी में हज़ारों बार शराब ग़म ग़लत करने के लिए पीनी पड़ती है।" पेशकार रामदयाल बोले।

"सुना है रामप्यारी को सेठ जी ने आजकल अपनी रखैल बना कर रख छोड़ा है।" कासिम मिरज़ा ने पूछा।

"दिल की बड़ी ही अच्छी औरत है कासिम मिरज़ा और बात तो यह है कि पेशेवर होने पर भी पैसे की भूख उसमें क़तन नहीं है। किसी भले घर की लड़की मालूम देती है। पढ़ी-लिखी हुनरदार लड़की है। अंग्रेज़ी भी जानती है।"

सेठ दामोदर प्रशाद की इस बात पर पेशकार रामदयाल को दिल से ऐतराज हुआ। वह रामप्यारी को पैसे की भूखी औरत समझते हैं। अगर वह पैसे की भूखी न होती तो कभी जिन्दगी भर पेशकार रामदयाल का साथ न छोड़ती। यह सच है कि सेठ की तरह वह उसे बैठे-बिठाए, कभी-कभी सेठ के चन्द यारों में बैठने, मुस्कराने और शराब तकसीम करने के लिए काफ़ी रक़म नहीं दे सकते, लेकिन गुलाब की तीन मंजिली इमारत भी उनकी नज़र के सामने है और उन्हें गुलाब के वे शब्द भी याद हैं जब उसने अकेले में पेशकार रामदयाल से कहा था, "दीवान जी, मैं आपका ऐहसान इस जिन्दगी में नहीं भूल सकती। मेरे पास जो कुछ भी है, वह आपका ही तो है। गुलाब कभी जीते जी आपसे बाहर नहीं जायगी।"

पेशकार रामदयाल की आँखों में अब रामप्यारी और गुलाब दोनों खड़ी मुस्करा रही हैं। दोनों की मुस्कुराहट दो क़िस्म की है। एक में प्यार और दूसरी में उनका उपहास छिपा हुआ है।

एक बार उनके दिल में आया कि वह सेठ की बात का सही जवाब दें, लेकिन फिर फ़ौरन ही सोच लिया कि चलो सेठ को इसी भ्रम में रहने दो। अपना क्या बनता-बिगड़ता है इससे। यहाँ पीने-पिलाने के लिये आए हैं, मोहोब्बत या बेमरव्वती की तफ़सील खोलने नहीं आये।

तभी कमरे के पीछे का दरवाजा खुला और रामप्यारी वहीं से अपने यौवन का जौहर दिखाती हुई कमरे में दाखिल हुई।

रामप्यारी ने सब से पहले पेशकार रामदयाल के सामने झुक कर नमस्कार किया, फिर कासिम मिरज़ा को और आखीर में सेठ दामोदर प्रशाद से नज़रें मिलाईं।

इसके बाद रामप्यारी ने सुराही में शराब की बोतल खोल कर भर दी और उसी में चार सोड़े की बोतलें भी खोल कर डालीं। एक बीअर की बोतल भी उसमें उडेल कर काक टेल तयार कर ली।

इसके बाद चार गिलासों में रामप्यारी के नाजुक हाथों से शराब उडेली गई। चारों छोटे-छोटे गिलास लबालब भर गये। फिर चारों ने उन्हें अपने हाथों में उठा कर एक दूसरे की सेहत के लिए घूंट भरा।

कड़वी शराब को चारों ने ही मुंह बना कर हलक़ से नीचे उतारा और फिर गिलास मेज़ हर रख दिये। गिलासों की शराब अभी खत्म नहीं हुई थी।

गोल्ड फ्लेक सिग्रेट का डिब्बा रामप्यारी ने खोल कर कासिम मिर्ज़ा के सामने सिग्रेट पेश की और पेशकार रामदयाल ने जेब से जर्मनी लाइटर निकाल कर उसे जलाया।

लाइटर पर नजर जाते ही कासिम मिरज़ा बोले, "लाइटर तो कहीं से बढ़िया ख़रीदा है पेशकार साहब!"

"रामदयाल ने आज तक जिन्दगी में कोई शौक की चीज़ नहीं खरीदी कोतवाल साहब! इस जिन्दगी में शौक के नाम पर तो कुछ है ही नहीं! कल मेम साहब ने दिया था यह लाइटर। शराब पीते वक्त वह बहुत सिग्रेट पीती हैं। दियासलाई जलाते-जलाते नाक में दम आ जाता है।

लेकिन शराब वह भी खूब पीती हैं।" पेशकार रामदयाल बोले।

"सुना तो हमने भी है कि मेम साहब खूब शराब पीती हैं। लेकिन यह भी सुना है कि हमारे पेशकार साहब ने उन्हें भी मात दे-दी।" कासिम मिरज़ा बोले।

पेशकार साहब की पेशानी पर विजय के आसार दमक उठे। चेहरे पर मुस्कराहट खेलने लगी। ज़रा संजीदगी के साथ बोले, "पीना भी एक हुनर है कोतवाल साहब! पीकर नशे में हो जाना कोई हुनर नहीं है।"

रामप्यारी बोली, "लेकिन पेशकार साहब आज तो आपको भी होश खोना ही पड़ेगा। सेठ दामोदर प्रशाद ने आज तीन बोतलें मँगाकर रखी हुई हैं।"

सेठ दामोदर प्रशाद मस्करा कर बोले, "पगली कहीं की। तीन बोतलें क्या हैं पेशकार साहब के सामने और फिर आज तो कोतवाल साहब भी सामने डटे हैं।"

"नाँ-भाई नाँ, यह सब अपने बूते का काम नहीं है।" सिग्रेट का कश खींच कर उसके छल्ले कमरे की छत की तरफ़ उड़ाते हुए क़ासिम मिरज़ा बोले, "अपने वश की तो एक बोतल सम्भालनी भी नहीं है।"

कासिम मिरज़ा ने बहुत बार पेशकार साहब के साथ शराब पी है, लेकिन एक दो पेग पर ही मामला रुक जाता है। आज सेठ दामोदर प्रशाद से पेश-कार साहब की तारीफ़ सुन कर कासिम साहब उनके पीने के रौब में आ गये।

रामप्यारी जाम-पर-जाम भर-भर कर देती जा रही है और तीनों पीते जा रहे है। रामप्यारी के होठों से भी कासिम साहब और सेठ जी अपने जाम लगा देते है और रामप्यारी पिलाने वाले की नज़रों में नज़रें डाल कर एक घूँट भर लेती है। उसकी नजरें पिलाने वाले से कहती हैं, 'मेहरबानी कर रही हूँ तुम पर।"

लेकिन पेशकार रामदयाल अपना गिलास आगे नहीं बढ़ाते। उनके गिलास में रामप्यारी को जबरदस्ती घूँट भरता पड़ता है। गो, मना नहीं करते पेशकार साहब भी, लेकिन पिलाते समय उनकी नज़रें रामप्यारी से कहती हैं, "मेहरबानी कर रहा हूँ तुम पर।"

रामप्यारी अपनी मुस्कराहट से उसे मंज़ूर भी करती है, दुबारा जाम भरती है और उनके होठों तक अपने हाथ से ले जाती है।

शराब के दौर के बाद नाश्ते का दौर चला। कुछ थोड़ा-बहुत खाने खिलाने का भी सिलसिला बनता रहा। होटल के बैरे ने बराबर की मेज पर टमाटर, पोटेटो-चाप, कटलेट, सेन्डविच वग़ैरा रख दीं।

शराब के नशे से अब तीनों के दिमाग़ काफ़ी हल्के हो गये। दुनियाँ उनके नज़दीक एक खिलौना मात्र है। इस बुलन्दी की दशा में इन तीनों ने अपने को मेरठ की हकूमत चलाने वालों के रूप में देखा।

कासिम मिरज़ा ने आज सुबह जब से दामोदर प्रशाद की ड्योढी के सामने वह अर्थी पड़ी देखी है, तब से वह उसे आँखों के सामने से हटा नहीं सके। दिन की और झंझटों में उसका खयाल उनके दिमाग़ से कुछ फीका पड़ गया था, लेकिन अब शराब ने बीच की रुकावटों को हटा कर उनके दिमाग़ का सम्बन्ध फिर उस अर्थी से जोड़ दिया और वह अचानक ही पेशकार रामदयाल की तरफ़ मुख़ातिब होकर बोले, "पेशकार साहब आज एक बात कहूँ आपसे। आपको अपना छोटा भाई समझ कर यह बात कह रहा हूँ।"

"कासिम साहब! आप रामदयाल से कोई भी बात उसी तरह कह सकते हैं, जिस तरह आप अपने आपसे कहते हैं। बस यही तो कमाई की है रामदयाल ने। पुलिस का हर खाने-पीने वाला आदमी मुझ से अपने दिल का राज़ कह सकता है, सही-सही सलाह पा सकता है और आज तक एक भी ऐसा

आदमी आपको नहीं मिलेगा जिसने कभी मेरी सलाह से नुक़सान उठाया हो।" अभिमान के साथ पेशकार रामदयाल ने कहा।

"यह मुझे मालूम है पेशकार साहब! इसीलिए तो मैं भी आज आपसे इतनी ज़बरदस्त बात कहने जा रहा हूँ।" कासिम मिरज़ा ने कहा।

"आप पेशकार साहब को पहचानते हैं कोतवाल साहब! पेशकार साहब को मैं भी खूब पहचानता हूँ। पेशकार रामदयाल जिसके यार हैं, उसे दुनियाँ में किसी की फ़िक्र नहीं करनी चाहिए और उसका कोई राज ऐसी जगह नहीं खुल सकता जहाँ वह खुद न खोलना चाहें। साथ ही पेशकार साहब का दुश्मन भी बनना मज़ाक नहीं है। उनकी पैनी नज़रों से बच कर निकल जाना बड़ा मुश्किल है।" सेठ दामोदर प्रशाद बोले।

कासिम मिरज़ा ने सेठ दामोदर प्रशाद की बात को बेवकूफ़ाना और बेवक्त की बात समझते हुए भी, "हाँ-हाँ" कहा और फिर पेशकार साहब की तरफ़ मुख़ातिब होकर बोले, "पेशकार साहब यह काँग्रेस का गुल-गपाड़ा बहुत बढ़ता जा रहा है।"

"बढ़ने दो कोतवाल साहब!" निहायत हल्के तरीक़े पर पेशकार रामदयाल ने कहा। "अपना इसके घटने और बढ़ने से कुछ बनता बिगड़ता नहीं है।"

"लेकिन सरदर्दी तो बढ़ती जा रही है।" कासिम मिरज़ा बोले।

"जितनी सरदर्दी बढ़ेगी उतनी ही आपकी आमदनी भी बढ़ेगी; बस यह एक गुर की बात समझ लीजिये।" मुस्करा कर गिलास से एक लम्बा घूँट पीकर उसे हलक से नीचे उतारते हुए पेशकार रामदयाल बोले।

"यह बात तो आपकी समझ में आती है मेरे, लेकिन काँग्रेस के लोगों से दुश्मनी मोल लेना अब ठीक नही जचता। अंग्रेज़ी सल्तनत, आज नहीं तो कल, जाने वाली ज़रूर है।" कासिम मिरज़ा ने कहा।

कासिम मिरज़ा एक पढ़े-लिखे आलिम अफ़सर हैं। देश और विदेश की राजनीति का भी अध्ययन वह करते रहते हैं। 'किताबी कीड़ा', के नाम से भी उन्हें कुछ लोग पुकारने लगे हैं, लेकिन पेशकार रामदयाल उनकी क़ाबलियत की कद्र करते हैं।

आज क़ासिम मिरज़ा की यह बात सुन कर पेशकार रामदयाल को एक थरथरी सी आ गई और वह आश्चर्यचकित होकर बोले, "तो क्या आपका ख़याल है कि अंग्रेजों की सल्तनत जाती रहेगी? क्या इन निहत्थे गुलगपाड़ा करने वालों को सरकारी पुलिस और फ़ौज क़ाबू में नहीं ला सकेगी? क्या ये लोग सरकार की ताक़त पर हावी हो जायेंगे?"

"एक दिन ऐसा भी आ सकता है।" कासिम मिरजा ने मुस्तकिल मिजाजी से कहा। "सरकार की आमदनी के सब जरिये बन्द हो सकते हैं ? गाँधी का यह सत्याग्रह बड़ा ही खतरनाक हथियार है। इसके सामने तोप-बन्दूक सब रखे रह जाते हैं।"

सेठ दामोदर प्रशाद कासिम मिरजा की बात सुन कर सन्न से रह गये।

रामप्यारी इनकी बातें सुनकर मुस्करा उठी, मानो दो-तीन कबूतर बैठे गुटरगूँ-गुटरगूँ कर रहे हों। वह उन्हें चुग्गा डालने वाली एक हसीन औरत है, उसका उन तमाम बातों से क्या मतलब। उसका काम तो जिन्दगी भर ऐसे ही रंगीन मिजाजों को चुग्गा डालना है। लेकिन दिमाग़ उसका भी बदल रहा है। एक गहरे ख़याल की लहर उसके दिमाग में भी दौड़ गई।

"तो आने दीजिये कोतवाल साहब ! अपना उससे क्या बिगड़ेगा। हम लोग अपने हुक्म से तो कोई काम करते नहीं हैं। अफ़सरों के हुक्मों को बजा लाना हमारा काम है। हमारे हिस्ट्री-शीट हमारी नौकरी के चमकदार आयने हैं, जिनमें सरकारी कामों को ईमानदारी के साथ करने की न जाने कितनी मोहरें लगी हुई हैं। वे हमारी जीदारी के सबूत हैं।

सरकार जो भी आये, और वह जैसा भी हुकुम चढ़ाये, उसे सचाई और ईमानदारी के साथ कर गुज़रना अपना काम है।" पेशकार साहब ने कहा।

"तो फिर तशद्दुद की सलाह क्यों देते हो। एस. पी. साहब को ? अपना छोटा भाई समझ कर आज यह बात पूछ रहा हूँ तुमसे।" कासिम मिरजा ने पूछा।

"यह भी कुछ पूछने की बात है कोतवाल साहब ! आप इतने क़ाबिल होकर यह ज़रा-सा मसला हल नहीं कर सके। तशद्दुद ही पुलिस की आमदनी है, तशद्दुद ही पुलिस का रौब है, तशद्दुद ही अंग्रेज अफ़सरों की नज़रों में ईमानदारी है और जब नौकरी की है तो नमक-हलाली करना अपना फ़र्ज़ है।" मुस्कराते हुए मूँछों पर ताव देकर पेशकार साहब बोले।

कासिम मिरजा पेशकार रामदयाल को मन से अपना उस्ताद मानने लगे। पेशकार साहब से वह अपने मन में उठने वाली हर बात की सलाह लेते हैं। पेशकार साहब से ज्यादा हमदर्द सलाहकार वह मेरठ जिले में अन्य किसी को नहीं समझते।

आज की शराब का दौर कई मायने में बहुत महत्वपूर्ण रहा।

पेशकार रामदयाल और कासिम मिरजा एक दूसरे के और भी नज़दीक आ गये।

सेठ दामोदर प्रशाद ने इन दोनों की बातों को सुन कर अपने मन में यही अंदाज़ लगाया कि उन्हें अब पुलिस के हाथों में नहीं खेलना चाहिए। उन्हें काँग्रेस से भी बना कर रखनी चाहिए। अमन सभा का प्रधान होना कोई खास बात नहीं है। खामखा लोगों की नज़रों में अपने को ज़लील नहीं करना चाहिए।

ऊपर से सेठ दामोदर प्रशाद ने एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन मन में ठीक से समझ-बूझ लिया कि उन्हें क्या करना है।

इस बार जब रामप्यारी कासिम मिरज़ा का जाम भरने लगी तो उन्होंने गिलास पर हाथ रख लिया और बोले, "अब पेशकार साहब और सेठ दामोदर प्रशाद ही पियेंगे।"

सेठ दामोदर प्रशाद भी एक और गिलास लेकर रह गये।

"अब अकेले का दौर नहीं चलेगा।" सब को पस्त हिम्मत देख कर पेशकार रामदयाल बोले, "मुझे अभी मेम साहब की भी ड्यूटी बजानी है कोतवाल साहब! मेरे इन्तज़ार में साहब और मेम साहब दोनों बैठे होंगे।"

"मैं तुम्हें अभी चन्द मिनटों में साहब की कोठी पर पहुँचा देता हूँ।" खड़े होते हुए कासिम मिरज़ा बोले।

आज की पार्टी के लिए सेठ दामोदर प्रशाद का दोनों ने शुक्रिया अदा किया और रामप्यारी का भी अंदाज़ भरा नमस्कार दोनों ने लिया और मीठी नज़रों में नज़रें डाल कर मुस्कराहट की खुशबू एक दूसरे की तरफ़ छोड़ दी।

: १४ :

देश का वातावरण महात्मा गाँधी के तूफ़ानी आन्दोलनों से आच्छादित होता जा रहा है। नमक-कानून तोड़ने के साथ-साथ सरकार से हर तरह असहयोग करने की तहरीकें शुरू हो गई हैं। सरकार को लगान देने के खिलाफ़ भी काँग्रेसी लोगों को भड़का रहे हैं।

मेरठ शहर और ज़िले में कांग्रेस की तहरीक बड़े ज़ोर-शोर से फैली। पुलिस ने इन्तहा दर्जे की सख्ती दिखलाई, लेकिन जनता के दिमागों पर आज़ादी का वह नशा ग़ालिब आया कि लोगों ने अपने कारोबारों, अपनी खेती-व-क्यारी, अपनी दुकानों और मज़दूरियों को छोड़ दिया और लग गये कांग्रेस का काम करने में। सत्याग्रहियों की तादाद रोज़ बढ़ती जाती है।

समय भी आगे बढ़ता जा रहा है। साइमन कमीशन भारत में आया। देश भर में उसका बहिष्कार किया गया। यह कमीशन मेरठ में भी आया।

स्कूल और कालेजों में अधिकांश प्रोफ़ेसर, हेड मास्टर और लड़के कमीशन का बहिष्कार करने के पक्ष में हैं, लेकिन हेडमास्टर लोग खुले आम कमीशन का विरोध नहीं कर सकते। उनकी संस्थाओं को सरकारी सहायता मिलती है। यदि वे ऐसा करते हैं तो सरकार उनको सहायता देना बन्द कर देगी।

ऐसी दशा में विद्यार्थियों ने आज के दिन मिल कर एक ज़बरदस्त हड़ताल की और शहर के उन चौरस्तों पर जहाँ-जहाँ से साइमन कमीशन के निकलने का प्रोग्राम बना, उसे काले झण्डे दिखाने का प्रबन्ध किया।

आज रात को कासिम मिरज़ा का जब पेशकार साहब के साथ अकेले में दौर चला तो वह बोले, "देखा कुछ पेशकार साहब आपने? अब कहिये अंग्रेजी सरकार की पुलिस और फौज कहाँ-कहाँ साइमन कमीशन की इज़्ज़त करा पाएगी। अपनी नौकरियों पर काम करने वालों के सलाम इन्हें ज़रूर मिल सकते हैं, लेकिन देश भर की जनता में जो आग बूढ़े गाँधी ने लगादी है वह आसानी से बुझाई नहीं जा सकती।"

"आपके कहने का मतलब मैं उसी दिन समझ गया था जिस दिन

आपने सेठ दामोदर प्रशाद के सामने छावनी के होटल में शराब पीते हुए इशारा किया था।" पेशकार रामदयाल बोले। "इतने बड़े तूफ़ान को दबाये रखना वाक़ई मुश्किल काम है। लेकिन कोतवाल साहब! चालाकी भी तो आखिर कोई चीज है। हम लोग बीच के आदमी हैं। हमें सरकार से सिर्फ उतना ही मतलब है, जितनी हम उससे तनखा पाते हैं। तनखा जो भी देगा वही काम लेगा। और जो जैसा काम लेने के क़ाबिल होगा उसे हम वैसा ही काम देंगे। हम लोग तो मशीन ठहरे। हमारे अन्दर गिर कर अगर कोई पिस भी जाता है तो इसमें हम क़तई दोषी नहीं। हमारा काम है मस्ती की छानते हुए चलना। किसी का जवान मरता है या बूढ़ा, इससे अपना सरोकार ही नहीं। मशीन को तेल चाहिए चलने के लिए।" मुस्कराते हुए पेशकार रामदयाल कासिम मिरज़ा के कंधे को पकड़ते हुए ज़रा दबा कर बोले।

पेशकार रामदयाल के पंजे में कासिम मिरज़ा का नाजुक-सा कंधा दब कर चरमराने लगा तो वह पेशकार साहब की तरफ मुखातिब होकर बोले, बड़ा खूंखार पंजा है आपका पेशकार साहब! बचपन में ज़रूर पहलवानी की है आपने।"

"पहलवानी की ही नहीं है कासिम साहब! खान्दानी पहलवान हूँ। हमारे बाबा जी इलाक़े के नामी पहलवान थे।"

कासिम मिरज़ा पर भी रहा नहीं गया अपनी खान्दानी तारीफ़ किये बिना और वह भी मुस्करा कर बोले, "पता नहीं पेशकार साहब क्या सभी के पुरखा पहलवानी करते आये हैं?"

'मालूम होता है आपके खान्दान में भी कोई जबरदस्त पहलवान हो गुज़रे हैं।"

"यही मतलब है मेरा। हमारे बाबा के बारे में बड़े-बड़े क़िस्से हैं···"

बहकती हुई बातें फिर साइमन कमीशन पर आ टिकीं। कासिम मिरज़ा बोले, "पेशकार साहब आज स्कूल के बच्चों ने तो ग़ज़ब ही कर दिया। कमीशन का रास्ता साफ़ करना मुश्किल हो गया। कहीं से भी बच्चे काले झण्डे लेकर निकल पड़ते थे और उनका सँभालना मुश्किल हो जाता था।"

पेशकार रामदयाल को कासिम मिरज़ा की इस पस्तहिम्मती पर मन-ही-मन तरस आया, लेकिन ऊपर से उन्होंने कोतवाल साहब की बात-में-बात मिला कर कहा, "आपने आज के इन्तज़ाम में जैसे काम लिया वह चाहे एक-दो अफ़सरों की नज़रों में न जँचा हो लेकिन अमन के विचार से ठीक ही किया आपने।"

पेशकार रामदयाल अब इन रोज के मामलात से कोई सरोकार नहीं

रखते। रोज-रोज की झगड़ेबाजियों से अब वह ऊपर उठ चुके हैं। उनका दर्जा अब छोटे-छोटे मामलात के बीच में पड़ने वाला नहीं रह गया है। जब तक कोई अहम बात सामने नहीं आती, तब तक वह सब काम इलाके के दारोग़ा पर ही छोड़े रहते हैं।

पेशकार रामदयाल ने अपने जिले के दारोग़ाओं को लंगोट बाज पहलवान बनकर रहने का संदेश दिया है। जो भी दारोग़ा उनके सम्पर्क में आया, उसको उन्होंने यही नेक सलाह दी, "जिस थाने में भी रहो शेर बनकर रहो, गीदड़ बनकर मत रहो। तुम्हारी पीठ पर सरकार की पूरी ताक़त है। तुम अपने इलाके में जिसे चाहो बेइज्ज़त कर सकते हो, हवालात में बन्द कर सकते हो। तुम्हारे हाथों में सरकार के क़ानून ने बड़ी-बड़ी ताक़तें दी हुई हैं।

जो अपनी हासिल ताक़तों का सही-सही इस्तेमाल नहीं कर सकते, वे मेरी नजरों से अव्वल दर्जे के बेवकूफ़ हैं।"

अक्लमन्द बनने का जोश और अपने इलाके में शेर की तरह घूमने की आजादी मेरठ जिले के सभी दारोग़ाओं को पेशकार रामदयाल ने दी।

इधर कांग्रेस की सरगरमी को देखकर और कासिम मिरजा की राय से प्रभावित होकर पेशकार रामदयाल कुछ विश्वासपात्र दारोग़ाओं से यह भी कह देते हैं, "जरा अपने इलाके के कुछ आसूदा कांग्रेसियों का भी खयाल रखा करो। कौन जाने कब क्या कायापलट हो जाये। आज के कैदी कल के हकू-मत चलाने वाले भी बन सकते हैं।"

जब कासिम मिरजा आज जरा और दिन से ज्यादा पी गये तो पेश-कार साहब ने उनका हाथ रोकते हुए कहा, "क्या कर रहे हो आज कासिम मिरजा! शराब उतनी ही पीनी चाहिए, जितनी होश को न बिगाड़ दे।"

"आज मैं कुछ भी नहीं कर सका पेशकार साहब! दिल में बड़ा जोश था कि आज मेरठ में साइमन कमीशन के आने पर जरा भी गड़बड़ नहीं होने दूँगा, लेकिन जब मैं कार पर बैठ कर कोठी से निकला तो क्या देखता हूँ कि आपका ही छोटा मुन्ना एक सरकंडे पर काला काग़ज लगाये, उसे ऊँचा उठा कर कह रहा था,—साइमन गो बेक, साइमन गो बेक।'

मेरा दिल हिल गया।

कितनी ताक़त पैदा हो चुकी है इस तहरीक में, जिसने इन नादान बच्चों के दिलों को भी इस क़दर का जोश दिला दिया है।"

"तो होने दीजिये ना देश को अपने आज़ाद! क्या परेशानी है आपके दिमाग़ में! शायद डर रहे हैं कि एस. पी. साहब नाराज होंगे?

"सो यह नाराजगी तो एक दिन बरदाश्त करनी ही होगी।" मुस्कराते हुए पेशकार रामदयाल बोले।

"और तुम कोई मदद नहीं करोगे मेरी ?" कासिम मिरज़ा ने पूछा।

'मदद क्यों नहीं करूँगा ? कासिम मिरज़ा की मदद नहीं करूँगा तो फिर किस की मदद करूँगा ?" यह कहते हुए पेशकार साहब ने सरकारी हस्पताल के सिविल सर्जन का एक सर्टिफिकेट सामने रख कर कहा, "यह देखा आपने।"

कासिम मिरज़ा ने उसे हाथ में लेकर कहा, "सिविल सर्जन के सर्टी-फ़िकेट का क्या बनेगा पेशकार साहब ? आपने यह किस लिए बनवाया है ?"

"बनेगा क्या ? आपके हिस्ट्री शीट पर जो काला धब्बा आने वाला था उसे मिटा कर सुनहरी रिमार्क बना देगा यह सर्टिफिकेट। आपने शहर-कोतवाली की है जनाब, माफ़ करना। अगर दीवानगीरी की होती तो तब आप पुलिस की इस बारीकी को समझ सकते थे।" पेशकार रामदयाल बोले।

कासिम मिरज़ा की अक्ल अब कुछ-कुछ काम करने लगी, लेकिन फिर भी बात की तह तक न पहुँचते हुए उन्होंने पूछा, "ज़रा साफ़-साफ़ बतलाइये पेशकार साहब ! मेरा दिल बैठा जा रहा है।" पूछने की तलाबेली में कासिम मिरज़ा ने कहा।

इसी समय कैसरगंज-चौकी के दीवान जी ने आकर सलाम झुकाया। वह चुप-चाप खड़े हो गये।

'कोतवाल साहब के सामने कहते डर लगता है मौलाना ! कहो, कहते क्यों नहीं ? कोतवाल साहब का तो उसमें फायदा ही है।" मुस्करा कर पेशकार साहब बोले, "हाँ क्या लिखा तुमने रोज़नामचे की पहली रपट में।"

"यही लिखा है हुज़ूर कि पुलिस पर किसी ने भीड़ में से एक हथगोला फेंक कर मारा। शहर-कोतवाल साहब बहादुर भी मौके पर थे। गोला इतनी जोर से फटा कि कोतवाल साहब को भी चोट आई और वह वहाँ से बेहोशी की हालत में हस्पताल ले जाये गये।" दीवानजी ने कहा।

"बहुत ठीक।" कह कर पेशकार साहब ने एक पाँच रुपये का नोट दीवान जी को देना चाहा, तो वह सकुचा गये।

"ले लो, इसमें क्या है ? जब पेशकार साहब मेहरबानी कर रहे हैं, तो शरमाने की क्या बात है ? सरकार से मिला तेल तो पल्ले में ले लेना चाहिए।" कासिम मिरज़ा, मुस्करा कर बोले।

"तुमने भी कमाल कर दिया पेशकार साहब ! सच जानिये मेरी तो

अब जान में जान आई है। वरना तो मैं आज अपनी नौकरी की तरफ से बिलकुल ही उदास हो बैठा था। सोच रहा था कि आज साहब बस खा ही जायगा फाड़ कर।" कासिम मिरज़ा दिल से पेशकार रामदयाल के बहुत कृतज्ञ हुए।

"साइमन कमीशन की हिफाज़त में तायनात मेरठ के कोतवाल कासिम मिरज़ा पर क्रांतिकारियों ने बम फेंका। कोतवाल साहब बुरी तरह ज़ख्मी होने पर सरकारी हस्पताल ले जाये गये। सिविल सर्जन ने रिपोर्ट दी है कि कोतवाल साहब को खतरनाक चोट आई।" दूसरे दिन दैनिक पत्रों मे छपा।

मेरठ में जो दैनिक पत्रों के नुमाइन्दे थे उन्हें अपने दफ्तर में बुला कर यही संदेश पेशकार साहब ने पुलिस की तरफ़ से लिखाया।

एस पी. साहब को कोठी पर जाकर यह खबर पेशकार साहब ने खुद दी।

साहब भी आज परेशान दिखलाई दिये। उन पर हो सकता है कलक्टर और कमिश्नर की झाड़ें पड़ी हों।

आज बेचारे एस. पी. साहब ने अभी तक खाना नहीं खाया था। सुबह सात बजे से वह ड्यूटी पर तैनात है। इतनी उम्र होने पर भी एस. पी. साहब कभी अपनी ड्यूटी से मुँह नही मोड़ते और फिर खास तौर पर जब उसका सम्बन्ध अंग्रेजी राज्य की राजनीति से होता है तो वह खुद बड़ी ही लगन के साथ काम पर जाते हैं।

पेशकार रामदयाल को देख कर बोले, 'वैल डीवान रामडयाल !". पेशकार होने पर भी दीवान शब्द ही साहब की जबान पर चढ़ा है और पेशकार रामदयाल को साहब के मुँह से अपने विषय में कुछ भी सम्बोधन सुनने में एतराज नहीं है, "आज अमारा साइमन कमीशन का टुमारा वेटन में बरा बेइज्जटी उआ।"

"क्या हुआ साहब ?" पेशकार साहब सब कुछ जानते हुए भी बोले, "हमें तो आपने दफ्तर में ऐसा फँसा दिया है कि बाहर का कुछ पता ही नहीं रहता। सुना है बेचारे कोतवाल कासिम मिरजा को बहुत चोट आई है।"

"कैशा चोट ?" आश्चर्य-चकित होकर एस. पी. साहब ने पूछा।

"सुना है कैसर गंज की चौकी पर बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई थी। वह भीड़ वहीं पर साइमन कमीशन को काले झण्डे दिखा कर उनके गले में जूतों का हार डालना चाहती थी। उसे रोकने के लिए जब पुलिस आगे बढ़ी तो कोतवाल साहब की कार भी वहीं पर पहुँच गई।" पेशकार साहब ने कहा।

"फिर कैसा उग्रा ?' साहब ने पूछा।

'हुजूर किसी ने हाथ का बम उठा कर कोतवाल साहब पर फेंक दिया और उन्हे बडी चोट आई। हस्पताल की एम्बुलेन्स कार आकर उन्हे हस्पताल ले गई।" पेशकार साहब ने कहा।

"आज सचमुच गुण्डा लोग बौट हावी ओ गया टा। गाँडी का गुण्डा लोग अमारा राज को भंगा डेना माँगटा ऐ। डीवाना ऐ। अम लोग ऐशा करके जाना वाला नही ऐ।" कुर्सी पर जम कर बैठते हुए साहब ने कहा।

"इसमे क्या शक है साहब! इतना बड़ा अंग्रेज का राज क्या यूँ ही चला जायगा? लेकिन साहब आज कोतवाल साहब ने भी हक अदा कर दिया। मौत के मुँह मे धकेल दिया उन्होंने अपने आपको।" पेशकार साहब बोले।

मेम साहब को इन बातों से कोई खास मतलब नही था। उन्होंने बैरे को अपनी मेज लगाने का हुक्म किया और देखते-ही-देखते शराब की बोतल खुल गई।

साहब बहादुर आज थक कर चकनाचूर थे। सुबह सात बजे के कसे-कसे अब खुले हैं बेचारे। जूतों के फीते इतने सख्त बँधे हैं कि खून की हरकत धीमी पड गई है, पैर कुछ सूजे-सूजे मालूम देते हैं।

मेम साहब की तरफ मुखातिब होकर बोले, "वैल मेम शाब, आम वेरी टायर्ड।"

"आफ् कोर्स" कह कर मेम साहब ने एक गिलास में शराब डाल कर साहब के हाथ में देते हुए कहा, "दिस विल हेल्प यू, दिस विल गिव यू रिलीफ्।"

दूसरा गिलास मेम साहब ने पेशकार रामदयाल की तरफ बढाया और फिर दौर-पर-दौर तब तक चलते रहे जब तक साहब बहादुर अपना होश खोकर आराम के साथ पलग पर नही लेट गये।

साहब के आराम से बेहोश लेट जाने पर मेम साहब ने खडी होकर कमरे मे घूमना शुरू कर दिया और गर्मी सी महसूस करते हुए सिर्फ एक पेटीकोट नुमा घांघरी को छोड़ कर अपने शेष सब वस्त्र उतार कर एक ओर फेंक दिये।

पेशकार रामदयाल की नजर मेम साहब के चिकने सुफेद शरीर पर फिर गई जैसे मक्खन की टिकिया पर मक्खन खाने के शौकीन लड़के की जबान फिर जाती है।

मेम साहब ज़रा घूम कर उसी मेज़ के पास आ गईं जिस पर उनका शराब का गिलास भरा रखा है। वह पेशकार साहब के सामने खड़ी होकर बोलीं, "वेल डीवान जी टुम अमें बौट टंग करने लगा ऐ। अगर टुम अमें ऐशा जाडा टंग करेगा टो अम टुमारी शाब बाडुर से शिकायट करेगा।"

पेशकार साहब मुस्करा कर बोले, "मेम साहब, हम तो आपके गुलाम हैं, और हमें तो पैदा ही परमात्मा ने आपकी ख़िदमत करने के लिए किया है। भला फिर हम आपको तंग कैसे कर सकते हैं ?"

मेम साहब अब अपनी कुर्सी से उठ कर पेशकार साहब की कुर्सी के बाज़ू पर बैठ गईं और उनके कंधे पर अपनी कलाई टिका कर सहारा लेते हुए बोलीं, "टुम बौट बाटें बेनाना जानटा ऐ डीवान जी! टुम अमें जितना अच्छा लगटा ऐ उतना ई खेराब भी लगता ऐ। टुम अमें बौट टंग करता ऐ।"

इतना कहते-कहते मेम साहब ने अपना पूरा शरीर पेशकार साहब के ऊपर ढुलका दिया। पेशकार साहब अब मेम साहब से काफ़ी खुल कर बातें करते हैं। मेम साहब का भार सँभालते हुए बोले, "मेम साहब आप तो अगर मेम साहब न बन कर गुलाब का फूल बन गई होतीं तो सच कहता हूँ मजा आजाता। साहब बहादुर का मुक़द्दर है कि उन्हें आप जैसी मेम साहब मिली हैं।"

"और टुमारा मुकड्डर केशा ऐ दीवानजी जो टुमको अमारा जेशा शाहब का मेमशाब मिला ऐ।" पेशकार साहब की आँखों में झाँकते हुए मेम साहब ने पूछा।

शराब का नशा इस समय मजेदार हो उठा। पेशकार रामदयाल ने मेम साहब से कहा, "मेम साहब मेरे दिल की तो बात ही न पूछो, लेकिन अफ़सरों की बीवियाँ बड़ी ख़तरनाक होती हैं। वे जब ज़रा नाराज़ हों तो फ़ौरन साहब से शिकायत करती हैं।"

मेम साहब हँस कर पेशकार साहब की गर्दन पर अपना गोल सुडौल हाथ टिका कर बोलीं "वेल डीवानजी! टुम डर गेआ मालूम डेटा ऐ, अमारा बाट से। अम टुमारा शिकायट कभी नईं कर शेकता। अम टुमें बोट-बोट अच्छा आडमी मानटा ऐ।"

पेशकार साहब ने काफ़ी देर तक पत्थर का बना रहने की कोशिश की लेकिन उनका हाड-माँस का बना शरीर आख़िर उनके मन के प्रतिबन्ध को स्वीकार न कर सका। उनके दिल में बेचैनी-सी पैदा होने लगी और मेम साहब का खुला समर्पण उन्हें अपनी ओर चुम्बक पत्थर की कोशिश के साथ खींचता रहा।

अभी तक जितनी हरकतें हुईं वे सब मेम साहब की तरफ़ से हुईं।

पेशकार साहब महसूस करते रहे कि उनके शरीर को कोई मुलायम हाथ छू जाते हैं और कोई मुलायम शरीर उनको स्पर्श करता चला जा रहा है।

"एक गिलास शराब और पिलाओ मेम साहब !" मेम साहब के दोनों हाथ धीरे से अपनी दोनों हथेलियों के बीच दबाते हुए कहा।

मेम साहब पेशकार साहब के सामने एक सलोलाइट की गुड़िया के समान बैठी हुई हैं। तुरन्त फुदक कर उन्होंने पेशकार साहब का गिलास शराब से भर दिया और फिर उनके होठों से लगाती हुई बोलीं, "टुम को शेराब पिलाने में अमें बोट मजा आटा ऐ डीवान जी ? शाब बाडुर ने तुमें अमारा शेराब पिलाने के लिए चोरा ऐ और टुम अमशे शेराब पिलाने का काम लेटा ऐ।" मेम साहब ने मुस्करा कर कहा।

शराब के नशे में पेशकार साहब बोले, "मेम साहब आप बहुत अच्छी मेम साहब हैं। चलो बाहर बगीचे में जरा सैर करें। आज आसमान में पूरा चाँद निकल रहा है। वह चाँद भी तुम्हारे गोल मुँह जैसी ही खूबसूरत चीज़ है।" कहते हुए पेशकार साहब ने मेम साहब के गुलाबी गालों को अपनी दो हथेलियों के बीच धीरे से दबा कर हलके से मसल दिया।

दोनों बाहर बग़ीचे पहुँचे तो देखा आसमान में वाक़ई चाँद मुस्करा रहा था। उसे देखकर पेशकार साहब बोले, "देख रही हो मेम साहब, यह चाँद कितना खश है तुम्हारे खूबसूरत चेहरे को देख कर ? हसीन चीज सब के मन को लुभाने वाली होती ही। परमात्मा ने तुम्हें वाक़ई बहुत हसीन बनाया है।"

अपनी खूबसूरती की तारीफ़ पेशकार रामदयाल के मुँह से सुन कर मेम साहब का दिल खिल गया, उनकी जवान जिन्दगी में पेशकार रामदयाल के आने से एक ताजगी आ गई।

साहब बहादुर से मेम साहब को कोई नफ़रत नहीं है लेकिन उनका उपयोग उनके नजदीक केवल इतना ही है कि वह उनकी बदौलत एस० पी० साहब की मेम साहब कहलाती हैं. रहने को कोठी मिली है, सैर के लिए कार है, खर्च करने को पैसे की कमी नहीं। इसके अलावा कभी साहब बहादुर को देख कर उनका दिल गुदगुदाया हो, ऐसी बात नहीं है, शायद जिन्दगी में एक बार भी नहीं।

लेकिन पेशकार रामदयाल के पास तो दिल को गुदगुदाने के अलावा और कुछ है ही नहीं। गज़ब की उनकी मस्त निगाहें हैं, गज़ब का गठीला बदन है।

देश आज़ादी की राह पर आगे बढ़ता जा रहा है। पेशकार रामदयाल की ऐश की छन रही है। उनका मेल मिलाप अब काँगरेसी तबक़े में भी बढ़ता जा रहा है। उनके यार सेठ दामोदर प्रशाद भी इधर गाँधी जी के मेरठ आने से बहुत प्रभावित हुए हैं। गाँधी जी के दर्शन ने उनकी आत्मा को ही बदल डाला है, उनके ज्ञान-चक्षुओं को खोल दिया है।

सेठ दामोदर प्रशाद ने अब हाथ का कता-बुना खद्दर पहनना शुरू कर दिया है। अमन-सभा से उन्होंने स्तीफा दे दिया है।

स्तीफ़ा देने से पहले सेठ दामोदर प्रशाद पेशकार साहब के मकान पर पहुँचे और शहर की हालत बयान करते हुए बोले, "पेशकार साहब, शहर की हालत बड़ी खराब होती जा रही है। मेरे कारबारों को धक्का लगने की सम्भावना है। मेरे लिए अब यही रास्ता है कि मैं काँगरेसी बन कर अपने मजदूरों का खुद नेता बन जाऊँ। इसी में मेरे कारबार की सलामती दिखाई देती है।"

"आपने ठीक ही सोचा है सेठ दामोदर प्रशाद। अक्लमन्द आदमी वही है जो वक्त की जरूरत को पहचान ले। मैं तो कहता हूँ कि तुम नेता बन जाओ देश के। अगर कभी कासिम मिरजा का ही खयाल दुरुस्त निकला और अंगरेज़ी सल्तनत यहाँ से चली गई, तो तुम्हारा ही पल्ला पकड़ कर हम यार लोग भी पार हो जायेंगे।" मुस्कराते हुए पेशकार रामदयाल बोले।

'मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ पेशकार साहब।" गम्भीरता पूर्वक सेठ दामोदर प्रशाद ने कहा।

"मेरे मुस्कराने को मजाक मत समझो सेठ! मैं भी सच ही कह रहा हूँ। बे-फ़िक्री के साथ काँग्रेस में शामिल हो सकते हो। तुम्हें किसी तरह की जरब आने वाली नहीं है।"

काँग्रेस में जाते ही तुम्हारे कारबार चमक उठेंगे। नामवरी भी तुम्हारी काफ़ी होगी और पुलिस की तरफ़ से तुम्हें कुछ फ़िक्र करने की जरूरत नहीं है। यहाँ जब तक तुम्हारा यार रामदयाल बैठा है तब तक तुम मौज की छान सकते हो।

और रामदयाल भी न सही, जो कोई भी आयगा' वह रामदयाल से बाहर जाने वाला नहीं है।

पेशकार रामदयाल से पूरी-पूरी मज़बूती पाकर और अपने दिमाग़ को सही करके आज सेठ दामोदर प्रशाद ने जिला-कांग्रेस कमेटी के मन्त्री महोदय को अपने पास बुलाया और उन्हें अपने पास मसनद पर बिठला कर उनका हाल-चाल पूछते हुए बोले, "कहिए मंत्री जी ! कैसी कुछ आज़ादी की तहरीक चल रही है। सुना है बड़ा काम किया है आपने। कायापलट कर दी है कॉंग्रेस की।"

मंत्री जी अपनी फटी धोती के छेद को सिकोड़ कर मुट्ठी में छिपाते हुए बोले, "काम तो ज़रूर किया है सेठ जी, और हो भी खूब रहा है, लेकिन पैसे के अभाव में आप जानते ही हैं कि कैसा काम हो सकता है।"

"आपका कहना बजा है मंत्री जी ! यह वाक़ा है कि काम बिना पैसे की सहूलियत के नहीं हो सकता। लेकिन हमने तो सुना है कि कैसरगंज के आढ़ती, जत्तीवाड़े के खत्तरी, सदर बाज़ार के बड़े-बड़े दूकानदार और सर्राफ़े के सर्राफ़ सभी कांग्रेस को दिल खोल कर चन्दा दे रहे हैं।" सेठ दामोदर प्रशाद बोले।

'चन्दा तो वाकई सभी ने दिया है सेठ जी, लेकिन खर्च भी तो कुछ कम नहीं है। इतनी बड़ी सरकार से लड़ाई छिड़ी हुई है। हज़ारों सत्याग्रहियों को रोज़ भोजन देना ही क्या कुछ कम छोटी-मोटी समस्या है ? बड़ा भारी खर्चा है सेठ साहब !" मंत्री जी बोले।

"खर्चा क्यों नहीं है। और मैं तो यही कहूँगा कि आपका ही बूता है जो इतने बड़े खर्चे को संभाले हुए हो, वरना अगर कोई ऐरा-गैरा होता तो कभी का भाग खड़ा होता।" सेठ दामोदर प्रशाद ने कहा।

"मेरा इसमें कुछ नहीं है सेठ साहब ! जो भगवान को मंजूर होता है वही होता है। यह सब महात्मा गांधी के पुण्य का प्रताप है जो सामने दिखलाई दे रहा है। उन्हीं के प्रताप से देने वाले के मन में सद्बुद्धि उत्पन्न होती है।" मंत्री महोदय विनम्रता पूर्वक बोले।

ज़रा ठहर कर मंत्री जी ने फिर कहा, "सेठ जी, आज आपसे एक बात कहूँ। यों कहना तो बहुत दिन से चाहता था लेकिन आज अवसर आही गया। अगर आप मेरा कहना मानें तो अमन-वमन-सभा छोड़ कर कांग्रेस में आ जाइये। सिर्फ दस हजार की एक थैली आप पंडित जी को उनके मेरठ के दौरे पर भेंट करें और मैं आपको ज़िले की कांग्रेस-कमेटी का प्रधान बनवा दूँगा। फिर देखना ज़रा अपनी नामवरी; और खाली नामवरी ही नहीं

मिलेगी सेठजी ! आपके कारखानों में जो रोजाना के फ़िसाद चलते रहते हैं वे सब भी खत्म हो जायेंगें। वह ठाट का कारोबार चलेगा कि मजा आ जाये। वरना तो हो सकता है कि किसी भी भीड़भड़ाके में कुछ नौजवान लोग जोश में आकर तुम्हारे कारखानों को मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगादें।" एक अंदाज के साथ मंत्री जी ने कहा।

सेठ दामोदर प्रशाद का दिल हिल गया उनकी बात सुन कर और उनका बताया हुआ नुसखा उनकी समझ में आ गया।

पंडित जी नेहरू मेरठ-कन्वेशन में पधारे और सेठ दामोदर प्रशाद ने ज़िला कॉंग्रेस के प्रधान की हैसियत से दस के बजाय बीस हज़ार की निजी और बीस हज़ार की ज़िला-वासियों की तरफ से थैलियाँ भेंट कीं।

सेठ दामोदर प्रशाद का एक छोटा-सा भाषण भी आज की सभा में छाप कर तकसीम किया गया। मेरठ की जनता ने सेठ जी के बलिदान को बहुत ऊंची नजरों से परखा। आज सेठ जी ने अपने कारखानों की छुट्टी कर दी थी, कि जिससे उनके मजदूर भी आज की इस सभा में की जाने वाली अपने सेठ जी की कारगुज़ारी को देख सकें।

हिन्दूमहा-सभा के मंत्री पंडित राम खिलावन सेठ दामोदर प्रशाद को काफ़ी दिन से मुर्गी के अंडे की तरह सेते आ रहे थे। आज की सभा में जिला-कॉंग्रेस के प्रधान-मंत्री का यह करिश्मा देख कर वह दंग रह गये और उन्होंने खड़े-ही-खड़े कई बार अपने हाथों को इस तरह मला जैसे शिकार हाथ से निकल जाने पर शिकारी हाथों को मलता है।

सेठ दामोदर प्रशाद का वह कायापलट देख कर रामप्यारी ने सोचा कि क्यों न वह भी उस अवसर का लाभ उठाये। उससे रहा नहीं गया और वह भीड़ के बीच में अपने दमदमाते हुए यौवन को लेकर खड़ी हो गई। उसके खड़े होते ही एक बार सब की नजरें उधर को आकर्षित हो हुईं।

जिधर को रामप्यारी के क़दम उठे, भीड़ हटती चली गई। सभी के नेत्र उसके मस्त चेहरे और सूआ जैसी नाक के ऊपर मस्तक के बीच लगी चौड़ी बिन्दी पर टकरा कर लौट आये।

रामप्यारी सीधी उसी मंच की तरफ़ बढ़ती चली जा रही है जिस पर देश के नेता पंडित जवाहर लाल विराजमान हैं और जिनकी बगल में मेरठ के सेठ दामोदर प्रशाद बैठे मुस्करा रहे हैं।

रामप्यारी ने अपने गले का रत्न-जड़ित हार उतार कर पंडित जी को भेंट करते हुए कहा, "यह आपकी नज़र है पंडित जी और आज से मेरा शरीर और सर्वस्व कांग्रेस की नज़र है। देश की सेवा के लिए में अपना

सब कुछ अर्पण करती हूँ।"

पंडित जी ने सहर्ष रामप्यारी की सेवाओं को स्वीकार करते हुए सेठ दामोदर प्रशाद की तरफ़ मुखाबित होकर कहा, "आप लोगों को चाहिए कि इन वीर देवियों से भी आज़ादी के आन्दोलन में काम लें। शहर की विदेशी कपड़ों और शराब की दूकानों पर पिकेटिंग करने का काम इनके सुपुर्द करना चाहिए।"

और फिर रामप्यारी की तरफ़ मुख़ातिब होकर बोले, "क्यों बहन! यह काम तो तुम बड़ी ख़ूबी के साथ कर सकोगी?"

"आपका आशीरवाद पाकर क्या कुछ नहीं कर सकूँगी पंडित जी! मेरठ के बजाज़े में कल से वह पिकेटिंग शुरू किया जायगा कि क्या मजाल जो कोई एक इंच भी विदेशी कपड़ा खरीद सके।" रामप्यारी ने गम्भीर मुस्कराहट के साथ सीने में उभार लाते हुए कहा।

"शाबाश! बहन, शाबाश। मैं तुम्हारा यह हार देश के लिए स्वीकार करता हूं।" और फिर जलसे में इकट्ठी हुई औरतों और मरदों को पंडित जी ने रामप्यारी को मंच पर खड़ी करके दिखलाते हुए कहा, "ये हैं भारत की वीर नारियाँ, जिन पर हमेशा से हमारे देश को अभिमान रहा है, जिन्होंने हमेशा अपने वीर भाइयों के साथ कंधे-से-कंधा भिड़ा कर आज़ादी की लड़ाई में भाग लिया है और एक-से-एक बड़ा बलिदान दिया है। पराधीनता की बेड़ियों को काटने में इन देवियों ने जो योग दिया है, उसका मैं नतमस्तक होकर हृदय से स्वागत करता हूं।"

मेरठ की जनता ने करतल ध्वनि से पंडित जी के शब्दों का स्वागत किया।

ज़माना बदल रहा है, लेकिन पेशकार रामदयाल पर उसका कोई असर नहीं। कोतवाल कासिम मिरजा की भी वही ऐश की छन रही है। सेठ दामोदर प्रशाद अब सुफ़ैद बुग खादी का कुर्ता पहनते हैं और खादी की महीन धोती। गाँधी आश्रम में जो बढ़िया-से-बढ़िया कपड़ा आता है वह पहले सेठ दामोदर प्रशाद के पास भेजा जाता है।

सेठ दामोदर प्रशाद के आज कल तीन जीवन अलग-अलग बन गये हैं। उनका व्यक्तिगत जीवन बिलकुल अलग है और उनका राजनैतिक जीवन बिलकुल अलग। एक तीसरा जीवन उनका व्यावसायिक जीवन है, जिसमें उनका तीसरा ही रूप सामने आता है।

पेशकार रामदयाल और कोतवाल कासिम मिरजा से उनका याराना बदस्तूर चल रहा है। रामप्यारी को उन्होंने कोठे पर बैठने वाली, नाचने-गाने

वाली, के रूप से बदल कर अपनी दिलरुबा बना लिया था और कचहरी-रोड़ पर एक कोठी उसके लिए खरीद कर उसके कम्पाउंड में एक ऊंचा कांग्रेस का तिरंगा झंडा लगवा दिया है। यह कोठी सेठ जी ने रामप्यारी के ही नाम करा दी है।

रामप्यारी का नाम भी अब सेठ दामोदर प्रशाद ने बदल कर रामप्यारी से रामेश्वरी देवी कर दिया है। मानो नाम के साथ-ही-साथ रामप्यारी का पुराना कारनामा और इतिहास भी उन्होंने दफ़ना दिया है। एक, दो, तीन, चार वर्ष में इस पुराने नाम के जानकार बहुत थोड़े रह गये मेरठ में।

इसी बीच में एस. पी. साहब का भी मेरठ से तबादला होने की खबर पक्की हो गई। तबादले के समय साहब को शानदार फ़ेयरवेल दिया गया।

चलने से पहले नये एस. पी. साहब से पुराने एस. पी. साहब ने पेशकार रामदयाल का परिचय कराते हुए कहा, "दी ओन्ली मैन ऑन व्हिच यू केन रिलाई फ़ार एवी थिंग।"[1] और खुद हाथ मिला कर उनसे हाथ मिलवाते हुए कहा, "ही कम्ज फ्राम ए लेंडलार्ड फेमिली।"[2]

नये एस. पी. साहब ने पेशकार रामदयाल के चेहरे पर देखते हुए कहा, "वेल पेशकार साहब! अम टुमारा बारा में शाब शे शब कुच सुनकर बौट कुश हुआ। जैशा होशयारी शे टुम अब टक काम करटा रहा ऐ, वैशा ई होशयारी शे टुम आगे भी करना माँगेगा। अम टुमारा पूरा-पूरा खेयाल रखेगा।"

"हुज़ूर की मेहरबानी होगी।" सर झुका कर अदब के साथ पेशकार रामदयाल बोले। "यों काम तो मेरा आपकी पेशकारी में फाइलें इधर-उधर पलटना ही है, लेकिन हुज़ूर मुझसे हर किस्म का काम ले सकते हैं।"

इसी समय पुराने एस. पी. साहब की मेम साहब आगे बढ़ कर नये साहब की मेम साहब की तरफ़ मुख़ातिब होती हुई बोलीं, "वेरी गुड ड्रंकर्ड, वेरी गुड।"[3]

"आफ़कोर्स।" साहब ने कहा।[4]

"वंडर फुल!" नई मेम साहब ने कहा।[5]

---

१. यही अकेला आदमी है जिस पर आप हर बात के लिए विश्वास कर सकते हैं।

२. यह एक ज़मींदार घराने का है।

३. बहुत अच्छा शराबी है, बहुत अच्छा।

४. बिलकुल।

५. बहुत खूब।

नये साहब की मेम की उम्र लगभग पचास साल की थी। पेशकार रामदयाल ने जब उसके सामने अपनी शराब पीने की तारीफ़ करते हुए पुरानी मेम साहब को सुना तो उनका दिल बैठने लगा।

वह मन-ही-मन सोचने लगे कि अगर शराब के नशे में इसने भी साहब से शिकायत करने की डाट पिलाई तो उनकी क्या दशा होगी।

पेशकार साहब का दम खुश्क सा हो गया और वह मुँह के थूक को सटक कर गला तर करते हुए बोले, "हुजूर हमारा पीना-पिलाना ही क्या है। यह सब तो साहब लोगों की मेहरबानी है। वरना हम लोग किस क़ाबिल हैं। हम लोगों की तनख़ाहें ही क्या हैं जो हम शराब पियेंगे ?"

नया साहब मुस्करा कर बोला, 'वैल पेशकार शाब टुमारा आमडनी अम लोग कूब जानटा ऐ। अम शे टुमारा आमड़नी चुप नई शेकता। अमारा हिश्शा में टुम बेईमानी मट करना। अम इशी शाल रिटायर ओकर विलायट जाना माँगटा ऐ।"

"मोस्ट आनेस्ट, मोस्ट आनेस्ट।"[१] पहले साहब बहादुर ने कहा।

नये साहब ने पुराने साहब से पेशकार रामदयाल के विषय में ये शब्द सुन कर कहा, "टुम बौट ब्ररिया आडमी ऐ। अम शब काम टुमारा हाट में चोर शेकटा ऐ।"

"विदाउट फीयर, विद फुल कानफ़ीडेन्स।"[२] पुराने साहब ने कहा।

पुराने साहब ने चलते समय पेशकार रामदयाल से अलहदा में कहा, "अमने टुमारा बारा में शब बोल डिया ऐ नया शाब को। टुमारा बौट खयाल करेगा। टुम उनको अमारी टरह शेमझना और उन की मेम शाब को बरिया शेराब पिलाना।"

"आप बेफ़िक्र रहें। यहाँ से चले जाने पर भी अपने दीवान रामदयाल को न भुला दें" पेशकार रामदयाल ने कहा।

वह फिर मेम साहब की तरफ़ मुख़ातिब होकर बोले, "मेम साहब आपकी याद तो भुलानी आपके दीवान के लिए बिलकुल नामुमकिन है। आपकी नज़रे-इनायत ने रामदयाल पर जो-जो मेहरबानियाँ की हैं वे ज़बान से बयान नहीं की जा सकतीं। आपकी ख़िदमत के लिए यह ख़ादिम हमेशा तैयार रहेगा। जब जहाँ भी आप चाहें ख़ादिम को आधी रात बुला सकती हैं। ख़ादिम सर के बल चला आयगा।"

---

१. बहुत ईमानदार, बहुत ईमानदार।

२. बिना भय के, पूरे इत्मीनान के साथ।

"अमको टुम शे ऐशा ही उम्मीड ऐ डीवान रामडयाल ! टुम इटना बरिया आडमी ऐ कि टुमारा अम टारीफ़ नई कर शेकटा । अम टुमको बिलायट में जाकर भी नेई भूल शेकटा ।" कह कर मेम साहब कार में बैठ गईं।

सामान इन लोगों का पहले ही जा चका था । पुलिस के सभी अफ़सर यहाँ इस समय उनको विदा करने के लिए आये । नये एस. पी. साहब और उनकी मेम साहब ने भी आख़री हाथ मिलाया ।

लेकिन पूरा अमला देखता रहा कि 'कार चलने के बाद भी एस. पी. साहब और उनकी मेम साहब ने दो बार घूम कर पेशकार रामदयाल की तरफ़ देखा ।

आज बड़े ही उदास मन से पेशकार रामदयाल अपने क्वार्टर पर आये । शीला उन्हें देख कर खड़ी होने की कोशिश करने लगी तो उसे बिठलाते हुए बोले, "शीला ! जिस दिन वालिद साहब का अन्तकाल हुआ था उस दिन भी इतना दुःख मुझे नहीं हुआ जितना आज एस. पी. साहब के तबादले से हुआ है । बेचारे कितने मेहरबान थे दोनों जने । एक-से एक आला मिजाज़ थे दोनों । साहब को मेम साहब मात करती थीं और मेम साहब को साहब ।"

"दोनों जने वाक़ई आप का बड़ा ख़याल रखते थे !" शीला ने भी एक लम्बा साँस खींचते हुए कहा । शीला को भी साहब के बदल जाने का बड़ा दुःख हुआ । साहब की बदौलत पेशकार साहब को कितनी आमदनी हुई थी, यह वह जानती थी ।

"चलते वख़्त नये साहब से भी मेरे बारे में खूब बोल गये हैं साहब ! और मेम साहब ने उनकी मेम साहब से बड़ी सिफारिश की है । उनके सामने तो नये साहब ने नेक दिल रहने का ही वायदा किया है; अब आगे की भगवान् जाने ।" कपड़े उतार कर कोट खूँटी पर टाँगते हुए बोले ।

फिर शीला की खाट के पास जा बैठे । शीला की तबियत इधर एक हफ्ते से बहुत गिरती जा रही है । हज़्म कुछ होता ही नहीं । जो कुछ खाती है वह तुरन्त टट्टी की राह से निकल जाता है ।

मेरठ के पुराने वैद्य रामसहाय का इलाज चल रहा है । वैद्यक के इलाज पर ही शीला का ऐतक़ाद है । वह अब डाक्ट्री दवाओं को पास तक नहीं फटकने देती । उसे किसी ने कह दिया है कि इन डाक्ट्री दवाओं में अंडा, मांस और शराब का इस्तेमाल होता है ।

शीला एक ब्राह्मण-वधू है, जो नित्य पूजा किये विना खाना नहीं खाती । इधर जब से बीमार पड़ी है, खाट में पड़े-ही-पड़े उसका पूजा-पाठ चलता है ।

वहीं से वह अपनी एक डुकरिया नौकरानी को नेहलवा कर राधा-

कृष्ण को भोग लगवा देती है और खाट में पड़ी-ही-पड़ी खाट के पाये पर मस्तक टिका कर अपना प्रणाम अर्पण कर देती है।

शीला पेशकार साहब के पास बैठने पर उनका हाथ अपने हाथ में लेती हुई बोली, "मेरा खयाल है कि इस बार भगवान् आपको मेरे बंधन से ज़रूर मुक्त कर देगा।" कह कर शीला की चिरवाँ मोटी-मोटी आँखों से दो आंसुओं की बूँदें गिर पड़ीं।

पेशकार साहब शीला का हाथ, जो चन्द हड्डियाँ मात्र रह गया है, अपने दोनों हाथों की हथेलियों के बीच में लेते हुए बोले, "शीला! ऐसी बातें न कहो। यह ठीक है कि हमारा कोई बच्चा नहीं है लेकिन, फिर भी हम दो तो हैं, एक दूसरे के लिए। तेरे इलाज में, तू देख रही है कि मैं कुछ भी उठा नहीं रख रहा हूँ। जो कुछ भी कमाता हूँ इसी में लगा देता हूँ। और तो तू जानती ही है कि हमारा कोई खर्च नहीं है। लेकिन इतना करने पर भी मैं भगवान् से नहीं लड़ सकता।"

शीला की ज़बान बन्द है और वह पेशकार साहब की बातों की सचाई को तहेदिल से क़बूल करती है।

वह धीरे-धीरे बोली, "आप जैसा पति भगवान् हर औरत को दे। मेरी तो अपने राधा-कृष्ण से यही विनती है। मैं तो आपकी आत्मा में अपने राधा-कृष्ण को बैठे देख रही हूँ।"

यह बात शीला हमेशा ही अपने पति पेशकार साहब के लिए कहा करती है। वह हृदय से अपने पति की आभारी है कि जिसने हमेशा ही उस बीमारी से भरी औरत को अपने सिर आँखों पर रखा है; पूरा-पूरा प्यार और इलाज भी किया है।

शीला का सम्बन्ध पेशकार साहब से केवल इतना ही है कि वह उसकी बीमारी में उसके पति होने की जिम्मेदारी कहाँ तक निभा रहे हैं। पेशकार साहब की हर कार्यवाही को देखने, जाँचने और उनके बारे में एक शब्द भी किसी से सुनना शीला के लिए पाप है, कोई उन्हें कुछ भी कहे, उसके लिए वह देवता-तुल्य है, ठीक वैसे ही जैसे उसके आराध्य देव।

शीला की तबियत बराबर बिगड़ती जा रही है।

पेशकार रामदयाल इस दशा को देख कर भयभीत हो उठे।

आज ही नये साहब कोठी में आये हैं। कोठी का यों सब इन्तज़ाम ठीक करने को वह वहाँ के अर्दलियों और बैरों को बोल आये हैं, लेकिन फिर भी नई मेम साहब को खुश करने के लिए उनका वहाँ जाना ज़रूरी है।

शीला को ज़रा तसल्ली देकर पेशकार साहब बोले, "अभी शीला!

मेरा तुम्हारा साथ ख़त्म नहीं हुआ है शीला। मैं वैद्यजी के पास जा रहा हूँ और करीमखाँ को दवा लेकर भेजता हूँ। माँ दवा पिला देंगी।"

"मुझे आज तुम्हारी दवा नहीं चाहिए। क्या तुम आज-आज के लि - भी मेरे पास नहीं बैठ सकते ?" शीला ने कहा।

"बैठ क्यों नहीं सकता शीला ! तू कहे तो मैं हफ्ते भर की छुट्टी ले-लूँ। लेकिन फ़ायदा जो कुछ भी होगा वह दवा-गोली से ही होगा। मेरे यहाँ बैठे रहने से कुछ नहीं बनेगा। मैं वैद्य जी को यहीं बुला कर दिखलाने का इन्तज़ाम करता हूँ।" इतना कह कर बिना जवाब का इन्तज़ार किये पेशकार साहब क्वार्टर से बाहर निकल गये।

पेशकार रामदयाल ज्यों-ही घर से बाहर निकले तो उन्हें अपनी माँ कहीं पास-पड़ौस से आती दिखलाई दी। उन्होंने पूछा, "कहाँ से आ रही हो माँ ?"

"ज़रा उस बमना सिपाही के घर चली गई थी। उसके यहाँ एक नई बहू आई है। बड़ी ही भोली लड़की है।" माँ ने उत्तर दिया।

"लेकिन माँ तेरे घर से तो तेरी बहू बिदा होने जा रही है। तुझे पता है कि शीला की कैसी हालत है ? उसके पास कोई उसके हलक़ में दो घूँट पानी डालने वाला भी नहीं है।" पेशकार साहब बोले।

"है क्यों नहीं रे ! वे दो डुकरिया, जो घर भर को खाये जा रही हैं, काहे के लिए हैं। पटरानी बना दी है तूने और दो-दो चार-चार बाँदियाँ भी लगादी हैं। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं भी उसकी बाँदी बन जाऊँ। और समझ ले रामदयाल ! अगर तुझे मेरी दो रोटियाँ भारी हो रही हों तो मैं अपने बाप के घर चली जाऊँ। तेरा बाप ही अभी मरा है, मेरा बाप नहीं मर गया। जिसने तेरे पोतड़े धोये हैं वह तेरी बहू की गुलामी नहीं करेगी।" पेशकार रामदयाल की माँ ने तुनक कर कहा।

पेशकार रामदयाल के दिल पर अपनी माँ की यह बात तीर की तरह लगी।

आज का दिन, वह सोचता रहा, पता नहीं जिंदगी में कैसा आया है। पेशकार रामदयाल के ऊपर आघात-पर-आघात पड़ रहे हैं और वह सीना सपर होकर उन्हें सहता जा रहा है। सहता जा रहा है, बढ़ता जा रहा है अपनी राह पर। कोई दुर्घटना उसके मज़बूत कंधों को जुम्बिश नहीं दे सकती। साहब का तबादला, शीला के आख़री श्वाँस, माँ का ऐसा करारा जवाब और फिर नये साहब और मेम साहब की पेशी में सब तरह का इन्तज़ाम करने की ज़िम्मेदारी।

पेशकार साहब को अपनी माँ की बात पर तैश आ गया। वह गुस्से को गले में घोट कर पी गये। एक बार तो उनके मन में आया कि वह अपनी माँ से कहें, "माँ तुम कल सवेरे ही अपने पिता के घर चली जाओ। लेकिन यह समझ कर जाना कि तुम्हारे बाप तुम्हारी ज़िन्दगी के साथ कहाँ तक चल सकते हैं। क्या फिर कभी तुम्हें बेटे रामदयाल की जरूरत नहीं होगी ?"

पेशकार रामदयाल बिना कोई जवाब दिये, सीधे करीमखाँ के क्वार्टर पर पहुँचे और उसे साथ लेकर सीधे वैद्यजी के घर की तरफ़ जाने को ताँगा किया।

मेरठ के ताँगे के फ़र्राटेदार घोड़े ने हवा से बातें की।

पेशकार साहब की माँ अपने क्वार्टर में घुस कर बिना शीला का नाम लिये ही शीला को चिढ़ाती हुई बोली, "मेरे तो भाग ही फूटे हुए निकल गये। मेरे लड़के की ज़िन्दगी ही ख़राब हो गई। मेरे लाल की सारी कमाई ख़ाक में मिल गई। मुझे क्या पता था कि मेरा लाल बैद-डाकटरों के लिए ही ज़िन्दगी भर कमाता-कमाता बूढ़ा हो जायगा।"

"ख़ाक में तो मिल गई माजी ! लेकिन इसमें मेरा क्या क़सूर है ? मुझे क्या तन्दुरुस्त रहना बुरा लगता है ? जब आपके घर आई थी तो बीमार नहीं थी मैं।" शीला ने धीरे-धीरे कहा।

"बीमार नहीं तो और क्या थी ? ऐसी क्या बीमारी थी कि जो शादी होते ही उभर आई ? बच्ची ! किसी ऐरा-गैरा के पल्ले पड़ गई होती तो अब तक चुआनों में हड्डियाँ दिखाई देतीं।" बुढ़ापे में भी ज़रा घमंड के साथ बेटे का रौब दिल में लेकर माँ बोली।

पेशकार रामदयाल की माँ बेटे और बहू दोनों पर दो किस्म का रौब रखती हैं। शीला से वह कहती हैं, "यह मेरी ही कोख का लाल है जो शादी के प्रण को निभा रहा है।" और पेशकार रामदयाल से कहतीं, "मुझे तेरी कमाई की ज़रूरत नहीं है। तू अपना ही पेट भरता रहे, बस यही ग़नीमत है। पिताजी तो हँसते हैं तेरी कमाई की बात सुन-सुन कर। कहते हैं कि पुलिस की कमाई करने वाले के हाथ साथ-साथ तेहमद से पुँछते रहते हैं। जो कमाते हैं उसे साथ-साथ हथेली पर रख कर खा-चाट लेते हैं।"

यह पेशकार रामदयाल का मज़ाक उड़ाने का तरीका है।

बुढ़िया पिता की दौलत पर दिमाग़ रखती है। उसका कोई खास खर्च तो है नहीं। दो रोटियों के खर्च के लिए वह क्यों बेटे की गुलामी करे।

बुढ़िया इसी तरह अपने बाप पर भी अपने बेटे की ताक़त से रौब रखती है और कभी-कभी उनके भी तुनकने पर कह देती है, "इस बुढ़ापे में

तुम्हारी रोटियों के लिये ही यहाँ पड़ी हूँ, वरना मेरा बेटा रामदयाल तो हमेशा यही कहता है कि माँ तू यहाँ रह और पुई-पुवाई खा। तुझे वहाँ इस बुढ़ापे में टिक्कड़ ठेकने की क्या पड़ी है ?''"

ऐसी काँटे की है पेशकार रामदयाल की माँ।

पेशकार साहब ने करीमखाँ के साथ वैद्य जी को ताँगे पर बिठाकर शीला को देखने के लिए भेज दिया और फिर कुछ करीमखाँ के कान में कहते हुए पेशकार साहब एस. पी. साहब की कोठी पर पहुँच गये।

पेशकार साहब ने अपने नये साहब को जाकर सलाम झुकाया और निहायत अदब के साथ पूछा, "सब इन्तज़ाम ठीक मिला हुज़ूर को ?"

"टुमारा इन्टजाम केराब हो नई शेकटा शाब बोल गेया ऐ अमको।" नये साहब ने मुस्कराते हुए कहा।

खाना खाने के कमरे में जब पेशकार साहब पहुँचे तो उन्हें पुरानी मेम साहब की जगह नई मुटल्लो मेम साहब दिखलाई पड़ीं। यह मेम साहब कद में छोटी और शरीर में भारी हैं। इनकी एक-एक जाँघ और एक-एक भुजा में एक-एक पहली मेम साहब बनकर तैयार हो सकती हैं।

इस पर भी जितना पाउडर और लिपस्टिक का इस्तेमाल इन्होंने किया हुआ है उतना पहली मेम साहब कभी नहीं करती थीं।

पेशकार साहब को देख कर मेम साहब मुस्करा कर कमरे में आगे बढ़ती हुई बोलीं, "वैल पेशकार शाब टुमारा इन्तजाम का अम बौट-बौट तारीफ़ करटा ऐ। अमको नया जगै आना में जेरा टेकलीफ़ नेई उआ।"

पेशकार साहब का मुरझाया हुआ परेशान चेहरा खिल उठा। मेम साहब की तारीफ़ ने उनके बुझे हुए दिल में रौशनी पैदा करदी।

इसी समय बाहर से बैरे ने आकर ख़बर दी कि क़रीमखाँ बीअर की एक पेटी लिवा लाये हैं।

"एक पेटी।" आश्चर्य से सुन कर मेम साहब ने कहा, "इटना का क्या बनेगा पेशकार शाब ! अमारा वाश्टे टो एक बोटल बौट टा।" मेम साहब बोलीं।

"हुज़ूर भेज दिया ठेकेदार ने; रख लीजिये। यह तो रोज़ काम आने वाली चीज़ है। कुछ खराब तो होती ही नहीं।" पेशकार साहब बोले।

इसके बाद शराब के दौर पर से भी साहब ने पेशकार साहब को न उठने दिया।

रात के एक बजे जब पेशकार साहब अपने क्वार्टर पर पहुँचे तो शीला आख़री श्वाँस लेती मिली।

पेशकार साहब ने लड़खड़ाते क़दम अन्दर रखे और लड़खड़ाती हुई ज़बान में कहा, "शीला ! तुम जाना चाहती हो मुझे छोड़कर, तो चली जाओ। लेकिन मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता। यह मेरी माँ बैठी है तेरे सामने और यह इस घात में है कि अगर तू इस वक़्त मर जाये तो यह सुबह मुझ से नई शादी की बात चलाये। लेकिन तू कभी भी यह न समझना कि रामदयाल तेरे मरने के बाद अपनी दूसरी शादी करेगा।"

पेशकार साहब की आवाज़ सुन कर शीला ने आँखें खोल दीं।

उन्होंने शीला के माथे पर हाथ रखा और पास में रखी मौसमी का ज़रा-सा रस प्याली में निचोड़ कर उसके हलक़ में डाल दिया।

"मेरे मरने के बाद तुम शादी कर लेना।" शीला ने धीरे से कहा।

"मैं कर नहीं सकूँगा शीला ! शादी का नया ताना-वाना बुनने की अब मुझमें ताक़त नहीं रह गई है।"

पेशकार रामदयाल शीला के सिर को अपने हाथों में लेकर बैठ गये। प्राणान्त होना ही चाहता है। श्वाँस धीरे-धीरे लम्बा पड़ता जा रहा है और गले की खरखराहट बढ़ती जा रही है।

पेशकार रामदयाल की माताजी ने खटिया के पास चौका लगा कर कहा, "बेटा बहू को ज़मीन पर उतार ले, खाट पर प्राणान्त होने से पाप चढ़ता है।"

पेशकार रामदयाल के कान बहरे हो गये। उन्हें एक भी शब्द सुनाई न दिया। वह उसी तरह खाट पर शीला के सिर को अपने हाथों में लिए बैठे रहे और इसी दशा में शीला का प्राणान्त हो गया।

पेशकार रामदयाल की आँखों में एक भी आँसू नहीं आया। उन्होंने अपनी करनी में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

अन्त में सभी को भगवान् की याद आती है। उसी का नाम लेकर उन्होंने भी कहा, "तेरी यही मरजी थी भगवान् ! एक तो बीमार औरत दी मुझे और फिर उसकी खिदमत करता भी मैं तुझसे न देखा गया। तेरी इच्छा के सामने किसी की इच्छा नहीं चलती।"

शीला के शव को पवित्र पावन गंगा के मेरठ ज़िले के तीर्थ-स्थान गढ़मुक्तेश्वर ले जाया गया और वहीं पर उसका दाह-कर्म-संस्कार हुआ।

पेशकार रामदयाल शीला की मृत्यु के पश्चात् बिल्कुल स्वतन्त्र हो गये। जब तक शीला बीमार रही और घर में पड़ी रही तब तक पेशकार साहब चाहे जहाँ भी रहें, उन्हें उसका हमेशा ध्यान रहता था।

गुलाब के कमरे पर शराब पीते समय, एस० पी० साहब की मेम साहब के पास शराब पीते समय, सेठ दामोदर प्रशाद और कोतवाल कासिम मिरजा के साथ शराब पीते समय, और पीकर दुनियाँ के झंझटों से मीलों ऊपर उठ जाते समय, जब सब चीज़ें उनके दिमाग से निकल जाती थीं तो क्वार्टर में खटिया पर पड़ी बीमार शीला और उसके पास बैठी दो डोकरियों की शक्ल उनके दिमाग में उतर आती थी।

करीमखाँ की माँ की शक्ल उनमें सब से ज्यादा साफ़-सुथरी नज़र आती थी। उसी के साथ मिला कर जब पेशकार साहब कभी कभी अपनी माँ की शक्ल देखते हैं तो उनकी ज़बान से निकल जाता है, "तुम भी एक माँ हो और यह भी एक माँ है, ज़रा एक दूसरी की शक्ल तो देखो।"

अपने क्वार्टर के सामने मूढ़ा डाले पेशकार साहब बैठे हैं। करीमखाँ की माँ लाठी के सहारे कुबड़ाती हुई उधर से आ निकली और वहीं उनके मूढ़े के पास सठ कर बैठ गई।

काफ़ी देर तक बैठी-बैठी क्वार्टर की तरफ़ देखती रही और उसकी ज़बान से एक शब्द भी न निकला।

"क्वार्टर में अब क्या देख रही हो अम्मी! इसकी जिन्दगी तो खत्म हो चुकी। आज दो महीने से भी ऊपर हो गये, इसमें घुसने की हिम्मत ही नहीं होती।" पेशकार साहब ने कहा। "इसी लिए बाहर बराँडे में दो खूंटियाँ गाड़ ली हैं। कचहरी से आकर इन्हीं पर कपड़े टाँग देता हूँ?"

कहते-कहते उनका दिल भर आया और आँखों में आँसू आ गये।

"बेटा खुदा की मरज़ी में किसी का दख़ल नहीं। तूने अपनी करनी में कोई कसर उठा नहीं रखी। बेचारी बहू का भाग ही पोच निकला कि बीमारी ने पीछा ही नहीं छोड़ा। लेकिन थी सच्ची देवी। ग़रीब मोहताजों को भर-भर बेला अनाज का दिलवाती थी। जिस दिन से खुदा ने उसे उठा लिया उस

दिन से मैं देखती हूँ कि हर गरीब मोहताज जो इस दरवाजे पर आता है, दो बूँद आँसू उस नेकबख्त को दे जाता है।"

पेशकार साहब की जबान से एक शब्द भी न निकला।

बात ज़िन्दगी में अहम-से-अहम आती है और धीरे धीरे पुरानी पड़ती चली जाती है। घाव दिल पर गहरे-से-गहरा लगता है और वह धीरे-धीरे भरता चला जाता है। लेकिन जो घाव जितना ज्यादा गहरा होता है वह अपना निशान भी उतना ही गहरा बनाता है।

शीला के गुज़र जाने का घाव पेशकार रामदयाल के दिल पर हुआ और वह इतना गहरा है कि उसका भरना ही कठिन हो रहा है। जब ज़रा-सी भी ठेस लग जाती है तो उसमें कसक पैदा होने लगती है। शीला की याद दिलाने वाली कोई भी चीज सामने आने पर शरीर में एक थरथरी सी पैदा कर दती है।

पेशकार रामदयाल का एक छोटा भाई है। वालिद साहब के मरने के बाद उन्होंने ही उसकी पढ़ाई-लिखाई का इन्तजाम किया। लेकिन वह एक जमींदार का बेटा है, उसे नौकरी नहीं करनी।

नवीं जमायत से पढ़ाई छोड़ दी और शादी का तौक़ उसके गले में उसके नानाजी ने लटका दिया। दो लड़कियाँ भी पैदा हो गई हैं और अब नानाजी ने उसे अपना गृहस्थ सँभालने का आल्टीमेटम भी दे दिया है। वह जिन्दगी भर उसका और उसके बाल-बच्चों के पालने का ठेका नहीं ले सकते।

पेशकार साहब बैठे करीम खाँ की माँ की बात सुन रहे थे कि सामने से क्या देखते हैं उनका छोटा भाई हरदयाल अपनी बोहडिया को साथ लिये उनकी तरफ़ बढ़ा चला आ रहा है।

हरदयाल को आते देख कर पेशकार साहब का मन ज़रा कुछ और सा हो गया। हरदयाल ने उनके पैर छुए और बोहडिया ने अपनी छोटी बच्ची को उनकी गोद में दे दिया।

करीम खाँ की माँ के मुँह पर प्रसन्नता के आसार दिखाई दिये। वह बहू को क्वार्टर में लिवा कर ले गई।

पेशकार साहब दस बजे दफ्तर चले गये।

रोज़ाना की तरह आज भी चारों तरफ़ के हल्कों से दारोगा, दीवान और सिपाही आये और पूरे जिले के हालातों से पेशकार साहब ने जानकरी हासिल की।

एक थाने के दारोग़ा से बोले, "बड़ी सुस्ती छाई हुई है तुम्हारे इलाक़े में। क्या सब मामलात वहीं होशियारी से साफ़ कर लेते हो?"

"यह बात नहीं है पेशकार साहब !" दारोगा जी बोले।

"यह बात नहीं है तो क्या तुम्हारे इलाके के लोग दूध में घुल कर आये हैं ? बाग़पत के इलाक़े में बीस चोरियाँ हुईं और तीन डकैतियाँ पकड़ी गईं। मवाने के इलाके में पाँच डकैतियाँ हूईं और एक सौ बीस डकैतों के चालान हुए, हापुड़ तहसील में बारह डकैतियाँ हुईं और पिछत्तर बदमाश गिरफ़्तार किये गये। एक तुम्हारा ही इलाक़ा ऐसा है जिसमें कुछ भी नहीं हो रहा। आख़िर आपकी क्या कारगुज़ारी साहब के सामने पेश करूँ ?"

दारोग़ा जी बेचारे सन्न से रह गये। अभी नये-नये आये हैं, पुलिस-ट्रेनिंग से। दीवान जी से दारागोई पाते तो उन्हें पेशकार साहब की डाट-फटकार न खानी पड़ती।

'आपके इलाके में कौन दीवान काम करते हैं ? शायद खान अब्दुल बेग हैं तुम्हारे यहाँ तो ?"पेशकार साहब ने पूछा।

"जी हाँ, वही हैं।" दारोगाजी बोले।

"तो आप उनसे मदद ले सकते हैं अपने काम में। आपको भी आखिर तरक्की करनी है जिन्दगी में। मैं तो यही सोचता हूँ कि जितने दिन यहाँ पेशकारी पर रहूँ उतने दिन जितने लोगों का भी कुछ भला कर सकूँ, कर डालूं। लेकिन जब आपकी कारगुज़ारियाँ ही इस क़िस्म की हैं तो भला मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ ?"

दारोग़ा जी सोचते-विचारते पेशकार साहब के पास से बाहर वराँडे में चले आये।। उनकी समझ में ही न आया कि आखिर पेशकार साहब का क्या मतलब है। जब इलाके में कोई चोरी हुई ही नहीं तो वह चोरी की रपटें कहाँ से अपने रोज़नामचे में दर्ज करायें और जब इलाके में डकैतियाँ पड़ी ही नहीं तो वह कहाँ से डकैतियाँ रोजनामचे में भरायें ?

उसी समय शेख़ अब्दुल बेग भी अपनी सुफ़ैद दाढ़ी सँवारते हुए आ पहुंचे और अपने इलाक़े के दारोग़ा को ज़रा उदास मन देख कर मुस्कुराते हुए बोले, 'कहिये दारोग़ा जी ! ऐसे उघारे-उघारे कैसे घूम रहे हैं। क्या पेशकार साहब से मुलाक़ात नहीं हुई ?"

"अभी-अभी वहीं से आ रहा हूँ दीवान जी !"दारोग़ा जी बोले।

शेख़ अब्दुल बेग पुलिस के पुराने खुर्राट हैं। ऊँची-नीची न जाने कतनी घाटियों से उतर चुके हैं। न जाने कितने अफ़सर उनके सिर पर आये और चले गये, लेकिन वह बदस्तूर क़ायम हैं। पुराने-पुराने दारोग़ाओं को वह खेल खिला चुके है, फिर यह तो बेचारा चार दिन का छोकरा है। उनके सामने चीज ही क्या है आख़िर ?

जिस पहले दिन उसने थाने का चार्ज लिया था तो अपने दीवान शेख अब्दुल बेग को बुला कर ताकीद की थी, 'मेरे इलाके में पूरी तरह अमन रहना चाहिए। किसी से कोई पैसा रिश्वत का लिया गया है, यह खबर मेरे कानों तक नहीं आनी चाहिए। बस जाओ अब अपना काम करो।"

जिन दीवान जी को इस नौजवान दारोगा ने वह ताकीद की थी, उसी को आज पेशकार साहब ने अपनी नेक सलाह दी कि वह अगर तरक्की करना चाहते हैं तो शेख अब्दुल बेग से कुछ सीखें और उनकी सलाह पर काम करें।

आज लंच के वक़्त पेशकार साहब को चाय पर शेख अब्दुल बेग ने दावत दी और दोनों ही पास के किसी होटल में चले गये।

चाय पीते-पीते पेशकार साहब बोले, "अब तो हाथ-पैर सभी घी में होंगे शेख साहब के ? काठ का उल्लू दारोगा भिजवा दिया है तुम्हरे यहाँ।"

"काठ के उल्लू दारोगा से तो असली चट्टान और पुराना खुर्राट ही अच्छा रहता है पेशकार साहब ! वह दिमाग़ तो नहीं चाटता खामखाँ के लिये। अपनी हिस्साकशी का पैसा चाहता है, सो उसे देने में अब्दुल बेग को कभी ऐतराज नहीं रहा।" अब्दुलबेग बोला।

"सब ठीक हो जायगा दीवान जी, कोई फिकर करने की ज़रूरत नहीं है। आज तुम्हारे काठ के उल्लू को वह डोज़ पिलादी है कि अगर शाम तक तुम्हारे पैरों पर न गिर पड़े तो हमारा नाम भी पेशकार रामदयाल नहीं। बस तुम पत्थर की तरह सख्त बने रहना।

फिर भी यार, कुछ तो आमदनी हुई ही होगी। ऐसी भी क्या खुश्की ?" पेशकार साहब बोले।

"खुदा की क़सम सच कहता हूँ पेशकार साहब ! जब से यह नामाकूल दारोग़ा आया है तब से क़सम खाने को एक इकन्नी भी किसी ने रोज़नामचे पर नहीं रखी।"

रोज़नामचा क्या आपने देखा नहीं है। सिवाय कॉंस्टेबिलों की ड्यूटी बदलने के और कुछ दिखाई देता है उसमें ?" खान अब्दुल बेग बोले।

पेशकार रामदयाल को चुप हो जाना पड़ा क्योंकि बात दीवान अब्दुल बेग की बिलकुल सच थी। पेशकार रामदयाल किसी भी जगह के रोज़नामचे को देखकर वहाँ की ऊपरी आमदनी का सही अन्दाज़ लगाने में बहुत माहिर हैं। उनसे राज़ छुपाया नहीं जा सकता।

"तो क्या बिलकुल ही खाली हाथ चले आए हो मेरठ शहर को ? तुम्हारा मामला भी बड़ा खुश्क-सा है दीवान जी ! आज इत्तफ़ाक से छोटा भाई अपने बाल-बच्चों को लेकर चला आया है और घर में सब सामान ख़त्म है।"

"तो यों कहिए न ! आपका छोटा भाई क्या मेरा छोटा भाई नहीं है।" कहते हुए दीवान अब्दुल बेग ने पचास रुपये के नोट जेब से निकाल कर पेशकार साहब को दिये।

पेशकार साहब के उतरे हुए चेरेह पर ज़रा सी ताज़गी आई। आज सुबह से एक पैसे की भी आमदनी नहीं हुई थी।

चाय पीने के बाद पेशकार साहब ज्यों ही अपनी कुर्सी पर जा कर बैठे तो उनके पुराने यार कोतवाल हातमसिंह का लड़का हिम्मतसिंह अपने वालिद का खत लेकर आ पहुँचा।

पेशकार साहब हिम्मत सिंह से बातें करते हुए दफ्तर से बाहर चले आये और बड़े प्यार से पूछा, 'तो शादी इसी बीस तारीफ़ की है न ! कोतवाल साहब से कहना कि मैं शादी में ज़रूर-ज़रूर शामिल हूँगा और अभी दो घंटे बाद तुम्हारे साथ कोतवाल कासिम मिरज़ा और सेठ दामोदर प्रशाद के पास भी चलूँगा !

और तुमने खाना भी तो अभी तक नहीं खाया होगा ?'

अर्दली को बुलाकर बोले, "देखो साहब को बराबर वाले होटल में ले जाओ और कहना कि पेशकार साहब के मेहमान हैं। जो बिल बने वह हमारे नाम पर लिख दें।"

आज इतने दिन बाद कोतवाल हातमसिंह का लड़का हिम्मतसिंह अपनी शादी का कार्ड लेकर पेशकार साहब के पास आया तो उन्हें ऐसा लगा कि मानों उनके अपने लड़के की ही शादी है।

दफ्तर का काम उन्होंने जल्दी-जल्दी समाप्त कर दिया और वक्त से एक घण्टा पहले ही दफ्तर छोड़ दिया।

हिम्मत सिंह उनके साथ है। पेशकार साहब ने पूछा, "अब तालीम कहाँ तक पहुँच गई तुम्हारी बेटा हिम्मतसिंह ?"

"इस साल दारोगाई की ट्रेनिंग का इमतहान दिया है मुरादाबाद से और उम्मीद है कि मैं उसमें अव्वल आऊँगा।" हिम्मतसिंह ने कहा।

"जरूर आओगे बेटा ! एक दिन उसी दबदबे के शहर-कोतवाल बनोगे जिस दबदबे के तुम्हारे वालिद हातमसिंह थे। लायक़ बाप की लायक़ औलाद हो तुम। उनसे पीछे रहने वाले नहीं हो।" खुशी-खुशी पेशकार साहब बोले।

हिम्मत सिंह के साथ उन्हें कासिम मिरज़ा के पास जाना था और वहाँ से सेठ दामोदर प्रशाद के यहाँ। इसलिये घर पर पहुँचने में देर हो सकती थी। दफ्तर में ही उन्होंने करीमखाँ को बुलाया और बीस रुपये देकर कहा,

"छोटा भाई आया हुआ है घर पर। दाल, साग, आटा, नमक, मिर्च और घी लेकर दे देना। एक रुपए की मिठाई भी लेते जाना बच्चों के लिए।"

फिर ताँगा किराये का करके पेशकार साहब कोतवाली पहुँचे। बाहर दरवाजे पर ही ताँगे से उतरे और एक दुअन्नी ताँगे वाले के हाथ पर रख कर बोले, "खुश हो तो मियाँ!"

"आप यह भी न दें, हम तभी क्या आपसे नाखुश हो सकते हैं सरकार?" ताँगेवाले ने कहा।

"नहीं उस्ताद! किसी गरीब आदमी का पैसा रखना पेशकार रामदयाल के लिये हराम है।" मूँछों पर ताव देकर पेशकार साहब बोले।

हिम्मतसिंह को इस कोतवाली की अपनी पुरानी जिन्दगी याद आ गई। उसने उस मैदान को देखा जिसमें धूल भरा वह खेला करता था। उसे वह मकान भी दिखलाई दिया जिसमें रह कर उसने अपने बचपन के कई वर्ष गुजारे थे और फिर चचा पेशकार रामदयाल का वह आशीर्वाद भी उसके कानों में गूँजा—'एक दिन तुम भी उसी दबदबे के शहर कोतवाल बनोगे।'

पेशकार साहब क़ासिम मिरज़ा के दफ्तर में सीधे ऊपर चले गये और कासिम साहब ने भी खड़े होकर उनसे हाथ मिल ते हुए उनकी आवभगत की।

"आज कैसे तकलीफ़ की पेशकार साहब ने।"

"इसे पहचानते हो क्या?" हिम्मत सिंह की तरफ़ इशारा करते हुए बोले। "कोतवाल हातमसिंह का इकलौटा बेटा हिम्मत सिंह है। इसकी शादी है और उसी का निमन्त्रण-पत्र लेकर आया है आपके पास।' कह कर उन्होंने छपा हुआ कार्ड सामने मेज पर रख दिया।

कासिम मिरज़ा शादी के कार्ड को देखकर बहुत खुश हुए और बिना तारीख़ का ख्याल किये हुए बोले, 'कोतवाल हातमसिंह के लड़के की शादी में शरीक नहीं होंगे तो और किसकी शादी में शरीक होंगे भला पेशकार साहब! खूब ठाटबाट के साथ चलेंगे। गुलाब को भी साथ ले चलना। तीन चार दिन वहाँ ख़ूब ठाट की छनेगी।"

"ज़रा सेठ दामोदर प्रशाद को भी टैलीफोन करके देखिये कि घर पर हैं या दफ्तर में। उन्हें भी कोतवाल हातमसिंह ने याद फ़रमाया है।" पेशकार साहब बोले।

"सेठ दामोदर प्रशाद अब बहुत बड़ा आदमी हो गया है पेशकार साहब! रोज़ाना अखबारों में उसका नाम छपता है। मेरठ ज़िले में आजकल उसकी तूती बोल रही है। मुझे तो मुश्किल ही लगता है कि वह शादी में शरीक हो सके। लेकिन फिर भी क्योंकि आप कह रहे हैं, इसलिए टेलीफ़ोन

किये देता हूँ।" कासिम मिरज़ा ने कहा।

पेशकार रामदयाल को कासिम मिरज़ा की इस बात पर तैश आ गया और वह मूँछें चढ़ाते हुए बोले, "कासिम साहब हाकिम होकर क्या छोटी बातें करने लगते हो तुम भी। सेठ दामोदर प्रशाद अगर सेठ होगा तो अपने घर का होगा और अगर वह काँग्रेस का प्रधान है तो उन चपर क़मातियों का प्रधान होगा जो सिर पर डेढ़ इंची टोपियाँ लगाये पैरों में फटी चप्पलें फटकारते फिरते हैं। हम लोगों का इन चीज़ों से कोई वास्ता नहीं। हम यार की यारी से मतलब रखते हैं। उसका बड़प्पन हमारे एहसानों से ऊपर उभर कर नहीं जा सकता।"

कासिम मिरज़ा ने सेठ दामोदर प्रशाद से टेलीफोन मिला कर पेशकार साहब से कहा "लीजिये आप ही बातें कर लीजिये!"

"आप ही बयान कीजिये कि मैं कह रहा हुं उन्हें कोतवाल हातमसिंह के लड़के हिम्मतसिंह की शादी में हमारे साथ चलना है।"

कासिम साहब ने फ़ोन पर पेशकार साहब का संदेश देते हुए कहा, "पेशकार साहब खुद यहीं तशरीफ़ फरमाते हैं।"

पेशकार साहब ने टैलीफ़ोन हाथ में लेते हुए अफसराना अन्दाज़ में कहा, "कहो सेठ क्या हालचाल है? आज कल तो बड़े व्यस्त मालूम दे रहे हो। पिछले हफ्ते में एक बार भी शक्ल देखने को नहीं मिली। शायद बहुत महंगे हो गये हैं आपके दर्शन?" कटु-व्यंग्य के साथ पेशकार साहब बोले।

सेठ दामोदर प्रशाद आजकल बहुत ऊँची हवा में हैं। देश के नेता हैं वह; दो मिलों के मालिक हैं वह, पुलिस-अफ़सरों से उनका याराना है, फिर क्या नहीं है उनके पास जो किसी दुनियाँ के ऊँचे-से-ऊँचे दर्जे के इन्सान के पास होना चाहिये।

बातों में सेठ दामोदर प्रशाद बहुत मीठे आदमी हैं और उनकी नाँ को भी लोग उनकी हाँ ही समझ कर न जाने कितने दिन तक भ्रम में चक्कर लगाया करते हैं। इस भ्रम के फैलाव को वह आज की राजनीति का सबसे निखरा हुआ पहलू मानते हैं।

लेकिन उनका यह भ्रम पेशकार रामदयाल के सामने आते ही काफूर हो जाता है। उनकी आँखो के सामने अपना वही पुराना नक्शा आ जाता है जब उन्हें रामप्यारी के कोठे पर काँस्टेबिल रामदयाल ने हथकड़ियाँ लगवाई थीं। वही काँस्टेबिल रामदयाख आज पेशकार रामदयाल है। वह पेशकार रामदयाल, जो ज़िले के सब थानों के दरोग़ाओं, दीवानों और काँस्टेबिलों को अपने हाथ की कठपुतली समझता है, वह रामदयाल जिसके इशारे

पर जिले के रोजनामचे लिखे जाते हैं, वे रोज़नामचे जिनके अन्दर दर्ज की हुई रिपोर्टें फौजदारी के मुकदमों में बाइबिल, इंजील, क़ुरान और वेदों की वाणी बन जाती हैं।

यही बात एक दिन पेशकार रामदयाल ने सेठ दामोदर प्रशाद पर रौब ग़ालिब करने के लिए कही थी, जिसे सुनकर सेठ जी थर्रा उठे थे। उस समय पेशकारी पर आप नहीं आये थे और चौकी की दीवानगीरी कर रहे थे। दीवान जी ने कहा था, "सेठजी ! यही रोज़नामचा तो हमारा सबसे बड़ा हथियार है। इसमें हम जो दर्ज कर दें वह पत्थर की लकीर बन जाती है। जो रपटें रोज़नामचे में दर्ज की जाती हैं और उन पर रपट कराने वालों के निशान-अंगूठे ले लिये जाते हैं, वे ही रपटें उन्हें फाँसी के तख्ते पर भी लटका सकती हैं।

रपट लिखने का काम दीवान का है और इसीलिए मैं कहता हूँ कि आज तमाम हिन्दुस्तान की ज़िन्दगी का बनाने और बिगाड़ने वाला पुलिस का दीवान है।"

दीवान नाम से सेठ दामोदर प्रशाद दहशत खाते हैं। इसीलिए गिड़-गिड़ा कर बोले, "वैसे तो बड़ा व्यस्त हूँ आज कल पेशकार साहब; आप जानते ही हैं कि कितने-कितने झमेले मैंने अपने गले में फँसाये हुए हैं; लेकिन आपका कहना भी तो नहीं टाला जा सकता। मैं शादी में ज़रूर शामिल हूँगा।"

पेशकार साहब टेलीफोन रिसीवर पर हाथ रखते हुए कासिम मिरज़ा से बोले, "लीजिये तैयार हैं चलने को। एक बार भी ज़बान से नाँ नहीं निकली। अब ज़रा और काम की बातें भी कर लूँ।"

पेशकार साहब फिर रिसीवर सँभालते हुए बोले, "सेठ जी, क्या श्रीमती रामप्यारी उर्फ रामेश्वरी देवी भी शादी में शरीक होंगी ? हम तो उन्हें जब एक बार आपके सुपुर्द कर चुके तो सीधे उनके पास पहुँच ही नहीं सकते। वह चाहे लाख काँग्रेस की मंत्राणी हैं, लेकिन हमारे लिए तो वह वही हमारे यार सेठ दामोदर प्रशाद की रखैल हैं।"

सेठ दामोदर प्रशाद पेशकार साहब की बात सुन कर खूब हँसे और फिर ज़रा मठार कर बोले, "पेशकार साहब ! आज कल बड़े नखरे हो गये हैं रामेश्वरी देवी के। अब वह ज़माना नहीं रहा है। अब तो वे पुरानी बातें मानों उसे याद ही नहीं रहीं।

क्या बतलाऊँ कि कितने नखरे से बातें करती है।"

"तो यों कहिये सेठ साहब कि आपका सब खिलाया-पिलाया बेकार हो गया। यह जब रामप्यारी थी तब भी बेवफ़ा थी और आज जब रामेश्वरी देवी बनी हैं तब भी बेवफ़ा निकलीं। इनके पास वफ़ा नाम की कोई चीज

न कभी थी और न आज ही है—कोरा रूप का भुलावा मात्र है।

इसे या तो हकूमत झुका सकती है या पैसा झुका सकता है। लेकिन आज इसे पैसे की भी जरूरत नहीं है। हमारे देश में जो स्यासत का रोजगार चल रहा है उसकी तिजोरी की कुंजी सँभालने वाली रामेश्वरी देवी आज तुम्हारी दो मिलों की क्या फ़िक्र करती है ?"

"आपने बिल्कुल ठीक कहा पेशकार साहब ! रामेश्वरी दोगली औरत है। यह कभी ज़िन्दगी में एक जगह जम कर नहीं रह सकती।"

लेकिन इसी को वह तरक्की का राज़ भी समझती है।" सेठ दामोदर प्रशाद बोले।

"यह बात उसकी किसी हद तक ठीक भी है, लेकिन दोस्त ! जो मजा याराने में है वह न तो स्यासत के बड़प्पन में है और न ही पुलिस की चौध-राहट में। पैसा तो हाथों का मैल है। इसकी क्या परवाह की जाये ?" पेशकार साहब बोले।

"पैसे को मैं भी हाथों का मैल ही समझता हूँ पेशकार साहब ! तुम्हारी कृपा से पैसा इस थली पर पतझर के पत्तों की तरह बरसता है। रात को चार-चार मुनीम गिनती करते हैं और रोज़ाना ही रात के बारह बज जाते हैं।" सेठजी ने कहा।

"यह सब यारों मुकद्दर से ही समझो सेठजी !" पेशकार साहब बोले।

"इसमें क्या शक है ?" सेठजी ने कहा।

तो फिर अपने यार कोतवाल साहब के लड़के की शादी में क्या कुछ अपनी सिठाई का नमूना पेश कर रहे हो ? मेरे ख़याल से तो अपनी गुलाब को ही ले चलें। आपकी रामप्यारी उर्फ़ रामेश्वरी देवी से तो उम्मीद ही क्या की जा सकती है ?

और फिर नाँचने वाली का काम भला वह अब क्यों करने लगी हैं ?" पेशकार साहब मुस्करा कर बोले।

"अजी भगवान् का नाम लीजिये पेशकार साहब ! दुनियाँ बहुत बदल चुकी है। आप जिस ज़माने की बातें सोच रहे है, वह ज़माना ख्वाब बन चुका। आज रामेश्वरी देवी सेठ दामोदर प्रशाद को ही काँग्रेस से बाहर निकाल खड़ा करने के फ़िराक़ में है।" सेठ दामोदर प्रशाद बोले।

"और आपने अपने यार पेशकार रामदयाल को याद नहीं किया अपनी मदद के लिए ?"

सेठ जी की गर्दन नीचे झुक गई पेशकार साहब के सामने। उन्होंने

ग़लती तस्लीम की ।

बातें खत्म करके टेलीफोन बन्द करने पर पेशकार साहब बोले, "लीजिये सब इन्तज़ाम मुकम्मिल कर दिया । अब पूरे ठाट-बाट के साथ चलेंगे बेटा हिम्मतसिंह की शादी में ।" हिम्मतसिंह की पीठ ठोक कर बोले, "कोतवाल साहब से कहना कि हम लोग एक दिन पेश्तर ही गाँव में पहुँच लेंगे ।"

: १७ :

रामप्यारी का कायाकल्प हो गया। अब उसे रामप्यारी नाम से जानने वाले चन्द उँगलियों पर गिने जाने वाले लोग हैं। किसी का उससे यह कहने का भी साहस नहीं होता कि वह कभी वेश्या के रूप में मेरठ-वैली बाज़ार के किसी कोठे की शोभा बन चुकी है।

विदेशी कपड़े की दूकानों पर जो पिकेटिंग का रामेश्वरी देवी ने प्रबन्ध किया, वह कमाल दर्जे का रहा। बज़ाज़े के विदेशी कपड़ों के दुकानदारों को हाथ-पर-हाथ रख कर बैठ जाना पड़ा।

काँग्रेस में आज-कल रामेश्वरी देवी का बोल बाला है। उनके फ़ोटो सिनेमा-स्टारों और देश के नेताओं की तरह सड़कों के किनारों पर बिकने शुरू हो गये है।

सेठ दामोदर प्रशाद से रामेश्वरी देवी का सम्मान काँग्रेस में अधिक होता जा रहा है। सेठ दामोदर प्रशाद जब-जब अपना पलड़ा हल्का होता हुआ देखत हैं तो एक थैली, दान की, उस पर रख कर उसे भारी कर देते हैं।

लेकिन रामेश्वरी देवी जब लाखों की जनता के बीच तिरंगे झंडे के नीचे खड़ी होकर वन्दे मातरम गाती हैं तो सेठ दामोदर प्रशाद की थैली हल्की पड़ जाती है। जब रामेश्वरी अपनी रटी हुई स्पीच को देना शुरू कर देती हैं तो जनता मंत्र-मुग्ध हो जाती है।

उसके ठीक विपरीत जब सेठ दामोदर प्रशाद मंच पर खड़े होकर भाषण देने की कोशिश करते हैं तो बैठी हुई जनता खड़ी हो जाती है और खड़ी हुई जनता अपने काम-काज की ओर खिसकने लगती है।

पेशकार रामदयाल का रामेश्वरी के यहाँ आना-जाना तभी बन्द हो गया था जब वह रामप्यारी थी। तभी उन्होंने उसे बेवफ़ा समझ कर सेठ दामोदर प्रशाद के हवाले कर दिया था।

उनका ताल्लुक़ गुलाब से बदस्तूर चला आता है।

गुलाब एक ख़ांदानी पेशेवर है। पेशकार साहब को खुश रख कर उसने उनसे काफ़ी फ़ायदा उठाया है और वैली-बाज़ार की यह तीन मंजिल की इमारत, जिसके अन्दर वह अपना मुजरा करती है, उसकी अपनी जायदाद है।

कोतवाल हातमसिंह का लड़का हिम्मतसिंह कोतवाली से ही रेलवे-स्टेशन के लिए ताँगे पर बैठ कर रवाना हो गया।

पेशकार रामदयाल ने सोचा कि चलें गुलाब से भी बीस तारीख़ की शादी में चलने की बात पक्की करते चलें। जो काम खत्म हो जाय वही अच्छा है। कोतवाल हातमसिंह भी क्या याद करेंगे कि उनके लड़के की शादी में रामदयाल ने कुछ रौनक की और अपने पुराने ताल्लुकातों को निभाया।

गुलाब पेशकार साहब की आवभगत करती हुई बोली, "आइये पेश-कार साहब ! अब तो आप ईद के चाँद ही बन गये। क्या कुछ ग़लती हुई है ख़ादिमा से जो आना-जाना ही बन्द कर दिया ?"

"ऐसी बातें न किया करो गुलाब ! अब इस ज़िन्दगी में पेशकार रामदयाल के पास आने-जाने का और ठिकाना ही कौन-सा रह गया है ? क्वार्टर पर एक बीमार औरत पड़ी रहती थी, उसे भी भगवान् ने उठा लिया।" लम्बा साँस खींच कर पेशकार साहब बोले।

पेशकार साहब का मन एक-दम न जाने क्यों उदास हो गया और वह गुलाब के खास कमरे में पलंग पर लेटते हुए बोले, "गुलाब ! ला ज़रा-सी पिला तो दे ! परमात्मा ने न जाने दुनियाँ भर की ग़मगीनियाँ क्यों लाकर मेरे दिल में भर दीं ?"

इस तरह की बातें पेशकार साहब हमेशा ही गुलाब के यहाँ आकर किया करते हैं। शराब के दो पैग हलक़ में जाते हैं तो वह ग़म बहारों में बदल जाता है। ग़म की उदासी खिसकती जाती है और जवानी का नशा छाता चला आता है।

"आज तो आप ग़लत कह रहे हैं कि आप ग़मगीन हैं।" शराब का गिलास भरते हुए गुलाब ने कहा। "आपके चेहरे पर खुशी के आसार दिखाई दे रहे हैं।" मुस्करा कर गुलाब ने कहा।

"यह तुमने कैसे जाना गुलाब ?" पेशकार साहब ने पूछा।

"आपके मुँह को देख कर आपके मन की बातें जान लेना अब गुलाब के लिए कोई मुश्किल काम नहीं रहा है।" कह कर गुलाब ने अपनी इठलाती हुई गोल और सुडौल माँसल बाँहें धीरे से उठा कर पेशकार साहब की गर्दन पर रखते हुए उनकी जेब तक हाथ पहुँचा दिया और फिर दो उंगलियों से जेब में पड़े तीन दस-दस के नोटों को ऊपर उभार कर बोली, "क्या यही कारगुज़ारी रह गई है अब आपकी दिन भर की ?"

पेशकार रामदयाल उसी तरह चुपचाप लेटे रहे और फिर ज़रा संभल-कर बोले, "आमदनियाँ सब खत्म होती जा रही हैं गुलाब ! सब नौकरी के ठाट-बाट खत्म हो चुके। देसी अफ़सरों की मातहती, कुत्तेघिसी है।"

"तो क्या अब साहब भी देसी ही आने लगे ?" बड़े आश्चर्य में आकर गुलाब ने पूछा।

"यही तो बात है गुलाब ! इस वक्त हमारा एस. पी. एक हिन्दुस्तानी आ लगा है। अफ़सर क्या है, एक ही दिन में चाहता है कि दुनियाँ भर को लूट कर उसका घर भर दिया जाये। खाना-खिलाना भी दुनियाँ में क़ायदे का होता है। यों-ही गरीबों के गलों पर हाथ साफ़ नहीं किया जा सकता।"

इतना कहकर पेशकार साहब ने एक लम्बा घूँट भर कर गुलाब की ठोड़ी पकड़ते हुए कहा, "कोतवाल हातमसिंह के लड़के की शादी है। तुम्हें चलना है शादी में।"

"आपकी कान पकड़ी चेली हूँ पेशकार साहब ! जब जिधर हुक्म होगा, गुलाब को क्या कभी उसमें इंकार हो सकता है ?" गुलाब ने कहा।

"मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। लकिन गुलाब जाने आने के खर्चे और तुम्हारे इनाम का भार मैंने सेठ दामोदर प्रशाद पर डाल दिया है। कस कर वसूल कर लेना।" पेशकार साहब बोले।

"सेठ दामोदर प्रशाद पर ?" आश्चर्य-चकित होकर गुलाब बोली। "सेठ दामोदर प्रशाद और वेश्या का नाँच करायेंगे ? आप भी क्या बातें कर रहे है पेशकार साहब ?" गुलाब इठला कर मुस्करा रही थी।

पेशकार रामदयाल यहाँ से सीधे अपने घर की तरफ़ चल दिये। लेकिन रास्ते में उन्हें न जाने क्या ख़याल आया कि रास्ता ही बदल दिया और अपने क्वार्टर पर पहुँचने के बजाय रामेश्वरी देवी की कोठी पर पहुँच गये।

यह कोठी सेठ दामोदर प्रशाद ने रामेश्वरी देवी के ही नाम से करादी थी।

चपरासी ने पेशकार रामदयाल को बाहर दरवाज़े पर ही रोकते हुए पूछा, "आप किससे मिलना चाहते हैं ? आपका क्या शुभ नाम है ?"

"हमें रामेश्वरी देवी से मिलना है। हमारा नाम पेशकार रामदयाल है।" पेशकार रामदयाल ने मूँछें चढ़ाते हुए कहा।

चपरासी ने अन्दर जाकर रामेश्वरी देवी को पेशकार रामदयाल के आने की सूचना दी। पहले तो रामेवश्री देवी का मुँह फक्क पड़ गया, उनकी जबान लड़खड़ा गई, लेकिन फिर जरा अपने को सँभाल कर बोलीं, "उन्हें इज्जत के साथ ले जाकर हमारे अन्दर के ख़ास कमरे में बिठलाओ। मैं अभी आती हूँ।"

पेशकार रामदयाल को इज्जत के साथ कोठी के पीछे वाले हिस्से में रामेश्वरी देवी के ख़ास कमरे के अन्दर ले जाकर बिठलाया गया।

कमरा बड़े क़रीने के साथ सजा था। उसकी दीवारों पर महात्मा

गाँधी, जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल के बड़े-बड़े चित्र टंगे हैं। फ़र्श पर बढ़िया क़ालीन बिछा है और एक ख़ूबसूरत सोफ़ा-सेट पड़ा हुआ है।

इसी सोफ़े पर पेशकार रामदयाल ठाट के साथ बैठ गये।

पेशकार साहब के बैठने के दो चार मिनट बाद ही रामेश्वरी देवी कमरे में दाखिल हुईं।

रामेश्वरी देवी ने खद्दर-सिलक की शानदार साड़ी पहनी हुई थी और उसी सिल्क का चुस्त ब्लाउज़ भी, जिसमें से शरीर का उभार पूरी तरह दर्शक को आकर्षित कर सकता था। माथे पर वही गोल बिन्दी और होठों पर ज़रा-ज़रा सुर्खी। कलाई पर एक क़ीमती रिस्टवाच बंधी थी और ब्लाउज़ में बटन के ऊपर पैलीकन फाउन्टेन पेन लगा हुआ था।

वही मुस्कराहट है और चाल-ढाल में भी वही अदा है। वही आँखों को तरेरना और वही मुँह को बिचका कर अन्दाज़ के साथ बातें करना। पेशकार साहब को पुरानी रामप्यारी और नई रामेश्वरी देवी में कोई अन्तर दिखई नहीं दिया।

रामश्वरी देवी कमरे में प्रवेश करती हुई बोलीं, "नमस्कार पेशकार साहब! आज सूरज किधर से निकल आया? मैं तो समझी थी कि पेशकार साहब ने मुझे भुला ही दिया।"

"अब तुम देवी बन गई हो रामप्यारी! तुम्हें भुलाना क्या अब कोई मामूली बात है? तुम्हारे इशारे पर मेरठ-शहर का बच्चा-बच्चा नाँचता है। सुना है कि आज-कल तो सेठ दामोदर प्रशाद को भी तुमने खूब नचाया हुआ है।" मुस्करा कर पेशकार रामदयाल बोले।

सेठ दामोदर प्रशाद की बात सामने आने पर रामेश्वरी देवी ज़रा संभलकर बैठती हुई बोलीं, "सेठ साहब की बात जाने दीजिये पेशकार साहब! उन जैसा दोग़ला आदमी मेरी नज़र में नहीं आया। उन्होंने समझा था कि मैं उनकी ज़र-ख़रीद लौंडी बन गई हूँ। यह उनकी बेवक़ूफ़ी थी। ज़रूरत पड़ने पर आदमी कोई भी काम कर सकता है, लेकिन मौक़ा पाकर आगे बढ़ने का भी हर आदमी को हक़ है।

सेठ जी ने मुझे रुपया दिया तो मेरे एहसानात भी उन पर कम नहीं हैं। आप ही सोचिये कि अगर उस दिन मैं उनके हथकड़ियाँ लग जाने देती और आपके सिपाही उन्हें हथकड़ियाँ लगा कर मेरे कमरे से वैली-बाज़ार, सर्राफ़ा, बज़ाज़ा और फिर गुदड़ी बाज़ार से होते हुए तहसील पर कोतवाली की हवालात में ले जाते तो उनकी क्या इज़्ज़त रहती? आपने उस दिन मेरी बात मान ली, उसके लिए मैं ज़िन्दगी भर आपकी एहसानमन्द रहूँगी।"

पेशकार साहब रामेश्वरी देवी की बातें चुपचाप सुनते रहे और अपनी तारीफ़ उनके मुँह से सुन कर जो भाव वह रामेश्वरी देवी के प्रति मन में बना कर आये थे वे धीरे-धीरे उड़ने लगे।

रामेश्वरी देवी ने फिर कहा, "पेशकार साहब ! मैं आपकी इससे भी ज्यादा एहसानमन्द हूँ। आज़ाद ख़याली अगर किसी को अनुकूल परिस्थिति न मिलने पर गढ़े में गिरा सकती है तो अच्छा वक्त आने पर वही ज़िन्दादिली बन कर, उसे चार चाँद भी लगा सकती है, उठा कर आसमान पर भी चढ़ा सकती है।

आज आपको अपनी पुरानी कहानी सुनाती हूं।"

रामश्वरी देवी ने आज जब पेशकार साहब को बताया कि वह बी. ए. पास है और एक खान्दानी घर की लड़की है। चन्द गुण्डों और पुलिस के चंगुल में फँस कर उसे अपना शरीर बेचना पड़ा था और समय निकालने के के लिए उसने वह सब कुछ किया।

पेशकार साहब ने देखा कि रामेश्वरी देवी शरमा रही थीं अपनी बीती दास्ताँ सुनाने में और उन्हें उससे भी ज्यादा आश्चर्य तब हुआ जब उन्हें यह पता चला कि वह अपने इस राज़ को ठंडे फोड़े की तरह दुनियाँ से छिपा कर नहीं चल रही हैं। उन्हें यह सरे-आम मानने और कहने में कोई लज्जा नहीं कि वह एक दिन मेरठ वैली-बाज़ार के कोठे पर बैठ कर अपना शरीर बेच चुकी हैं।

यही तो वह धमकी और घुड़की थी जिसका सहारा लेकर पेशकार रामदयाल रामेश्वरी देवी को कोतवाल हातमसिंह की शादी में मदद करने के लिए आये थे। उन्हें पक्का विश्वास था कि रामेश्वरी देवी अपनी जिन्दगी के उन पुराने राजों को छिपाने के लिए पेशकार साहब की हर बात मान लेंगी।

इस समय पेशकार साहब ने महसूस किया और जब-जब भी रामेश्वरी देवी ने उनकी कभी कोई बात मानी थी तो चेहरे पर कैसी-कैसी पीड़ा की रेखाएँ खिची थीं वे सब पेशकार साहब के मस्तिष्क में उतर आईं।

शराब के नशे में भावना और तेजी से बहने लगी पेशकार साहब के मन में और वह अन्दर-ही-अन्दर अपनी करनी पर लजाये भी, लेकिन ऊपर से मुख पर उन्होंने कोई भाव नहीं आने दिया।

बात बदल कर बोले, "यह कहानी रामेश्वरी देवी ! अगर तुमने मुझे उसी समय सुनादी होती जब तुम्हें मैंने उन बदमाशों से छुड़ाया था तो तुम्हारी मैं किसी नौजवान लड़के से शादी कर देता।" गम्भीरता-पूर्वक पेशकार रामदयाल बोले।

"वह समय नहीं था बतलाने का और उस समय शायद आप यकीन भी न करते मेरी बातों का। और जब मैं शादी करने से इन्कार कर देती तो तब तो आप मुझे न जाने क्या समझ बैठते। इसी लिए मैं कभी इस बात का खयाल नहीं करती कि और कोई मुझे क्या समझता है ? मैं अपने को खूब समझती हूँ और अपना रास्ता बनाती जा रही हूँ। मैंने अपना रास्ता खुद बनाना है। ठोकरें खा-खा कर मैं आगे बढ़ी हूँ।" सीना उभार कर रामेश्वरी देवी बोलीं।

और उनके तेज के नीचे बेचारे पेशकार साहब का सारा अभिमान और सारी लुच्चाई दब कर पिस गई। अन्दर-ही-अन्दर एक तीखी जलन-सी महसूस हुई। लेकिन मुँह पर उन्होंने कोई भाव न आने दिया।

निहायत सरलता पूर्वक बोले, "रामेश्वरी देवी ही अब मैं आपको कहा करूँगा, रामप्यारी नहीं कहूँगा ?"

"आपके मुँह से रामेश्वरी देवी सुन कर मुझे खुशी नहीं होगी। मुझे रामप्यारी सुनने में ही खुशी होगी। चाहे जैसे भी सही, आप मेरी बदनसीबी के दिनों के साथी हैं। आपने मेरी सहायता की थी, चाहे अपनी खुदगर्ज़ी को लेकर ही की थी। बिना खुदगर्ज़ी के यह दुनिया एक इंच भी आगे नहीं बढ़ती।

अपने सेठ दामोदर प्रशाद को ही ले लीजिये। दुनियाँ में कौन ऐसा नहीं है जो अपनी स्थिति का फ़ायदा नहीं उठाता। आप अपनी पुलिस की नौकरी का, सही या ग़लत, फायदा उठाते हैं और सेठ दामोदर प्रशाद अपने रुपये का फ़ायदा उठाते हैं।"

पेशकार साहब आज दंग रह गये रामेश्वरी देवी की बातें सुनकर। यह बन्द जबान चिड़िया आज क्या-क्या चह-चहा रही है, यह उनकी समझ में ही न आया।

रामेश्वरी देवी फिर मुस्करा कर बोलीं, "आप पुलिस के दम पर सीना फुला कर जिन्दगी में चलते रहे हैं, और चल रहे हैं, और सेठ दामोदर प्रशाद अपने पैसे की हवा में उडानें भरते हैं।

मैंने सोचा मैं भी किसी चीज़ का सहारा पकड़ूँ। सहारे के लिए मेरे पास मेरे शरीर के अलावा और कुछ भी न निकला, तो मैंने शरीर का ही सहारा पकड़ा और आखिर अपना रास्ता बना ही लिया।

आप देखेंगे पेशकार साहब कि ज़माना अब अपने शरीर का ही सहारा पकड़ने का आ रहा है। मजदूर और किसान का राज आ रहा है। शरीर से काम करने वाले का राज आ रहा है।"

रामेश्वरी देवी के दिमाग़ में आज-कल हर समय वही लैक्चर घूमा

करता है जो वह काँग्रेस के मंच पर खड़ी होकर देती हैं और उसकी रमक उनकी हर बात में आप-से-आप उभर आती है।

रामेश्वरी देवी ने एक छोटा सा लैक्चर दे डाला और वह सुन भी लिया पेशकार साहब ने।

पेशकार साहब मन की बातें मन में ही लेकर अन्त में यह कहते हुए यहाँ से विदा हुए, 'जो कुछ भी सही रामेश्वरी देवी ! तुमने तरक्की खूब की। हम तो एक सिपाही से दीवान और पेशकार ही बन पाये, लेकिन तुमने मेरठ-निवासियों के दिलों पर राज करने का जो बीड़ा उठाया था उसे आसमान पर चढ़ा दिया। तुम्हारे कमाल को मैं दाद देता हूँ।

हमारे ऊपर भी जरा मेहरबानी की नजर रखती रहा करो।"

रामेश्वरी देवी पेशकार रामदयाल की ये बातें सुनकर ठहाका मार कर हँस दी। "क्या कह रहे हो पेशकार साहब ! मेहरबानी की नजर तो अभी आपकी चाहिए। जिले की सारी पुलिस की नकेल सम्भाले हो, जब जहाँ चाहो उपद्रव खड़ा करदो, जब जिस गाँव को चाहो लुटवा दो, जब जिस आदमी को चाहो हवालात की तंग कोठरी में डाल कर पीस डालो, जब जिन पर कड़ी नजर रखो उन्हें खत्म कराके लापता कर दो और नामोनिशान तक भी उनका ग़ायब कर दो, इतनी ताक़त आपके एक इशारे में है। रामेश्वरी आज जिले की हालत से नावाकिफ़ नहीं है। ख़याल आपको ही अभी रखना है अपनी रामप्यारी का, रामेश्वरी देवी का नहीं।"

"रामदयाल रामप्यारी को कभी भुला नहीं सकता रामेश्वरी देवी ! जिस पर उसने एक बार मेहरबानी की नजर रखी है उसे वह कभी सता नहीं सकता। उसकी बुराई की बात वह कभी सोच नहीं सकता। बाक़ी दुनिया जैसी चलती है उसके साथ रामदयाल भी वैसा ही चलता है। बदों की दुनियाँ में बद और नेकों की दुनियाँ में नेक रहना जानता है रामदयाल।" गम्भीरतापूर्वक पेशकार साहब ने कहा।

"मैं आपकी इस संजीदा राय की क़द्र करती हूँ। रामप्यारी के बारे में भी आपने जो राय क़ायम की हुई थी कि वह बेवफ़ा है, वह ग़लत है। रामप्यारी कभी बेवफ़ा नहीं रही। वह रास्ता खोज रही थी उस खंदक से निकलने का जिसमें वह, दुर्भाग्यवश ही कहूँ, जवानी की ओछी छलाङ्ग में गिर पड़ी थी। जिधर भी उसे सहारा दिखाई देता था उधर ही वह लपक रही थी। अपनी उस मौजूदा हालत में उसका दिल बैठा जा रहा था।" रामेश्वरी देवी ने नीची गर्दन करते हुए कहा।

पेशकार साहब यहाँ से दस बजे रात को अपने क्वार्टर पर पहुँचे। छोटे

भाई ने, जो क्वार्टर के बाहर ही छोटे से बाग़ीचे में खटिया बिछाये लेटा था, खड़े होकर चरण छुए और उन्होंने अपना कोट उतार कर उसे खूँटी पर टाँगने के लिए दिया।

फिर ज़रा घूमते हुए पूछा, "बच्चियाँ कहाँ हैं ?"

"सो गईं।" हरदयाल ने कहा।

"करीमखाँ ने सब सामान ला दिया था ना !"

"जी ! सब आ गया था। खाना भी शाम का ही बना रखा है। आप मुँह हाथ धोयें तो बाल्टी पानी की भर लाऊँ। खाना खा लीजिये।" हरदयाल ने कहा।

"खाना मैं नहीं खाऊँगा। क्यों क्या तुम लोगों ने अभी तक खाना नहीं खाया। मेरे लिये भूखे मरने की ज़रूरत नहीं है। अपना खाना वक्त पर खा लिया करो। यह पुलिस की नौकरी है, इसमें क्या कभी वक्त पर खाना नसीब हो सकता है ? जहाँ जो कुछ मिल जाता है उसी को पेट में डाल लेते हैं।" पेशकार साहब खाट पर बैठते हुए बोले, "अच्छा जा एक फुलका और थोड़ा सा साग रख ला। एक प्याज भी काट कर रखते लाना और ज़रासी- सूखी मिर्चें अलग लेते आना। मुझे यह देकर तुम लोग खाना खालो। बेचारी बहू भी भूखी होगी अब तक।"

छोटे भाई और बहू का मन रखने के लिये पेशकार साहब ने एक फुलका खा लिया।

सब लोगों के खाने के बाद हरदयाल और उसकी स्त्री अपनी दोनों लड़कियों के साथ क्वार्टर के अन्दर वाले बरामदे में सो गये और उन्होंने अन्दर का कुण्डा बन्द कर लिया।

जब सब सो गये तो करीमखाँ पेशकार साहब के पास आया। उसके हाथों में दो रकाबियाँ थीं, एक में चार उबले हुए अंडे और दूसरी में बकरे की कलेजी के चार टुकड़े।

दोनों रकाबियाँ करीमखाँ ने पेशकार साहब की खाट के पास रखे स्टूल पर रख दीं और फिर पास में ज़मीन पर बैठता हुआ बोला, "सुना है कोतवाल हातमसिंह के लड़के की शादी है पेशकार साहब !"

"अरे हाँ !" सँवर कर बैठते हुए अण्डों की प्लेट हाथ में लेकर पेशकार साहब बोले, "तुमसे किसने कह दिया। तुम्हें भी बुलाया है कोतवाल साहब ने। मेरे ख़त में खास तौर पर तुम्हें साथ लाने के लिए लिखा है। बीस तारीख़ की शादी है।"

"लिखा भी है कोतवाल साहब ने ?" खुश होकर करीमखाँ ने पूछा।

"तो क्या तुमसे झूठ बोल रहा हूँ करीमखाँ ! कोट की जेब में शादी का कार्ड पड़ा है, निकाल कर पढ़ लो। उर्दू के हुरुफ़ तो थोड़े-थोड़े तुम भी उपाड़ लेते हो।" पेशकार साहब बोले।

अंडे आज करीमखाँ की औरत ने खास तौर पर देसी घी में फ्राई कर के भेजे थे और कलेजी को दाँत के नीचे रखते ही पेशकार साहब का मन कह उठा, "ख़ूब बनाई है किन्हीं नाज़नीं से हाथों ने।"

करीमखाँ की औरत की बनाई हुई जब कोई भी चीज़ पेशकार साहब की मेज़ पर आती है तो, उसका चूड़ीदार काला पायजामा, मलमल का लम्बा कुर्त्ता, उसके गले के चाँदी के छटाँक भर के ज़ंजीरदार बटन और बस खुला हुआ यौवन जिसपर कभी घर से बाहर निकलते समय ही काला बुर्का डाला जाता है, जिसकी जालीदार आँखों से हिरनी की दो पुतलियाँ टिमटिमाया करती हैं, पूरा ख़ाका नज़रों के सामने आ जाता है।

"भाई करीमखाँ, तुम्हारी बीवी भी परमात्मा ने न जाने तुम्हारे किन नेक कामों से खुश होकर तुम्हें दी है। बढ़िया-से-बढ़िया खाना खाने के बाद भी जब तुम्हारी बीवी के हाथ की बनी कोई चीज़ सामने आ जाती है तो उँगलियों के पोरवे चाटता रह जाता हूँ।" पेशकार साहब बोले।

करीमखाँ भी अपनी औरत की तारीफ़ पेशकार साहब के मुँह से सुन कर खुश हो जाता है और ज़रा शरमा कर कहता है, "वाक़ई बड़ी ही नेक वक्त औरत दी है मुझे खुदा ने। हर बात में बेचारी बड़ी ही अच्छी है। जिस दिन से मेरे घर आई है कभी कोई ख्वाहिश ही ज़ाहिर नहीं की।"

"तो तुम क्या कुछ कम ख़याल रखते हो उसका, जो उसे ख्वाइश ज़ाहिर करने की ज़रूरत पड़े ? जो ऐश तुम ने दी है उसे वह बड़े-बड़े घराने वालियों को भी नसीब नहीं हो सकतीं।" पेशकार रामदयाल बोले।

"यह सब आपकी ही मेहरबानी है पेशकार साहब !" निहायत अदब और एहसानमन्दी के साथ करीम खाँ बोला।

"मेरी मेहर में क्या रखा है करीम खाँ ! सब परमात्मा की मेहरबानी है। उसी के करने से सब कुछ होता है। इन्सान लाख करे तो क्या होता है ?" पेशकार साहब फ़िलासफ़ाना अंदाज़ के साथ बोले।

करीमखाँ दोनों खाली प्लेटों को लेकर चला गया और पेशकार साहब अकेले क्वार्टर के बाहर वाले बरामदे में अपनी खटिया पर लेट गये।

पेशकार साहब का बिस्तर मामूली दरी, चादर और तकिये से कभी नहीं बढ़ता। खाट भी वह बाँस की पट्टियों की ही रखते हैं जिसके उठाने-बिछाने में उन्हें दूसरे की तरफ़ ताकना न पड़े। पैसा कितना ही चाहे उन पर आये

लेकिन अपने रहन-सहन को वह कभी नहीं बदलते और पैसे को दफ़ना कर भी तिजोरी में बन्द नहीं करते ।

जब जितना पैसा आता है, उसे उसी अन्दाज़ से खर्च कर डालते हैं ।

उनकी नज़र आसमान में छिटके तारों की तरफ़ गई तो उन्हें ये सभी तारे गोल रुपयों की तरह फैले पड़े दिखाई दिये । पेशकार साहब का मन आया कि इन्हें बार-बार अपनी खोंचों में भर-भर कर बिखराते चले जायें । यही तो है उनकी जिन्दगी और ज़िन्दा दिली ।

'ज़िन्दगी ज़िन्दा दिली का नाम है ।' यह पंक्ति इसी समय उनकी ज़बान पर थिरक उठी और इसी को धीरे-धीरे गुनगुनाते-गुनगुनाते उनको नींद आ गई ।

: १८ :

पेशकार रामदयाल की हकूमत पर एक हिन्दुस्तानी अफ़सर ने एस. पी. बनते ही कुठाराघात किया। यह एस. पी. महोदय अंग्रेज अफ़सर नहीं हैं और न ही ऊपर से एस. पी. बनकर आये हैं। यह दारोग़ाई से सीढ़ी-दर-सीढ़ी ऊपर चढ़े हैं और महकमे की हर बात को पूरी तरह समझते हैं। विशेष रूप से ऊपरी आमदनी की सभी घाटियों का पानी यह पी चुके हैं। सभी जगह का चस्का भी इन्हें पूरा-पूरा लगा हुआ है।

आते ही उनकी पेशकार साहब से झड़प हो गई। नये एस. पी. हामिदअली खाँ अपने पेशकार या दारोग़ाई के ज़माने के दीवान को हमेशा ही अपने अर्दली के रूप से इस्तेमाल करते आये हैं। शुरू से ही आप एक दबदबे के अफ़सर रहे हैं और अपने मातहतों को हमेशा ही अपने चंगुल में दवा कर चले हैं।

जब वह थानेदार थे तो थाने के मालिक वह खुद थे। थाने के अन्य नौकरों, यहाँ तक कि अपने सहायक छोटे दारोग़ा को भी वह अपना नौकर समझ कर रखते थे। थाने की कुल आमदनी में से पिछत्तर फ़ीसदी उनका अपना होता था और शेष पच्चीस फ़ीसदी में दस नायब दारोग़ा का, पाँच दीवान का और शेष दस फ़ीसदी काँस्टेबिलों में बाँट दिया जाता था।

यही प्रणाली वह यहाँ एस. पी. बन कर चलाना चाहते हैं।

पेशकार रामदयाल को उन्होंने दूसरे दिन इतवार की छुट्टी में अपनी कोठी पर बुलाया।

पेशकार रामदयाल कोठी पर चले गये। कोठी के अर्दली वगैरा ने पेशकार रामदयाल का कितना अदब किया, यह कनखियों से हामिदअली खाँ ने देखा और उनके दिल में पेशकार रामदयाल के प्रति गहरी जलन ने जन्म ले लिया। फिर भी मन के भावों को उन्होंने ऊपर नहीं आने दिया।

पेशकार रामदयाल कोठी से बाहर इस इन्तजार में खड़े रहे, कि कब साहब अन्दर से इजाजत दें और कब वह अन्दर घुसें। इस बात के वह क़तन आदि नहीं थे। अंग्रेज़ अफ़सरों के पास जाने के लिए भी कभी उन्हें इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

वह अन्दर-ही-अन्दर कुढ़ कर अपने से बोले, "इसी को तो कहते हैं प्यादे से फ़रज़ी भयौ टेढ़ौ-टेढ़ौ जाय।" और तभी उनके चेहरे पर मुस्कराहट खेल गई। 'देखा जायगा। अभी जरा गलतफ़हमी में हैं साहब बहादुर।' मन-ही-मन पेशकार साहब बोले।

एक घंटे के बाद पेशकार साहब को अन्दर आने की इजाज़त मिली और फिर दुबारा आध घंटे उन्हें एस. पी. साहब की मेज़ के सामने दस्तबस्ता खड़ा रहना पड़ा।

पेशकार साहब अपने नये अफ़सर की चाल-ढाल को पहचान रहे थे, उसकी खसलत और आदतों का अध्ययन कर रहे थे।

आधे घंटे बाद एस. पी. साहब बोले, "पेशकार रामदयाल, सुना है मेरठ ज़िले के पुलिस आफ़ीसर पब्लिक से बड़ा रुपया खींचते हैं। क्या यह सच है?"

"खींचते होंगे हुजूर! लेकिन मुझे इत्तला करके तो कोई नहीं खींचता। मै इस तरह की चीज़ों से अपना सम्बन्ध ही नहीं रखता।" पेशकार रामदयाल निहायत अदब के साथ बोले।

पेशकार साहब की बात सुन कर एस. पी. साहब अवाक् रह गये। पेशकार साहब के मुँह पर उन्होंने आँखें गड़ा कर पूछा, "तो आप इन सब बातों से बेबहरा ही रहते हैं?"

"मेरा खर्चा ही क्या है हुजूर! छड़ा आदमी हूँ, न औरत, न बच्चा। हुज़ूर देखेंगे कि उनके पेशकार को पान खाने तक का भी शौक नहीं है। जो वेतन पाता हूँ, महीने के बाद उसमें से भी दस-पाँच बच ही रहते हैं। फिर किस लिये इन बेकार की बातों में पड़ूँ?" उसी सजीदगी के साथ पेशकार साहब बोले।

पेशकार साहब के बारे में जो-जो भी बातें नये एस. पी. साहब ने आज तक सुनी थीं, पेशकार साहब ने अपने हलफ़िया बयान में सब का खंडन कर दिया।

एस. पी. साहब आज ज़िले की ऊपरी आमदनी के बँटवारे की बात दिमाग में लेकर बैठे थे। वह चाहते थे कि पेशकार रामदयाल के द्वारा ही वह अपनी बँटवारे की योजना को ज़िले के थानों में प्रसारित करें, लेकिन पेशकार रामदयाल ने अपनी रिश्वत न लेने की पालीसी का बयान देकर अपने को इस भार से मुक्त कर लिया।

एस. पी. साहब के मन की बात मन में ही घुमड़ती रह गई। ऊपर से पेशकार रामदयाल से वह एक शब्द भी न बोले, लेकिन उनके दिल में जलन के

शोले भभक उठे। वह सचमुच ही तिलमिला उठे और उन्हें लगा कि पेशकार रामदयाल उनका जिला मेरठ में सबसे बड़ा शत्रु, सामने खड़ा है।

एस. पी. साहब ने हिक़ारत की नजर से पेशकार रामदयाल को देखा और ऊपरी मीठे स्वर में कहा, "तो कलजुगी हरिश्चन्द्र पेशकार साहब अब आप इतवार की छुट्टी मनायें और मुझे मेरा काम करने दें।"

"बहुत अच्छा हुजूर !" कह कर पेशकार रामदयाल वहाँ से चले आये।

दूसरे दिन एस. पी. साहब ने पेशकार रामदयाल को हुक्म दिया, कि जिले के सब दारोगाओं को तलब किया जाय और बारी-बारी से सब हमसे आकर मिलें और अपने-अपने थानों की पूरी कारगुजारियों के हालात बयान करें।

"बहुत अच्छा हुजूर !" कहकर पेशकार रामदयाल ने एस. पी. साहब के हुक्म की नकलें जिले के सब थानों में पहुँचवा दीं और जिले भर के थानों के इंचार्जों को साहब से मिलने की तारीखें नियुक्त कर दीं।

अब रोजाना थानों के इंचार्जों ने एस. पी. साहब से मिलने के लिए मेरठ आना शुरू कर दिया।

थानों के इंचार्ज एस. पी. साहब से मिलने के पहले पेशकार रामदयाल से साहब की आदतों का कच्चा चिट्ठा लेकर ही साहब की अदालत में पेश होते हैं।

पेशकार रामदयाल को होटल में लेजाकर चाय की प्यालियाँ भरते हुए पूछा जाता है, "पेशकार साहब, किस किमाश के आये हैं नये साहब बहादुर ?"

छूटते ही पेशकार साहब एक अदा के साथ मुस्कुराकर कहते है, "मुझसे क्या पूछते हो दोस्तो ! मैं तो तुम्हारा अपना पुराना यार हूँ। लेकिन एक बात का ख़याल रखना। लेने-देने के बारे में बहुत सख्ती के साथ जवाब देना। जो कुछ पहले खाया-पिया जा चुका, उसके बारे में चाहे जबानी कोई कितना ही क्यों न बकता फिरे, कोई सबूत पेश नहीं कर सकता। आज भी तुम अपने-अपने इलाकों में प्यार और मोहोब्बत से चाहे जितना खाते-पीते रहना, यह क्या तुम्हारे पीछे-पीछे जाता फिरेगा और फिर दफ्तर में कागज का पेट भरने के लिए हम बैठे हैं।

"और इनके ऊपर भी तो कलक्टर साहब हैं।"

आखरी जुमला पेशकार साहब ने वह कह दिया कि जिसने पहले सब कथन पर मोहर का काम किया।

जिले के सब थानों के इंचार्जों से पूरे महीना भर एस. पी. साहब ने

मुलाकातें कीं लेकिन उनका मक़सद पूरा न हो सका। पेशकार रामदयाल ने उनकी मेज़ के सामने एक महीने पहले जो वाक्य कहा था, हू-बहू वही, वाक्य जब ज़िले के सब थानों के इंचार्जों द्वारा दोहराया गया तो पेशकार रामदयाल उनके और निकट आ गये।

एस. पी. साहब ने अब पेशकार रामदयाल की शक्ल को और साफ़-साफ़ देखा। देखकर यह भी महसूस किया कि अगर यह आदमी उनके चंगुल में आ जायें तो मेरठ ज़िले से माला-माल होकर रिटायर हुआ जा सकता है। लेकिन दिल में उनके प्रति जलन की भावना और उभरती आ रही है। उनके पद की असीमित शक्तियाँ पेशकार रामदयाल के बीच से निकलने का रास्ता न पाकर फैल नहीं पा रहीं। जिस सँकरे दाहिरे में वे थीं उसी में उनका दम घुट रहा था।

और इस घुटन को देख कर जब उनके बराबर में बैठे पेशकार रामदयाल मुस्कराते हैं तो कटे पर नमक मला जाता है। कभी-कभी तो लिखता हुआ क़लम रुक जाता है और दिमाग़ में झुँझलाहट पैदा हो जाती है।

झुँझला कर कभी-कभी वह अपनी फ़ाइल भी इधर-उधर पटकने लगते हैं तो पेशकार साहब बड़े अदब और मुलामियत से कहते हैं, "हुजूर इन फ़ाइलों से क्यों झगड़ रहे हैं। ख़ादिम बैठा है यहाँ इन्हें ठीक तौर पर आपके सामने पेश करने को। हुजूर के दफ्तर में जितने भी केस हैं, जितने फ़ाइल हैं उनके नाम, तारीखें मय पुराने फ़ैसलों के ज़बानी बता सकता हूँ। दफ्तर के काम में आपको क़तन दिक्कत नहीं आने दूँगा।"

एस. पी. साहब पेशकार रामदयाल के दफ्तर के काम में कोई ख़ामी नहीं निकाल सकते। पेशकार रामदयाल का दिमाग़ चाहे पढ़ाई की तरफ़ ज्यादा नहीं चला, लेकिन बातें उन्हें गज़ब की याद रहती हैं। अपने मतलब की कोई बात भूल जाना पेशकार रामदयाल के लिए नामुमकिन है।

एस. पी. साहब को मेरठ आये दो महीने हो गये लेकिन न तो उन्हें कोई डाली दी गई और न उनकी इज़्ज़त में कोई जशन ही मनाया गया।

वैसे इन चीज़ों से हामिदअली ख़ाँ को नफ़रत भी है। हामिदअली ख़ाँ साहब नमाज़ी आदमी हैं। गाना, बजाना, नाँचना, शराब वग़ैरह से सख्त नफ़रत करते हैं। इन चीज़ों के शौक को उनकी अफ़सरी में कहीं तरक्की नहीं मिली।

हामिदअली साहब निहायत कम ख़र्च आदमी हैं। उनकी औरत भी एक देहात की नाख़ाँदा औरत है। उसे ख़ुश करने के लिए हामिदअली साहब को कुछ ख़र्च नहीं करना होता। उस बेचारी की तो उतनी माँगें भी

नहीं होतीं जितनी भेंटें उनके मित्र लोग पहुँचा देते हैं। वेतन से घर का खर्च चल जाता है और ऊपरी आमदनी से जो रुपया हामिदअली साहब के पास आता है उसे वह जमा करते हैं। इसी रुपये में से दान करके हामिदअली साहब ने अपने क़स्बे में एक मस्जिद बनवाई है और उसमें कुरान शरीफ़ पढ़ाने के लिए एक मौलाना को तायनात किया है।

पेशकार रामदयाल और एस. पी. साहब की इस दिमाग़ी कशमकश के दौरान में ही मेरठ ज़िले के कलक्टर साहब का तबादला हो गया। कलक्टर साहब के तबादले की खबर सुनकर पेशकार साहब को इतना रंज हुआ कि मानो उनके घर में कोई मौत हो गई।

पेशकार साहब की दशा देख कर आज हामिदअली साहब ज़रा मुस्कराते हुए बोले, "पेशकार रामदयाल! आज चेहरे पर गमगीनी कैसी है? तबियत तो ठीक है तुम्हारी। अगर तबियत ठीक न हो तो छुट्टी कर सकते हो। काम फिर हो जायगा।"

पेशकार रामदयाल ने एस. पी. साहब की बात सुनकर अपने को सँभाला और ख्वाब-से से जागते हुए आँखों को मलकर बोले, "काम के वक्त आराम करना पेशकार रामदयाल ने नहीं सीखा हुजूर! बीमार भी रामदयाल कभी नहीं हुआ अपनी पूरी नौकरी के ज़माने में। कभी एक दिन की छुट्टी नहीं ली और कभी गैर हाज़री नहीं की।"

इतना कह कर पेशकार साहब ने आज के दस्तखतों के फ़ाइल उठा कर एस. पी. साहब के सामने रख दिये।

फ़ाइलों पर नज़र गड़ाने से पहले ही फिर एस. पी. साहब बोले, "सुना है कलक्टर साहब का तबादला हो गया।"

"यह सब तो चलता ही जाता है हुजूर! एक आता है और एक जाता है। ज़माना इसी से तो चलता है, वरना तो रुक कर सड़ न जाये ज़माना ही।" निहायत गम्भीरता के साथ पेशकार साहब ने कहा।

हामिदअली साहब आलिम आदमी हैं। कुरान शरीफ़ के हाफ़िज हैं। उन्हें भी यह उपदेश दे डाला पेशकार रामदयाल ने। यह बरदाश्त न कर सके। ज़रा चिढ़कर बोले, "यह फ़िलासफ़ी हमेशा नहीं छाँटी जाती है पेशकार रामदयाल।"

एस. पी. साहब की इतनी तीखी बात के होठों पर आये हुए जवाब को पेशकार साहब मुस्कुरा कर पी गये और उसी लहजे में बोले, "हुजूर हम पेशकार बेचारे भला क्या फ़िलासफ़र बनेंगे? अपनी दाल-रोटी से ही फुर्सत नहीं। फ़िलासफ़ी के लिए तो आला दिमाग़ और आला नौकरी की

ज़रूरत है।"

पेशकार साहब की बात सुन कर एस. पी. हामिदअली साहब तिलमिला कर रहे गये।

कलक्टर साहब के तबादले की बात सुन कर वह बहुत खुश हुए थे। पेशकार साहब को कलक्टर की कोठी पर जाते-आते वह कई बार देख चुके थे। इसी लिए कलक्टर साहब से उनके खिलाफ कोई बात कहना वह ठीक नहीं समझते।

नये कलक्टर को एस. पी. साहब ने शुरू से ही अपने चंगुल में रखने का निश्चय कर लिया है।

अभी तक पेशकार साहब ने महकमे की राजनीति में शहर-कोतवाल और दारोगाओं को ही पछाड़ा था। इस बार टक्कर एस. पी. साहब से थी। कलक्टर साहब का खूँटा उनके पास काफ़ी मजबूत था। उसके उखड़ जाने के बाद समंदर की लहरों से खेलने की बात है।

महकमे के मामूली दारोगाओं और दीवानों को एस. पी. साहब की साधारण ड्यूटी उनके रास्ते पर लाने के लिए काफी है और ज़रा प्यार का हाथ भी उनकी कमर पर रख कर उन्हें तोड़ा जा सकता है।

शहर-कोतवाल इन दिनों भी कासिम मिरज़ा ही हैं। कासिम मिरज़ा को पेशकार साहब से काफ़ी आमदनी है और वह तास्सुबी मुसलमान भी नहीं हैं। आलिम आदमी है और मज़हब को बहुत कम अपने कामों के बीच में आने देते हैं।

लेकिन हैं तो मुसलमान और फिर एस. पी. हामिदअली साहब से उनकी बातें हुई तो उन्होंने साहब की खसलत को पहचान कर अपने को पूरा नमाज़ी बताया और पास की मस्जिद में भी आना-जाना शुरू कर दिया।

ज़िले भर के मुसलमान दारोग़ा, दीवान और काँस्टेबिलों ने रोज़ाना नमाज़ पढ़नी शुरू कर दीं और जब कभी भी एस. पी. साहब टूर पर जाते हैं तो उन्हें वह बाक़ायदा वज़ू करते, नमाज़ पढ़ते या चटाई समेटते दिखाई देते हैं।

ज़िले का यह बदलता हुआ रंग पेशकार साहब की नजरों से भी छिपा हुआ नहीं है।

लेकिन फिर भी शेख अब्दुलबेग और करीमखाँ जैसे मुसमलमान यारों पर पेशकार साहब को अभिमान है, जो सच्चे नमाज़ी होने पर भी पेशकार साहब के जी-जान से यार हैं और कोतवाल कासिम मिरज़ा को भी वह बुरा आदमी नहीं समझते।

आज कचहरी से पेशकार साहब सीधे सेठ दामोदर प्रशाद की कोठी

पर गये और सेठजी ने आपका निहायत अदब के साथ स्वागत किया।

"बड़े ही परेशान दिखाई पड़ रहे हो पेशकार साहब आज तो! सुना है कलक्टर साहब का तबादला हो गया। यह तो बड़ा ही बुरा हुआ।" सेठजी बोले।

"इसी परेशानी ने तो दिमाग़ ख़राब कर दिया है सेठजी! अब मेरठ की हिन्दू-जनता का तो कहीं ठिकाना ही नहीं रहा। शहर-कोतवाल भी मुसलमान है और एस. पी. भी मुसलमान आगया। कोतवाल बेचारा तास्सुबी नहीं हैं लेकिन एस. पी. साहब का रंग मैं देखता हूँ सब पर चढ़ता जा रहा है। सब चौकियों पर उज़ू करने के बदने दिखाई देते हैं और पुलिस की चौकीयाँ क्या हैं छोटी-छोटी मस्जिदें बन गई हैं।" पेशकार साहब ने हिन्दू-धर्म की हमदर्दी में फ़रमाया।

"हिन्दू महासभा के मंत्री महोदय भी अभी-अभी आये थे। वह भी यही फरमा रहे थे। बड़े ही परेशान थे बेचारे। सुना है शहर के क़साइयों ने बड़ा सीना उभार-उभार कर चलना शुरू कर दिया है मेरठ के बाज़ारों में। यह सब तो बड़े ही ख़तरे की बात है और फिर ऊपर से बक़रीद भी आ रही है। मुझे डर है कि कहीं कोई फ़िसाद न हो जाय।

अब तो जिले भर को सिर्फ आपका ही सहारा रह गया है।" सेठजी बोले।

"सहारा तो भगवान् का रखना चाहिए सेठजी! लेकिन रामदयाल जी-जान से हिन्दू-धर्म की रक्षा करने से नहीं चूकेगा।" मूँछों पर ताव देकर पेशकार साहब ने कहा।

"हमारे मंत्री जी को भी आपसे यही आशा है। वैसे इन्तज़ाम हम लोग भी पूरा-पूरा कर रहे हैं। शहर के हर मन्दिर में हमने अखाड़े खुदवा दिये हैं और उनमें एक से एक जीदार पट्ठा पल रहा है। आपका एक ही इशारा पाकर हज़ारों लठबंद पहलवान मेरठ की सड़कों पर दिखाई देगा। मंत्री जी कहते थे कि उनकी एक ही ललकार में अगर क़स्साब खाने का एक-एक जन-बच्चा घरों में न घुसा दिया तो उनका नाम भी पंडित रामखिलावन नहीं।" सेठजी ज़रा अपने मलमल के कुरते की आस्तीनें चढ़ाते हुए बोले।

"तब तो वाक़ई कमाल किया हुआ है आप लोगों ने। जब सरकार पर भरोसा न रहे तो अपने हाथों में ही अपनी हिफ़ाजत का काम ले लेना चाहिए।" पेशकार साहब बोले।

इसके बाद पेशकार साहब अपने क्वार्टर पर चले आये। छोटे भाई ने मूढ़े से खड़े होकर उनके चरण छुए और उनका कोट लेकर खूँटी पर टाँगा।

हाथ मुँह धोने को एक बाल्टी पानी, लोटा, साबुन, तौलिया वगैरा उसने पहले ही रख छोड़ा था।

लेकिन आज पेशकार साहब को इन सब से उलझने की फुर्सत नहीं थी। वह गम्भीर मुद्रा में मूढ़े पर बैठते हुए छोटे भाई से बोले, "हरदयाल ज़रा जाकर भाई क़रीमखाँ को तो बुला लाओ और देखना, निहायत अदब के साथ पेश आना उनके साथ।"

चन्द मिनटों में करीम खाँ आ पहुँचे और पेशकार साहब को देखकर बोले, "आपने याद फरमाया है क्या ?"

"भाई करीम खाँ, ज़रा जाकर लीले पहलवान को तो बुला लाओ। और देखना, इस बुलाने का कानों कान भी किसी को पता न चले। बुला कर यहाँ मेरे पास न लाना। गुलाब के यहाँ रात के नौ बजे पहुँच जाये वह। वहीं पर मैं भी आ जाऊँगा। तुम भी उसके साथ रहना।" पेशकार साहब ने कहा।

"बहुत अच्छा।" कह कर करीम खाँ चला गया। क़रीम खाँ ने पेशकार साहब की मुख-मुद्रा देख कर समझ लिया कि ज़रूर कोई गम्भीर घटना घटने वाली है। ऐसे समय में वह कभी भी पेशकार साहब से कोई सवाल नहीं पूछता था। जो कुछ भी उसे हुक्म मिलता था उसे सर आँखों पर रख कर चल देता है।

करीम खाँ के चले जाने पर हरदयाल ने पूछा, "खाना ले आऊँ आपका ?"

"नहीं।" बस इतना ही जवाब दिया पेशकार साहब ने।

और थोड़ी देर में शौच इत्यादि से निवृत्त होकर वह वहाँ से चल दिये।

अभी सिर्फ़ साढ़े सात बजे हैं और नौ बजे उन्हें गुलाब के कमरे पर पहुँचना है। बीच का डेढ़ घंटे का समय, उन्होंने सोचा, कोतवाल कासिम मिरज़ा की नब्ज़ देखने में सर्फ़ किया जाय और वह सीधे कोतवाली की तरफ़ हो लिये।

कोतवाल साहब ऊपर की छत पर अपने छोटे निजी दफ्तर के समाने टहल रहे थे। कासिम साहब शौकीन मिज़ाज़ आदमी हैं। लेकिन जब से एस. पी. हामिद अली मेरठ आये हैं तब से सादा रहने की वह भी कोशिश करने लगे हैं। यह पहला कुर्ता और पायजामा है जो ज़िन्दगी में उन्होंने पहना है वरना तो पेंट पहन कर ही सोने की उनकी आदत थी।

नये लिबास में कोतवाल साहब को देख कर मुस्कुराते हुए पेशकार रामदयाल बोले, "मुबारिक हो आपको आपका यह नया लिबास कोतवाल साहब !"

कासिम साहब ज़रा अन्दर से शरमाते से ऊपर से मुस्करा कर बोले "आइये पेशकार साहब ! यह लिबास क्या है, एस. पी. साहब ज़रा नाखुश न हों, इस लिए सिला लिया है । वरना तो सच जानिये बड़ा ही भद्दा मालूम देता है । वालिद साहब और अम्मी जान ने भी मुझे कभी कुर्त्ता पायजामा नहीं पहनया ।"

"वह बैरिस्टर थे हाईकोर्ट के, मस्जिद के नमाज़ी तो थे नहीं ।" मुस्करा कर पेशकार साहब बोले ।

"ठीक यही बात है पेशकार साहब ! लेकिन इन हामिद अली साहब को तो नमाज, तेहमद, कुर्त्ता, पायजामा, उज़ू और इसी तरह की न जाने कितनी नामाकूल बातों का जनून है । यह समझते हैं कि जिस मसलमान में ये चीजें नहीं हैं वह मुसलमान ही नहीं है ।" कोतवाल साहब बोले ।

जरा ठहर कर फिर कोतवाल साहब ने पूछा, "लेकिन तुम्हारे साथ कैसी पट रही है साहब की ? सुना है काफ़ी खींचा-तानी चल रही है ।"

"कोई खास खींचा-तानी नहीं है कोतवाल साहब !" मन की बातों को दबाते हुए पेशकार साहब बोले ।"हम लोग तो अफ़सरों के मुलाज़िम ठहरे । कोई अफ़सर अपने मुलाज़िम से जितना काम लेगा, वह उतना ही तो करेगा । मुलाज़िम अपनी मरजी से तो काम करता नहीं चला जायगा ।"

"ये बनने की बातें छोड़ दीजिये पेशकार साहब ! मालूमात मैं भी साहब के बारे में पूरी-पूरी कर चुका हूँ । यह महाशय जहाँ भी रहे हैं इन्होंने मलाई खुद खाई है और मट्ठे को अमले में तकसीम किया है । वही यह यहाँ भी करना चाहते हैं और मट्ठा पीने की, खुदा के फ़ज़ल से, आपको भी आदत नहीं नहीं है ।" कह कर कोतवाल साहब मुस्कराये ।

"मेरा मट्ठा पीना ही क्या है कोतवाल साहब ! मैंने कभी कोई काम अपने अकेले के लिए अगर किया हो तो क़सम ले लीजिये........."

पेशकार साहब को बीच में ही रोक कर कासिम मिरज़ा बोले, "ज्यादा कहने की जरूरत वहाँ होती है जहाँ कोई जानता न हो । मेरठ ज़िले की पुलिस का एक भी आदमी ऐसा नहीं है जिसे तुम्हारी सचाई और ईमानदारी पर भरोसा न हो । पूरा-का-पूरा महकमा दिल से तुम्हारे साथ है । तुम्हारे हाथों से हिस्सा बाँटने का हक लेकर एस. पी. साहब जैसी खूंखार बिल्ली के हाथों में देना कोई भी पसंद नहीं करेगा । तुम इससे बिलकुल बेफ़िक्र रहो ।

शहर की पुलिस की पूरी ताक़त का भरोसा दिलाकर तुम्हे यह बात कह रहा है कासिम मिरज़ा । यार क्या चीज़ होती है इसका पता तुम्हें अभी

चलेगा पेशकार साहब !"

कासिम मिरज़ा की बात सुनकर पेशकार साहब के चेहरे पर थोड़ी-सी रौनक आई। दिमाग़ में जो गहरी परेशानी घुसी हुई थी उसका भार ज़रा-ज़रा हल्का हुआ और वह मीठी नजरों से कोतवाल साहब के चेहरे पर देखते हुए बोले, "तो विश्वास के साथ क़दम बढ़ाऊँगा ?"

"बिलकुल !" कोतवाल साहब बोले। "कलक्टर साहब के तबादले पर एस. पी. साहब ज़रा उछल रहे होंगे। वह समझते हैं कि तुम कलक्टर के दम पर ही मज़बूत हो, लेकिन यह उनकी ख़ामख़याली है। है कलक्टर भी एक बड़ी ताकत लेकिन ताक़त को इस्तेमाल करने वाले जो हथियार हैं वे सब तो तुम्हारे ही इशारे पर चलेंगे।"

"तो टक्कर ज़बरदस्त होनी है। मैं पूरे अमले के हक़ूकों के लिए लड़ रहा हूँ, यह अमले को भूल नहीं जाना चाहिए।" पेशकार साहब बात को ज़रा और मज़बूत करते हुए बोले।

"एक बार कह चुका पेशकार साहब, आप बिलकुल बे फ़िक्र रहें। पूरा अमला आपका साथ देगा।" कोतवाल साहब बोले।

ठीक साढे आठ बजे पेशकार साहब कोतवाली से रवाना हो गये। इस समय उनका दिमाग़ ज़रा हल्का था और परेशानी भी काफ़ी कम थी, लेकिन कलक्टर साहब के तबादले का ज़बरदस्त हादसा अभी अपने भारी असर को लिए ज्यों-का-त्यों दिमाग़ में बैठा हुआ था।

जिन कलक्टर साहब का तबादला हो रहा था उनसे पेशकार साहब के रसूक जरूर थे, लेकिन इतने नहीं थे कि वह चलते समय नये कलक्टर से उनकी तारीफ़ करते जाते।

: १६ :

नौ बजे पेशकार रामदयाल गुलाब के कमरे पर पहुँचे तो देखा लीले पहलवान को लिये करीमखाँ वहाँ पहले से मौजूद हैं। पेशकार साहब को देखकर लीले पहलवान ने खड़े होकर अदब से सलाम झुकाया।

"अच्छे तो हो लीले पहलवान ! मस्ती की छन रही है ना !" पेशकार साहब ने पूछा।

"सरकार का साया जब तक सिर पर है तब तक हमारी मस्ती को कौन छीनने वाला है हुजूर ! लीले उस्ताद और उसके शागिर्दों पर आपकी इनायत चाहिए। मैं तो अपने को सरकार का खादिम समझता हूँ।" लीले पहलवान बोला।

"उस्ताद हो अखाड़े के, खलीफा ठहरे। अब तो तुम्हारा लँगोट घूम चुका होगा मेरठ के सब अखाड़ों के ऊपर।"

"आपकी इनायत से इस वक्त तो उस्ताद लीले की मार को ओटने वाला मेरठ में दिखाई नहीं देता। लेकिन आज शाम को नौचंदी के मैदान में एक जबरदस्त दंगल होने वाला है। कुछ नये बनियों के लौंडों को भी पहलवानी का शौक चर्राया है। मोटे पेट वाले सेठों ने उनके खाने पीने का इन्तज़ाम कर दिया है। वे ही ज़रा इधर कुछ सिर उभार कर चलने के फिराक में रहते हैं।"

पेशकार रामदयाल समझ गये कि लीले पहलवान का मतलब हिन्दू महासभा के मन्त्री पंडित रामखिलावन द्वारा संचालित अखाड़ों के पहलवानों से है।

इधर कुछ दिन से पेशकार रामदयाल यह भी देख रहे हैं कि लीले पहलवान उनके पास रुपये पैसे की मदद के लिए नहीं आया। इसमें भी उन्हें कुछ गोलमाल दिखाई दे रहा है। इसी की जाँच-पड़ताल के लिए उन्होंने लीले पहलवान को बुलवाया है।

पेशकार साहब ने सोचा कि लीले पहलवान यों ही मन की बात शायद न उगले। इसलिये ज़रा याराना अन्दाज़ में बोले, "तुम्हारा मुकाबला ये लाले भला क्या खाकर करेंगे ? मूँग की दाल का पानी और चपातियाँ क्या

ज़र्दा, पुलाव, क़ीमा, कबाब और जिगर की बोटियों का मुकाबिला ले सकेंगी ?"

इतना कह कर पेशकार साहब ने गुलाब को शराब की बोतल निकाल लाने का इशारा किया और देखते-ही-देखते दो जाम लबालब भर गये।

"लो पीओ लीले पहलवान ! तुमने आज तक हमारे साथ कभी शराब नहीं पी। सुना है तुम भी पीने में कमाल रखते हो। आखिर खलीफा ठहरे अखाड़े के।" अपना जाम उठाते हुए पेशकार साहब बोले।

लीले पहलवान ने आज तक कभी पेशकार साहब के सामने शराब नहीं पी थी। आज पेशकार साहब की यह दावत पाकर उसके दिल की पंखड़ियाँ खिल गईं। कितनी इज्जत उसे आज अपनी पहलवानी की वजह से नसीब हुई, इसका वह अंदाज नहीं लगा पा रहा था।

झिझकते-झिझकते उसने जाम हाथ में सँभाला और पेशकार साहब ने अपना जाम उसके जाम से टकरा कर मुस्कराते हुए कहा, "पीओ लीले पहलवान, लेकिन पेशकार रामदयाल के सामने बैठ कर अगर पी रहे हो तो ज़िन्दगी भर मुझसे कभी बेईमान मत होना।"

लीले पहलवान के दिल में उभार आ गया याराने का और वह भी इतने बड़े अफ़सर के याराने का; जिसकी उँगलियों के इशारे पर उसने मेरठ शहर और ज़िले को नाँचते देखा है।

"लीले पहलवान कल्लू पहलवान नहीं है पेशकार साहब ! जिसका नमक खाता है उसे हलाल करता है। खुदा हाफ़िज़ रहे, लीले पहलवान कभी दो ज़बान नहीं बोलता और फिर आपके तो क़दमों की खाक से लीले क़साई लीले पहलवान, लीले खलीफा बना है।" निहायत ख़ाकसारी से बोला।

एक, दो, तीन, चार, पाँच, छै, सात, आठ, नौ, दस......"बस" लीले पहलवान ने ज़रा झेंपते हुए कहा, "और ज्यादा ताकत नहीं है पेशकार साहब ! ज़बान लड़खड़ाने लगी।"

पेशकार साहब मुस्करा कर बोले, "कमाल कर दिया लीले पहलवान ! दस पेग तो वह मरा सा हमारा अंग्रेज़ एस. पी. ही ले लेता था बेचारा। इतने में ही लड़खड़ा उठे। चलो खैर एक पैग तो और लो आखरी।" और यह पेग पेशकार साहब ने अपने हाथ से भर दिया।

गुलाब पास में बैठी मुस्करा रही थी। ज़रा पेशकार साहब के पास को सिमटते हुए बोली, "पेशकार साहब आप भी कमाल करते हैं। बेचारे लीले पहलवान को क्या आप चाहते हैं कि वह गुलाब के जीने पर ही लुढ़-

पुड्ड होते नीचे उतरें।"

गुलाब की यह बात सुनकर लीले पहलवान को जरा जोश आ गया और वह साफ़ मूँछों पर झूठा हाथ फेरते हुए बोला, "हुस्नो अदा की मलका गुलाब! अभी लीले पहलवान मदहोश नहीं हो गया है। तुम्हारे जीने पर तो बिला लुड्ड-पुड्ड हुए वह जितनी बार तुम हुक्म करो चढ़ और उतर सकता है।"

"इसमें क्या शक है।" पेशकार साहब बोले। "लीले पहलवान, सुना है तुम्हारी हमारे जिले के नये एस. पी. साहब से भी एक दिन मुलाक़ात हो चुकी है। बड़े ही रहमदिल और फ़य्याज अफ़सर हैं बेचारे। हमारे जिले का नसीबा है कि उन जैसा आला अफ़सर हमें मिला।"

पेशकार रामदयाल के बात कहने के लहजे को न समझते हुए शराब के नशे की बुलन्दी में हल्के दिमाग़ से लीले पहलवान बोला, "आपने बिलकुल सच फ़रमाया है पेशकार साहब! पिछले जुम्मे की नमाज़ में जामा मस्जिद के मौलाना ने मुझे भी बुलाया था। खुदा की क़सम वह दूसरा या तीसरा मौक़ा था मस्जिद में जाने का। बड़ी मुश्किल से इधर-उधर देखते-देखते नमाज का वक्त काटा। लेकिन नमाज़ के बाद जब मौलाना ने साहब बहादुर से मुलाक़ात कराई, तो मज़ा आ गया।"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं," पेशकार साहब बोले। "साहब बहादुर से मिल-कर तो दिल बाग़-बाग़ हो उठता है। ऐसा आला इन्सान आज तक मेरी नजर के सामने नहीं आया।" पेशकार साहब बोले।

"आप बिलकुल बजा फरमाते हैं पेशकार साहब! साहब को जब यह बताया गया कि मेरी खलीफ़ाई में मेरठ के क़ब्रिस्तानों में पन्द्रह अखाड़े चल रहे हैं और दो-ढाई सौ पट्ठे तय्यार हैं, तो उन्होंने बड़ी ही मीठी नज़र से मेरी तरफ़ देखा और वायदा किया कि वह मेरे अखाड़ों की पूरी इमदाद करेंगे।"

"बहुत खूब, बहुत खूब! अफ़सरों के ये ही तो काम होते हैं।" कह कर पेशकार साहब के चेहरे की रंगत बदल गई, लेकिन उसे भाँप लेना लीले पहल-वान और गुलाब के लिए नामुमकिन था।

करीमखाँ को पेशकार साहब ने यहाँ आते ही अपने क्वार्टर पर किसी काम से भेज दिया था। जब तक वह लौटा, लीले पहलवान नशे में धुत हो चुका था। जितनी शराब उसने आज पी थी उतनी पीने की उसमें ताक़त नहीं थी।

करीमखाँ को देख कर पेशकार साहब बोले, "करीमखाँ देखो बेचारे

लीले पहलवान को जरा इनके अखाड़े तक तो छोड़ आओ और फिर वहाँ से सीधे हमारे मकान पर चले जाना। छोटे भाई से कह देना कि हम आज रात को मकान पर नहीं आयेंगे।"

लीले पहलवान को बड़ी मुश्किल से नीचे उतार कर ताँगे में डाला गया। अखाड़े में पहुँचने पर करीमखाँ को ज्यादा मुश्किल नहीं हुई। जो दस-पाँच पट्ठे अखाड़े में पड़े लेट लगा रहे थे उनसे बोला, "लो सँभालो अपने उस्ताद की लाश को।"

करीमखाँ की आवाज सुन कर चार पट्ठे उधर को लपके और उन्होंने लीले पहलवान को उठा कर अखाड़े की नरम मिट्टी में पटक दिया।

पेशकार साहब का दिमाग़ काफ़ी हल्का हो गया। उन्हें अपने एस. पी. साहब की पूरी कारगुज़ारियों का चिट्ठा मिल चुका था। साहब के राज़ का हर ताश अब पेशकार रामदयाल के सामने खुला पड़ा है। पेशकार साहब इस फ़िराक़ में हैं कि उन ताशों में किस पर कौन-सी तुरुप चढ़ाई जाय। तुरपें उनके पास काफ़ी हैं और बाज़ी भी उनकी कुछ कम मजबूत नहीं। लेकिन फिर भी बादशाह एस. पी. साहब के ही हाथ में हैं। कलक्टर साहब का यक्का अभी तक़सीम होना बाक़ी है। उसका दोनों को इन्तज़ार है।

पेशकार रामदयाल अपने को एस. पी. साहब से ज्यादा गहरे पानी में समझते हैं और इसीलिए उनका दिमाग़ अब और भी हल्का हो चुका है।

एक मीठी नज़र से गुलाब को देखते हुए बोले, "भर क्यों नहीं देती गुलाब! अब किस का इन्तज़ार है? तू और मैं, बस ये ही तो दो रह गये अब जमाने में। एक बीमार औरत हम दोनों के बीच में आ गई थी बेचारी, उसे भगवान् ने उठा लिया।"

गुलाब ने पेशकार साहब का गिलास भर दिया और फिर उनके पास सट कर बैठती हुई बोली, "दिल को दुखाने की बातें न किया करो पेशकार साहब! गुलाब के रास्ते में कोई भी क्यों न आये, गुलाब एक खन्दानी पेशेवर है। वह किसी का बुरा नहीं मानती। और फिर वह तो तुम्हारी ब्याहता औरत थी। उसका तो तुम पर पूरा-पूरा हक़ था।"

"तू बड़ी ही नेक दिल औरत है।" प्यार से गुलाब के चेहरे पर नज़र डाल कर पेशकार साहब बोले। "औरत के नाम की मेरे दिल, दिमाग और जिन्दगी में अब अगर कोई चीज बाकी है तो वह सिर्फ़ गुलाब ही है, गुलाब!" गुलाब की आँखों में झाँकते हुए पेशकार साहब बोले।

"यह आपकी ज़र्रानवाजिश है पेशकार साहब!"

"पेशकार रामदयाल की जिन्दगी में है ही क्या गुलाब! सूखी पड़ी

बंजड़ जमीन है। कोई पौदा नहीं उगा उसमें। कोई रस की धोर नहीं बही उस जमीन पर जो उसे सींच कर जरखेज बना देती। एक तू ही तो ऐसा चश्मा है जिसके किनारे बैठ कर मैं कभी-कभी अपने सूखे हलक को तर कर लेता हूँ।"

"मेहरबानी समझती हूँ मैं यह सब आपकी। अपना कहने को मेरे पास भी तो कोई चीज नहीं है। यह हवेली बनवा दी है आपने। इसी के किराये से खर्चा चल रहा है। कुछ पुराने मिलने वाले, जो हुनर की दाद देते थे, चले आते हैं वरना बाजार तो बिलकुल ही ठप्प हो गया है नाँचने-गाने का।" दिल में दर्द लेकर गुलाब ने कहा।

"आखिर ऐसा क्यों हुआ?" सब कुछ जान कर भी पेशकार साहब ने पूछा।

"सुना है पुलिस के नये साहब बहादुर ने इस बाजार को उजाड़ देने का बीड़ा उठाया है। वह कहते हैं कि हम लोग हूरें नही हैं, हूरें तो जन्नत में रहती हैं।"

"जन्नत की हूरें नकली ख्वाब की हूरें हैं गुलाब! असली हूर तो तुम ही हो। तुम्हारा काम चलता ही जायगा। पिछले महीने में तो हमने सेठ दामोदर प्रशाद से तुम्हें अच्छी खासी रकम कटवा दी थी कोतवाल हातमसिंह के लड़के की शादी में और आगे भी इसी तरह कुछ-न-कुछ सिलसिला चलता ही रहेगा।"

पेशकार साहब का आश्वासन पाकर गुलाब का गुलाबी चेहरा ज़रा और रौनक पा गया। वह मुस्करा कर अंदाज के साथ बोली, "आपके सहारे से तो मेरठ के बाजार में बैठी ही है गुलाब! वरना तो उसका यहाँ कौन है?"

"ऐश किये जाओ गुलाब! पेशकार रामदयाल का साया तुम्हारे सर पर है। किसी की क्या मजाल जो आँख भर कर भी देख सके।"

आज रात को पेशकार साहब गुलाब के ही मकान पर रहे। गुलाब के मकान पर पेशकार साहब अक्सर रह जाते हैं। यों रह तो वह तब भी जाते थे जब उनकी स्त्री बीमार थी, या मेरठ में आई ही नहीं थी, लेकिन उसका अंतकाल होने के बाद तो अक्सर उनका वहाँ ठहरना हो जाता है।

गुलाब ने एक कमरा पेशकार साहब के लिए अलहदा सजा कर रख छोड़ा है। कमरे में एक निवाड़ का तकियेदार पलंग पड़ा रहता है और उस पर मखमल के दो तकिये लगे रहते हैं।

कमरे की दीवारों पर कुछ साबुन, तेल, क्रीम, पाउडर इत्यादि के नंगे

कलेण्डर टंगे हैं और कुछ फ्रेम की हुई नंगी मेमों के चित्र भी लगे हैं। एक छोटा-सा झाड़ फ़ानूस भी कहीं से लाकर गुलाब ने इसके बीचों-बीच टँगवा दिया है।

कमरे में इत्र की ख़ुशबू हर समय आती रहती है। पलंग के तकियों और चादरों में तो मानों वह रम ही गई है।

पलंग के दोनों तरफ़ दो पीकदान रखे रहते हैं और एक छोटी-सी तिपाई पर छोटा सा चाँदी का पानदान रखा रहता है।

एक लखनऊ की फ़रशी भी कमरे में रखी है जिसकी पेचदार लम्बी नै गोल-मोल बनी खूँटी पर टँगी रहती है।

जिस दिन पेशकार साहब यहाँ सोते हैं उस दिन गुलाब कमरे का मुजरा बन्द कर देती है और पेशकार साहब के शौक की सभी चीजें खुद पेश करती है। यहाँ तक की उनकी फ़रशी को ताजा करने और उस पर भर कर चिलम रखने का काम भी वह नौकर से नहीं कराती।

सिर्फ इधर उधर के कामों का भार ही वह बूढ़ी नौकरानी को सौंप कर कहती है, "अम्मी जान! ज़रा बाज़ार से जाकर बढ़िया क़िस्म का तम्बाकू और पान तो ले आओ। और हाँ, उस लखनऊ वाली तम्बाकू की दूकान से बढ़िया वाला जर्दा भी लेती आना।

इत्र की शीशी में अगर इत्र खत्म हो गया हो तो आधा तोला वह भी लेती आना और खाने के लिए कुछ बढ़िया नमकीन बजाज़े की खूँट वाली दूकान से लाना।"

बूढ़ी अम्मी जिस-जिस दूकान पर भी सौदा खरीदने जाती है उसी का मालिक मुस्कराकर कर पूछता है, "आज पेशकार साहब शायद गुलाब बाई के मेहमान हैं?"

अम्मी जान भी मुस्करा कर जवाब देती है, "खुदा का फ़ज़ल है। इक़बाल है गुलाब का और आप सब मेहरबानों की दुआ है।"

"बनी रहे गुलाब, अम्मी! हम तो यही मनाते हैं। अकेली गुलाब के दम पर हमारी दुकानों की रौनक़ है। खुदा उसके हुस्न को बरक़रार रखे।" लखनवी तम्बाकू वाला कहता।

"गुलाब की बदौलत शौक की चीजें मंगा लेते हैं अम्मी! वरना तो इतना क़ीमती इत्र खरीदने का किस का कलेजा है मेरठ शहर में?" इत्र-फरोश कहता।

"यह बढ़िया देसी पानों की ढोली गुलाब की खातिर ही तो लाता हूँ अम्मी! वरना ये पान खाने का किसका मुँह है मेरठ जिले में।" पान की

दूकान वाला कहता ।

हलवाई मोटे पेट के ऊपर चमकीली तराजू की डँडी सँभालता हुआ कहता, "अम्मीजान आज वह नमकीन बनाया है कि पेशकार साहब को भी खाकर मज़ा आ जायगा । थोड़ा और लेती जाओ वरना इस बुढ़ापे के शरीर को फिर आना पड़ेगा ।"

"बस इतना ही तौल दो लाला ! गुलाब की खातिर अगर दस बार भी आना होगा तो तब भी मुझे ऐतराज नहीं होगा ।" बूढ़े मुँह से मुस्कराती हुई अम्मीजान ने कहा ।

पेशकार साहब ने कमरे में दाखिल होकर गुलाब की साड़ी खूँटी से उतारी और उसी का तेहमद मार कर सब कपड़े उतार दिये । शरीर पर सिर्फ़ एक जालीदार बनियान रह गया ।

दिन भर के लदे हुए कपड़ों से छुट्टी पाकर उनके शरीर को ज़रा राहत मिली । थकान तो शराब ने पहले ही दूर कर दिया था । उनका बदन इस समय एक बच्चे के समान फुरबाली ले रहा था और हाथ बड़ी सफ़ाई के साथ अपने शरीर के अंग-प्रत्यंग पर फिर कर उसमें ताज़गी पैदा करता जा रहा था ।

पेशकार साहब ने पलंग पर बैठ कर दोनों मखमली तकियों को अपनी गोद में रखते हुए उन्हें ज़रा जोर से दबाया और फिर कमरे में इधर-उधर नजर फेर कर लगी हुई नंगी तस्वीरों के बिला ढके हुस्न पर नज़र डाली ।

उन्हें देख कर फिर पेशकार साहब ने गुलाब की तरफ़ देखा और गुलाब के जिस्म और अपनी नज़र के बीच आने वाली कपड़ों की रुकावट ने उनके दिमाग में हल्की सी झुँझलाहट पैदा कर दी ।

पेशकार साहब के सामने मेज पर शराब की बोतल रखी हुई थी । उस पर उनकी नज़र गई तो उन्होंने उसे आसानी से उठा लिया और गिलास में उड़ेल कर दो घूँट भरते हुए गुलाब की तरफ़ देख कर कहा, "ग़ुलाब ! सच बताओ तुम दिल की राहत हो या तुम्हारी यह शराब की बोतल ।"

फ़रशी पर चिलम टिकाते हुए मुस्करा कर गुलाब ने जवाब दिया, "दिल की बात को जबान पर न लाइये पेशकार साहब । दिल की बात का जवाब दिल को ही देने दीजिये ।"

"खूब कहा तुमने गुलाब !" गुलाब की नाज़ुक क़लाई पकड़ कर उसकी ठोडी से चेहरे को ऊपर उठाते हुए पेशकार साहब बोले । "कमाल कर दिया तुमने ।"

पेशकार साहब की नज़र फिर शराब की बोतल, कमरे की दीवारों पर

नंगी हुस्न की परियों की तस्वीरों और फिर गुलाब पर गई। नज़र टिकी रही तीनों पर।

गुलाब भी मुस्करा रही थी पेशकार साहब की नजरों में नजरें डाल कर और फिर जोर से खिलखिला कर हँस पड़ी।

निहायत अदब के साथ बोली, "पेशकार साहब! यह पुलिस की नौकरी नहीं है, यह दिल की गुलामी है। यह गुलामी भी वह गुलामी है, जिसमें मन आजाद परिन्दों की तरह उड़ानें भरता है, लेकिन यह चलता सब ज़िन्दगी और ज़िन्दगी की हरकतों पर ही है।

शराब और इन नंगी तस्वीरों का हुस्न खामोश है और गुलाब का हुस्न बोलता है।"

गुलाब ने मुस्कुरा कर शरीर पर पहना हुआ कपड़ा उतार कर फेंक दिया। फिर अन्दाज के साथ पेशकार साहब की तरफ़ बढ़ी और ज्यों-ही पेशकार साहब ने अपना हाथ गुलाब की तरफ बढ़ाया, वह मुस्करा कर पीछे हट गई।

"अम्मीजान आ रही हैं।" गुलाब ने चिक की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

दूध के उफान पर पानी का छींटा मार दिया गुलाब ने।

पेशकार साहब भी जरा सँवर कर बैठ गये।

"क्या-क्या ले आईं अम्मीजान! मेरे आने से आपको बड़ी तकलीफ़ उठानी पड़ जाती है।" पेशकार साहब ने कहा।

"ऐसी तकलीफ खुदा रोज़ दे मुझे बेटा! तुम्हारी और गुलाब की खुशी में ही मेरे दिल की राहत है।"

अम्मीजान सब चीजें गुलाब को देकर अपने कमरे में चली गईं। इसके बाद एक बार फिर शराब का दौर चला और दोनों ने जी खोल कर शराब पी।

कौन जाने कब, कैसे और कितनी मदहोशी में उस रात दोनों को नींद आई।

एस. पी. हामिद अली साहब के हुक्म का पालन करने में पेशकार रामदयाल एक मिनट भी नहीं लगाते। इधर उनकी ज़बान से कोई बात निकली और उधर उन्होंने उसे पूरा किया। किसी बात में भी उन्हें पेशकार रामदयाल कोई शिकायत का मौक़ा नहीं देते।

जिले के नये कलक्टर साहब से जब हामिद अली साहब की पहली मुलाकात हुई तो उसी में कलक्टर साहब की नाक भौं चढ़ गईं।

कलक्टर साहब के दिमाग़ में अंग्रेजियत की बू है। आदमी के मुँह पर मूँछों को छोड़ कर और बालों का जमघट उन्हें क़तन पसंद नहीं। हिंदुस्तानी अफ़सर को भी वह बरदाश्त नहीं कर सकते। हिन्दुस्तानी का द्रर्जा उनकी नज़रों में दारोगा से ऊपर नहीं उठता।

हामिद अली साहब की गुम्फेदार दाढ़ी को देख कर उनकी नाक-भौं सिकुड़ गईं और उन्होंने सीधे माथे से बातें करना भी पसन्द नहीं कीं।

हामिद अली साहब कोरा सलाम झुका कर ही बंगले को वापस चले आये और उन्हें अब इसमें भी ख़तरा दिखलाई देने लगा कि वह कलक्टर साहब को अपने हाथों की कठपुतली बना कर रख सकेंगे।

कचहरी में हामिद अली साहब का चेहरा ज़रा उतरा हुआ देख कर पेशकार रामदयाल बोले, "आज कुछ तबियत नाशाद मालूम देती है। मिजाज़ तो नाखुश नहीं हैं साहब के दुश्मनों के।"

"कोई ख़ास बात नहीं है।" माथे पर सिलवटें डाल कर साहब बोले। "आज हम ज्यादा देर तक दफ्तर में नहीं ठहरेंगे। ज़रूरी काग़ज़ों पर दस्तखत करालो।"

पेशकार साहब ने ज़रूरी फ़ाइलें साहब के सामने रखते हुए पूछा, "नये कलक्टर साहब से मुलाक़ात हुई हुज़ूर की? कैसे दिमाग़ के आदमी मालूम देते हैं?"

"मुझे अभी उधर जाने की फ़ुर्सत ही नहीं मिली।" दस्तख़त करते हुए साहब ने कहा।

पेशकार रामदयाल को कलक्टर साहब के बंगले पर उनके जाने की

सूचना सुबह-ही-सुबह करीमखाँ ने ला दी थी। उनका दिल अन्दर-ही-अन्दर मुस्करा उठा और समझ गये कि ज़रूर कोई ख़ास बात है। बहुत ख़ास न भी हो, लेकिन कलक्टर साहब से एस. पी. साहब का याराना पटने की बात नहीं है।

दो चार दिन में कलक्टर साहब और एस. पी. साहब की एक दो झड़पें भी सुनने में आईं। कलक्टर साहब की कोठी के अर्दली पेशकार रामदयाल के अपने आदमी हैं, और वहाँ अगर पत्ता भी हिलता ह, तो उसकी भी सूचना उनके पास आ जाती है।

हामिद अली साहब को अपनी अफसरी पर धीरे-धीरे गुस्सा आने लगा। वेतन में थोडी तरक्की हुई, लेकिन ऊपर की आमदनी एकदम ख़त्म हो गई। सादा-से-सादा रहने पर भी एस. पी. की शान निभानी ही होती है।

फिर ऊपर से कलक्टर साहब के रुख़ ने तो उनकी हिम्मत को और भी पस्त करके रख दिया। मन में जो उत्साह था कि कलक्टर साहब को हाथो में लेकर एक बार जिले की पूरी पुलिस में रद्दोबदल कर डालेंगे, वह भी काफूर हो गया।

नये कलक्टर साहब की मेम साहब का मेरठ के उन पुराने एस.पी. साहब से याराना था जिनकी खास मेहरबानी की नज़र ने दीवान रामदयाल को पेशकार रामदयाल बनाया था। उन एस. पी. साहब की उन रंगीन मेम साहब का इन क़लक्टर साहब की मेम साहब से बडा मेल-जोल था और इसी मेल-जोल की बदौलत उन्होंने एक बार नौचन्दी के मेले पर इन दोनों को बरेली से बुलाया था।

'कलक्टर साहब, एस. पी. साहब और दोनों की मेम साहबों को पेशकार रामदयाल ने बढ़िया शराब पिलाई थी। यह बात नये कलक्टर साहब की मेम साहब को याद थी।

मेम साहब ने अपनी कोठी के बैरे को बुला कर पूछा, "वैल बेरा! टुम जानटा ऐ कि एक पेशकार रामडेयाल ओटा टा यहाँ। ओ ऐ या चेला गेया?"

"पेशकार साहब अभी यहीं पर हैं।" बैरे ने कहा। "मेम साहब का हुक्म हो तो उन्हे बुला लाऊँ।"

"वेल, टुम इशी वक्ट जाकर बुला ले आओ पेशकार रामडेयाल को। अम उश आडमी को बोट पशंड करटा ऐ। ओ बरा काम का आडमी ऐ।" मेम साहब बोलीं।

कलक्टर साहब का बैरा सीधा कचहरी में पेशकार रामदयाल के दफ़्तर के पास पहुँचा तो वहाँ के अर्दलियों ने उसका स्वागत किया और उसे बिला

किसी रोक-टोक के अन्दर चला जाने दिया ।

हामिद अली साहब जरूरी फ़ाइलों पर दस्तख़त करके अपने फ़ाउन्टेन-पेन की टोपी लगा रहे थे। उसी समय उनकी नज़र कलक्टर साहब के बैरे पर पड़ी और वह उसकी तरफ़ देखते हुए बोले, "यहाँ कैसे आये हो ? क्या कलक्टर साहब का कोई हुक्म है ?"

"जी नहीं हजूर !" निहायत अदब के साथ बैरे ने कहा । "कलक्टर साहब की मेम साहब नें पेशकार साहब को याद फ़रमाया है ।"

कलक्टर के बैरे के ये शब्द हामिद अली साहब के दिल पर तीर की तरह लगे, लेकिन ऊपर से मुस्कराहट ही उनके होठों पर नाँच उठी ।

"बड़े रसूख़ बनाये हुए हैं तुमने भी पेशकार रामदयाल !" हामिद अली साहब बोले ।

"बनाये क्या हुए हैं सरकार ! खिदमत करता हूँ अफ़सरों की । इसी लिए याद कर लेते हैं बड़े आदमी । अब आपकी मातहती में आपकी जो खिदमत कर रहा हूँ इसे क्या आप कभी भूल जायेंगे । बड़े लोग अपने मातहतों की खिदमत को कभी नहीं भूलते ।"

पेशकार रामदयाल के कटु-व्यंग्य ने हादिम अली साहब के दिल को मसोस कर रख दिया और वह तुरन्त वहाँ से उठ कर चले गये ।

कलक्टर साहब के बैरे के लिए पेशकार साहब ने बराबर के होटल से चाय और बिस्कुट मंगाये और फिर प्यार से पूछा, "किस लिए बुलाया है मुझे मेम साहब ने ?"

"यह तो पता नहीं हुज़ूर, लेकिन वह आपका नाम जानती हैं ।"

"नाम जानती हैं तो............" पेशकार साहब ने अपने दिमाग़ पर जोर देते हुए कहा, "हो-न-हो यह वही मेम साहब हैं जिन्हें छै साल पहले नौचन्दी के मेले पर मैंने शराब पिलाई थी ।"

पेशकार रामदयाल का मन नाँच उठा और उन्होंने उसी वक्त मुंशी को बुला कर जरूरी काग़ज़ात सौंपते हुए कहा, "मैं कलक्टर साहब की कोठी पर जा रहा हूँ । मुझ से बाद में किसी को कोई फ़ाइल दिखाने की ज़रूरत नहीं है ।"

पेशकार रामदयाल सीधे अपने क्वार्टर पर पहुँचे और छोटे भाई हर-दयाल से बोले, "हमारे ट्रङ्क में से धुला हुआ कोट, पायजामा, कमीज़ और भागलपुरी साफ़ा निकाल आओ । जूते पर दो हाथ पालिश के भी लगा दो। और हाँ, इससे पहले जरा भाई करीमखाँ को बुला लाओ ।"

करीमखाँ वर्दी पहने ड्यूटी पर जाने को तय्यार खड़ा था, लेकिन पेश-

कार रामदयाल का संदेशा पाकर ड्यूटी-व्यूटी सब भाड़ में चली जाती है।
उनकी चौकी के दीवान करीमखाँ को कभी एक शब्द भी नहीं कह सकते, बल्कि और उल्टी खुशामद ही उसकी हुआ करते हैं।

'करीमखाँ ज़रा कम्बोगेट से जाकर एक दस रुपये के बढ़िया फल तो ले आओ और एक बोतल शराब की भी लेते आना। फल ज़रा उम्दा क़िस्म के लाना। कलक्टर साहब की मेम साहब को पेश करने हैं।" पेशकार रामदयाल ने कहा।

करीमखाँ तो उछल ही पड़ा पेशकार रामदयाल की यह बात सुनकर, और रुपये हाथ में लेता हुआ बोला, "तो यह वर्दी-सर्दी उतार डालूँ ना? डाली लेकर भी तो चलना होगा?"

"बिल्कुल उतार डालो करीमखाँ! और ऐसे लौट आओ मानो गये ही नहीं थे।"

'बस गया और आया।" करीमखाँ बोला।

पेशकार रामदयाल ने नहा धो कर ज़रा क़रीने के साथ नये क़लफ़ किये हुए कपड़े पहने और सिर पर भागलपुरी रेशम का साफा बाँधा। पैरों में पालिश किया हुआ बूट-जूता पहन कर ज्यों ही तय्यार हुए कि करीम खाँ सब सामान लेकर सामने खड़ा था।

मुस्कराता हुआ बोला, "देर तो नहीं हुई पेशकार साहब!"

"बस ठीक वक्त पर आ गये। मैं अभी-अभी तय्यार होकर खड़ा ही हुआ हूँ।"

सड़क पर जाते हुए एक ताँगे वाले को आवाज़ देकर करीमखाँ बोला, "अबे, ज़रा इधर तो आ। पेशकार साहब को कलक्टर साहब की कोठी पर जाना है।"

बेचारे ताँगे वाले का दम तो वहीं पर खुश्क हो गया। उसने समझा कि आज दिन भर की दिहाड़ी पुलिस की हराम मौत में चली गई।

ताँगे वाले का बिगड़ा हुआ हुलिया देख कर पेशकार रामदयाल उसके मन की तलाबेली को समझ गये। उन्होंने फौरन जेब से एक रुपये का करारा नोट निकाल कर उसके हाथ में देते हुए कहा, "किराया पहले ले कम्बख्त के बच्चे! तू नहीं जानता कि पेशकार रामदयाल कभी किसी ताँगेवाले से बेगार नहीं लेता। वह कभी किसी ग़रीब मजदूर को नहीं सताता।"

ताँगे वाला काँप गया एक रुपये के नोट को देख कर। आठ आने की जगह एक रुपया पुलिस वाला दे सकता है, यह उसकी जिन्दगी में पहला ही मौक़ा था। वह गिड़गिड़ा कर बोला, "हुज़ूर मेरी ख़ता माफ़ कर दें, एक रुपया

मैं नहीं लूंगी।"

पेशकार साहब को उसकी हालत देख कर हँसी आ गई। करीम खाँ ताँगेवाले की कमर थपथपाते हुए बोला, "अबे सरकार से भला कब-कब इनाम मिलता है। आठ आने तेरी मेहनत के और आठ आने तेरे इनाम के। सलाम करके ले-ले पेशकार साहब से।"

ताँगे वाले ने अदब के साथ एक लम्बा सलाम झुकाया और एक रुपये का नोट लेकर उसे मरोड़ी देते हुए तेहमद की आँटी में उनस लिया।

ताँगा मेरठ का छटा हुआ था। पेशकार साहब के बैठते ही कोचवान ने टिटकारी दी और घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

पेशकार रामदयाल जब कलक्टर साहब की कोठी में घुसे तो उन्होंने देखा कि एस. पी. हामिद अली साहब बाहर आराम कुर्सी पर बैठे कलक्टर साहब की अन्दर से आने वाली बुलाव का इन्तजार कर रहे हैं।

पेशकार रामदयाल ने हामिद अली साहब को भी एक सैल्यूट मारा और अर्दली को अपने आने की खबर देकर मेम साहब के पास भेजा दिया।

हामिद अली साहब वहीं आराम कुर्सी पर बैठे रहे और पेशकार रामदयाल कोठी में दाखिल हो गये।

मेम साहब को देखते ही पेशकार साहब ने पहचान लिया और उन्हें वह बात भी याद आई कि किस तरह उसने उन्हें शराब के नशे में चित्त पड़ी देखकर अपने दोनों हाथों में उठा लिया था और फिर नौचन्दी के कैम्प में पड़े स्ट्रेचर पर लिटाया था।

पेशकार रामदयाल को याद आया कि मेम साहब का बदन कैसा फूल-जैसा हल्का और मुलायम था। उसमें आज भी कोई तबदीली उसे नज़र नहीं आ रही थी।

मेम साहब दीवान रामदयाल को देख कर मुस्कराती हुई बोली, "वेल पेशकार रामडैयाल तुम अबी टक मेरठ मे ही बेना ऐ। अम शमजटा टा कि टुमारा कहीं टबाडला ओगेया ओगा।"

"तबादले तो हुजूर बड़े अफ़सरों के होते हैं। मेरे जैसे खादिमों का तबादला करके सरकार का क्या फ़ातदा होगा? जो खिदमत सरकार और सरकारी अफ़सरों की मै यहाँ रह कर कर सकता हूँ वह बाहर जाकर मुमकिन नही। यहाँ की सब चीजों से मै वाकिफ़ हूँ, इसलिए किसी भी नये साहब को यहाँ आने पर कोई तकलीफ मै नही होने देता।" पेशकार रामदयाल ने अदब के साथ कहा।

"टुमारा टारीफ़ अमको अमारा एश. पी. शाब का मेमशाब ने बोला

टा। बरा टारीफ़ करटा टा टुमारा।" मेम साहब ने कहा।

"हुजूर जिन्दगी गुज़ार दी साहब लोगों की खिदमत में। आप लोगों की जरूरतें भी मैं सब जानता हूँ। नये आदमी से आप लोग हिल-मिल भी तो नहीं सकते।"

"टुम बिलकुल टीक केटा ऐ पेशकार रामडेयाल। अम बौट कम आडमी शे बोलटा ऐ। अम अपना शब काम टुमको शुपर्ड करेगा।"

"ख़ादिम उसे बजा लाने के लिए चौबीसों घंटे तय्यार रहेगा। आप अपनी हर जरूरत के लिए ख़ादिम को याद फरमा सकती हैं।" पेशकार साहब ने कहा।

कोठी के वराँडे में बैठे-बैठे एस. पी. हादिम अली उकताते जा रहे हैं और कलक्टर साहब बाथ-रूम में स्नान कर रहे हैं।

कलक्टर साहब को नहाने का जबरदस्त शौक है और वह बाथ-रूम में से एक घंटे से कम में नहीं निकलते। एस. पी. साहब के आने से दो मिनट पहले ही वह बाथ-रूम में घुसे थे।

पेशकार रामदयाल ने अपनी पानफ़ूल की डाली मेम साहब को पेश करते हुए कहा, "यह कुछ ख़ादिम की सौग़ात है मेम साहब के लिए।"

"वेल बेरा, डेको पेशकार रामडेयाल का शौग़ाट ले लो। अम इशे बोट खुशी से कबूल करटा ऐ। टुम अमशे रोज़ाना मिलटे रहा करो पेशकार रामडेयाल।"

"जो हुक्म सरकार का।" कह कर पेशकार साहब ने बिदा ली।

कोठी से बाहर निकल कर पेशकार साहब ने एक बार एस. पी. हामिद अली साहब को दुबारा सलाम किया और फिर बाहर इन्तज़ार में खड़े ताँगे में जाकर बैठ गये। पेशकार साहब के बैठने की देर थी कि घोड़ा फिर हवा होगया।

पेशकार रामदयाल की खुशी का अब ठिकाना न था। रास्ते में उन्होंने करीमखाँ को पाँच रुपये का नोट देकर ताँगे से उतरते हुए कहा, "लो करीमखाँ दो रुपये की मिठाई हमारी भाभी जान के लिए और तीन रुपये की मिठाई हरदयाल को दे देना, हमारे क्वार्टर पर। मैं गुलाब के यहाँ जा रहा हूँ।"

करीमखाँ ताँगे से उतर गया और पेशकार साहब ने ताँगे वाले को कम्बोगेट के अन्दर जाकर बैली बाज़ार के ठीक बीचों-बीच ताँगा रोकने का हुक्म दिया।

ताँगे से उतर कर पेशकार साहब ने ताँगे वाले को दो रुपये और दिये। ताँगे वाला भी देख कर दंग रह गया। पुलिस का यह पहला आदमी उसको

नज़र में आया जिसने उसे इस फ़य्याजादिली के साथ ताँगे का किराया दिया है।

गुलाब पेशकार साहब का चेहरा देखकर बोली, "आज तो ज़रूर कोई बड़ा काम करके आये हो पेशकार साहब !"

"बड़ा ही नहीं गुलाब ! ज़िन्दगी में आज तक जितने भी कमाल किये हैं, उन सब से आज का कमाल बाज़ी ले गया। लेकिन सच बात यह है कि इसमें मेरा कमाल कुछ भी नहीं है। मेरी सचाई और ईमानदारी को देख कर परमात्मा खुद ही मेरी मदद को किसी-न-किसी रूप में आ खड़ा होता है।"

"सच्चे इन्सान की खुदा ज़रूर मदद करता है पेशकार साहब !" गुलाब पेशकार साहब के सामने मूढ़े पर बैठती हुई बोली और अम्मी जान से कहा, "अम्मी ज़रा चाय तो बना लो और बाहर से थोड़ा नमकीन भी लेती आना।"

अम्मीजान के कमरे से बाहर निकलते ही पेशकार साहब गुलाब की ठोड़ी पकड़ते हुए बोले, "नमकीन क्या तुम कुछ कम हो जो बाज़ार से मँगा रही हो ?"

"मेरा नमक तो अब फीका पड़ता जा रहा है पेशकार साहब !"

"पड़ता जा रहा होगा किसी के लिए, पेशकार रामदयाल के लिए तो आज भी जो नमक गुलाब में है वह और दूसरी जगह नहीं।"

"तो आज कौनसा क़िला फ़तह करके आ रहे हो, ज़रा गुलाब भी तो जान ले।"

पेशकार रामदयाल अपने दिल की बात किसी पर भी ज़ाहिर करना अपनी कमज़ोरी समझते हैं। तुरन्त बात का रुख बदलते हुए बोले, "ज़रा यह तो बताओ कोई आया तो नहीं था मुझे यहाँ पूछने।"

"आज तो कोई नहीं आया।"

"तब फिर मुझे ही जाना होगा।" पगड़ी सँभालते हुए पेशकार साहब बोले।

"ज़रा ठहरिये ऐसी भी क्या जल्दी है। कोई मेल-ट्रेन तो छूटी नहीं जा रही। अम्मीजान चाय का पानी रख कर गई हैं। आती ही होंगी।"

पेशकार साहब ने यूँही बात को रिला-मिला दिया और गुलाब की भी जानने की उत्कंठा जाती रही। चाय पीकर पेशकार साहब सीधे कोतवाली पहुँचे और कासिम मिरज़ा से मिले तो उन्होंने जाते ही पेशकार साहब को कौली में भर लिया। फिर हँसते हुए बोले, "पेशकार साहब, कमाल कर दिया तमने। चारों खाने चित्त मारा बेचारे एस. पी. साहब को। सुना है

कलक्टर साहब के बँगले पर बेचारे पूरे पैंतालिस मिनट बैठ कर चले आये और साहब बाथ-रूम से ही नहीं निकले।

"क्या सच ?" आश्चर्य प्रगट करते हुए पेशकार साहब बोले।

"हम से बनने की कोशिश मत करो पेशकार साहब ! यह सब तुम्हारी ही करामात है। आखिर ऐसी क्या पट्टी पढ़ादी मेम साहब को ?" कासिम मिरज़ा ने कुर्सी पर बैठते हुए पूछा।

पेशकार साहब भी सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गये और बैठ कर बोले, "पहले यह कहो क्या पिलवाओगे, तब गाड़ी आगे बढ़ेगी। गुलाब से मैं कह आया हूँ कि कासिम मिरज़ा आज आने वाले हैं, आम मुजरा बन्द रखे। आज के करिश्मे की खशी में मुजरा मेरी तरफ़ से और शराब आपकी तरफ़ से चलेगी; बोलो मंज़ूर है ?"

"मंजूर है, भाई मंजूर है। तुम्हारी बात नामंजूर करके क्या हमें मेरठ से अपना टिकट कटाना है ?"

"ऐसी बात कहोगे कोतवाल साहब ?" आँखें तरेर कर पेशकार रामदयाल बोले। "छोटा भाई हूँ आपका और बड़ा बनने का दावा भी कभी नहीं करूँगा। आपकी शहर-कोतवाली में मैं अपने को मेरठ शहर का मालिक समझता हूँ।"

"समझते ही क्या। पेशकार साहब, आप हैं भी शहर के मालिक हो शहर के ही क्या आप तो ज़िले भर के मालिक हैं बाबा ! आपके इशारे के बिना तो ज़िले में पत्ता भी नहीं हिल सकता। एस. पी. हामिद अली ने आपसे बिगाड़खाता करके अपने पैरों में खुद कुल्हाड़ी मार ली।"

"आदमी की हविस की भी कोई हद होनी चाहिए कोतवाल साहब ! वरना तो फिर दुनियाँ से टक्कर-ही-टक्कर लेने की बात है। एस. पी. होने का यह मतलब नहीं कि पूरा पुलिस-विभाग उनके बाप का नौकर हो गया। पुलिस का हर आदमी उन्हें अपना अफ़सर समझ सकता है, आक़ा नहीं समझ सकता। ऐसी आक़ागिरी करनी होती तो किसी लाले की नौकरी करते।" मूँछों पर ताव देकर पेशकार रामदयाल ने कहा।

कासिम मिरज़ा पेशकार रामदयाल का पहले से ही लोहा माने हुए थे और उन्होंने उनके प्रति ईमानदार रहने का बचन भी दिया था। लेकिन आज की बात ने तो पिछली बातों पर सुनहरी पानी फेर दिया।

रात को गुलाब के कमरे पर कासिम मिरजा और पेशकार साहब की मैफ़िल जमी और जब कोतवाल साहब पूरे सरूर में आये तो पेशकार साहब बोले, "तो कोतवाल साहब, अगर ज़रा हिम्मत से काम लो तो आपको दो तीन

दिन में ही-जिले का नक्शा बदला हुआ दिखलाऊँ ।"

"हिम्मत में कासिम मिरज़ा किसी से कम नहीं है पेशकार साहब और जब तुम कह रहे हो तो सोचने-समझने की बात ही क्या है ? हामिद अली साहब को मैं अच्छा आदमी नहीं समझता । घर से सभी लोग अपने-अपने बाल-बच्चों के लिए चार पैसे कमाने को निकले हैं । हिस्साकशी के साथ सब को उनका हक मिलना चाहिए । इस बारे में पूरा अमला तुम्हारी तारीफ़ करता है । तुम जो भी क़दम उठाओगे कासिम मिरज़ा तुम्हारा साथ देगा ।"

पेशकार रामदयाल ने कासिम मिरज़ा को पूरी तरह अपने चंगुल में ले लिया । ज़िले के थानेदारों की नकेलें उनके हाथों में रहती ही थीं । कलक्टर साहब की मेम साहब की इनायत का पात्र वह बन ही चुके हैं । अब बाकी है अपने एस. पी. साहब का तमाशा देखना, उनका झुँझलाना, दाढ़ी के बालों को नोंचना, फाइलें इधर-उधर पटकना और पेशकार साहब के मुस्कराते चेहरे को देखकर दिल में भक्क-भक्क जलना और आग को होठों से बाहर न निकलने देना ।

२१

जमाना तेज़ी से आगे बढ़ता जा रहा है। पेशकार रामदयाल ज़माने की इस रविश को समझते ही न हों, ऐसी बात नहीं है। लेकिन ख़याली पुलाव पकाना पेशकार रामदयाल ने नहीं सीखा। जितना भी जमामा आगे बढ़ता है, उतना ही उसे वह तस्लीम करते हैं।

अपनी ज़िन्दगी के रास्ते जो उन्होंने बना लिये हैं उनमें कोई रद्दोबदल करना उन्हें पसन्द नहीं है। मस्ती के साथ वह अपनी राह पर बढ़ते चले जा रहे हैं। उनकी बला से दुनियाँ में किसी के घर पर जवान मौतें हों या बूढ़े मरें, उनकी ऐश में फ़र्क नहीं आना चाहिए।

पेशकार रामदयाल की ऐश की ज़िन्दगी चल रही है। छोटे भाई को उन्होंने अपने गाँव में खेती के सिलसिले से लगा दिया है। लीले पहलवान के अखाड़े के दो पट्ठे भाई की मदद के लिए गाँव में भेज दिये हैं और इलाके के थानेदार और दीवान को बोल दिया है, "छोटा भाई है मेरा। ज़रा ख़याल रखना।"

छोटे भाई हरदयाल ने भी गाँव में, पेशकार रामदयाल के बूते पर, बेनाथ के नादिये की तरह घूमना शुरू कर दिया है। लीले पहलवान के दो पट्ठे उसकी सुबह-शाम मालिश करते हैं और तीनों जवान गाँव से एक फर्लांग की दूरी पर जंगल में अखाड़ा खोद कर उसमें ज़ोर आज़माते हैं।

हरदयाल के इस रंग-ढंग ने उसके खान्दानियों का नाक में दम कर दिया है। आधी ज़मीन में सारा खान्दान है और आधी उसने अपने हल के नीचे दबाली है। कोई कुछ कहता है तो काले साँप की तरह फुंकार कर आता है, "अदालत का रास्ता देखो। जो ज़मीन मेरे हल के नीचे आ चुकी है, उसे खुदा के फरिश्ते भी मुझसे नहीं छीन सकते।"

"हाँ-हाँ भाई, इनसे झगड़ा क्यों करते हो ? सरकारी अदालतें खुली पड़ी हैं तुम्हारे लिए।" लीले पहलवान के पट्ठों ने खुम ठोंकते हुए मुस्कुरा कर कहा।

हरदयाल के चचा और तायाज़ाद भाई अपने-से मुँह लेकर लौट आये।

"अब आये है ज़मीन माँगने। वालिद साहब का अन्तकाल होते ही सारी ज़मीन के मालिक बन बैठे थे ये लोग। वह तो भाई साहब का ही दम

था जो इन्हें गाजर-मूली की तरह उखाड़ कर फेंक दिया।" मूछें पैनाते हुए लीले पहलवान के पट्ठों से हरदयाल बोला।

"मज़ा किये जाओ भय्या हरदयाल ! खुदा ने तुम्हें भाई भी वह दिया है कि जिसके बूते पर तुम सारे गाँव पर राज कर सकते हो।" एक पट्ठा बोला।

"ज़िन्दगी का यह मजा भी बड़े मुक़द्दर से मिलता है हरदयाल भय्या ! पुलिस की पूरी ताक़त तुम्हारे साथ है। तुम गाँव में बे-खतर होकर स्याह-सफैद कर सकते हो। पेशकार रामदयाल के भाई के पुलिस में हज़ार खून माफ़ हैं।" दूसरा पट्ठा बोला।

"मेरी राय मानो तो गाँव के जितने भी दस नम्बरी हैं सबको अपना गुलाम बना कर रखो और सब को भबका यही दो कि इस बार भाई साहब के आने पर तुम लोगों के नाम दस नम्बरियों में से कटवा दूँगा।" पहला पट्ठा बोला।

"वाह यार क्या शानदार बात कह दी तुमने ? बस कमाल कर दिया।" हरदयाल मस्ती में झूमता हुआ बोला।

"जब गाँव के दस नम्बरी बदमाश सब तुम्हारे गुलाम बन जायेंगे तो तुम्हें हमारी भी ज़रूरत नहीं रहेगी।"

हरदयाल उसकी बात सुन कर काँप उठा और घबरा कर बोला, 'भय्या ऐसी बात मत करो। तुम्हारे बिना तो मैं गाँव में एक दिन भी नहीं रह सकता।"

पेशकार रामदयाल के भाई हरदयाल ने भी उसी कोख में पैर फैलाये थे जिस में पेशकार रामदयाल ने, लेकिन दोनों की जीदारी में आकाश-पाताल का अन्तर है। पेशकार रामदयाल जहाँ लोहा-किस्म का आदमी है, वहाँ हरदयाल मोम-किस्म का। चालाकी और होशियारी में भी दोनों का कोई मुक़ाबला नहीं है। पेशकार रामदयाल जितना बहादुर और हिम्मत वाला है हरदयाल उतना ही कम हिम्मत और बुज़्दिल किस्म का आदमी है। पेशकार रामदयाल जितनी सख्ती बरदाश्त कर सकता है, हरदयाल उतना ही मुलायम और कमजोर आदमी है। हाँ शराब और हुस्न की तरफ़ रग़बत दोनों की बराबर सी ही है, बल्कि हरदयाल इस मामले में पेशकार साहब से कुछ आगे ही क़दम रखता है।

धीरे धीरे हरदयाल के पास गाँव के बदमाश लोगों का अड्डा आप-से-आप जमना शुरू होगया। गाँव के सब लुच्चे लफ़ंगों ने आकर हरदयाल की शरण ली, उसकी चिलबरदारी में रहना शुरू कर दिया।

आज दोपहर बाद की मोटर से पेशकार रामदयाल अपने गाँव में तशरीफ़ लाये।

आते ही पेशकार साहब ने हरदयाल से सवाल किया, "इलाके के थानेदार और दीवान जी को तो खुश रखते हो न !"

"जी !" गर्दन झुका कर हरदयाल ने कहा। हालाँकि उनसे मिलने तक की हिम्मत उसकी कभी नहीं हुई। वह तो गश्त पर आने वाले काँस्टेबिलों से ही याराना करके अपने दिमाग़ में खुश हो जाता है। उसके लिये वे ही पुलिस के आला-से-आला अफ़सर हैं।

"गश्त पर आने वाले काँस्टेबिलों की भी कुछ खातिरदारी करते हो या अपनी ही ऐश में पड़े रहते हो।" फिर पेशकार साहब ने पूछा।

"ख़ूब करते हैं पेशकार साहब ! खातिरदारी में आपके छोटे भाई को ख़ुदा ने आपके जैसा ही कलेजा देकर भेजा है।" लीले पहलवान का एक पट्ठा बोला।

पेशकार रामदयाल मुस्कुरा कर बैठे ही थे कि सामने से दो थाने के काँस्टेबिल आ गये और पेशकार साहब को देख कर दोनों ने लम्बा सलाम झुकाया।

"आओ बैठो दामोदर पंडित और इन तुम्हारे साथी का क्या नाम है ? अभी अभी आये हैं यह शायद थाने में ?" पेशकार रामदयाल ने कहा।

"इसी हफ्ते इलाहाबाद से बदल कर आये हैं।" दामोदर पंडित बोले।

"तो भय्यन हैं। कहो भय्यन तुम्हार जिया लागत है कि नहीं हमार दिसवा में ? इलाहबदवा का चना-चबैना कुछ मिल जात है की नाहीं !" मुस्कराकर पेशकार साहब ने पूछा।

"जब तुम्हार मेहर होय सरकार तो काहे नाहीं मिलत ! हमार दिसवा के दो और भी भय्यन हैं हमार थनवा में।" नया काँस्टेबिल बोला।

"हरदयाल, इन लोगों के लिए दो गिलास दूध लाओ और दो-दो पराँठे भी सिकवाते लाना। ज़रा खातिर कर दिया करो इनकी। तुम्हारे इलाके के अफ़सर हैं ये।" पेशकार साहब हरदयाल की तरफ मुँह करके बोले।

"अभी लाया।" कह कर हरदयाल फुर्ती के साथ गाँव की तरफ़ लपका।

इसके बाद थाने के बारे में पेशकार साहब ने काँस्टेबिलों से गुफ्तगू की और निहायत प्यार के साथ पूछा, "कैसी कुछ आमदनी हो जाती है पंडित ?"

"सब आपकी मेहरबानी है पेशकार साहब ! इधर लोग-बाग कुछ ज्यादा बदमाश होते जा रहे हैं। पैसा किसी की गाँठ से निकालने में काफ़ी दिक्कत होती है। साले दस नंबरी बदमाश पिटना पसंद करते हैं, जेलखाने जाना पसंद करते हैं, लेकिन पैसा देना पसंद नहीं करते।"

"और उनके घरों की क्या हालतें हैं ?" पेशकार साहब ने पूछा ।

"हालतें क्या बतायें सरकार ! औरतें तो घरों में ज़ेवर पहने बैठी रहती हैं और उनके शरीर पर फटे चीथड़े भी नज़र नहीं आते ।"

"बड़े हरामखोर हैं । रामदयाल ने ऐसे बदमाशों की औरतों को घरों के अन्दर से बाहर घसीट कर सरे आम उनके ज़ेवर उतरवा लिये हैं अपनी काँस्टेबिली के ज़माने में । लेकिन आज ज़माना बदल गया है दामोदर पंडित ! ज़रा फूँक-फूँक कर ही क़दम रखना चाहिए ।"

"आप ठीक फरमाते हैं पेशकार साहब ! जरा-ज़रा सी बातें अखबारों में छप जाती हैं । ये अखबार वाले भी बदमाश पता नहीं कहाँ-कहाँ फैले हुए हैं । मेरा तो ख़याल पड़ता है सरकार ये सब इन पाजी काँग्रेसियों की ही बदमाशी है ।"

'तुम्हारा ख़याल बहुत हद तक ठीक है दामोदर पंडित ! अब तुम लोग जरा इन बदमाशों पर सख़्ती कम करनी शुरू कर दो । इन्हें अपने हाथों में ले-लो, और इनसे कहो कि ज़रा हिम्मत से काम लें । आप भी कमायें और तुम लोगों की भी भेंट-पूजा करें ।"

दामोदर पंडित पेशकार रामदयाल के मुँह को गहरी नजर से देखते हुए बोले, "पेशकार साहब बात तो आपने लाख रुपये की कह दी । आख़िर क्यों हम लोग इन दस नम्बरी बदमाशों से दुश्मनी मोल लें और अपनी जान खतरे में डालें । रात-बिरात हमें गश्त लगानी पड़ती है । अगर कहीं, परमात्मा बुरा वक़्त न लाये, हमें कल-कलाँ को ये बदमाश मार डालें, तो हमारे बच्चों का क्या बनेगा ? उन्हें कौन खाने-पीने को देगा ?"

"मेरा मतलब यही है दामोदर पंडित ! आदमी को पहले अपनी हिफ़ाज़त, अपनी आमदनी, अपने रौब-दौब और अपनी बात का ख़याल रखना चाहिए । बाकी सब तो दुनियाँ के झंझट हैं, चलते ही जाते हैं और चलते ही जायेंगे । दुनियाँ की हिफ़ाजत का तुमने ठेका तो नहीं बदा ।"

दामोदर पंडित को पेशकार रामदयाल की बातों में आज वह गूढ़ ज्ञान मिला जो उन्हें कई बार रामायण का पाठ करने में भी नहीं मिला । दामोदर पंडित ने सबके सामने उठकर पेशकार रामदयाल के पैर छूते हुए कहा, 'पेश-कार साहब ! अफ़सर बहुत देखे हैं लेकिन आप से सब नीचे ही हैं । सब अपने-अपने मतलब की बातें कहते हैं, लेकिन आपने जो बात आज कही है वह ग़रीब काँस्टेबिल के मतलब की बात है, उसकी हिफ़ाजत की बात है, उसकी आमदनी बढ़ने की बात है ।"

उसी समय हरदयाल एक बाल्टी में पाँच-छै सेर गर्म दूध लेकर आ

पहुँचा और दो लम्बे-लम्बे गिलास भर कर दोनों काँस्टेबिलों के हाथों में दे दिये। फिर बगल से ततने में बँधे आठ पराँठे खोले और उनमें से चार-चार पर आम के अचार की दो-दो लम्बी फाँकें रख कर भी उन्हें खाने के लिए दीं।

दोनों काँस्टेबिलों ने छिक कर मूँछों पर ताव दिया और फिर पेशकार साहब को पालागन करके दोनों ने अपनी राइफलें सँभालीं।

"आज गश्त लम्बा मालूम पड़ता है।" पेशकार रामदयाल ने पूछा।

"सरकार परसों पास के मौजे में एक डकैती पड़ गई है; इसलिए जरा सरगर्मी दिखाई जा रही है।" दामोदर पंडित ने कहा।

"डकैती किस के यहाँ पड़ गई? ऐसा नाँवा दबाये इस देहात में कौन बैठा है दामोदर पंडित!"

"नाँवें की बात मत पूछो पेशकार साहब! एक सुनार के घर पर डाका पड़ा है। सुनार ने लिखाया है कि तीन धड़ी सोना डकैती में गया है।"

"तीन धड़ी सोना!" आश्चर्यचकित होकर पेशकार साहब ने सुना और भँवें चढ़ाते हुए बोले, "हम तो समझ रहे थे कि नाँवा शहरों में ही है, लेकिन दामोदर पंडित तुम्हारे कहने के मुताबिक तो आज कल नाँवा देहात में सिमट आया है।"

"सिमटता कैसे नहीं सरकार! दो-दो तीन-तीन सेर का कनक बेचा है गाँव वालों ने। देखते नहीं हो चमारियाँ भी झमाझम करती फिरती हैं। सिल्लों-ही-सिल्लों के अनाज में सोने की चीजें गढ़वा लेती हैं और फिर सुनार राजा के तो गहरे ही हैं। जिस सुनार के घर डाका पड़ा है, इसके बाप को कभी दो वख्त खाना भी नसीब नहीं होता था।" दामोदर पंडित बोले।

"तो यों कहो कि हरामजादे ने लोगों की चीजों में खोट मिला-मिला कर पैसा पैदा किया है। अच्छा ही हुआ जो डाके वालों ने उसका छटी तक का खाया-पीया सब निकाल लिया।" पेशकार साहब बोले।

"निकाल सब लिया भय्या!" एक दस नम्बरी गाँव का, रिश्ते का पेशकार साहब का भय्या, पास में खेत के डौले पर सुधर कर बैठते हुए बोला, "और सुनारिन की भी वह दुरगत की कि याद ही रखेगी साली! ऐसी ठुमक-ठुमक कर चलती थी खेमखाप का लेंहगा पहन कर कूल्हों पर सोने की तगड़ी लटकाकर, गले में तिमौहरा, पंचमौहरा, सतमौहरा और जाने कैसे-कैसे हार लटकाती थी। गाँव की बहू-बेटियों को कुछ बदती ही नहीं थी अपने सामने। जब डाके वालों ने छाती पर बंदूक रखी तो घिघिया-घिघिया कर सब चीजें अपने यारों को दे दीं।"

दीना दस नम्बरी की बात सुन कर दामोदर पंडित बोले, "ठीक

कह रहा है दीना भय्या ! उसकी चाल देख कर सारे गाँव को हसद होने लगी थी पेशकार साहब ! थोड़े ही दिन में कितना सोना इकट्ठा हो गया था उसके पास ?"

"फिर हो जायगा, इकट्ठा होने में देर नहीं लगेगी दामोदर पंडित, लेकिन यह बताओ कि कुछ तुम लोगों के पैर तुड़ाने का भी नतीजा निकला या यूँ ही जूतियाँ चटखा रहे हो।" पेशकार साहब ने पूछा।

इस पर दीना ठहाका मार कर ज़ोर से हँस दिया और फिर पेशकार साहब की तरफ़ मुखातिब होकर बोला, "पेशकार भय्या ! बेचारे दामोदर पंडित को तो हम जैसे गरीब का ही गला दबोचना आता है। जहाँ मोटी रकमें कटती हैं वहाँ बेचारे दामोदर पंडित को कौन पूछता है।"

पेशकार रामदयाल मुस्कुरा कर बोले, "क्या वाक़ई बड़ी-बड़ी आमदनियों में से काँस्टेबिलों को हक़ नहीं मिलता दामोदर पंडित ?"

दामोदर पंडित सहम गये कि आख़िर अपने अफ़सर की बुराई वह कैसे कर डालें पेशकार साहब से। फिर भी दबी ज़बान से इतना कह ही दिया, "सरकार हम उसी में ख़ुश रहते हैं जो हमें अफ़सर लोग कमवा देते हैं। यह ठीक है कि हमारे अफसर बड़ी रकमें ख़ुद चटाल जाते हैं लेकिन छोटी रक़मों से वे कोई वास्ता नहीं रखते।"

पेशकार रामदयाल अपने गाँव में आज ठीक तीन वर्ष बाद आये हैं और वह भी एक रात के लिए। उन्हीं दो-चार घंटों में गाँव के सब दस नम्बरी बदमाशों ने पेशकार साहब को आकर सलाम झुकाया और सभी को पेशकार साहब ने आश्वासन दिया कि वह उनके लिए इलाक़े के दारोगा को बोलेंगे।

काँस्टेबिल लोग अपनी-अपनी राइफ़लें कंधों पर रख कर सीधे उस गाँव की बाट पर लग लिये जिसमें डकैती पड़ी थी और पेशकार रामदयाल ने अपने सफ़र के कपड़े उतार डाले।

हरदयाल ने लपक कर कपड़े सँभालते हुए कहा, "एक गिलास दूध आप भी पी लीजिये। सफ़र की थकान चढ़ रही होगी शरीर पर, उतर जायगी।"

"हाँ-हाँ पेशकार साहब ! एक गिलास दूध तो जरूर पी लीजिये।" लीले पहलवान का एक पट्ठा बोला।

"पी लूँगा मैं तो, लेकिन तुम लोग बताओ, कुछ ख़ातिरदारी भी हुई तुम लोगों की गाँव में या नहीं। कुछ खाने-पीने को भी मिला या सूखे ही डंड पेल रहे हो ?"

"सूखे डंड आपके राज में कभी पेले हैं क्या पेशकार साहब, जो यहाँ

पेलने पड़ती ? खुले जंगल में चर रहे हैं यहाँ तो ? कोई आँख मिलाने वाला भी नहीं है। पूरे शौक में सींक खड़ी करदी है आपके भाई हरदयाल ने।" पट्ठा बोला।

पेशकार रामदयाल मुस्कुराये उसकी बात सुनकर। "हरदयाल ने खड़ी की है या तुम लोगों ने। हरदयाल तो हमारी माँ की कोख से जाने कैसे एक लाला पैदा हो गया है।" और फिर हरदयाल की तरफ मुखातिब होकर बोले, "क्यों हरदयाल ! अब कुछ-कुछ हिम्मत बँधने लगी होगी गाँव में ? अब तो डर नहीं लगता तुझे चचा और ताऊ के लड़कों का। कुछ-कुछ तो उनका भी दिमाग़ ठीक हो गया होगा ?"

"कुछ-कुछ नहीं, बिल्कुल ठीक हो गया पेशकार साहब !" तेल से चमकती हुई अपनी रान पर खुम ठोकते हुए एक पट्ठा बोला 'इसे देख कर भीजी बिल्ली की तरह सिकुड़ जाते हैं और जब मैं सीना निकाल कर चलता हूँ तो सारा गाँव-का-गाँव दहल उठता है पेशकार साहब ! फिर आपकी दुआ से अब तो गाँव के जितने भी अपने को बदमाश कहने वाले हैं, सभी सुबह-शाम आकर सलाम झुकाते हैं।"

हरदयाल जंगल से ढोरों को लेकर गाँव की तरफ़ चला गया और कुए पर लीले पहलवान के दो पट्ठे और पेशकार साहब ही रह गये।

पेशकार रामदयाल ने अब एक गिलास दूध पिया और मूढ़े पर बैठ कर एक पट्ठे से बोले, "ज़रा पैरों की मालिश तो कर दे।" एक के बजाय दोनों पट्ठे पेशकार साहब के दोनों पैरों पर झुक-झुक कर मालिश करने को जुट गये।

पेशकार रामदयाल फिर मुस्करा कर उन दोनों की साफ़ खोपड़ियों पर हाथ फेरते हुए बोले, "और सब कुछ तो तुम लोगों को यहाँ गाँव में मिल गया होगा, लेकिन एक चीज़ की शायद कमी रही हो।"

गर्दन नीची ही किये हुए एक पट्ठा, जो ज़रा मसखरा भी था, बोला, "पेशकार साहब और चीजों की चाहे कमी भी रही, लेकिन उस चीज़ की तो क़तन कमी नहीं रही आपके गाँव में। निहायत सस्ती और निहायत उम्दा।"

"तुम लोग बड़े बदमाश हो। साँठ गाँठ लगा ही लेते हो।" पेशकार साहब बोले।

"हुज़ूर हम क्या लगाते हैं, वह तो आप-से-आप लग जाती है। खुदा जाने जो एक बार भी हमने किसी औरत को बद नज़र से देखा हो। सब को माँ-बहन की तरह देखते हैं। लेकिन मेहरबान औरतों को भी खुदा ने दुनियाँ से नापैद नहीं कर दिया है। खुदा सब की खबर लेने वाला है। दुनियाँ

में ब्याहे-बरे अगर उसने पैदा किये हैं तो हम जैसे कुँवारों को भी उसी ने पैदा किया है।"

"अबे खाली हवाई मत छाँट हम से। क्या वाक़ई यहाँ की ज़िन्दगी में भी कुछ मज़ा है। वालिद साहब के बारे में लोग-बाग कहते हैं कि वह बड़े रंगीन आदमी थे। बड़े गरीब परवर थे और बेचारी गरीब औरतों पर निहायत मेहरबान रहते थे।" पेशकार रामदयाल बोले।

"आपके वालिद के सभी गुण आपके छोटे भाई में मौजूद हैं। क्या तारीफ़ करूँ आपके छोटे भाई की ? किसी भी ग़रीब का दुःख देखा नहीं जाता इनसे। बड़े ही रहमदिल हैं।"

सुनकर पेशकार साहब ने दिल में कहा, 'बिगड़ता जा रहा है हरदयाल। स्कूल से उठा कर गाँव में बसाया तो यहाँ भी तिरछे-तिरछे ही पेंतरे काट रहा है। कमाई करके ऐश करना कोई गुनाह नहीं, लेकिन दूसरों की कमाई पर ऐश करना गुनाह है।"

उसी समय सामने से एक औरत आती दिखाई दी। मस्ती के साथ इधर को ही बढ़ी चली आ रही थी। लाल गोटेदार दामन, पीला ओढ़ना और उस पर कंटीला पीला गोटा लगा था।

पेशकार रामदयाल ने पूछा। "यह कौन औरत है ?"

"रामदुलारी है पेशकार साहब !"

"अबे रामदुलारी कौन ?"

"यह सब कुछ मैं नहीं जानता, लेकिन रामदुलारी है बहुत ही हँसमुख और मेहरबान औरत। किसी का दिल दुखाना तो बेचारी ने सीखा ही नहीं। सब के काम आने वाली औरत है। ऐसी नेक दिल औरत शहर में आपको नहीं मिलेगी पेशकार साहब !"

रामदुलारी अपनी मस्तानी अदा के साथ सीधी बढ़ती हुई पेशकार रामदयाल के मूढ़े के पास आ गई और निहायत निर्भीक और प्यार-भरे स्वर में बोली, "अफ़सर बन कर देवर जी गाँव कू ही भूल गये। ऐसी भी कहा नौकरी कि घर-बार ही छोड़ दिया।"

पेशकार रामदयाल रामदुलारी को अब भी न पहचान पाये।

इसी समय हरदयाल ढोरों को गाँव में करके वापस लौट आया और अपने भाई साहब के मूढ़े के पास खड़ा होकर बोला, "दीना की भावज है भय्या ! पहचानी नहीं तुमने।"

"अफ़सर बन गये देवर जी ! अब क्यूँ पिछानने लगे हैं ? जा दिन हमें अपने भय्या के साथ व्यहन गये, ता दिन तौ खूब पिछानै हे। अब अफ़सरी

में काहे का पिछानना पड़ा है ।" पेशकार रामदयाल के कुछ कहने से पूर्व ही रामदुलारी मुस्कुराती हुई बीच में बोल उठी ।

ठीक से पहचान तो पेशकार साहब अब भी न पाये लेकिन फिर भी उन्होंने रामदुलारी को यह जाहिर न होने दिया कि वह उसे नहीं पहचानते और जिस मस्ती के साथ रामदुलारी ने बातें कीं उससे भी ज़रा ऊपरी अन्दाज़ के साथ पेशकार रामदयाल बोले, "अरे ! भावज आई हैं हमारी । हमें क्या पता था कि हमारी भावज ने हमें अब तक नहीं भुलाया ।"

तुरन्त ही पेशकार रामदयाल को दीना के बड़े भाई की शादी की याद आ गई । उनके चेहरे पर पुरानी याद करके एक ख़ुशी की मुस्कराती हुई रेखा खिच गई । वह ज़रा लहजे के साथ बोले, 'भाभी याद है वह स्टेशन की प्याऊ वाली बात । तुमने हमसे पानी माँगा था और कहा था—लाला जी प्यास से प्राण निकले जात हैं ।"

"तौ तुम्हीं ने पानी प्याया हा देवर जी ! प्यासी भाभी की तम नै ही जान बचाई ही । वा दिन की याद तुमसे पीछे कई बिरियाँ आई है देवरजी !" रामदुलारी बोली ।

"वाह भाई वाह ! ख़ूब याद है तुम्हें तो भाभी ! कमाल कर दिया तुमने ! हमें क्या पता था कि गाँव में भी हमें याद करने वाली कोई भाभी बैठी है । तुम्हारी देवरानी का जब से अन्तकाल हुआ है, औरत नाम की चीज़ ही जिन्दगी से निकल गई ।" दर्दनाक आवाज़ में पेशकार रामदयाल ने कहा ।

देवरानी की बात बीच में आ जाने से रामदुलारी ज़रा सहम कर बोली 'शीला रानी कू तै तम ऐसे ले गये जैसै वा देवी के दरसन के लायक मैं नाँ ही ।" रामदुलारी ने दिल से दर्द ज़ाहिर करते हुए सहानुभूति के साथ कहा ।

पेशकार रामदयाल को शीला की याद आ गई । शीला का वह तपेदिक की बीमारी में पीला पड़ा चेहरा, जिसे बीमारी से मुक्त कंधारी अनार की लाली लिए पेशकार रामदयाल की आँखें देखना चाहती थीं । इस ख्वाब को पूरा करने के लिए पेशकार रामदयाल ने अनाप-शनाप कमाया और बीमरी पर सर्फ किया, लेकिन कोई दवा कारगर न हो पाई ।

पेशकार रामदयाल थोड़ी देर में बोले, "भाभी थी तो वह सच्ची देवी ही । हमारी पेशकारी तो उसी की पूजा का फल है । राधा-कृष्ण ने उसी की पूजा पर मुग्ध होकर उसे मेरी पेशकारी की ख़ुशी प्रदान की थी ।" आगे एक शब्द भी पेशकार साहब न बोल सके ।

रामदुलारी धीरे-धीरे पेशकार साहब के पास वाले मूढ़े पर बैठ गई और माथे पर हाथ रख लिया। वैसे दुःख जरूर था रामदुलारी को शीला के मर जाने का, क्योंकि शीला ने उस गाँव में आकर कभी किसी का बुरा नहीं चिता, लेकिन उसके प्रदर्शन में गाम्भीर्य की अपेक्षा नाटकीयता और बनावट ही अधिक थी। शीला के मरने की बात पुरानी पड़ चुकी थी।

रामदुलारी बात का रुख काटती हुई बोली, "अब तौ देवरजी कू खाने-पकाने की भी दिक्कत ही रहती होगी।"

"रहती तो है ही भाभी लेकिन घर वाली के बिना कौन दिक्कत दूर कर सकता है ? आज यहाँ आ गये हैं तो भाभी ने भी आकर खबर ले ली। लेकिन जब देवर बेचारा शहर में अकेला भूखा बैठा रहता है तब के बारे में भाभी कभी नहीं सोचती।"

रामदुलारी को पता नहीं था कि पेशकार रामदयाल इतनी जल्दी इतने ग़मगीन वातावरण से फलाँग मार कर यों कूद आयेंगे।

दोनों का मुस्कुराता हुआ चेहरा आमने-सामने हो गया।

लीले पहलवान के पट्ठे और छोटा भाई हरदयाल जंगल से गाँव की तरफ़ चल गये।

गाँव से दो फर्लांग की दूरी पर पेशकार रामदयाल का यह पक्का कुआ है। इसके पूर्व में उनका जंगल फैला हुआ है; एक दम हरा-भरा। सरसों के पीले फूलों की चादर पर सुफ़ैद तरे के फूलों की पट्टियाँ बुनी हुई आँखों के सामने लहरा रही हैं!

सूरज की आखरी किरणें भी विलीन हो चुकी हैं। दिन का प्रकाश रात्रि के अंधकार में सिमटता जा रहा है। पेड़ों पर पक्षी दिन भर की उड़ानों के बाद, अपने बाल-बच्चों में लौट रहे हैं।

इसी अंधकार की उजली-धुँधली चादर पर रामदुलारी और पेशकार साहब की नजरें गईं, दोनों ने एक दूसरे को खूब जी भर कर देखा, मुस्कुराते चाँद की चाँदनी में देखा और सोचा भी कि क्या वे एक दूसरे के सहायक हो सकते हैं।

पेशकार रामदयाल बोले, "भाभी बता, गाँव में आने पर रोटी कौन पका कर देगा ? हरदयाल पर तो मुझे इतना भी यकीन नहीं कि वह एक दिन के लिए भी मुझे बिठा कर खिला सकता है।"

"रोटी की कौन बात करत हैं देवर जी, का भाभी या लायक भी नहीं है तिहारी !" मर्दाना आवाज़ में रामदुलारी ने कहा।

पेशकार रामदयाल मन में बोले, 'करारी औरत है। काम दे सकती

है।' और ऊपर से जरा इठलाते हुए बोले, "तो भाभी तेरे देवर रामदयाल को गाँव में आने में और क्या दिक्कत हो सकती है ?"

रामदुलारी के मन का मिठास बह कर उसके हलक से होता हुआ दिल और दिमाग तक पहुँच गया। वह मंत्र-मुग्ध सी चन्दा की चाँदना में बैठी रही। पेशकार रामदयाल इधर उधर की बातें करते रहे।

पेशकार रामदयाल ने आज पतंग को इससे ज्यादा ढील देना पसन्द नहीं किया और एक दम पेंतरा काट कर पाँच रुपये का नोट बढ़ाते हुए बोले, "अच्छा भाभी लो यह बच्चों की मिठाई के लिए लो। इस बार जब आऊँगा तो भाभी के लिए मेरठ के कुछ और तोफे लाऊँगा।"

रामदुलारी चुपचाप खड़ी हो गई और उसने पाँच रुपये का नोट संभाल कर माँथे से लगाया और अपने देवर को लाख बार आशीश देकर परमात्मा से उसकी बड़ी उम्र के लिए प्रार्थना की।

पाँच रुपये एक रक़म है रामदुलारी के लिए। उसका दामाद उसकी लड़की को लेने आया हुआ है। दूसरे दिन सुबह वह लड़की को ले जाने की ज़िद कर रहा है और उसका टीका करने के लिए घर में दो रुपये का नोट नहीं है। एक नोट है लेकिन एक नोट से आज तक रामदुलारी ने कभी अपने दामाद का टीका किया नहीं। उसकी बिरादरी में दूसरे ही दिन नाँक कटने जा रही थी। उस पूरी बिरादरी के बीच कटने वाली नाँक को पेशकार रामदयाल ने काट कर अपने हाथ में ले लिया। कितनी जगह फिर कर खराब होती हुई चीज़ को उन्होंने मुट्ठी बाँध कर रख लिया, यह क्या कोई काम ही नहीं है।

पेशकार रामदयाल रात को एकांत जंगल में अपनी खटिया डाल कर लेट गये और उनके ऊपर आस्मान में तारों की चाँदनी बिछी हुई है। ये तारे सभी टिमटिमा-टिमटिमा कर अपनी भाषा लिखते और मिटा देते हैं।

इसी लिखने और मिटाने को देख कर पेशकार रामदयाल ने सोचा, 'यह सब परमात्मा का रोजनामचा लिखा जा रहा है। जो कुछ तुम करते हैं वह उसमें उतर आता है।"

जब रामदुलारी चलने लगी तो पेशकार रामदयाल मुस्करा कर बोले, "यह संजीदगी चेहरे पर नहीं आनी चाहिए रामदुलारी! उसी मस्ती के साथ आया करो और उसी मस्ती के साथ जाया करो, जिस मस्ती के साथ आई थीं।"

अन्त चलते-चलते एक तीर और मार दिया पेशकार रामदयाल ने, "दीना के बारे में भी मैं थाने के दीवान को खास तौर पर बोल कर जाऊँगा।"

"तुम्हारा बच्चा है वह भी। बड़े काम का लौंडा है देवर जो ! तुम्हारे पास आ पड़ेगा तो कुछ सुधर ही जायगा।" रामदुलारी बोली।

पेशकार रामदयाल को अपनी ग्राम-यात्रा बहुत सफल मालूम दी। गाँव में रहने पर जिन्दगी की जरूरतों और गाँव के मिलने वाले साधनों का समन्वय कैसे हो सकता है, यह पाठ पेशकार रामदयाल पढ़ गये।

जिन्दगी की तीसरी मंजिल पर पहुँच कर पेशकार रामदयाल को क़दम बढ़ाना है, और इसे वह इतनी लापरवाही से नहीं बढ़ा सकते।

: २२ :

पेशकार रामदयाल गाँव से दूसरे दिन मेरठ आगये। आज पेशकार साहब ने देखा कि एस. पी. हामिद अली साहब का चेहरा दफ्तर में आते समय उतरा हुआ है। उनके चेहरे का रंग उड़ा हुआ है और वह पेशकार साहब की तरफ़ ऐसे देख रहे हैं जैसे कोई ख़ूंखार भेड़िया लोहे के सींखचों में बन्द अपने शिकार को देखता है।

जरूरी कागजों पर दस्ताक्षर करके हामिद अली साहब खड़े हो गये और बोले, "आज हमारी तबियत खराब है। हम कोठी जा रहे हैं। कोई जरूरी बात हो तो इत्तला दे देना।"

"तबियत आज कैसे खराब हो गई हुजूर की? मौसम बदल रहा है। मेरठ के मच्छर भी बड़े खतरनाक हैं हुज़ूर! ऐसा डंक मारते हैं कि अच्छी-अच्छी तबियतें ख़राब हो जाती हैं।"

पेशकार साहब के व्यंग्य को समझ कर भी नासमझ बनते हुए हामिद अली साहब बोले, "मच्छर वग़ैरा की बात नहीं है, यूँही मचली सी आ रही है आज। सिर दुखा-दुखा हो रहा है।"

"हुज़ूर सर से ज्यादा काम लेते हैं। इसलिए बेचारा दुखने लगता है। क़ुसूर ही क्या है सर का। ख़ादिम से काम लिया कीजिये! सरकार ने ख़ादिम दिया है आपको। सिर की सब दुखन जाती रहेगी।"

एस. पी. हामिद अली साहब ने मन में सोचा, "कैसा मक्कार और हरामज़ादा क़िस्म का बदमाश है। ख़ुदा ने किस पाजी से पाला डाल दिया। सोचा था तरक्की पर जाकर आमदनी बढ़ेगी और परेशानी भी कम होगी, लेकिन इस पाजी ने ऐसा नाक में दम किया है कि एक इंच भी सरकने नहीं देता।

यह चाहता है कि बेवक़ूफ़ बन कर अपने को इस की अक्ल के हवाले कर दूँ। कितना चालबाज आदमी है? हरफ़न मौला है। साहब नहीं तो साहब की मेमसाहब पर इसने अपना रंग जमा लिया है।"

हामिद अली साहब दफ्तर से कोठी चले गये।

पेशकार साहब एस. पी. साहब के दफ्तर से बाहर निकलते ही जरा अन्दाज़ के साथ मुस्कराये और उनकी इस मुस्कराहट का मज़ा वहाँ के सभी अर्दलियों ने लिया। दो चार थानों के दारोग़ा और दीवान जो आज पेशी में मेरठ आये हुए थे, उन्होंने भी एस. पी. साहब के उतरे हुए चेहरे को देखा।

पेशकार साहब के रौब-दौब का प्रभाव अब और भी तीखा होता चला जा रहा है। कोई भी वहाँ का ऐसा आदमी नहीं है जो उनसे प्रभावित न हो।

एस. पी. साहब के जाते ही कोतवाल साहब आ पहुँचे और पेशकार रामदयाल ने खड़े होकर तपाक के साथ उनका स्वागत किया। फिर दोनों वहाँ से चलकर रेस्टोरेन्ट में आ गये और कुर्सी पर बैठते ही पेशकार साहब ने हाथ मिला कर कहा, "हवाइयाँ उड़ रहीं हैं खां साहब के मुँह पर। आज जरा हामिदअली साहब की शक्ल देखने की चीज़ है कोतवाल साहब !"

"मैं पहले ही देख चुका हूँ। सुबह-ही-सुबह कोतवाली में आये थे। कुछ कहना चाहते थे मुझसे, लेकिन न जाने क्यों वापस चले गये, एक शब्द भी ज़बान पर नहीं आया।"

"हो सकता है कलक्टर साहब को दी जाने वाली दावत की भनक उनके कानों में पड़ गई हो।"

"बहुत मुमकिन है और यह भी हो सकता है कि कलक्टर साहब से जो आपने कह दिया है कि एस. पी. साहब गाने-बजाने के ख़िलाफ़ हैं सो उस पर कुद्ध सर कलक्टर साहब ने कुछ डाट-फटकार कर दी हो।" कासिम मिरज़ा बोले।

"जो होगा, देखा जायगा। जब टक्कर ही लेनी है तो फिर घबराने की क्या बात है ?"

"क़ासिम मिरज़ा घबराने वाला इन्सान नहीं है पेशकार साहब और जब एक बार कह दिया तो कह दिया। अब हामिद अली तो क्या अगर खुदा से भी मुकाबला करना होगा तो कासिम मिरज़ा पेशकार रामदयाल का ही साथ देगा।"सीना उभार कर कासिम मिरजा बोले।

पेशकार रामदयाल की आखें एक टक कासिम मिरजा के चेहरे पर जम कर रह गईं। उनकी आँखों से दो बूँद आँसू बाहर निकल आये और कुर्सी पर पीछे तकिया लगाते हुए बोले, 'कोतवाल साहब ! पेशकार रामदयाल आपके याराने की क़द्र करता है। आप जैसा दोस्त पाकर मै अपनी ज़िन्दगी सफल समझता हूँ। याराने में बड़ी भारी ताक़त है। यह एस. पी. बेचारा क्या खाकर हमारे सामने डटेगा ? पेशकार रामदयाल को अभिमान है कि वह इसका मुकाबला अपने जाती फ़ायदे के लिए नहीं कर रहा, बल्कि पूरे अमले भर की पुलिस के अफ़सरों, दारोगाओं, दीवान और कांस्टेबिलों के हकूकों की रक्षा के लिए कर रहा है।"

"आपका कहना बजा है पेशकार साहब ! यह मरदूद पूरे जिले भर की आमदनी को अकेला डकार जाना चाहता है। ऐसे खुदगर्ज अफसर का

डटकर मुक़ाबला करना चाहिए।"

"आप जैसे नेकनीयत अफ़सर हम लोगों के साथ हैं तो इनके दाँत खट्टे करने के लिए अकेला रामदयाल ही काफ़ी है कोतवाल साहब !"

"इसमें क्या शक है। अभी तो कलक्टर साहब ने आपके कारनामे देखे ही नहीं हैं। जब उनके सामने आपके पुराने कारनामे आयेंगे तो वह तो आप-से-आप आपकी तरफ़ झुक जायेंगे।"

कलक्टर साहब के इस्तक़बाल में पुलिस ने एक शानदर जशन का आयोजन किया और यह जशन बिला पुलिस एस. पी. साहब की सलाह के आयोजित किया गया। एस. पी. हामिद अली साहब को जशन का निमंत्रण-पत्र उसी दिन मिला जिस दिन जशन मनाया जाने वाला था।

हामिद अली साहब उसे पढ़कर आग बगूला हो उठे। उनके तन-बदन से मान-हानि के शोले निकलने लगे। उन्हें बैठे-बैठे पसीना आगया।

उनका इतना बड़ा अपमान मातहतों द्वारा कभी नहीं किया गया था।

हादिम अली साहब ने निमंत्रण-पत्र को एक बार फिर से पढ़ा और देखा कि उसमें नीचे कई लोगों के नाम छपे थे। उनमें कासिम मिरज़ा और पेशकार रामदयाल के नाम भी थे। ये दोनों ही नाम उनके दिल की जलन के विशेष कारण बने।

लेकिन जशन कलक्टर साहब के स्वागत में है, इसलिए ऊपर से नाखुशी ज़ाहिर करने का साहस भी हामिद अली साहब में न हुआ।

जशन खूब शान के साथ मनाया गया और वह ठाट का मुजरा पेशकार रामदयाल ने कराया कि देखने वालों से यही कहते बना, "कमाल कर दिया पेशकार साहब ने। हुस्न का बाज़ार-का-बाजार ही उठा कर जशन में पेश कर दिया।"

"बोत बरिया जेशन का इन्टज़ाम किया ऐ टुमने पेशकार रामडेयाल !" कलक्टर साहब बोले और मेम साहब तो लट्टू ही हो गईं जशन को देख कर। यों तो हर ज़िले में जहाँ भी कलक्टर साहब जाते थे जशन मनाया जाता था, लेकिन पेशकार रामदयाल का यह जशन उन पहले जशनों जैसा नहीं है। इसमें और उनमें आकाश-पाताल का अन्तर है।

एस. पी. हामिद अली से कलेक्टर साहब बोले, 'वेल एस. पी. शाब टुमको जेशन केशा लगा। अमारा खेयाल ऐ कि टुमको बोट पेशंड आया ओगा। बराबर कूबशूरट नाचने वाला आर्टिश्ट लाया ऐ पेशकार रामडेयाल ! पेशकार रामडेयाल 'आर्ट लावर'[१] मालूम डेटा ऐ।"

---

१. कला-प्रेमी।

पेशकार रामदयाल की इस तरह कलक्टर साहब से तारीफ़ सुनकर एस. पी. का कलेजा भुनकर कबाव बन गया। लेकिन चेहरे पर उनके दिल का सदमा अपना असर नहीं जमा सका।

दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोले, "शहर की तवायफें इकट्ठी करली हैं साहब बहादुर !"

"बोत बरिया इकट्ठा किया ऐ ! तुमारा येइ मटलब ऐ।" कलक्टर साहब भी मन में हामिद अली साहब की अन्दरूनी बात को समझते हुए बोले।

कलक्टर साहब को पेशकार रामदयाल के वे शब्द याद थे जब उन्होंने हाथ जोड़कर कलक्टर साहब से कहा था, "सरकार ! हम क्या जशन मनायें ? हमारे ज़िले के एस. पी. साहब किसी जशन से खुश नहीं होते।"

इस पर कलक्टर साहब ने कहा था, "तो टुमारा मेटलब ऐ कि एस. पी. शाब अमारा जेशन शे वी खुश नाई ओगा।"

"मतलब तो यही है हुजूर ! लेकिन अगर हुजूर का इशारा पा जाऊँ तो वह जशन दिखाऊँ कि जैसा सरकार ने आज तक न देखा हो।"

"ऐशा बाट ऐ पेशकार रामडेयाल। टव टुम जेरूर डेकाओ ! एश. पी. अमिडली का कोई परवा टुम मेट केरो। अम ऐसा एश. पी. नेई माँगटा जो जेशन जैशी बरिया बाटों को मेना करटा ऐ।"

"बहुत अच्छा हुजूर लेकिन मेरी नौकरी के आप मालिक हैं। वैसे मैं नौकरी की परवाह नहीं करता। साहब बहादुर के कहने पर अगर एस. पी. साहब मेरी हिस्ट्री-शीट पर कोई ब्लैक रिमार्क[१] भी दे दें तब भी मुझे कोई फ़िक्र नहीं।"

"इश बाट का टुम परवा मेट करो। कूब जोर-शोर का जेशन मेनाओ और उशमें एश. पी. शाब को बुलाओ।"

एस. पी. हामिद अली साहब तवायफ़ों से बहुत दूर रहते हैं। उनके बाज़ार में जाना वह अपनी हतक समझते हैं और जहाँ-जहाँ भी जाते हैं तवायफ़ों के बाजार को बढ़ावा नहीं देते।

यहाँ इस जशन को देख-देख कर उनके दिल में जलन पैदा हो रही है।

पेशकार रामदयाल मौका पाकर साहब के पास अकेले में आकर बोले, "सरकार ज़रा अब एस. पी. साहब की शक्ल तो देखिये; देखने के क़ाबिल है। इन्हें जलन हो रही है कि कलक्टर साहब के लिए इतना बड़ा जशन पेशकार रामदयाल ने क्यों किया।"

इतना शोशा छोड़ कर पेशकार साहब फिर शहर कोतवाल कासिम

---

१. बुराई दर्ज करना।

मिरज़ा के पास जा बैठे ।

हामिद अली साहब बाहर पेशाब करने गये थे । वहाँ से लौटकर फिर कलक्टर साहब के पास बैठ गये ।

कलक्टर साहब मुस्कुरा कर बोले, "वेल एश. पी. शाब आपको मुजरा पेशंड नेई आटा ! आप घर का जोरू शेई बेंडा रेना चाटा एं ?"

हामिद अली साहब कलक्टर साहब की इस बात पर लजा से गये । कोई जवाब उनसे देते न बना ।

कलक्टर साहब की मेम साहब मज़ाक को पूरी तरह समझ रही थीं । वह भी मुस्करा कर बोलीं, "वेल ऐश पी शाब अम ऐशा आड़मी का पुरानापन नईं माँगटा, आपको आजाड ओना माँगटा ऐं । अपना जोरू का ग़ुलाम बनना नेई माँगटा ।"

कासिम मिरज़ा और पेशकार साहब की कुर्सियाँ इनसे ज़रा हटकर थीं लेकिन उनके कान यहीं पर लगे थे और वे दोनों ही इन बातों का मज़ा ले रहे थे ।

कासिम साहब पेशकार साहब के कान में बोले, "पेशकार साहब ! आज तो हामिद अली साहब को आपने बुरा फँसा दिया । कलक्टर साहब की मेम साहब तो साहब के भी कान काट रही हैं मज़ाक में ।"

"यह मेम साहब वाक़ई कुछ मजेदार मालूम देतीं हैं । हमारे पुराने एस. पी. साहब की मेम साहब भी ऐसी ही शरारती थीं ।" यह कहते-कहते पेशकार साहब को अपनी पुरानी मेम साहब याद हो आईं और वह तुरन्त स्वप्न से जागृत से होते हुए बोले, "कोतवाल साहब ! मेम तो वह मुटल्ली बड़ी ख़ातरनाक थी । उसके साथ जो मैंने एक वर्ष काटा, वह मेरा ही मन जानता है ।"

"उसकी तो शक्ल भी ख़ातरनाक थी पेशकार साहब ! शराब के नशे की बुलन्दी पर पहुँच कर तो तुम्हें आँखें बन्द कर लेनी होती होंगी ।"

"आपने बिलकुल ठीक फ़रमाया कोतवाल साहब !"

ग़ुलाब का मुजरा झमा-झम, ठुमा-ठुम चल रहा है । ग़ुलाब के इत्र से मैफ़िल मेंहँक रही है । कभी-कभी ख़स की ख़ुशबू उड़ाने का काम करीमख़ करता है ।

एस. पी. हामिद अली को अब अपना पलड़ा इतना हलका मालूम पड़ा कि उन्होंने मन-ही-मन पेशकार रामदयाल के भारीपन को मंजूर किया । 'अफ़सर को अफ़सर रहना चाहिए ।' पेशकार रामदयाल के ये शब्द उनके कानों में गूँ उठे ।

आज का मुजरा क्या रहा, पेशकार रामदयाल की एस. पी. हामिद अली पर विजय का डंका बज गया। एस. पी. साहब को स्वयं अपने मन में लज्जा महसूस हुई, परन्तु उन्होंने कहा किसी से भी एक शब्द नहीं।

दूसरे दिन उन्होंने पेशकार रामदयाल को अपनी कोठी पर बुलाया लेकिन आज पेशकार साहब को बाहर खड़े रहकर इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। दरवाज़े के चपरासी को साहब का हुक्म था कि पेशकार साहब को आते ही अन्दर ले आयें।

यह तबदीली देख कर पेशकार साहब ज़रा सहमे, लेकिन फिर दिल की मज़बूती के साथ अन्दर घुसते चले गये और सीधे जाकर एस. पी. साहब की मेज़ के सामने खड़े हो गये।

पेशकार साहब को देख कर हामिद अली साहब बोले, "बैठिये पेशकार रामदयाल !"

"जी बैठ गया।" कह कर पेशकार साहब पास पड़ी एक कुर्सी खिसका कर उस पर बैठ गये।

"कल जशन तो तुम्हारा खूब रहा।"

"मेरा क्या था उसमें हुजूर ! वह सब तो आपका ही था। आपकी अफ़सरी में यह जशन बड़ा ही शानदार मनाया गया। सब लोग यही कह रहे हैं अमले के। बड़ी तारीफ़ कर रहे हैं आपकी।" निहायत गम्भीरता के साथ पेशकार रामदयाल बोले।

एस. पी. हामिद अली ने पेशकार रामदयाल की आँखों की गहराई में झाँक कर देखा तो उन्हें उनकी तह नज़र नहीं आई। उन्हें अपनी ही आँखों की रोशनी कम पड़ती दिखाई दी।

आज अचानक उनके चेहरे पर मुस्कराहट के आसार दिखाई देने लगे और वह हँसकर बोले, "पेशकार रामदयाल तुम वाक़ई एक ही आदमी हो पूरे ज़िले की पुलिस में। मैंने आज तक अपने अमले के हर आदमी को अपने इशारे पर नचाया है, लेकिन तुम पहले आदमी मिले हो जिसने मेरे सब रास्ते बन्द कर दिये।"

"आप हाकिम हैं हुजूर ! जो चाहें सो कह सकते हैं। पेशकार बेचारा साठ रुपैली का मुलाज़िम भला आपके क्या रास्ते बन्द कर सकता है ? आपने अपने रास्ते खुद बन्द किये हुए हैं सरकार।"

"इसमें कुछ शक नहीं पेशकार रामदयाल ! थोड़ी ज़िद मेरी भी है। इतने बड़े ओहदे पर पहुँच कर तमाम काम खुद नहीं किया जा सकता। लेकिन जिसके हाथों में काम सौंपा जाय उसको पहचान भी तो लेना चाहिए।"

बात का पहलू बदलते हुए हामिद अली साहब बोले ।

पेशकार रामदयाल ने हामिद अली साहब की इस बात का कोई जवाब नहीं दिया । वह चुपचाप सुनते रहे कि आखिर उनका मतलब क्या है ।

'किसी का यकीन करने से पहले उसे ठोक बजा लेना बुरी बात नहीं है पेशकार रामदयाल ! आदमी चार पैसे का कच्ची मिट्टी का घड़ा भी लेता है तो भी उसे ठोक बजा कर देखता है और यहाँ तो पूरी इज्जत, पूरी ताक़त, पूरी जिम्मेदारी को सौंपने की बात है ।"

पेशकार रामदयाल ने यह वाक्य भी निहायत संजीदगी और ठंडे दिल से सुना । लेकिन उनका मन कहता रहा, "देखो तो सही, यह बूढ़ा खुर्रांट मुझ पर क्या फब्तियाँ कसने चला है । हार कर भी मंजूर नहीं करना चाहता कि हार गया । मेरा इमतहान लेने वाला मास्टर बनना चाहता है । मास्टर भी कहीं ऐसे बना जाता है । मेरा मास्टर था मेरा पुराना एस. पी. और मेरी मास्टरनी थी उनकी मेम साहब । उनके बाद तो सब घसखुदे ही आये हैं ।'

एस. पी. हामिद अली साहब धीरे धीरे मुलायम पड़ते जा रहे थे । गुस्से की इतनी ऊँचाई से एकदम खन्दक में कूद पड़ना कोई साधारण बात नहीं थी । ज़रा संभल कर बोले, "पेशकार रामदयाल तुम वाक़ई एक होशियार और अक्लमन्द आदमी हो, लेकिन अभी तुम्हें पुराने आदमियों से काफ़ी कुछ सीखना है ।"

सीखने की बात सुनकर पेशकार रामदयाल के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गई और उन्होंने अपने मन में कहा, 'सीखना नहीं है बेटा ! अभी बहुत कुछ सिखाना है तुम्हें । अभी तक तुम्हारी जबान से पेशकार साहब शब्द भी नहीं निकला । तुम अभी अपने उसी अफ़सराना रौब में बातें फटकार रहे हो । यह रौब पेशकार रामदयाल पर चलने वाला नहीं है । पेशकार रामदयाल से बातें करने के लिये उसी ज़मीन पर आना होगा जिस ज़मीन पर पेशकार रामदयाल खड़े हैं ।'

पेशकार रामदयाल ने इसी समय अपने सीधे हाथ की उँगलियों से अपने माथे को इस तरह दबाया मानों सर-दर्द कर रहा हो ।

"क्या सर दर्द कर रहा है पेशकार रामदयाल ?"

"जी हाँ ! आज ज़रा जी मचलाया सा हो रहा है । रात बहुत देर तक जागना पड़ा था । जशन के बाद भी काफ़ी देर तक महफ़िल जमी ही रही । नींद पूरी भरकर न आने से सर-दर्द करने लगता है ।"

हामिद अली साहब ने खड़े होकर एक आलमारी खोली और उसके अन्दर से एक बाम की डिबिया निकाल कर पेशकार साहब को देते हुए बोले,

"लो इसे माथे पर लगा लो। अभी आराम मालूम देगा।"

"दवा की ज़रूरत नहीं है सरकार! मैंने ज़िन्दगी में कभी दवा का इस्तेमाल नहीं किया। आज छुट्टी का दिन है। जा कर घर पर सो जाऊँगा और सोने से अपने आप आराम हो जायगा।"

हामिद अली साहब ने वह बाम की डिबिया बज़िद होकर पेशकार साहब को देदी और कहा, "जाओ अब जाकर आराम करो। संध्या को अगर तबियत ठीक हो तो आधे-पौने घंटे के लिए मिल जाना।"

"बहुत अच्छा सरकार!" कह कर पेशकार साहब वहाँ से बिदा हो गये।

: २३ :

एस. पी. हामिद अली और पेशकार रामदयाल की रस्साकशी में पेशकार रामदयाल बाज़ी मार गये। इसकी ख़ुशी पूरे ज़िले भर के अमले में मनाई गई। ज़िले के दारोग़ा, दीवान और कुछ खास-ख़ास कांस्टेबिल पेशकार साहब से मिलने के लिए आये।

सभी ने पेशकार रामदयाल को उनकी हिम्मत और चतुराई की दाद दी और अपने पूरे सहयोग का आश्वासन दिया।

"हमें तो पहले ही उम्मीद थी आपसे कि आप एस. पी. साहब से बाज़ी मार जायेंगे।" एक थाने के दारोग़ा बोले।

"अरे पेशकार साहब को बेचारे एस. पी. साहब कहाँ पहुँचेंगे?" दूसरे थाने के इंचार्ज महोदय बोले।

"वैसे तो एस. पी. साहब भी पूरे घिसे-पिटे हैं, लेकिन जो रग-पट्ठे हमारे पेशकार साहब को याद हैं उनके कमाल को पहुँचना ख़ाला जी का घर नहीं है।" दीवान से थानेदार बने शेख़ अब्दुल बेग बोले।

और शेख अब्दुल बेग से रुका नहीं गया पेशकार रामदयाल के गुणों का वर्णन करने से। कोट के बटन खोल कर आराम से बैठते हुए बोले, "यार हो तो पेशकार रामदयाल जैसा हो, जो कहे, उसे करके दिखाये। आख़री दिनों में हमें तो भय्या दारोग़ाई दिलाना पेशकार रामदयाल का ही काम है।" बुलन्द आवाज़ में कहा।

"अरे क्या कहने हैं पेशकार साहब के? मेरठ-पुलिस का कोई ही शायद ऐसा आदमी होगा जो पेशकार साहब के एहसानात से दबा न हो। किसका काम मौके पर नहीं निकाला पेशकार रामदयाल ने, यह कहो।" तीसरे दारोग़ा जी बोले।

पुलिस-क्लब में शानदार गप्प-शप्प लग रही थी। कचहरी से चलते समय कुछ यार थानेदार लोग पेशकार साहब को पुलिस-क्लब में घसीट लाये।

आज पेशकार साहब की यहीं पर दावत उड़ी और दावत खाकर वह संध्या के सात बजे कासिम मिरज़ा के पास कोतवाली पहुँचे।

कासिम मिरज़ा अपने दफ्तर के सामने घूमते मिले। दोनों आपस में प्रेम से हाथ मिला कर अन्दर प्राइवेट दफ्तर में चले गये और आमने-सामने दो मूढ़ों पर बैठ गये।

"मैं तो अभी-अभी आपका ही इन्तजार कर रहा था।" कोतवाल साहब बोले।

"कचहरी से आज यह इरादा था कि सीधा कोतवाल साहब के यहाँ ही जाकर कपड़े उतारूँगा। वही स्नान करूँगा और वही भोजन भी करूँगा।" पेशकार साहब बोले।

"तो फिर आये क्यों नही ? घर है तुम्हारा।" कोतवाल साहब बोले।

"घर न मानता तो यहाँ आने की सोचता ही नही कोतवाल साहब !" लेकिन दफ्तर से निकलते ही बाहर इलाकों के आये हुए दारोगाओ और दीवानों ने घेर लिया। बेचारे बड़ी ही मोहोब्बत से पेश आये।"

"सुना है कि उन लोगो के कानों तक भी एस. पी. हामिद अली साहब की परेशानी का हाल पहुँच चुका है।" मुस्करा कर कहा।

पेशकार साहब भी धीरे से मुस्कराये और जरा सवर कर बैठते हुए एक बाम की डिबिया सामने बढ़ाते हुए बोले, 'कल साहब ने यह सौगात दी थी हमें। कोठी पर याद किये गये थे हुजूर की। फरमाया है कि उन्होंने हमारा इम्तहान लेने के लिए अभी तक हमारा यकीन नही किया। अब हम इम्तहान में पास हो गये है और अब हमारा वह यकीन कर सकते हैं।"

"बहुत खूब, बहुत खूब !" कह कर कोतवाल साहब बैठे बैठे उछल पड़े। 'देर आयद दुरुस्त आयद।"

"लेकिन मेरे सर में तो उनके उपदेश सुन-सुन कर दर्द पैदा होने लगा था। उसके लिये उन्होंने खुद अपनी खिड़की से निकाल कर यह बाम की डिबिया दी है।"

'यह उनकी परवरदिगारी का नमूना है पेशकार साहब !"

"पेशकार रामदयाल परवरदिगार सिर्फ परमात्मा को समझता है। उसके अलावा वह हर आदमी से बराबर की स्थिति से मिलना पसद करता है कोतवाल साहब ! ओहदा ओहदे की जगह है, याराना याराने की जगह। और याराने के बाद तो सब सौदे-पट्टी का मामला है।"

"कमाल कर दिया आपने तो पेशकार साहब ! आपकी जिन्दगी की फ़िलासफ़ी भी बड़ी ही सीधी सच्ची है।" पेशकार साहब के मुँह की तरफ़ देखकर कोतवाल साहब बोले।

कोतवाल कासिम मिरजा एक फ़िलासफ़र टाइप इन्सान हैं। वह बहुत कम आदमियों से अपना सम्बन्ध रखते हैं लेकिन जिनसे रखते है उनके जीवन को पूरी तरह पढ़ लेने की कोशिश करते हैं।

पेशकार रामदयाल उनके अभिन्न मित्र है इसी लिए वह अपना अधिक

समय पेशकार साहब को पढ़ने में लगाते हैं। आज संध्या होते ही कासिम साहब ने दो पेग बराँडी चढ़ा लिये और उन्हीं के खुमार में वह पेशकार साहब की शक्ल देख रहे हैं।

"याराना आपकी नजरों में सबसे बड़ी चीज़ है। यार के लिये आप सब कुछ कर सकते हैं, यह मैं बखूबी देख चुका हूँ। झूठ, चालाकी, मक्कारी, रौब, गुण्डई, चोरी, डकैती, ताकत इन सभी चीजों का इस्तेमाल आप अपने यार के लिये कर सकते हैं और किसी के लिये न सही। आपने मेरे लिये ये सभी भार अपने सिर पर ओटे हैं।" कोतवाल साहब बोले।

"और ये भार ऐसे है कि जिनका सम्बन्ध सिर्फ इस दुनियाँ से ही नहीं है दूसरी दुनियाँ से भी है, इस जिन्दगी से ही नही है आने वाली जिन्दगियों से भी है और इस फिलासफ़ी को पेशकार रामदयाल का कुनबा भर मानता और अपनाता चला आ रहा है।" जरा ठहर कर पेशकार साहब मूँछों पर ताव देते हुए बोले, "मैं इन सब बातों को नहीं मानता। मैं आज को देखकर चलता हूँ कल-की-कल देखी जायेगी। आज के यार को कल के बनने वाले यारों की उम्मीद पर छोड बैठना दीवानगी है, पागलपन है।" पेशकार रामदयाल बोले।

"तो अब क्या ख्याल है आपका पेशकार साहब! राहेरास्त पर आने की उम्मीद है या टिकट कटाने वाली बात है।" बात का टापिक बदलते हुए कोतवाल साहब बोले।

"दोनों बातें मुमकिन हैं कोतवाल साहब! लेकिन आदमी खतरनाक है। ऐसे हाकिम का रहना अमले के लिए किसी भी समय आपसी फूट का बाइस बन सकता है।

फिर चौधराहट की भी तो बात है। हमारे आपके ऊपर यह एक खामखाँ का जबरदस्त टैक्स लगकर बैठा रहेगा। मेरे खयाल से तो इसका पत्ता ही साफ़ हो जाये तो अच्छा है।" पेशकार साहब बोले।

"आपका खयाल बिलकुल ठीक है। एस. पी. हामिद अली का जिले में रहना हम लोगों पर एक खामखा का बोझ है। हर रोज़ का सिर-दर्द बन जायगा यह।"

"फिर लोभी आदमी है। हम दोनों की तो आदतें एक-सी शाहाना मिल गई हैं। इस लिए पटती चली आ रही है। हामिदअली साहब लालची आदमी ठहरे। उनके लिए बही खाता सँभालना पड़ेगा। मुसीबत खड़ी हो जायगी अपने सर पर।

"और फिर सच बात तो यह है कि अफ़सरी की जो शान अंग्रेज़ बच्चे

में होती है वह हिन्दुस्तानी में नहीं मिलती।" झोंक में पेशकार साहब कह गये लेकिन कासिम मिरज़ा ने इसे क़बूल नहीं किया।

पेशकार साहब की बात का जवाब न देकर बात बदलते हुए मुस्कुराकर बोले, "कुछ भी हो पेशकार साहब मज़ा आ गया इस मामले में। छोटे-मोटे ज़िलों में दारोगाई की है हामिदअली साहब ने। अमले को नौकर बना कर रखा है। मेरठ में यह रवैया भला कहाँ चलने वाला है।" ठहाका मार कर हँसते हुए कोतवाल साहब ने कहा।

पेशकार रामदयाल यहाँ से सीधे गुलाब के कमरे पर पहुँचे और गुलाब पेशकार साहब को उनके खास कमरे में ले गई। बिजली की बत्ती जलाकर पंखा खोल दिया।

कमरे में हिनाँ की खुशबू फैली हुई थी।

पेशकार साहब पलंग पर बैठ कर मुस्कुराते हुए बोले, "गुलाब, आज तुम्हें बेग़म कहने को दिल हो रहा है। कोई ऐतराज़ तो नहीं है तुम्हें ?"

गुलाब अपने सही अन्दाज़ के साथ आँखें तरेरती हुई पास बैठ कर बोली, "पेशकार साहब की नजरे इनायत पर मुझ जैसी हज़ार बेगमें न्यौछावर हैं।"

इतना कह कर गुलाब ने पेचवानी ताजा करने के लिए उठा ली। वह कमरे से बाहर होना ही चाहती थी कि पेशकार साहब ने क़लाई धीरे से पकड़ कर कहा, "कहाँ चलीं बेग़म ?"

"आपका हुक्का ताजी करने जा रही हूँ।" गुलाब मुस्कुरा कर बोली।

"आज हुक्का नहीं पियेंगे।" पेशकार साहब बोले।

"तब फिर क्या पीने का इरादा है आपका ?" उसी अंदाज़ में मुस्करा कर गुलाब ने पूछा।

"हुस्न की शराब।" पेशकार साहब की ज़बान से निकला और उन्होंने गुलाब को पास बिठलाते हुए उसकी जुल्फ़ों में उँगलियाँ डालकर सहलाते हुए कहा, "क्या ऐतराज है कुछ ?"

"जरूर ऐतराज है।" जरा तन कर बैठते हुए गुलाब ने कहा।

"ऐतराज़ तुमको नहीं हो सकता गुलाब ! पेशकार रामदयाल जानता है। अगर मुझे यह खयाल होता कि तुम्हें ऐतराज़ हो सकता है तो पेशकार रामदयाल की ज़बान से बेग़म शब्द ही न निकला होता।"

गुलाब धीरे से पेशकार साहब का सहारा लेकर बैठ गई।

पेशकार साहब धीरे-धीरे गुलाब की सुडौल और चिक़नी कमर सहलाते

हुए बोले, "गुलाब ! आज शीला होती तो न जाने कितनी खुश होती ? आज उसके पेशकार रामदयाल ने एस. पी. हामिद अली के दाँत खट्टे किये हैं। उसे उसने घुटनों पर गिरा दिया है। यह सब उसी देवी के वरदान से हो रहा है।"

'वाक़ई शीला देवी थी पेशकार साहब ! मैं तो उसके चरणों की धूल के बराबर भी अपने को नहीं समझती।

आपकी खादिमा हूँ एक मैं तो। मुझे बेगम कह कर आपने मेरी जो इज्जत की है गुलाब उसकी कद्र करती है।"

पेशकार साहब को यों सीधे तरीक़े से देखने पर कोई काम नहीं है लेकिन फिर भी उनकी दिन-चर्या के कामों को अगर गिना जाये तो वे इतने अधिक हैं कि उन्हें उनसे बच कर समय ही नहीं मिलता।

दफ्तर के बाद कासिम मिरजा और कासिम मिरजा के बाद गुलाब और फिर कलक्टर साहब की मेम साहब की हाज़री और फिर लौटकर गुलाब के कमरे पर आना, पूरे दिन का प्रोग्राम बन जाता है। महीने में पाँच-सात दिन पेशकार साहब क्वार्टर पर भी सोते हैं और करीमखाँ की बीवी के हाथ की बनी हुई कुछ चीजें बड़े चाव से खाते हैं।

गुलाब के मुजरे के समय पेशकार साहब कभी गुलाब के कमरे पर नहीं जाते। वह जानते हैं कि वही उसके कारोबार का समय है।

"अच्छा गुलाब ! अब तुम्हारा मुजरे का वक्त हो गया। मुझे कलक्टर साहब की कोठी पर जाना है। रात के दस-ग्यारह के बीच आऊँगा। आज तबियत बहुत खुश है। तेरे लिए एक बढ़िया साड़ी के लिए कह कर आया हूँ बजाजे में। दूकानदार जो साड़ियाँ लाये उन्हें लेकर रख लेना।"

पेशकार साहब इतना कहकर नीचे वैली बाज़ार में उतर आये और चार क़दम रखकर कम्बोगेट के पास पहुँच गये।

बाँयें हाथ को देखा फलों की दूकानें सजी हैं। मेम साहब के लिए सोचा थोड़े फल लेते चलें। सूखे काजू का उन्हें घी में तलकर शराब के साथ खाने का बड़ा शौक है। सोचा सेर-दो-सेर काजू भी लेते चलें। सोचते-सोचते और खरीदते-खरीदते पचास रुपये का सामान हो गया।

जब पेशकार साहब ने दाम पूछा तो दुकानदार बोला, 'अभी तो कुछ भी नहीं बना पेशकार साहब ! सिर्फ पचास रुपये का सौदा बँधा है। कम से-कम एक लीला पत्ता तो सरकार से मिलना ही चाहिए आज। खुदा जाने एक हसीना का मुँह देखने को मिला था आज।"

फल वाला पेशकार साहब का पुराना वाकिफ है। जाने कितने हजार

रुपये के फल वह उसकी दूकान से खरीद चुके हैं। वह जानता है कि इस समय पेशकार साहब कलक्टर साहब की कोठी की तरफ़ जा रहे हैं।

"बस इतने ही काफी हैं मियाँ! आज तुमने ज़रा कम हसीन औरत का मुँह देखा था। अगर कहीं गलाब का मुँह देखकर दूकान खोली होती तो वाक़ई एक नीला नोट पा जाते।" मुस्कुरा कर पेशकार साहब बोले।

फल वाले के नौकर ने फलों के लिफाफे उठा-उठा कर ताँगे में लगा दिये और पेशकार साहब दूकानदार के पैसे देकर ताँगे में जा बैठे।

कलक्टर साहब की कोठी पर पेशकार साहब ताँगे से उतर कर एक तरफ़ खड़े हो गये और सलाम करने वाले बैरों से बोले, "देखो भय्या! ताँगे का सामान उतार कर कोठी में ले चलो और प्लेटों में सजाकर खाने के कमरे की मेज़ पर क़रीने से लगा दो।"

पेशकार रामदयाल कभी ताँगे वाले का पैसा देना नहीं भूलते। उसे एक अठन्नी थमाते हुए बोले, "साढ़े दस बजे ठीक कोठी के बाहर मिलना।"

"बहुत अच्छा हुजूर!" कहकर पेशकार साहब कोठी में चले गये।

पेशकार साहब को यहाँ अंदर खबर करके जाने की जरूरत नहीं है। साहब और मेम साहब, दोनों छड़े आदमी हैं। दोनों ही हसीन किस्म के नौजवान हैं और दोनों ही ऐश की ज़िन्दगी बिता रहे हैं।

अपने इसी ऐश में उन्होंने पेशकार रामदयाल को भी शामिल कर लिया। पेशकार रामदयाल ने जब अपने पिछले कारनामे उनके सामने पेश किये तो उन्होंने महसूस किया कि वह वाक़ई अंग्रेजी सरकार का सच्चा खैर-ख्वाह आदमी है। ऐसे आदमी को अपने साथ लिये बिना हिन्दुस्तान की सही हालत का अन्दाज़ लगाना मुश्किल है।

नया कलक्टर एक होशियार आदमी है। उसके अन्दर अंग्रेज़ियत की बू है। वह अफ़सर के रूप में जिस हिन्दुस्तानी को भी देखता है उससे उसे कुढ़न होने लगती है। ज्यादा-से-ज्यादा शहर-कोतवाली तक देना वह हिन्दुस्तानी अफ़सर को पसन्द करते हैं।

एस. पी. हामिद अली जैसा पुराने क़िस्म का आदमी उन्हें क़तन पसंद नहीं था। एस. पी. साहब का रहन-सहन, चाल-ढाल, तौर-तरीके, सब पुराने किस्म के हैं और कलक्टर साहब जवानी की तरक्कीपसंद आदतों के बीच पले हैं। शराब, नाच, गाना उनकी दिनचर्या का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। लेकिन एस. पी. साहब को इन सभी चीज़ों से नफ़रत है।

जिले के वातावरण में दो विचार-धाराएँ नहीं बह सकतीं। कलक्टर साहब की विचारधारा पेशकार रामदयाल की विचारधारा है। इन दोनों के बीच में आकर बेचारे हामिद अली साहब इस तरह पिस रहे हैं जैसे चक्की के दो पाटों के बीच घुन पिस जाता है।

कलक्टर साहब एस. पी. साहब की इस दशा से पूरी तरह वाकिफ़ हैं। पेशकार साहब को कोठी के दरवाजे पर आते देख कर पेंट की जेब में उल्टा हाथ और सीधे हाथ में सिगार सँभाले, मुस्कुराकर सामने बढ़ते हुए बोले, "ओ! पेशकार रामडेयाल टुम बोट अच्छा वक्ट पर आया। अम टुमारा इन्टजार में टा।"

"हुजूर जरा देर हो गई पुलिस-क्लब में। जिले के दारोगा लोग पकड़ कर ले गये अपने साथ।"

"जेरूर-जेरूर। शेब का काम रेटा है टुम शे।"

"सभी का काम भुगतना पड़ता है सरकार! ये लोग ही तो हमारी सरकार के पाये हैं हुजूर। इनको मज़बूत बनाना आपका काम है। इन्हें खुश रखना भी आपका काम है। उस दिन आपके जशन की जिले भर में वह तारीफ़ रही कि कमाल ही हो गया। लोग कहते हैं कि जैसा जशन इन कलक्टर साहब का मनाया गया ऐसा पहले कभी किसी कलक्टर का नहीं मनाया गया।"

"ऐशा बाट है पेशकार रामडेयाल!"

"बिल्कुल यही बात है साहब बहादुर!"

साहब और फिर बहादुर कहने से कलक्टर साहब के दिल, दिमाग़ और शरीर में एक ताज़गी-सी आ जाती है और जब इस शब्द को कई बार दोह-राया जाता है तो उनका जोश पूरे वेग से बहने लगता है।

आज उसी जोश की धारा में कलक्टर साहब बहादुर को डाल कर पेशकार साहब ने कहा, "आपके आने से ज़रा जिले में ताजगी आई है साहब बहादुर! वरना तो एस. पी. साहब ने जिले में ऐसा मातम फैलाया था कि लोगों की जिन्दादिली ही खत्म होती जा रही थी।"

"कोटवाल काशिम मिरज़ा बी ऐशा ई बोलना माँगटा टा। काशिम मिरज़ा काबिल आडमी मालूम डेटा ऐ।"

"बहुत क़ाबिल सरकार, बहुत क़ाबिल! फिलासफ़र है वह तो। परमात्मा जाने कैसे पुलिस की नौकरी में चले आये, वरना तो प्रोफेसरी के क़ाबिल थे।"

"और बेरा नेक डिल आडमी मालूम डेटा ऐ। टुमारा बरा टारीफ़

बोलटा ए। केटा ऐ कि टुमारा जैशा बाट का पक्का आडमी और नई डेका।"

इसी समय मेम साहब भी आ गईं और मुस्कुरा कर बोलीं, "केशा हालचाल ऐ टुमारा एश. पी. शाब का ?"

मेम साहब एस. पी साहब के मजाक में ज़रा ज्यादा दिलचस्पी ले रही हैं। उन्हें हामिदअली साहब का गम्भीर चेहरा अपने उपहास के वेग को बढ़ाता हुआ मालूम देता है।

हामिद अली साहब की खिज़ाब चढी दाढ़ी पर हाथ फेरने वाली सूरत को याद करके मेम साहब ने कहा, "केशा चेरा बेनाटा ऐ ये बूरा आडमी ? अम को बी अपना रोब-दोब में लेना मांगटा ऐ। बेडमाश मालूम डेटा ऐ।"

"बिल्कुल बेडमाश। एक डम हेरामकोर। अम ऐशा आडमी को अपना इलाका में बिल्कुल नेई माँगटा।" साहब बोले।

पेशकार रामदयाल ने ऐसा चेहरा बना लिया कि मानो उसने एक शब्द भी नहीं सुना। बल्कि वहाँ से धीरे से खिसक कर कमरे हाल की तरफ़ देखता हुआ बोला, "कुछ फल खरीदता लाया हूँ सरकार के लिए।" मेम साहब से बोला, "ये फल हमारी मेम साहब को बड़े पसन्द आते थे।"

"बोट वरिया फल लाया ऐ पेशकार शाब ! तुमारा लाया उआ काजू केमाल का ओटा ऐ। बोट बरिया काजू लाटा ऐ टुम।"

"माल पेशकार रामदयाल चाहे एक आना अकरा खरीदता है हुजूर, लेकिन बढ़िया खरीदता है। और फिर आपके लिए क्या कोई चीज़ मन-दो-मन खरीदनी होती हैं। अफ़सरों को चीज चाहे थोड़ी ही दे, लेकिन बढ़िया होनी चाहिए।"

"बेलकुल टीक केटा है टुम।"

इसके बाद मस्ती के साथ शराव का दौर चला।

पेशकार रामदयाल भी दौर में शामिल रहे और लम्बी दौड़ में वही तीनों में आगे निकले। आखीर में कलक्टर साहब और मेम साहब एक स्वर में बोले, "पेशकार रामडेयाल टुम केमाल करटा ऐ पीने में।"

एस. पी. हामिद अली साहब का रौब मेरठ जिले में न जम सका। पेशकार रामदयाल से आते ही उन्होंने जो बिगाड़खाता कर लिया उसका फल उन्हें यह भोगना पड़ा कि उनके साथ खड़ा होने वाला एक भी महकमे का आदमी न निकला।

जब हामिद अली साहब ने अपनी आमदनी के सब रास्ते बन्द देखे तो पेशकार रामदयाल से ही सुलह करने का फ़ैसला किया। सुबह-ही-सुबह कोठी पर पेशकार साहब को हामिद अली साहब ने याद फरमाया।

केवल 'पेशकार रामदयाल' न कहकर हामिद अली साहब ने उन्हें 'पेशकार साहब' कहकर सम्बोधित किया। बोल-चाल के और पैराये में भी काफ़ी फ़र्क था।

हामिद अली साहब आज और जरा खुलकर सामने आये और उन्होंने अपने हिन्दुस्तानी अफ़सर होने की अहमियत पर ज़ोर दिया। यहाँ तक आगे बढ़े कि काँग्रेसी विचार-धारा उनके शब्दों से झलक उठी। हालाँकि वह कांग्रेस के कट्टर दुश्मन थे और जहाँ-जहाँ भी वह रहे, उन्होंने काँग्रेस के आन्दोलन को अपने जूते के नीचे ही दबा कर रखने की कोशिश की; लेकिन इस समय अपनी हिन्दुस्तानियत की दुहाई देते हुए बोले, "पेशकार साहब! हम लोग हिन्दुस्तानी अफ़सर हैं। फिर भी हम जितना ख्याल हिन्दुस्तानी लोगों का रख सकते हैं उतना अंग्रेज लोग कहाँ रख पायेंगे?"

पेशकार रामदयाल हामिद अली साहब की यह बात सुनकर दिल-ही-दिल मुस्कराये और निहायत संजीदगी के साथ बोले, "इसमें क्या शक है हुजूर! हम आप तो एक ही मिट्टी-पानी के बने हैं।"

"लेकिन फिर भी मैं देखता हूँ कि आप हमसे दूर-ही-दूर रहने की कोशिश करते हैं।"

"यह बात अपने दिल से पूछिये हुजूर! हम लोग तो खादिम हैं आपके। काम निकालने की मशीनें हैं दिमाग़दार अफ़सरों की। हमें चलाने वाला चाहिए। जब तक ये मशीनें जाम हैं तब तक तो कारखाना बन्द ही रहेगा और जब कारखाना बन्द है तो आमदनी भी कहाँ से होगी?" पेशकार साहब बोले।

"लेकिन आपने तो पहले दिन की ही गुफ़्तगू में मशीनों को ब्रेक लगा

कर खड़ा कर दिया।" हामिद अली साहब बोले।

"जाम मशीनें ताक़त से नहीं चलाई जातीं सरकार! उन्हें चलाने के लिए उनका जग छुड़ाने की जरूरत होती है।

आज जब आप इतने खुलकर बातें कर ही रहे हैं सरकार! तो कह दूं कि आपने अपनी अफ़सरी के जौम में उस मशीन को चलाने की नाकामयाब कोशिश की और मशीन का एक भी पुर्जा अपनी जगह से जुम्बिश न खा सका।

पेशकार रामदयाल किसी भी अफ़सर से उलझना अपनी मूर्खता समझता है और किसी का हक़ मारना उसके लिए गऊ मांस के बराबर है। लेकिन जब उसकी इज्जत का सवाल सामने आ जाता है तो वह अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके भी अपनी इज्जत की रक्षा करता है। उस समय नौकरी की उसे जरा भी चिंता नहीं रहती।

पेशकार रामदयाल साठ रपूलियों की नौकरी के लिए घर से नहीं निकला। सौ-दो सौ रुपये माहवार तो उसकी जमींदारी में हर वक्त पड़े रहने वाले जीदार पट्ठे हीं खा-पी जाते हैं। अपने शहर के लीले पहलवान से पूछिये कि उसके दो पट्ठे कितने दिन से पेशकार रामदयाल के दम पर पल रहे हैं।"

एस. पी. हामिद अली पेशकार साहब की बातें सुनकर मन ही-मन समझ गये कि यह मशीन ताक़त से नहीं चलाई जानी चाहिए थी। ताक़त से चलाई जाने वाली पुलिस के थानों की छोटी छोटी मशीनें थीं, जिन्हें वह अपनी मर्जी के मुआफ़िक उल्टी-सीधी घमा-फिरा लेते थे। यह जिले भर की जंगी मशीन है। इसमें छोटी-छोटी कितनी ही मशीनें जुड़ी हुई हैं। इसे तरकीब से कायदे के साथ चलाया जा सकता है और अगर इसके किसी भी पुर्जे को सूखा रहने दिया गया तो या तो वह सारी मशीन को ही जाम कर देगा या टूट जायगा। इन दोनों ही दशाओं में एस. पी. साहब की बदनामी है।

"आखिर करना भी कुछ चाहिए पेशकार साहब! आप सलाह भी तो नहीं देते।" हामिद अली साहब बोले।

"सलाह उसे दी जाती है हुजूर जो जानता न हो कोई बात। आपको सलाह देने की क़ाबलियत खादिम में नहीं है। हुक्म बजा लाने की ताक़त जरूर है। सो आपने हुक्म करने की कभी जरूरत नहीं समझी।"

हामिद अली की जबान बन्द कर दी पेशकार साहब ने। सर खुजलाते हुए अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर कर बोले, "साल-दो-साल और रह गये हैं रिटायर होने में। चाहता हूँ कि ये आखरी दिन यहीं आराम से कट जायें। खुदा ने आज

तक तो हर काम में साथ दिया है ....."

"आगे भी खुदा हाफ़िज़ है।" पेशकार साहब बीच में ही बोल उठे। पेशकार साहब को हामिद अली साहब के बुढ़ापे पर तरस आ गया और उनके गिड़गिड़ाने वाले उन शब्दों को सुनकर, जिनमें 'रिटायर' होने की दुहाई दी गई थी, उनका मन भर आया। आज पहली बार रिटायर होने की बात पेशकार साहब के दिमाग़ से टकराई और वह न जाने क्या-क्या सोचते रहे।

"क्या सोचने लगे पेशकार साहब ?"

"कुछ नहीं।" स्वप्न से से जागते हुए पेशकार साहब बोले। "सोचने लगा था कि रिटायर होना भी वैसा ही है नौकरी-पेशा के लिए जैसे शरीर के लिए मौत का आना।"

"इसमें क्या शक है पेशकार साहब ! रिटायर होने के माने हैं नौकरी का ख़तमा और नौकरी का ख़ातमा माने है हकूमत का ख़ातमा और हकूमत का ख़ातमा माने है आमदनी का ख़ातमा और आमदनी का ख़ातमा माने है एक तरह जिन्दगी का ख़ातमा। हमारी ज़िन्दगी के तो अब ये ही एक दो वर्ष बाक़ी हैं। इनमें हम नहीं चाहते कि किसी का भी दिल दुखायें। ख़ुदा की ख़िदमत की तरफ़ मन लगा रहे हैं अब तो।

बड़ा ही नेक ख़याल है आपका हुजूर ! यदि यही नेक ख़याल बना रहे और आप खामखा की परेशानी में न पड़ना चाहें तो गिने गिनाये चार हज़ार रुपये हर महीने ले लिया करें बस, बाकी सब पुलिस के अमले का है। अफ़सर को छोटों की तरफ़ देख कर चलना चाहिए" रौबीले अन्दाज़ के साथ पेशकार रामदयाल मूँछों पर सफ़ाई के साथ हाथ फेरते हुए बोले।

यों उम्र में पेशकार साहब हामिद अली साहब से छोटे हैं और ओहदे में तो दोनों की तुलना का कोई प्रश्न ही नहीं उठता, लेकिन उनका व्यक्तित्व हामिद अली साहब पर बुरी तरह छा गया।

हामिद अली साहब ने पेशकार साहब के मुँह की तरफ़ तरसती नज़रों से देखा। उनके मन में ख़याल आया कि ज़िले की लाखों की आमदनी में से, जहाँ मैं पचत्तर फ़ीसदी हड़प कर जाना चाहता था, वहाँ मुझे चार हज़ार दे कर टलकाया जा रहा है और बाकी पर यह गुण्डा पेशकार रामदयाल सबका नेता बन कर हाथ साफ़ करना चाहता है।

लेकिन पेशकार रामदयाल की ईमानदारी की मज़बूती भी वह पिछले दो महीनों के वाकयात में देख चुके हैं। वह मज़बूती पत्थर की मज़बूती है और उससे व्यर्थ के लिए सर टकराना अब वह अपनी मूर्खता समझते हैं।

मन में थोड़ी संतोष की भावना लाकर हामिद अली साहब बोले, "चलो

जो तुम्हें मंजूर है वही सही पेशकार साहब, लेकिन कम-से-कम घर खर्च में होने वाले ग़ल्ले और लकड़ी वगैरा का तो सब इन्तज़ाम तुम करा ही दिया करोगे ना !"

"चलिये वह भी हो जायगा।" मुस्कराते हुए पेशकार साहब बोले, "आप जैसे नेक दिल अफ़सर के लिए क्या नहीं कर सकता रामदयाल ? सर के बल आपका हर काम होगा।"

आज पेशकार रामदयाल हामिद अली साहब के पास से नहीं लौटे बल्कि यार हामिद अली खाँ के पास से लौट रहे हैं। उनके दिमाग़ में वह भारीपन क़तन नहीं है जो आमतौर पर उनकी कोठी से लौटते समय रहा करता था।

पेशकार साहब का दिल बढ़ गया। जिले की हुकूमत की बागडोर उनके हाथों में आ गई। कलक्टर, एस पी. और शहर कोतवाल जिसके हाथों में हों, वह क्या कुछ नहीं कर सकता जिले में।

चारों तरफ़ से सिमट कर ताक़त पेशकार रामदयाल के चरणों पर आ गिरी। अब पेशकार साहब का ध्यान अपने भाग्य पर गया। जब-जब उन्हें भाग्य से कोई चीज मिलती है तो उन्हें शीला की याद आ जाती है और वह एकांत में बैठ कर कहते हैं, "शीला ! यह सब तेरे ही पुण्य का प्रताप है वरना मैं तो जैसा भी कुछ हूँ, हूँ ही बस। जो बुरी इल्लतें इस जिन्दगी ने पकड़ ली हैं वे तो अब चिता की लपटों में ही जायेंगी। लेकिन तेरे प्रताप से इज्जत के साथ हुकूमत और हुकूमत की दुनिया की मौज में जरूर पाता रहूँगा।"

पेशकार साहब हामिद अली साहब की कोठी से ताँगा किराये पर करके सीधे कोतवाली पहुँचे। कासिम मिरज़ा अपने दफ्तर के सामने मूढ़े पर बैठे मिले।

पेशकार साहब से कासिम मिरज़ा ने खड़े हो करहाथ मिलाया और अदब से बिठलाते हुए बोले, "कहाँ से तशरीफ़आवरी हो रही है जनाब की ? आज तो मालूम देता है कि सुबह से ही गश्त पर निकले हुए हो।"

"सरकार हामिदअली साहब की कोठी से सीधा इधर चला आ रहा हूँ। आज सब मामला साफ़ कर दिया। चार हज़ार रुपया, खाना, लकड़ी उनको हमने देना मंजूर कर लिया। उन्हें इससे आगे कोई सरोकार नहीं होगा। बाकी सब आमदनी अमले में तकसीम कर दी जायगी।"

"भाई कमाल कर दिया पेशकार साहब !" उछल कर कासिम मिरज़ा पेशकार साहब से लिपट गये और खुशी में भर कर बोले, "पेशकार साहब ! तुमने किया है इसे मात, वरना अपनी आज तक की नौकरी में यह शेर की

तरह दनदनाता हुआ चला आ रहा है। अपने मातहतों को इसने हमेशा बुरी तरह पीस कर रखा है। मूज़ी कहीं का, सारे अमले की आमदनी को अकेला ही डकार जाना चाहता था।"

"इसमें मेरा कमाल कुछ नहीं है कासिम साहब ! यह सब तो आपकी आलिमाना राय और पुलिस के अफ़सरों तथा कॉंस्टेबिलोंके दिये हुए आशीर्वाद का फल है। मैंने सब के फ़ायदे की बात कही, इस लिए सब ने मेरा साथ दिया है।'

पेशकार रामदयाल फिर कासिम मिरज़ा का हाथ अपने हाथ में लेकर दबाते हुए बोले, "बड़ा दिल कसमसा रहा था यह बात मंज़ूर करते समय।"

"ज़रूर कसमसाता होगा। बड़े मोटे-मोटे माल मुँह लगे हैं इसके। वे ही गफ्फे यहाँ भी लगाना चाहता था। आपने इसकी ख्वाइश को शुरू में ही रोक दिया, यह ज़बरदस्त बात की। वरना तो यह ज़िले भर पर छा जाता और आमदनी के ज़रियों पर अपना तहत जमा लेता।"

"अपनी नौकरी पर खतरा लेकर यह काम किया है मैंने।"

"इसमें क्या शक है ? ज़बरदस्त खतरा भी बन सकती थी यह बात।" कासिम मिरज़ा बोले. "ज़बरदस्त बहादुरी का सबूत दिया है आपने। आखिर किस पुलिस के आदमी को तुमसे थोड़ा-बहुत फ़ैज़ नहीं पहुँचा ? पुलिस के अमले को तुम्हारा शक्र गुज़ार होना चाहिए।"

कासिम मिरज़ा को पेशकार साहब के इस कारनामे ने चकित कर दिया। एस. पी. हामिदअली साहब को पेशकार साहब ने चार हज़ार रुपये महावार और अन्न तथा लकड़ी पर ख़रीद लिया। साफ़-साफ़ मतलब यही है उसका।

पेशकार साहब कासिम साहब को केवल सूचना भर देने आये थे, लेकिन यहाँ बातों-ही-बातों में एक घंटा निकल गया। वह यहीं से सीधे दफ्तर की तरफ़ रवाना हो गये और ठीक समय पर अपनी कुर्सी संभाल ली।

पेशकार साहब ने आज तफ्तर में बैठकर जब बाहर थानों से आने वाले दरोगाओं और दीवानों पर नज़र डाली तो उनमें वह मीठी मुस्कराहट थी जिसकी सुगन्ध उनमें से हर आदमी ले रहा है। पेशकार रामदयाल के सामने आज जो भी काम आया उसे उन्होंने यही कहा, ठीक है एक हफ्ते में हो जायगा। लेकिन ध्यान रखना कि मोटी रक़म हामिद अली साहब से तय करके दुबारा काम चालू किया है। बहुत ध्यान से काम करना है। जिससे लो उसका काम ज़रूर करना। अपनी ज़बान से किसी से पैसा न माँगना। अपने हाथ में किसी की रक़म न सम्भालना, समझे !"

"यही होगा पेशकार साहब ! आप अपना हिस्सा पहले ले-लें, बाक़ी

पीछे देखा जायगा। हम लोग आपस में निबटते रहेंगे। आपके पास तक शिकायत नहीं आने पायेगी।"

अब्दुल बेग पेशकार साहब के आजमाये हुए दरोगा हैं। इनकी बात हमेशा पत्थर की लकीर होती है। इन्हें दारोगाई पर पहुँचाने का श्रेय भी पेशकार रामदयाल को ही है।

सबसे पहला मामला इन्हींने पेशकार साहब के सामने पेश करते हुए कहा। "लाला पकौड़ी मल की चार सौ बीघे की जायदाद सरकारी क़ानूनों के झपेट में आकर काश्तकारों के पंजों में चली जाने वाली है। लाला पकौड़ी मल उसी गाँव की पंचायत के सरपंच और इलाके के मशहूर पहलवान बिरमा प्रशाद की मदद से अपनी ज़मीन को इन मौजूदा काश्तकारों से साफ़ करना चाहते हैं।

पुराने काश्तकारों को पहलवान बिरमा प्रशाद का झटका देने से पहले इलाके की पुलिस को हाथ में ले-लेना ज़रूरी है। इसी लिए पहलवान बिरमा प्रशाद अपने इलाके के दरोगा शेख अब्दुल बेग से बात पक्की करने आये हैं। बात तिरछी हैं। मामला तूल पकड़ सकता है। एक दो लाशें भी हो सकती है।"

पेशकार रामदयाल ने कहा, "जाकर ज़मीन पर कब्ज़ा करलो। पीछे सब देखा जायगा। ज़मीन पर कब्ज़ा करके उसे बेच डालो।"

"यही सोच रहा हूँ सरकार!" लाला पकौड़ी मल बोले।

"यही सोच रहे हो तो बताओ कितने की है तुम्हारी जायदाद! चार सौ बीघे कच्चा कम-से-कम ४०, हज़ार की तो ज़रूर होगी?'

'इससे ज्यादा की ही होगी सरकार!" पहलवान बिरमा प्रशाद ने ज़रा सीना उभार कर कहा।

"अंदाज़न पचास हज़ार की होगी?"

'जी बस इतनी ही।" ज़रा डरते हुए लाला पकौड़ी मल बोले।

"घबराइये मत लाला जी! दारोगा अब्दुल बेग साहब बहुत पुराने और तजुरबेकार दारोगा हैं। इनके रहते हुए आपको किसी किस्म की परेशानी नहीं होगी। लेकिन मामला बहुत अहम है। लोगबागों की जानों का खतरा है। इस तमाम खतरे से तुम्हें साफ़ बचा ले जाने की ज़िम्मेदारी पन्द्रह हज़ार रुपये से कम में नहीं ली जा सकती। वरना खाने-पीने दीजिये उन बेचारे काश्तकारों को। क्यों नाहक़ उनके पीछे पड़े हो? जब क़ानून ने ज़मीन उनकी मारूसी कर दी तो छोड़ बैठो बेचारों को, तुम्हें भगवान् ने सब कुछ दिया है।"

पंद्रह हज़ार की बात सुन कर सेठ पकौड़ी मल बिदक उठे। पाँच हज़ार का वायदा वह पहलवान बिरमा प्रशाद और उसके पट्ठों को देने का भी कर चुके थे।

"क्या सोच रहे हो सेठ जी ! आप इस जायदाद को अस्सी हज़ार से कम में नहीं बेचेंगे और आपको यह जायदाद हमारी मदद के बिना मिल नहीं सकती।" पेशकार साहब ने साफ़-साफ़ कहा।

सौदा फ़ायदे का था और लाला पकौड़ी मल चूकने वाले नहीं थे। नक़द में सौदा तै हुआ। पेशकार रामदयाल ने पाँच हज़ार रुपये लेकर शेष दारोग़ा अब्दुलबेग के हवाले कर दिये।

"अपने थाने में हिस्सेवार सब को दे-देना दारोग़ा अब्दुल बेग ! किसी के साथ गैर इन्साफ़ी न हो।

"आपके हुकुम की पाबन्दी होगी सरकार ! क्या मजाल जो कोई शिकायत कर जाय ?"

बेचारे अब्दुल बेग तो अपने दिमाग़ से केवल दो हज़ार की आसामी लेकर आये थे, लेकिन पेशकार रामदयाल ने उसे पाँच हज़ार की बना लिया।

संध्या को पेशकार साहब कासिम मिरजा से मिले और पाँच हज़ार रुपये उनके सामने रखते हुए बोले, "आज की कारगुज़ारी है सरकार !"

कासिम मिरजा का चेहरा खिल उठा पाँच हज़ार के नोटों को देखकर। "पेशकार साहब अगर सच पूछो तो हामिद अली साहब ने यहाँ आकर हमारा कारबार ही चौपट कर दिया था। ये दो महीने कितनी तंगी में कटे हैं, कि बयान नहीं कर सकता।

आप भी तंगी में चल रहे थे, इसलिए आपको भी तकलीफ़ नहीं देना चाहता था। लाओ पहले इनमें से एक हज़ार रुपये इधर को सरका दो, तब बातें करने में मज़ा आयेगा।"

'सिर्फ एक ही हज़ार कासिम साहब ! मैं तो आपको दो हज़ार देने लाया हूँ।"

"खुदा तुम्हें बड़ी-बड़ी बरक़त दे पेशकार साहब ! सच कहता हूँ मैं कभी जब जिले की पुलिस को देखता हूँ तो जो जिन्दादिली आप में नज़र आती है उसकी और कहीं परछाईं भी नज़र नहीं आती।"

कासिम साहब की तारीफ़ों में दिली जज़बात मिले होते हैं, इसीलिए वह पेशकार साहब को बड़ी प्यारी लगती हैं और वह कहते हैं "कासिम बड़े भाई का आशीरवाद है यह। कोतवाल हातमसिंह की बात का सबूत पेश कर रहा हूँ आपके सामने।

रामदयाल कहीं नीचे तो नहीं आया आपकी नज़रों में ?"

पेशकार साहब दो हज़ार कोतवाल साहब को देना चाहते थे लेकिन उन्होंने केवल पन्द्रहसौ रुपये ने लेकर कहा, 'पंद्रहसौ अपने पास रखें पेशकार

साहब ! और दो हज़ार हामिदअली साहब को दे-दें।"

पेशकार साहब ने कासिम साहब का सुझाव मान लिया और जब वह आज दो हज़ार रुपये लेकर हामिद अली साहब की कोठी पर पहुँचे तो हामिद अली साहब ने उनका बड़ा स्वागत किया।

तभी-तभी नमाज़ पढ़कर आ रहे थे हामिद साहब। बड़े ही तपाक से बोले, "तशरीफ़ रखिये पेशकार साहब ! मैं अभी पायजामा पहन कर आ रहा हूँ।"

हामिद अली साहब ने अपनी बेटी लतीफ़न से कुर्ता लाने को कहा।

कुर्ता-पायजामा पहन कर कोतवाल साहब बैठक में आये। पेशकार साहब ने उनके अदब में खड़े होकर सलाम किया और पहले ही दिन दो हज़ार की भेंट देते हुए बोले, "खुदा ने पहला ही दिन अच्छी लग्न का भेजा। कुर्सी पर बैठते ही दारोग़ा अब्दुल बेग एक लाला पकौड़ी मल को ले आये। अपनी ज़मीन को काश्तकारों से साफ़ करके वह बेचना चाहते हैं। गाँव की गुंडा पार्टी की भी मदद उन्होंने पैसे देकर ख़रीद ली है।

हमसे यही चाहते हैं कि हम ज़रा उनके साथ नरमी बरतें।"

"बहुए ठीक किया आपने पेशकार साहब ! यह नरमी गरमी के वे शोले धधकायेगी कि यही लाला पकौड़ी मल अपना सब कुछ बेच कर भी तुम्हारे क़दमों पर रख जायेंगे।"

हामिद अली साहब को बात की तह तक पहुँचते हुए देख कर पेशकार साहब मुस्कुरा कर बोले, "आप बात की तह में पहुँच गये। इसीलिए सही बात आपको बतलाने में मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई।"

तीसरे महीने में जाकर हामिद अली साहब को ये दो हज़ार रुपये मिले। उनका घुटा हुआ श्वाँस कुछ उभर कर नाक के नथनों से निकला और दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोले, "अल्लाहताला आपको कामयाब करे। आपके इरादों में मज़बूती लाये। मैं पूरी तरह आपकी मदद पर रहूँगा।"

पेशकार साहब आज डेढ़ हज़ार रुपया लेकर घर पहुँचे।

कपड़े उतार कर उन्होंने करीम खाँ को बुलाया और एक सौ रुपये का नोट उसे देते हुए बोले, "लो हमारी भाभी जान के लिए यह मिठाई का रुपया है। और चाहे जिस मद में भी खर्च करना इसे, लेकिन दो-दो रसगुल्ले तुम और तुम्हारी बीबी इसके पैसों से खरीद कर जरूर खा लेना।"

"आपके लिए बेगम ने आज चाय बना रखी है। कहें तो एक प्याली ले आऊँ।"

"ले आओ करीमखाँ तुम्हारी बेग़म की चाय को अस्वीकार करना

पेशकार रामदयाल के लिए बड़ा ही कठिन है।"

यह चाय भी क्या होती है, अच्छा खासा जुशाँदा होता है यह चाय। बड़ी इलायची, दार चीनी और न जाने क्या-क्या काढ़े की तरह औंटा कर उसमें बराबर का दूध डाल कर तेज मीठे की बनाई जाती है।

"दूध जरा सा और" ओठों से लगाते ही पेशकार साहब ने कहा।

"दूध जितना चाहें।" करीम खाँ की बीबी दौड़ कर गिलास से दूध देती हुई करीम खाँ से बोली।

आज पेशकार साहब की शक्ल देखकर करीम खाँ बोला, "पेशकार साहब! आज चेहरे पर रौनक़ मालूम देती है।'

इधर दो महीने से, जब से हामिद अली साहब जिले में तशरीफ़ लाये हैं, पेशकार साहब की परेशानी को करीम खाँ गम्भीरता के साथ देख रहा है। परेशानी की दशा में वह पेशकार साहब से कभी कोई सवाल नहीं करता। उनकी परेशानी में कोई सुझाव पेश करने के क़ाबिल वह अपने को नहीं समझता।

आज पेशकार साहब का खिला हुआ चेहरा देखकर वह समझ गया कि ज़रूर उन्हें उनके मक़सद में कामयाबी मिली है। करीम खाँ को निहायत खुशी हुई इस बात से।

वह पेशकार साहब के मूढ़े के पास स्टूल डालकर उस पर बैठते हुए बोला "दो ढाई महीने में आज चेहरे पर रौनक़ दिखाई दी है।" बड़ा ही प्यार था उसके शब्दों में।

और पेशकार रामदयाल भी खुशी में उभर कर बोले, "करीम खाँ, आज दो महीने की जद्दोजहद के बाद हामिद अली साहब को राहेरास्त पर ल पाया हूँ। इस बात की खुशी है मुझे कि अपने अफ़सर से नाचाकी होकर फिर ऐसी बनी है कि शायद ऐसी किसी से पहले न बनी हो।"

"खुदा आपको आपके मंसूबों में कामयाबी दे! मैं और मेरी बेग़म तो हमेशा परवरदिगार से यही मनाते हैं भय्या रामदयाल!"

पेशकार रामदयाल का छोटा भाई हरदयाल लीले पहलवान के दो पट्ठों के साथ गाँव में ऐश से रह रहा है। वह अपनी ऐश की छान रहा है। खेती-क्यारी की कोई खास परवाह नहीं है उसे। भाई के पास से काफ़ी मदद मिल जाती है और जब कमी पड़ती है तो नाना के यहाँ से अपनी बूढ़ माँ से ही कुछ छीन-झपट लाता है।

पिछले दो महीने में पेशकार रामदलाल ने उसे एक कौड़ी भी नहीं भेजी, इसलिए वह परेशान हो उठा। रामदुलारी से पेशकार रामदयाल के

शहर लौट आने पर हरदयाल ने और भी मेल-मोहोब्बत बढ़ाली है। रामदुलारी को अपनी लड़की के गौने में कुछ रुपयों की जरूरत है और हरदयाल ने वायदा भी कर लिया है। लेकिन भाई के पास से इधर दो महीने में जब एक भी रुपया नहीं आया तो वक्त पर शरमिन्दा होने की नौबत आगई।

पेशकार रामदयाल मूढ़े पर बैठे करीमखाँ से बातें कर रहे थे कि सामने से उन्हें छोटा भाई हरदयाल आता दिखाई दिया। हरदयाल ने पेशकार साहब के आते ही चरण छुए और पेशकार साहब ने भी उसे आशीर्वाद दिया।

"गाँव मे सब अच्छी तरह हैं ?' पेशकार साहब ने पूछा।

"सब मेहरबानी है परमात्मा की।"

"लीले पहलवान के पट्ठे तो खुश हैं ?"

"ऐश की छान रहे हैं।"

"रामदुलारी भी कभी आती है तुम्हारी तरफ़ ?"

"आती तो है बेचारी भाई साहब ! लेकिन उसकी लड़की का गौना है और बेचारी को पचास रुपये की सख्त जरूरत है।"

"हमारे चचा ताऊजाद भाई-बिरादरों के क्या हाल-चाल हैं ?"

'सब के नाक्ते बन्द कर दिये हैं लीले पहलवान के पट्ठों ने। एक दिन ताईजी पर तो एक पट्ठा गँडासा लेकर चढ़ गया था। बड़ी मुश्किल से उसे रोका। लेकिन वह दिन है और आज का दिन है कि फिर किसी ने चूं-चराँ नहीं की और ताईजी ने तो कुए की तरफ़ आना ही बन्द कर दिया।" हरदयाल ने बताया।

पेशकार रामदयाल के दिल में जरा और उभार आगया। मूछों को तानते हुए अपने अन्दर-ही-अन्दर कहा, "नाचीज कीड़े-मकौड़े मेरा मुक़ाबला करना चाहते हैं ! जिसके सामने एस. पी. हामिद अली पानी माँग गया, उसके सामने भला ये बेचारे इल्लू-पिल्लू क्या खाकर आयेंगे ?"

फिर हरदयाल की तरफ़ जरा मुस्कराते हुए कहा, "अब तो गाँव में दबदब बैठ गया होगा तेरा। वे पाजी दस नम्बरी भी बिलमबरदारी करते हैं या नहीं। उन हरामजादों से खब काम लेना।"

"सब क़ायदे में आगये हैं भाई साहब !"

"करीमखाँ हरदयाल को बाजार में खाना खिला लाओ। मैं आज जरा देर से आऊँगा और हो सकता है कि सुबह ही लौटूँ" पेशकार साहब बोले।

एक दस रुपये का नोट जेब से निकाल कर पेशकार रामदयाल ने हरदयाल को दिया और वह करीमखां के साथ बाजार चला गया।

उनके चले जाने के बाद पेशकार साहब खरामा-खरामा क्वार्टर से चलकर सड़क पर आये और एक ख़ाली ताँगे वाले को देखकर बोले, "ऐ ताँगे वाले ! ज़रा ठहरो ।"

"आइये पेशकार साहब ।" ताँगे वाला पेशकार साहब को पहचानता था ।

"वैली बाजार ले चलो ताँगा ।"

"जो हुक्म सरकार !"

ताँगा वैली बाज़ार में ग़ुलाब के कमरे के नीचे जाकर रुका और पेशकार साहब ने आज खुशी में चार आने के बजाय उसे एक रुपया दिया ।

ताँगे वाला पेशकार साहब की तरक्की के लिए खुदा से दुआ माँगता हुआ चला गया और पेशकार साहब ज़ीने से चढ़कर गुलाब के कमरे पर पहुँच गये ।

: २५ :

पेशकार रामदयाल का दबदबा जिले भर में छाया हुआ है। उनके प्रभाव से जिला मेरठ का कोई भी बड़ा आदमी नावाकिफ़ नहीं है। हिन्दू महासभा के मंत्री और प्रधान, काँग्रेस के मंत्री और प्रधान, आर्य समाज के मंत्री और प्रधान, मुस्लिम लीग के मंत्री और प्रधान और इनके अलावा भी शहर के सभी इज्ज़तदार लोग उनसे मेल रखना अपनी इज्जत की सलामती के लिए आवश्यक समझते हैं।

पेशकार रामदयाल ने काँग्रेस की तरफ़ से अपना सख़्त रुख पहले से ही बदल दिया था और आज्कल तो काँग्रेस के खास-खास कारकुनों से उनका याराना भी रहता है। जिला-काँग्रेस के प्रधान सेठ दामोदर प्रशाद उनके जिगरी दोस्त हैं। जिला-काँग्रेस में बिजली की तरह चमकदार और शक्ति-शाली रामेश्वरी देवी जिला-काँग्रेस की मंत्राणी भी पेशकार साहब का बड़ा अदब करती हैं।

समय जाते देर नहीं लगती। ज़माना तेज़ी से बदलता हुआ पेशकार रामदयाल ने देखा। संयुक्त प्रान्त की हकूमत को उन्हीं जेल काटने वाले काँग्रेसियों के हाथों में जाते हुए पेशकार साहब ने देखा। उन्हीं काँग्रेसियों के हाथों में जिन्हें वह किसी दिन चपरक़नाती कहकर पुकारते थे।

सन् १९३७-३८ का ज़माना आया। काँग्रेसी मंत्री-मंडल देश के कई प्रान्तों में बन गये और उनकी हकूमतें कामयाब तरीके पर चलने लगीं।

पेशकार साहब इन स्यासी मामलातों में ज्यादा दिमाग़ खराब नहीं करते। स्यासी मामलों में कोतवाल कासिम मिरजा की विचारशील राय उन्हें मान्य होती है। उनके कहे अनुसार मक्खी-पर-मक्खी मार देना वह अपना कर्त्तव्य समझते हैं और उन्होंने देखा भी है क उनकी राय कभी ग़लत नहीं होती।

अभी हुक्के पर चिलम लाकर करीमखाँ ने रखी ही थी कि एक ताँगा आकर सड़क पर रुकता दिखलाई दिया, ताँगे से शहर कोतवाल साहब उतर कर

पेशकार साहब की ड्योढ़ी की तरफ़ चले आ रहे हैं।

पेशकार साहब हुक्के की नै को एक तरफ़ करके तहमद सँभालते हुए नंगे ही बदन कोतवाल साहब की अगवानी के लिए आगे बढ़े।

"हुक्का पिया जा रहा है पेशकार साहब का। आज आपको वह मजेदार बात सुनाऊँ कि आप भी खुशी के मारे लोट-पोट हो जायें।" कोतवाल साहब हँसकर बोले।

"क्या नई खबर लाये हैं कोतवाल साहब ? शायद सेठ दामोदर प्रशाद को रामेश्वरी देवी ने चुनाव में हरा दिया। यही बात है न !"

"आपकी सी. आई. डी. हमसे पहले आपको खबर दे जाती है।" मुस्कराते हुए कोतवाल साहब बोले।

"मुझे कल ही पता चल गया था इस बात का। सेठ दामोदर प्रशाद तो बड़े तिलमिला रहे होंगे। लेकिन कोतवाल साहब आपको रामेश्वरी देवी की हिम्मत और क़ाबलियत की दाद देनी होगी।" पेशकार साहब बोले।

"इसमें क्या शक है। आप देखेंगे कि एक दिन यह अपने सूबे की मंत्री बन बैठेगी। बेचारे सेठ दामोदर प्रशाद को किसी दिन उनकी दौलत के जाल में फँसा छोड़कर यह चिड़िया आसमान पर उड़ती नज़र आयेगी।"

"तो क्या आप समझ रहे हैं कि आजकल चिड़िया सेठजी के ही जाल में फँसी हुई है। वे ज़माने तो कभी के हवा हो चुके कोतवाल साहब ! आपने रामेश्वरी देवी का आजकल का स्वरूप नहीं देखा है शायद। अब वह मुजरों में नाचने वाली तवाइफ़ नहीं रह गई है। बड़ी तेज़ तर्रार औरत है।"

"सब जानता हूँ पेशकार साहब ! तभी तो यह सब कह रहा हूँ। रामेश्वरी देवी में एक बात तो ज़रूर मैंने देखी है कि वह पैसे की गुलाम नहीं है।" कासिम मिरज़ा ने मूढ़े पर बैठकर दायाँ पैर बाँयें पैर पर रखते हुए कहा।

"आपका अन्दाज़ा ठीक है। मैं पहले रामेश्वरी को बड़ी लालची औरत मानता था, पैसे की गुलाम मानता था। जब शुरू में इसने अपना रुख मेरी तरफ़ से हटाकर सेठ दामोदर प्रशाद की तरफ़ घुमाया था तो मैंने अपने मन में यही कहा था कि यह पैसे की गुलाम औरत है। लेकिन आज जब इसने सेठ दामोदर प्रशाद को भी अपनी आज़ादी के लिए लात मार दी तो मेरे उस पुराने ख्याल की जड़ें मुझे खुद खोखली नज़र आने लगीं।" निहायत गम्भीरता के साथ पेशकार रामदयाल बोले।

"सेठ दामोदर प्रशाद बेचारे कांग्रेस के प्रधान-पद से अलग हो गये और

उनकी जगह जो महाशय आये हैं, सुना है कि वह रामेश्वरी देवी की ही मदद से आये हैं।" कोतवाल साहब बोले।

"खाली रामेश्वरी देवी की ही मदद से नहीं, वह खुद भी नामी-गिरामी आदमी हैं। अंग्रेज-सरकार के खिलाफ़ क्रांति करने वाले गर्म दल के वह एक छोटा मोटा नेता रह चुके हैं। उसकी इसी गर्मी ने तो रामेश्वरी देवी को उसकी तरफ़ खीच लिया है।"

"यह आपका फरमाना बिल्कुल बजा है। मैं इसे मानता हूँ। गर्मी चाहे जैसी भी क्यों न हो आखिर ताक़त तो उसमें होती ही है, तेज तो उसमें रहता ही है।"

इन्हीं दिनों योरोप में दूसरे महायुद्ध के बादल मँडराने लगे। योरोप का वाय-मंडल युद्ध के प्रकम्पित वातावरण से भर गया। अंग्रेज़ सरकार ने देश को अपनी नीति पर चलाने का प्रयत्न किया और युद्ध में कांग्रेस से भी सहयोग माँगा। काँग्रेस ने सरकार से उनकी युद्ध-नीति का विवरण चाहा। यहीं पर सरकार और काँग्रेस में मतभेद पैदा हो गया और प्रदेशों में चलने वाली काँग्रेसी सरकारों को स्तीफे देने पड़े।

अंग्रेजी सरकार ने देश की इस हालत को गहरी नजर से देखा और काँग्रेस से समझौता करने की कोशिश की। अंग्रेज़ी मज़दूर दल के नेता भारत आये, लेकिन किसी समझौते पर न पहुँच सके।

देश की हालत में ज़बरदस्त तूफ़ान आता दिखलाई दिया। लेकिन पेशकार रामदयाल को इससे हिलने, काँपने या घबराने का कोई कारण नहीं। वह तो सरकार की एक चाबी के बतौर काम कर रहे हैं। सरकारी हुक्म पर उन्हें ताला खोलना और लगाना है। सरकार चाहे काँग्रेस की हो या अंग्रेजों की।

राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधी के नेतृत्व में समस्त देश एक विशाल आन्दोलन की आँधी लेकर दमनकारी शक्तियों के खिलाफ़ खड़ा हो गया। 'भारत छोड़ो' का तूफ़ानी नारा त्याग और तपस्या की मूर्ति के मुख से निकला और देश की जनता की ज़बान ने उसे गुरु-मंत्र के रूप में अपनाया।

देश-व्यापी आन्दोलन शुरू करने का अधिकार बम्बई काँग्रेस के अधिवेशन ने महात्मा गाँधी को सौंपा। परन्तु आन्दोलन शुरू होने से पहले ही गांधी जी तथा देश के अन्य प्रमुख नेताओं को सरकार ने बन्दी बना कर जेलखानों में बन्द कर दिया।

देश भर में भयंकर तूफ़ान आ गया। देश के कोने-कोने से असंचालित आन्दोलन, खुदरा वन के वृक्षों की तरह फूट निकला। सन् १९४२-४३ का

आन्दोलन देशभर में छा गया। विद्रोहिणी जनता ने अपने सामने आने वाली हर रुकावट को ध्वंस करने का बीड़ा उठा लिया।

जिला मेरठ इस आन्दोलन से वंचित रह जाता, यह असम्भव-सी बात थी। मेरठ क्रांति की पहले से ही पण्य-भूमि रहा है। सन् १८५७ के स्वतन्त्रता-संग्राम का प्रारम्भ यहीं से हुआ था। उस संग्राम में दिये गये बलिदानों की आग अभी तक ठंडी नहीं हो पाई थी।

विद्रोह की ज्वाला मेरठ-ज़िले के गाँव-गाँव और क़स्बे-क़स्बे में फैली। मुट्ठी भर सरकारी पुलिस दूर-दूर के थानों में रहकर इस विद्रोह का भला क्या सामना कर सकती थी? जनता के जोश का ठिकाना ही नहीं था और वह अपने नेताओं की गिरफ़्तारी पर इस क़दर नाराज़ हुई कि मौजूदा सरकार का सब कारबार चौपट कर देना चाहती है।

कुछ जोशीले नौजवानों ने पुलिस के एक-दो थानों को जलाकर खाक कर डाला। पुलिस ने अपनी जान बचाने को गोलियाँ भी चलाईं और जनता के भी बहुत से आदमी अपने प्राणों से हाथ धो बैठे। लेकिन विद्रोह का तूफ़ान बराबर बढ़ता ही जा रहा था, उसके रुकने की आशा कम दिखलाई देती थी।

पेशकार रामदयाल को इन मामलों में पड़ने की जरूरत नहीं। वह एस. पी. हामिदअली साहब की पेशी में ज़िले भर के झगड़ों की मिसलें संभालने वाले हैं। उनका काम ही कोई झगड़ा होने के बाद प्रारम्भ होता है। झगड़ा होने से पूर्व या झगड़े के दौरान में वह मौन ही रहते हैं।

गुलाब के कमरे पर आज रात को उन्होंने कोतवाल साहब को दावत दी। दोनों आमने-सामने बैठे, और फिर दोनों ने एक दूसरे से नजरें मिलाईं। दोनों की नजरों ने एक-दूसरे से कहा, "मेल में देखा, कितनी ताक़त है। पूरा ज़िले-का-ज़िला अपनी मुट्ठी में है।"

"सुना है ज़िले के कई थाने वहाँ के बदमाशों ने जलाकर ख़ाक कर दिये!"

"यही ख़बर तो मैं भी तुम्हें देने वाला हूँ। बेचारे अब्दुलबेग की सुनते हैं बड़ी बुरी गत बनाई, बलवाइयों ने।" कोतवाल साहब बोले।

"तो क्या मार डाला बेचारे अब्दुलबेग को?"

"बिल्कुल मार डाला। बोटी-बोटी काट कर कुत्ते-बिल्लियों के सामने फेंक दी।"

पेशकार रामदयाल को क्रोध आ गया यह सुन कर। देहात के बदमाशों की इतनी जुरत कि सरकारी दारोग़ा की बोटी-बोटी काट कर फेंक दें।

लेकिन वह खून का घूँट पीकर रह गये ।

उनके चेहरे पर आने वाले भावों को कासिम मिरज़ा पढ़ते हुए बोले, "अब्दुलबेग के मरने पर आपको बहुत सदमा पहुँचा ।"

"इसमें कोई शक नहीं । मैं उसे एक नेक और दोस्त आदमी समझता रहा हूँ ।"

"वह था भी ऐसा ही ।" कासिम मिरजा ने कहा ।

"सुना है रामेश्वरी फरार हो गई । क्या यह सच है ?"

"बिल्कुल सच और सेठ दामोदर प्रशाद ने कलक्टर साहब को बार-फंड में बीस हज़ार रुपया दिया है ! यह उससे भी बड़ा सच है ।"

"बीस हज़ार ! लेकिन यह उसके लिए क्या बड़ी बात है ?"

"बात तो कोई बड़ी नहीं है पेशकार साहब ! लेकिन बहुत बड़ी बात है यह । कल तक जो काँग्रेसी बना फिरता था, आज वह कलक्टर साहब के पीछे-पीछे दुम हिलाता फिर रहा है । सुना है पंडित राम खिलावन ने उन्हें हिन्दू महा सभा का प्रधान भी बना दिया है ।"

"दुनियाँ इसी तरह चलती है कोतवाल साहब !" दो गिलासों में शराब ढालते हुए पेशकार साहब बोले ।

धीरे-धीरे दोनों ने शराब पीनी शुरू कर दी और महसूस किया कि दिमागों पर लदी हुई व्यर्थ की बातें न जाने कैसे आप-से-आप काफूर होती चली गईं ।

"आज गुलाब कहीं दिखलाई नहीं देती पेशकार साहब !'

"आपके लिए मुर्ग-मुसल्लम तय्यार कर रही है । बड़ा लज़ीज़ बनाती है गुलाब ! आपने गुलाब का अभी नाच ही देखा है, वह औरत क्या है, यह समझने की कभी कोशिश नहीं की ।" पेशकार साहब बोले ।

"इन सब बातों में उलझने की फुर्सत ही कहाँ मिलती है पेशकार साहब ! मेरा तो अपनी बेग़म साहिबाँ की फरमाइशें पूरी करते-करते ही नाक में दम रहता है ।"

"गुलाब एक देवी है कोतवाल साहब ! मेरे दिल ने उसे हमेशा से अपनी कहकर क़बूल किया है और यही वजह है कि आज अकेला होने पर पर भी मैं अकेलेपन को महसूस नहीं करता । मुझे कभी महसूस ही नहीं करने दिया गुलाब ने ।"

शराब का नशा पूरे जोश पर था और तभी मुर्ग-मसल्लम की प्लेट लेकर गुलाब की नौकरानी अम्मीजान सामने आ गईं । उन्हें देखकर कोतवाल साहब बोले, 'गुलाब बाई को कहो कि हमें उनकी जरूरत इस मुर्ग-मुसल्लम से

ज्यादा है। हम लोग ज्यादा खाने के आदी नहीं हैं।"

"अभी तशरीफ़ ला रही हैं गुलाब बाई !" अम्मीजान ने निहायत अदब के साथ कहा।

गुलाबाई चन्द मिनटों के बाद कमरे में दाखिल हुईं तो आज उसका रूप ही निराला था। उसे देखकर कोतवाल साहब दंग रहे। पहले गुलाब को जब कभी भी उन्होंने देखा, तो मुजरे में बनी-ठनी गुड़िया के रूप में देखा था। लेकिन इस समय वह एक सादा घरेलू औरत के रूप में थी और बनाव-श्रृंगार का कहीं नामो-निशान भी नहीं था।

लेकिन रूप का जो निखार इस सादगी में था वह बनावट में कभी कोतवाल साहब को नजर नहीं आया।

"आओ गुलाब बाई, तुमने तो आज सादगी में भी कमाल कर दिया। ये दो-दो तरह के रूप दिखला कर ही तुमने हमारे पेशकार साहब को ठगा है गुलाब ! आज हमें असलियत मालूम हुई है। कोतवाल साहब बोले।

"आप अपने को बचाये रखिये कोतवाल साहब ! कहीं बेगम साहिबाँ का दामन छोड़कर इस ठगोरी डालने वाली जादूगरनी का दामन आपके अनजान हाथों में न आ जाये।" मुस्कराकर पास बैठती हुई गुलाब बोली।

"बात तो पते की कही तुमने गुलाब !" पेशकार साहब अपनी लम्बी काली मूँछों को अंदाज़ के साथ मरोड़ी देते हुए बोले।

कोतवाल साहब ने गुलाब की तरफ़ देखकर मुस्कराते हुए कहा, "हमारी बेगम साहिबाँ की बात न पूछो गुलाब ! उनका नखरा सँभालना तो बस मेरा ही काम है, और अगर सच पूछो तो मैं भी शायद उसे न सँभाल पाता, अगर यहाँ आने पर मुझे पेशकार रामदयाल जैसा यार न मिल-जाता। कोतवाल हातमसिंह की मेहरबानी से यह सब चल रहा है।" नशे की झमक में भावुकता-भरे स्वर के अन्दर कोतवाल साहब कहते चले गये।

यह सब-कुछ चल ही रहा था कि इसी समय कोतवाली से एक सिपाही वहाँ आया। उसका साँस फूला हुआ था, क्योंकि बड़ी तेज साइकिल चला कर वह यहाँ आया था। हाँपनी चढ़ रही थी उसे। करीमखाँ उसके साथ था।

करीमखाँ बोला, "हुजूर शहर में बलवा हो गया। बेगम के पुल पर जाते हुए एक अंग्रेज और उनकी मेम साहब को खत्म कर दिया गया। उनकी लाशों को उठा कर नाले में फेंक दिया गया। देखते-देखते बाजार बन्द हो गया।"

"हुजूर केसर गंज की रेलवे-लाइन उखाड़ कर फेंक दी और उस पर आने वाला एक ऐंजिन पटरी से उतरकर जमीन में धँस गया।" साथ

वाला कॉंस्टेबिल बोला।"

"मेरठ-कालेज के सामने कचहरी की इमारत में आग लगा दी गई।" करीमखाँ बोला।

"हुजूर सदर का पोस्ट-आफ़िस भी जलाकर खाक कर दिया गया।"

कोतवाल कासिम मिरजा यह सब सुनकर सन्न-से रह गये और उसी समय खाने की मेज से खड़े होते हुए बोले, "अच्छा पेशकार साहब! मैं अब जाता हूँ। बलवाइयों की आग अब ज़िले के थानों से बढ़कर शहर में भी आ पहुँची है।"

"लेकिन ज़रा ध्यान से काम करना। सरकार रहे या जाये, हमने ठेका नहीं लिया है इसका। अपनी जान सलामत रहेगी तो नौकरियों का घाटा नहीं है।" संजीदगी के साथ पेशकार साहब ने सलाह दी।

"देखिये, क्या होता है। खामखा आफ़त में फँसने वाला तो मैं भी नहीं हूँ, लेकिन शहर-कोतवाल होकर इस तरह बैठा रहना भी मेरे लिए मुश्किल बात है।" कोतवाल साहब बोले।

पेशकार रामदयाल कोतवाल साहब को गुलाब के कमरे से नीचे पहुँचा कर घंटाघर के पास ताँगे में बिठलाकर वापस लौटे।

गुलाब ने इसी बीच में पेशकार साहब का बिस्तर सफ़ाई के साथ तय्यार करा दिया और उनकी पेचवानी भी ताज़ा करके पलग के पास रखवा दी।

पेशकार साहब पलंग पर आकर आराम से बैठ गये और फिर गुलाब की तरफ़ देखते हुए बोले, "गुलाब! तुमने आज जो मुर्ग-मुसल्लम बनाया था, बड़ा ही लज़ीज़ था। करीमखाँ की बेग़म भी बनाती है, लेकिन न जाने क्यों, उसमें यह मज़ा नहीं आता, जो इसमें आया।"

गुलाब अपने अन्दर-ही-अन्दर सिकुड़ती हुई बोली, "मुझे बनाने की कोशिश न किया करो पेशकार साहब! और हाँ एक बात तो बताओ, क्या बलवा करने वाले लोग शहर में भी आ घुसे हैं?" बात बदल कर गुलाब ने पूछा।

"यह सब तो चलता ही रहता है गुलाब! लेकिन वे लोग क्या तुम्हारे साथ बलवा करने आये हैं? तुम्हें डरने की क्या जरूरत है? और फिर जब तुम्हारे सिर पर पेशकार रामदयाल का साया है तो तुम्हारा कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता।" पेशकार साहब ने कहा।

पेशकार साहब पर शराब का नशा सवार होता जा रहा था। वह अब और अधिक देर तक बातें नहीं करना चाहते। गुलाब ने अपना इत्र

की खुशबू से भरा हुआ शाल उनके ऊपर उढ़ाते हुए कहा, "अब आप सो जाइये। नींद लगी है आपको।"

"नींद नहीं है गुलाब ! खुमारी है यह तो। सोच रहा हूँ कि बेचारे कासिम मिरजा पर कहीं कल कलक्टर साहब के गुस्से की आग न बरसने लगे। जब उन्हें दो अंग्रेजों के मरने की खबर मिलेगी तो वह पागल हो उठेंगे।"

यह सब खुमारी में ही पेशकार साहब कहते चले गये और कहते-ही-कहते उन्हें नींद ने बुरी तरह दबा लिया।

गुलाब ने उनके सो जाने के बाद पेचवानी पर रखी आग भरी चिलम बाहर के बरांडे में रखे तसले में उलटदी और घर के जीने और बाहर के सदर दरवाजे के फाटक बन्द कराके अपनी बूढ़ी नौकरानी से बोली, "अम्मीजान तुमने कुछ खाया भी या नहीं।"

"खाती क्यों नहीं गुलाब ! तेरा हुस्न परवरदिगार हमेशा क़ायम रखे। तूने इस बूढ़ी को वह आराम दिया है कि जो अपनी कोख से जायी भी नहीं दे सकती।"

"अच्छा तो अब सोने का इन्तजाम करो और एक लोटा पानी ला कर पेशकार साहब के पलंग के पास वाले स्टूल पर रख देना। उन्हें रात में प्यास लगती है।"

"अभी रख देती हूँ बेटी !" अम्मी बोली।

घर का सब इन्तजाम ठीक करके गुलाब भी सोने के लिए चली गई।

: २६ :

रामेश्वरी देवी ने मेरठ में तहलका मचा दिया। उसका नाम सुनकर पुलिस के अफ़सरों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कलक्टर साहब ने एस. पी. हामिदअली साहब और शहर कोतवाल कासिम मिरज़ा को अपनी कोठी पर बुलाकर डाँटा, "टुम लोग का कारगुजारी अम लोग को बिल्कुल पशंड नई आटा। एक मामूली औरट को टुम लोग गिरफ़टार नेई कर शकटा ऐ। अम टुमशे बौट नाराज़ ऐ।"

हामिदअली साहब, शहर कोतवाल कासिम मिरजा के रामेश्वरी देवी से पहले सम्बन्धों से नावाकिफ़ हैं। फिर पेशकार रामदयाल के बीच में आ जाने से बात और भी गहरी बन गई है।

पेशकार रामदयाल रामेश्वरी देवी को आश्वासन दे चुके हैं कि वह उनके संरक्षण में अपनी कारगुजारियाँ करती चली जाय। कासिम मिरज़ा से भी यह बात छिपी हुई नहीं है। कासिम मिरजा पर पेशकार साहब के पिछले ऐहसानात इतने हैं कि वह उनकी राय के बिना एक क़दम भी नहीं चल सकते।

"मामूली गड़बड़ी की मैं चिंता नहीं करता पेशकार साहब! और उससे आमदनी भी हम लोगों को काफी हुई, यह बात भी सच है" कलक्टर साहब से फटकार खाकर कासिम मिरजा सीधे पेशकार साहब के पास आकर बोले, "लेकिन रामेश्वरी ने जो कल बेगम के पुल पर एक अंग्रेज़ा और उसकी मेम को सरे-आम मरवा दिया, इससे ज़बरदस्त सनसनी फैल गई है। जिले के तीन थाने पूरे-के-पूरे फुँक जाने पर भी वह जलन कलक्टर साहब के दिल में पैदा नहीं हुई जो इन साहब और मेम साहब के मर जाने से पैदा पैदा हुई है।"

"इसी को कहते हैं खून का असर मिरजा साहब!" पेशकार साहब बोले। "अंग्रेज लोग अपनी क़ौम के लिए जान देते हैं।"

"तो अब आप ही सलाह दें, ऐसी हालत में क्या किया जाय ?"

"मैं कल रात से इसी बात को सोच रहा हूँ। रामेश्वरी के प्रति मेरे दिल में जलन भी है और प्यार भी। प्यार तुम उसे न कहो तो इतना जरूर है कि मैं उसका अहित होते हुए अपनी आँखों से नहीं देख सकता, उसके अहित की सलाह नहीं दे सकता और उसके खिलाफ़ कोई कारगुजारी नहीं कर सकता। अगर मौका आयेगा तो उसे मदद ही करूँगा।

जिस औरत की मैं एक बार मदद कर चुका हूँ उसे फँसाने वाला मैं नहीं बन सकता। वह चाहे जो कुछ भी करे मेरे साथ।" निहायत संजीदगी के साथ पेशकार साहब बोले।

"तो फिर उस नेक-वख्त से यही कहो कि वह मेरठ छोड़ कर कहीं बाहर चली जाय। यहाँ रहकर वह हमारा सिर-दर्द बनी रहे और हम उसे रोज की परेशानी के रूप में सँभाले बैठे रहें, यह भला कैसे चलेगा?" कासिम मिरजा ने पूछा।

"आपकी दिक्कत को मैं महसूस न कर रहा हूँ, ऐसी बात नहीं है मिरजा साहब! और आपकी जिम्मेदारी से भी मैं पूरी तरह वाकिफ़ हूँ। मैं कल से इसी उधेड़बुन में लगा हूँ कि जिससे साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।"

आज संध्या को पेशकार रामदयाल ने अपनी दिक्कत रामेश्वरी देवी के सामने खुलासा करके रखी और निहायत नरमी के साथ कहा, "रामेश्वरी, मैं नहीं चाहता कि मेरे रहते तुम्हें किसी क़िस्म की पुलिस के हाथों तकलीफ़ पहुँचे। अगर तुम मुनासिब समझो तो मेरठ से कहीं बाहर चली जाओ। तुम जानती ही हो कि आज दीवारों के भी कान लगे हुए हैं। सभी के मित्र और दुश्मन दुनियाँ में मौजूद हैं। कलक्कर साहब उस अंग्रेज और उसकी मेम की हत्या के अपराध में तुम्हें फँसाना चाहते हैं। शहर-कोतवाल और एस. पी. साहब से वह साफ़-साफ़ इस बारे में कह चुके हैं।

"आपकी हमदर्दी की मैं क़द्र करती हूँ पेशकार साहब! लेकिन मेरठ का काम छोड़कर भला मैं बाहर कहाँ चली जाऊँ? मेरठ मेरा कार्य-क्षेत्र है। यहाँ की जनता में मैंने काम किया है और यहाँ की विद्रोहिणी जनता मेरे संकेत पर चल रही है। उसे आधार-विहीन छोड़कर मैं अपनी जान बचाने के लिए या यों समझिये कि पुलिस की परेशानी कम करने के लिए यहाँ से बाहर चली जाऊँ, यह नामुमकिन है। हाँ, आप चाहें तो मुझे यहीं पर गिरफ़्तार कर सकते हैं।" गम्भीरता पूर्वक रामेश्वरी देवी ने कहा।

पेशकार रामदयाल की गर्दन नीचे झुक गई। उनकी समझ में ही न आया कि उन्हें उस दशा में क्या करना चाहिए। रामेश्वरी एक अजीब क़िस्म

की औरत के रूप में उनके सामने खड़ी है ।

रामेश्वरी मुस्करा कर बोली, "किस शशोपंज में पड़ गये पेशकार साहब ! पाँच हज़ार का इनाम मुझे पकड़ने वाले को सरकार ने बोला है। एक दिन आपने चन्द गुण्डों से मेरी जान बचाई थी और उस समय मेरे लिए जो कुछ भी जिन्दा रहने का रास्ता आप सुझा सकते थे, आपने सुझाया । मदद भी की थी मेरी । उस सब के लिए मैं आपकी शुक्रगुजार हूँ और उस कर्ज को उतार कर, अपने को हमेशा के लिए मुक्त करने को मैं अपने आपको आपके सुपुर्द करती हूँ ।"

आज आपको खुले दिल से कहती हूँ कि मुझे गिरफ्तार करके आप पाँच हजार का इनाम हासिल कीजिये और हो सकता है कि आपको कोई ऊँचा ओहदा भी इस सिलसिले में मिल सके । आपकी नामवरी होगी और महकमे में इज्जत भी बढ़ेगी ।"

"तुम्हें गिरफ़तार करके मैं नाम, ओहदा और रुपया नहीं चाहता रामेश्वरी मेरी नजरों में तुम्हारा वही रूप बसा हुआ है जो उस दिन समाया था जिस दिन तुम्हें उन बदमाशों के चंगुल से निकाल कर मैंने बैलीबाज़ार के मकान पर रखा था । एक मामूली पुलिस का सिपाही ही तो था मैं । लेकिन उस हालत में भी मैंने सौ रुपये कर्ज लेकर वह कमरा किराये पर लिया था तुम्हारे लिए ।

और तुमने एक दिन अपने जीने के नीचे खड़े रामदयाल से दो बातें करनी भी पसन्द नहीं की थीं । सेठ दामोदर प्रशाद की चाहिता थीं तुम उस समय । वह घाव इस दिल पर से जिन्दगी भर नही मिट सकता ।

लेकिन यह रामदयाल का दिल है; जिसमें एक बार कोई तस्वीर उतर आने पर फिर मिटाई नहीं जा सकती।"

रामेश्वरी देवी ने पेशकार रामदयाल की तरफ़ देखकर नजरें नीची कर लीं और धीरे-धीरे बोली, "पेशकार साहब ! एहसान से ज्यादा न लादिये मुझे । मेरी जिन्दगी बदल गई है । माँ बाप ने पढ़ाई की छूट दी । बुद्धि, विचार सम्पर्क और परिस्थियों ने मेरा ध्यान संगीत और नृत्य की तरफ़ कर दिया । सफलता भी मिली उसमें; लेकिन आज़ादी के परों पर उड़कर घर-बार और माँ-बाप से सम्बन्ध टूट गया । और वह ऐसा टूटा कि उन पाजी लोगों के चंगुल में मुझे फँस जाना पड़ा । आपने उनसे मुक्ति दिलाई, इसके लिए एहसानमंद हूँ । लेकिन वह मुक्ति दिला कर आपने मुझे एक बाज़ारू औरत बना दिया । बाजारू औरत बनने के मैं नाक़ाबिल थी। इसीलिए वहाँ भी न ठहर सकी ।

मेरे पास, सच पूछिये तो, वह दिल ही नहीं है, जो इश्क करता है और यारबाशी में खुश होता है। मैंने इस क़िस्म का जो कुछ भी अभिनय किया था, वह सब मजबूरियों में पड़कर किया था। आज फिर वक्त आगया है, जब मैं दुबारा उसी किस्म का अभिनय करके अपना काम निकाल सकती हूँ।"

पेशकार रामदयाल रामेश्वरी देवी के मुँह की तरफ़ एक बच्चे की तरह देखते रहे। एक भी शब्द उनकी जबान पर नहीं आया।

"तो ठीक है रामेश्वरी, तुम जो चाहो सो करो। रामदयाल से तुम्हारा कभी कोई अहित नहीं होगा। लेकिन तुम जूझ रही हो सरकार से, सरकार की ताकतों के बीच में कहीं पिसकर न रह जाओ, इसी बात का ज़रा-सा डर है।" पेशकार साहब बोले।

"उसकी आप चिंता न करें। पिसने में मुझे खुशी होगी और यह मैं ख़ूब जानती हूँ कि ज़िला मेरठ में पेशकार रामदयाल की मदद के बिना मेरा कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता। और मैं यह भी जानती हूँ कि पेशकार रामदयाल मेरे लाख नाराज़ करने पर भी कभी मुझ से नाराज़ होने वाले नहीं हैं।"

पेशकार रामदयाल रामेश्वरी देवी को दिल में कोई नुक़सान पहुँचाना नहीं चाहते, बल्कि हर क़िस्म की मदद ही उसे करना चाहते हैं।

यही विचार लेकर वह रामेश्वरी देवी के पास से घर लौटे।

शहर में पुलिस ने धर-पकड़ का दौर चला दिया है। जिस-जिस इलाक़े में भी दंगा हुआ, वहाँ के शरीफ़ आदमियों को कोतवाली में बुलाकर डराया और धमकाया गया। इसके फलस्वरूप पेशकार रामदयाल के पास शहर के मौजिज़ आदमियों का सुबह से शाम तक तांता बँध गया। किसी का भाई, किसी का भतीजा, किसी का बेटा और किसी का अन्य कोई सम्बन्धी हवालात की हवा खा रहा है।

पेशकार रामदयाल ने काफ़ी लोगों पर मेहरबानियाँ कीं, परन्तु ये मेहरबानियाँ सूखी नहीं थीं। अफ़सरों की नज़र के लिए सभी को कुछ-न-कुछ भेंट देनी जरूरी है। पेशकार साहब चाहे याराने में कुछ भी न लें, लेकिन अफ़सरों का मुँह तो वह बिना पैसे के बन्द नहीं कर सकते।

देने वाले स्वयं कहते हैं, "आपकी तो कोई बात ही नहीं है पेशकार साहब, लेकिन सब काम आपके ही तो हाथों का नहीं है। आपके ऊपर भी तो अफ़सर हैं। वे भला बिना खाये-पिये क्यों किसी का काम करने लगे हैं?"

"आप सब कुछ समझते ही हैं।" पेशकार साहब कहते "बिना दिये-

लिये कौन किसके काम आता है ? यह दुनियाँ का पहिया तो देने-लेने से ही चलता है भाई साहब।"

सीधी-सच्ची पेशकार साहब की बात जरूरतमन्द के दिल और दिमाग़ में घुसती चली जाती है और जिसका कोई काम उलझा होता है वह बेकार क़ानूनी चक्करों में पड़ने के बजाय पेशकार साहब के नज़राने को ग़नीमत समझता है।

पेशकार रामदयाल रामेश्वरी देवी की हर हरकत को छुपाने के लिए तय्यार हैं, परन्तु उसका यह रूप सामने आयेगा, इतना खयाल उन्हें भी नहीं था।

पेशकार रामदयाल एक बार अपनी नजरों से काँग्रेस को हकूमत करते देख चुके हैं, इसलिए पहले वाला तो नजरिया उनका नहीं है, काँग्रेसियों के बारे में। उन्हें कोरे चपरक़नाती समझना पेशकार साहब ने बन्द कर दिया है और फिर रामेश्वरी देवी के कारनामे तो उनकी नज़रों के सामने हैं।

पेशकार रामदयाल ने वह आलीशान काँग्रेस का जलसा देखा था जिसमें कई बार देश के नेताओं ने तालियाँ बजाई थीं। क्या जोश था रामेश्वरी देवी की उस तक़दीर में।

आज भी रामेश्वरी का आतंक जिले भर पर छाया हुआ है। रामेश्वरी देवी का नाम कलक्टर साहब के कानों में पड़ता है तो मालूम होता है कि मानो कोई उनके कानों में तेजाब डाल रहा है।

संध्या को कासिम मिरजा पेशकार साहब से आकर मिले, तो उनके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। परेशानी की दशा में वह पेशकार साहब से बोले "आज तबियत बहुत परेशान है पेशकार साहब !"

"जरूर होगी कासिम साहब ! शहर में गड़बड़ी क्या कुछ कम है ? चौबीस घण्टे की ड्यूटी है आपकी तो और फिर जब कलक्टर साहब को ही चैन नहीं तो आप भला कैसे चैन से बैठ सकते हैं।" संजीदगी के साथ पेशकार साहब बोले।

कासिम साहब ने टोप पास में पड़ी कुर्सी पर रख दिया और आँखें मिचमिचाते हुए बोले, "क्या इस क्वार्टर पर पड़े रहने की क़सम खाली है आपने ? कभी तफ़री के लिए भी वक्त निकाल लिया करो। ऐसी भी क्या कमाई के पीछे पड़े हो कि जो कभी इस थली को छोड़ते ही नहीं।"

"थली वाक़ई जबरदस्त बनी है कासिम साहब ! कितना रुपया बरसता है इस थली पर, जरा अन्दाज तो लगाइये कितने लोग पलते हैं इस थली की बदौलत। शहर में बीसियों पहलवानों के अखाड़े चल रहे हैं। बहुत से भगवान्

के मस्त जीवों की रोटियाँ चलती हैं इस थली से ।

इस थली को मैं भगवान् की थली मानता हूँ, कासिम साहब !'

कासिम मिरजा ने पेशकार साहब को खड़ा करते हुए कहा, "बात तो तुम्हारी बिलकुल सच है पेशकार साहब ! आपके याराने में जितने भी साल निकल गये, आराम से निकल गये, बिना चिंता के निकल गये ।"

पेशकार साहब ने पायजामा पहन कर कमीज़ गले में डाली और ऊपर से कोट पहन लिया । पैरों मे काला पंप-शू पहना और हाथ में हरिद्वार से खरीद कर लाई हुई बेत लेकर कासिम साहब के साथ क्वार्टर से निकले ।

करीमखाँ बाहर बरडे मे खटिया डाले लेट रहा था । क्वार्टर का ताला लगा कर करीम खाँ से बोले, "तुम यही पर रहना करीम ख़ाँ ! मै ज़रा बाज़ार की तरफ़ जा रहा हूँ । अगर कोई आये तो उसका नाम, काम और पता पूछ लेना ।"

"अगर कोई ज़रूरी काम आ जाये तो आपको कहाँ तालाश करूँ ?" करीम ख़ाँ ने पूछा ।

"तालाश कहाँ करोगे ? क्या दस-बीस जगह हैं पेशकार साहब के जाने की ?" कासिम मिरज़ा बोले । 'पेशकार साहब के ठिकानों से तो तुम पूरी तरह वाकिफ़ हो । गुलाब के कमरे पर देख लेना ।"

"बहुत अच्छा हुज़ूर !" सलाम झुकाते हुए करीमखाँ ने कहा ।

कासिम मिरज़ा और पेशकार साहब खरामा-खरामा सड़क पर पहुँच गये । शाम का झुट-पुटा होता जा रहा है । नगरपालिका की बत्तियाँ सड़कों पर खड़े खम्बों पर मुस्करा उठीं ।

एक ताँगा खाली आता दिखाई दिया और पेशकार साहब की कड़ाके-दार आवाज़ निकली, "ऐ ताँगे वाले !"

"जी हुज़ूर !" पहचान कर ताँगे वाले ने ताँगा रोक कर जवाब दिया, "आइये हुज़ूर ! किधर चलना है सरकार को ? बेलीबाजार ले चलूँ क्या ?"

ताँगे वाले की बातें सुनकर कासिम मिरज़ा और पेशकार साहब एक दूसरे के मुँह की तरफ देखकर मुस्कराये ।

दोनों ताँगे पर सवार हो गये । कासिम साहब ज़रा रौब के साथ बोले, "कम्बोगेट की चौकी पर ताँगा ले चलो ।"

"बहुत अच्छा हुज़ूर ।" ज़रा सहमते हुए ताँगेवाले ने कहा ।

कम्बोगेट पर ताँगा रुकवा कर दोनों उतर पड़े और वहाँ से पैदल ही बैली बाज़ार तक घूमते हुए निकल गये ।

गुलाब के कमरे पर पहुँचे तो गुलाब मुस्कराकर सामने आती हुई बोली, "आज कोतवाल साहब कैसे रास्ता भूल गये ?"

"हम रास्ता नहीं भूले गुलाब ! पेशकार साहब से पूछ लो, आज हम ही इन्हें यहाँ लेकर आये हैं। लेकिन आज तबियत बड़ी परेशान है। बराँडी की बोतल घर में मौजूद है या नहीं, पहले यह बतलाओ। और अगर न हो तो अम्मीजान को भेज कर मँगालो।"

"यह गुलाब का कमरा है कोतवाल साहब ! किसी टखियारी का नहीं है। आपकी दुआ से यहाँ क्या कुछ मौजूद नहीं रहता ?" इठलाकर गुलाब बोली।

"हमने सुना है गुलाब ! कल यहाँ सेठ दामोदर प्रशाद तशरीफ़ लाये थे।" बीच में ही अचानक पेशकार साहब ने पूछा।

"दामोदर प्रशाद !" आश्चर्य में पड़कर कासिम साहब ने कहा।

"आयें तो थे लेकिन, उन्हें यहाँ आकर जिस नाउम्मीदी का सामना करना पड़ा, वह शायद उनकी ज़िन्दगी की पहली नाउम्मीदी थी। शराब माँगी तो मैंने कह दिया—शराब मैखाने में मिलती है। यह मैखाना नहीं है। यह नाँच गाने के हुनर की जगह है। उसमें आपको दिलचस्पी हो तो पेश किया जा सकता है।"

"फिर क्या जवाब दिया सेठ दामोदर प्रशाद ने ?" पेशकार साहब ने मुस्कराते हुए पूछा।

"जवाब क्या देते ? मैं तो समझ ही नहीं पाई कि आखिर वह आये किस मतलब से थे। नाच देखना और गाना सुनने से तो शायद उनका कोई सरोकार ही नहीं था। वह तो बैठ कर शराब पीना चाहते थे। सौ-सौ रुपयों की गड्डियाँ हाथों में लिये थे। बार-बार उन्हें उलट-पुलट रहे थे। शायद लालच में डालना चाहते थे गुलाब को।"

"बराबर के कमरे में जाकर तुम पीने-पिलाने का इन्तज़ाम करो गुलाब ! तब तक हम लोग यहीं पर बैठते हैं।" पेशकार साहब बोले।

गुलाब वहाँ से चली गई तो कासिम साहब धीरे से बोले, "इस सेठ के बच्चे का भी दिमाग़ ख़राब हो गया है। वार-फ़ंड में बीस हज़ार रुपया क्या दे दिया है इसने कि कलक्टर साहब की नाँक का बाल ही बन बैठा है। इधर आपसे भी मेरे ख़याल से उसकी मुलाकात हुए काफ़ी दिन हो गये हैं।"

"करीब एक महीने से मुलाकात नहीं हुई। अजीब गिरगिट की क़िस्म का इन्सान है। ज़बरदस्त ख़ुदग़र्ज़ी भरी है इसकी मोटी तोंद में। सुना है इसके वालिद भी इसी तरह कलक्टर साहब पर छाये रहते थे। मुझे करीम खाँ के

एक दिन के शब्द आज तक याद हैं। उसने कहा था—"जिसे आपने गिरफ्तार किया और पैर के नीचे दबाकर अपना यार बनाया, वह आपका यार नहीं हो सकता। पैर के नीचे दबा हुआ साँप है वह, जो मौका पाते ही डंक मारने से बाज़ नहीं आयगा।"

"करीम खाँ ने बिलकुल ठीक कहा था। दामोदर प्रशाद को मैं बहुत ही ख़तरनाक आदमी समझता हूँ। सुना है कि अब तो वह महाशय हिन्दू-महासभा के प्रधान बन गये हैं।"

"यह बात मेरे भी कानों में पड़ चुकी है। देखा नहीं है तुमने उस लफ़-चकने पंडित रामखिलावन को, जो हिन्दू महासभा का मंत्री बना फिरता है। यह सब जाल-माल उसी का रचा हुआ मालूम देता है।"

इसी समय गुलाब अपने नये रूप-रंग के साथ सामने आकर खड़ी हो गई और आँखों की पुतलियाँ क़रीने के साथ घुमाकर एक अंदाज़ से बोली, "ख़िदमा ने सब साजो-सामान तय्यार कर दिया है सरकार के लिए।"

पेशकार साहब और कासिम मिरज़ा पास वाले दूसरे कमरे में चले गये और वहाँ पहुँचकर शराब का दौर जारी हो गया। कासिम मिरज़ा का शरीर आज दिनभर की दौड़-भाग में चकनाचूर हुआ पड़ा था। शराब हलक़ से नीचे उतरी तो उसने शरीर के थकान पर काबू पाया।

थोड़ी देर में सिर पर हाथ फेरते हुए कासिम मिरज़ा बोले, "यार पेशकार साहब! शराब भी खुदा की नियामतों में एक बहुत आला चीज़ है। अभी-अभी शरीर टूटा जा रहा था, पैर चलने में लड़खड़ाते थे और अब ऐसा मालूम होता है कि न जाने कहाँ से ताक़त और ताजगी मेरे शरीर में आ गई है।"

"शराब की तारीफ़ नहीं की जा सकती कासिम साहब! इसी की बदौलत तो आप और हम यार बने यहाँ पर बैठे हैं और इतने दिन से ज़िले पर हुकूमत करते चले आ रहे हैं। इसी की बदौलत तमाम ज़िले के दारोग़ा और दीवान हमारे यार बने हुए हैं और इसी की ताक़त से हार मान कर एस. पी. हामिदअली साहब चार हज़ार की पेंशन पर हमारे हाथों की कठपुतली बने बैठे हैं।"

"लेकिन यह बात माननी होगी पेशकार साहब कि शराब का इस्तेमाल करना भी मज़ाक नहीं है। जहाँ इसकी बदौलत हम लोगों को ज़िन्दगी में इतनी कामयाबी मिली है वहाँ इसी के बरबाद किये हुए लोगों की भी दुनियाँ में कमी नहीं है।"

"न होगी कासिम साहब!" शराब का एक हल्का-सा घूँट हलक़ से

नीचे उतारते हुए पेशकार साहब बोले। "हमें ऐसे बेहूदा लोगों से क्या मतलब ? हमें तो अपने काम-से-काम है।"

शराब पीकर दोनों गुलाब के कमरे से चलकर ताँगा-स्टेंड पर आ गये। पेशकार साहब ने कासिम मिरज़ा को कोतवाली के लिए ताँगे पर बिठला दिया और खुद कलक्टर साहब की कोठी की तरफ़ चल पड़े।

: २७ :

रामेश्वरी देवी का नाम मेरठ ज़िले की सीमाओं को पार करके अब देश-व्यापी बन चुका है। उनकी दैनिक कार्यवाहियों की तरफ़ भारत के सभी दैनिक-पत्रों का ध्यान आकर्षित हो चुका है। देश भर के पत्रों के पाठकों का ध्यान भी उनकी वीरता और निर्भीकता के ऊपर नित्य सुबह-ही-सुबह अकबार हाथ में आते ही जाता है।

रामेश्वरी देवी आज जबसे पेशकार रामदयाल से बातें करके लौटी हैं, तभी से उनके चरित्र का एक खाका तय्यार कर रही हैं। पेशकार रामदयाल को जो कुछ भी वह समझ पाई हैं वह यह हैं :

एक गहरी शराब पीने वाले शराबी हैं।

हुस्नपसंद नवाबाना तबियत के इन्सान हैं।

अपनी शान के नीचे दुनियाँ को दबा कर चलना चाहते हैं।

याराना निभाने में बहुत पक्के हैं; लेकिन .....

बस यहीं आकर रामेश्वरी देवी का दिमाग़ ठहर गया।

पेशकार रामदयाल यार किसका है ?

पेशकार रामदयाल का याराना किस लिए है ?

इन्हीं दो बातों को लेकर रामेश्वरी देवी काफ़ी देर तक सोचती रहीं।

पेशकार रामदयाल के जीवन का मक़सद क्या है ?—ऐश करना, रिश्वतें लेना और उन्हें पुलिस के महकमे में पूरा-पूरा तक़सीम करना। यानी एक क़िस्म के वह पुलिस और जनता के बीच के दलाल हैं। दोनों का सम्पर्क स्थापित कराने की उनकी जिम्मेदारी है।

लेकिन इस जिम्मेदारी को सर पर सँभालने का भी कोई मक़सद होता है, और वह मक़सद भी साफ़ ही है।

कौन आदमी है जो ज्यादा-से-ज्यादा रुपया नहीं कमाना चाहता, ज्यादा से-ज्यादा ऐश करना नहीं चाहता, ऐश किसको बुरी लगती है। बढ़िया-बढ़िया होटलों में टिफ़न उड़ाना और काफ़ी-हाउसों में गुलछर्रे मारने में किसे मजा नहीं आता और हर नई पिक्चर को बोक्स में बैठ कर देखने के लिए किसका दिल नहीं फड़फड़ाता। लेकिन...बात लेकिन की सामने आ जाती है।

रुपया कमाने की बात है।

दूसरी चीज़ है इज्जत, ओहदा और नामवरी, जो पैसा पास आने पर दौड़ी चली आती हैं। पैसे के दरबार में इज्जत, ओहदे और नामवरी की मिस्लें आप-से-आप आकर इकट्ठी होने लगती हैं।

तो पेशकार रामदयाल का याराने का मक़सद भी ओहदे, नामवरी और रुपये से ऊपर नहीं हो सकता।

रामेश्वरी देवी को पेशकार रामदयाल का क़तन विश्वास नहीं। परन्तु एक हुस्नपरस्ती की बात है, जिस पर पेशकार रामदयाल आकर टिक जाते हैं। पेशकार साहब दिलदार आदमी हैं। एक बार वह रामेश्वरी देवी को अपना दिल दे चुके हैं, तो फिर बेवफ़ाई उनकी तरफ़ से नहीं हो सकती।

रामेश्वरी देवी को इसका दृढ़ विश्वास है। इसका यह अर्थ नहीं कि वह भी पेशकार साहब से प्रेम करती हैं; लेकिन पेशकार साहब की कमज़ोरी को पहचानने की अक्ल उनमें है।

एस. पी. हामिदअली साहब ने पेशकार रामदयाल से चार हज़ार रुपये महावार और अन्न तथा लकड़ी पर फ़ैसला तो कर लिया था और उसे निभाते भी जा रहे हैं लेकिन दिल में जो जलन एक बार पैदा हो चुकी, उसकी चिंगारी अभी तक बुझने नहीं पाई।

'कभी-कभी तो वह इतनी तेज़ी से दहकती है कि उनका मन चाहता है कि वह पेशकार रामदयाल से किये गये समझौते पर लात मार दें। जिस आदमी ने जिन्दगी भर दूसरों के हाथों पर रखा है, दूसरों पर मेहरबानियाँ की हैं, वह अपने हाथ पर इस अदना-से दीवान से चार हज़ार रपूलियाँ रखाये और उसकी मेहरबानी की तरफ़ ताकता रहे, यह बात उन्हें अन्दर-ही-अन्दर कचोटती रहती है।

पेशकार रामदयाल को कोई मौका आने पर नीचा दिखाने की बात भी उनके दिमाग़ में ज्यों-की-त्यों बरक़रार है।

इन्हीं दिनों सेठ दामोदर प्रशाद का हामिदअली साहब के पास आना-जाना बन गया था। सेठजी ने अपने यहाँ बुलाकर हामिदअली साहब की जो खातिर तवाज़ै की उसने उन्हें उनके और भी निकट ला दिया।

एक दिन बातों के दौरान में रामेश्वरी देवी का भी नाम आ गया और हामिदअली साहब बोले, "अदना-सी औरत ने तूफ़ान मचाया हुआ है ज़िले भर में। पुलिस का नाक में दम है और वह है कि हाथ ही नहीं आती।"

"अजी ! साहब ! इसमें भी कुछ राज़ की बातें हैं एस. पी. साहब ! वरना तो क्या यह औरत पकड़ी नहीं जाती अब तक ?" ज़रा पेट पर हाथ

फेरते हुए सेठ दामोदर प्रशाद बोले।

सेठ दामोदर प्रशाद को काँग्रेस के प्रधान-पद से उतरवाना रामेश्वरी का ही काम था। उनके दिल में रामेश्वरी के लिए अब जो जलन थी वह उसे दबा कर न रख सके।

हामिदअली साहब को सेठ दामोदर प्रशाद की बातों में कुछ राज-सा मालूम दिया। उन्होंने बात को और कुरेदते हुए पूछा, "तो क्या आप वह राज बतासकते हैं कि जिसकी वजह से रामेश्वरी गिरफ्तार नहीं हो रही ?"

"क्यों नहीं बता सकता एस. पी. साहब ! लेकिन कोई सबूत नहीं है मेरे पास। बात सोलहों आने अगर सच्ची न निकले तो आप जो चाहें जुरमाना कर सकते हैं।"

"तब फिर कह डालिये ना ! सबूत बना लेना पुलिस के लिए कौन मुश्किल बात है ? मजिस्ट्रेट लोग सब अपने गुलाम होते हैं। क्या मजाल जो पुलिस-केस को सजा न करें !" हामिद अली साहब बोले।

"तो सुनिये, और कान खोलकर सुनिये कि उसकी पीठ पर पेशकार रामदयाल का हाथ है।" गम्भीरता के साथ सेठ दामोदर प्रशाद बोले।

'पेशकार रामदयाल का ?" आश्चर्य-चकित होकर हामिद अली साहब की ज़बान से निकला। और फिर ज़रा सँभल कर बोले, "तो क्या तुम यह बात कलक्टर साहब के सामने भी कह सकते हो ?"

"ज़रूर कह सकता हूँ, अगर आप मेरा साथ दें तो। मैं पेशकार राम-दयाल को मेरठ ज़िले से खो देना चाहता हूँ। इसने मुझे एक दिन इसी रामेश्वरी के कोठे पर, जो किसी दिन हमारे शहर के वैली बाज़ार की वेश्या रामप्यारी थी, हथकड़ियाँ लगाई थीं। उस समय मैंने पाँचसौ रुपये देकर, इससे याराना किया था।

लेकिन उस अपमान की आग आज भी मेरे दिल में उसी तरह भक-भक करके जल रही है। इस पाजी का चेहरा सामने आते ही आँखों में खून उतर आता है।"

हामिद अली साहब पुलिस के पुराने छाकटे ठहरे। वह समझ गये कि यह सेठ अपने अपमान का बदला लेना चाहता है। हालत उनकी अपनी भी वही थी। दोनों एक ही राह के राही बनकर, यार से भी बन गये।

"तो यों कहिये कि आपकी और पेशकार साहब की आपस में पुरानी लगती और बनती चली आ रही है।" हामिद अली साहब बोले।

"जो बात है, वह आपके सामने खुलासा करके रख चुका हूँ। जिसे मैं एक बार मित्र मान लेता हूँ, उससे फिर कोई बात छिपाना अपना शेवा

नहीं समझता ।" सेठजी बोले ।

"होना भी यही चाहिए सेठजी !" हामिद अली साहब ने कहा "यों पेशकार साहब मेरे अजीज हैं, लेकिन जब आप बतलाते हैं कि वह रामेश्वरी देवी की पीठ पर हैं तो मैं यह सूचना पाकर सरकार के साथ गद्दारी नहीं कर सकता। यह खबर तुम पहले जाकर कलक्टर साहब को दो और मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आता हूँ। दोनों के मुँह से एक बात सुनते ही कलक्टर साहब का पारा तेज हो जायेगा और हो सकता है कि पेशकार इस बार ऐसा फँस जाये कि कहीं जेलखाने की हवा न काटनी पड़े ।"

"ऐसा हो जाय तो मजा ही न आ जाये एस. पी. साहब ! लोगों की नाकों में नकेलें डाली हुई हैं इस बदमाश ने । जिले भर पर तहत जमाया हुआ है इसने। इतना खतरनाक आदमी मेरी नजरों में आज तक नहीं आया । लेकिन यह सब करने से पहले सोच लीजिये कि हाथ हलका न पड़े, वरना बाद में बड़ी ही परेशानी होगी ।" सेठजी बोले ।

"क्या बात करते हो सेठ ? यह हामिद अली का हाथ होगा, मजाक नहीं है, इसे सँभालना । एक ही वार में अगर साफ़ नहीं कर दिया तो क्या बात ?"

सेठजी को कलक्टर साहब की कोठी पर भेजकर हामिद अली साहब वहाँ से चल पड़े ।

सेठ दामोदर प्रशाद ने कलक्टर साहब की कोठी पर जाकर सूचना दी, "सरकार ! पेशकार साहब अगर चाहें तो रामेश्वरी एक मिनट में गिरफ़्तार हो सकती है । इनके आपस में पुराने ताल्लुक़ात हैं ।"

"तुम केशा बोलटा ऐ ! पेशकार रामडेयाल अंग्रेजी शरकार का बरा खेरखा आड़मी ऐ ! तुम उशको बुराई डेना माँगटा ऐ शेट ! टुम को शबूट डेना ओगा ।"

"बिलकुल सरकार ! मैं सबूत देने के लिए तय्यार हूँ ।"

इसी समय एस. पी. हामिद साहब ने कलक्टर साहब को आकर यह सूचना दी, "सरकार ! रामेश्वरी को पकड़ना मज़ाक नहीं है ! पेशकार राम-दयाल उसकी पीठ पर हैं ।"

"बेको मट ! टुम केशा बोलता ऐ ।"

सेठ दामोदर प्रशाद और हामिद अली साहब ने मिलकर यह कलक्टर साहब के यहाँ का प्रोग्राम निश्चित किया था। दोनों ही आदमी पेशकार साहब के जूते के तले से अपने सर कुचलवा चुके हैं। दोनों ही ताक़तवर आदमी हैं। एक जिले का एस. पी. और दूसरा जिले की अमन-सभा का

प्रधान, जिले की हिन्दू महासभा का प्रधान और जिले का सब से बड़ा उद्योग-पति तथा व्यापारी।

कलक्टर साहब ने दोनों की बातें कानों से यों ही नहीं उड़ा दीं। यहाँ पेशकार रामदयाल और हामिद अली साहब की आपसी तू-तू मैं-मैं का सवाल नहीं था, यहाँ सवाल था अंग्रेजी हकूमत क खिलाफ़ विद्रोह की आग भड़काने वाली रामेश्वरी को पकड़ कर कड़ी-से-कड़ी सजा देने का। जिस रामेश्वरी के हुक्म से सरे आम बेगम-ब्रिज पर एक अंग्रज मर्द और औरत को टुकड़े-टुकड़े करके नाले में फेंक दिया गया, उसे न पकड़ पाने की शर्म से कलक्टर साहब जमीन में गड़े जा रहे थे। अपने देश के राजनीतिज्ञों की नज़रों में वह अपने को गिरा हुआ और कम अक्ल इन्सान समझ रहे थे।

इसी बीच में इस काण्ड की सूचना पेशकार रामदयाल को भी मिल गई और वह तुरन्त एक ताँगे पर सवार होकर सीधे कलक्टर साहब की कोठी पर पहुँच गये।

उनके चेहरे से इस समय ऐसा टपक रहा था कि मानो कोई बड़ा काम करके आ रहे हैं।

सीधे मेम साहब के पास पहुँचे और उनसे जाकर कहा, "जरा साहब बहादुर को कहें कि भीड़-भाड़ को छाँट दें। रामेश्वरी के विषय में कुछ आवश्यक सूचनाएँ देनी हैं।"

मेम साहब ने जाकर कलक्टर साहब को यह सूचना दी तो उन्होंने बैठक में बैठे सभी महानुभावों से कह दिया, "वेल टीक ऐ! टुम लोग जा शेकटा ऐं। अम शब टेकीकाट करेगा।"

कमरा खाली हो गया। पेशकार साहब अन्दर दाखिल हुए। साहब, मेम साहब और सामने पेशकार साहब बैठ गये।

बैठते ही कलक्टर साहब बोले, "कहाँ शे आटा ऐ।"

पेशकार साहब बहुत संजीदगी से बोले, "साहब बहादुर! कुछ लोग दुनियाँ में ऐसे होते हैं जो करते कुछ नहीं और दूसरों की शिकायत-भर करते रहना ही अपनी जिन्दगी का मक़सद समझते हैं।

मैं कभी किसी की शिकायत नहीं करता। अपने काम-से-काम रखता हूँ। अंग्रेजी सरकार के वे-वे आला काम मैंने किये हैं जिनको पढ़कर सरकार ने खुद देखा हुआ है। आप से तो कुछ छिपा नहीं है मेरा। मैं हल्की बातें करता ही नहीं।

आज छै महीने हो गये हामिद अली साहब को और एक इस रामेश्वरी को, जो कल-परसों की इसी मेरठ के वैली बाजार की एक तवाइफ़ थी, गिरफ़तार

नहीं कर सकते।

नहीं कर सकते नहीं, सरकार ! करना नहीं चाहते।"

कलक्टर साहब ने दोनों तरफ़ की बातें सुनीं, तो वह दंग रह गये।

पेशकार साहब ने सेठ दामोदर प्रशाद का पूरा कच्चा चिट्ठा खोलकर रख दिया कलेक्टर साहब के सामने और अन्त में जब बतलाया कि वह सेठजी की रखैल रह चुकी है और जो उसकी कोठी है वह सेठ दामोदर प्रशाद की ही खरीद कर दी हुई है तो यह सुनकर कलैक्टर साहब का सर और भी चकराने लगा।

कलक्टर साहब बड़ी ही होशियारी से स्थिति का अध्ययन कर रहे हैं।

सेठ दामोदर प्रशाद के चरित्र पर उनकी नजर गई तो उन्होंने उसे एक साँप के रूप में पाया, और साँप समझकर ही उसे पहलू में लिया भी था कलक्टर साहब ने।

पेशकार रामदयाल बोले, "अब रही हामिद अली साहब की बात। सारे ज़िले की पुलिस इनके हवाले कर दीजिये। जिधर-जिधर को रामेश्वरी जायेगी, मैं सूचना दूँगा। मेरी सूचना ग़लत हो तो मैं ज़िम्मेदार और अगर यह न पकड़ पायें तो इनका क़सूर।——"

पेशकार साहब की बातें सुनकर कलक्टर साहब ने तुरन्त फ़ोन उठाया और हामिद अली साहब को बुलाकर हुक्म देते हुए बोले, "पूरी टायनाटी के शाट टुमको पेशकार शाब के इशारे पर काम करना ओगा ! तुम को रामेश्वरी किडर-किडर जाटा ऐ ऐशा खेबर दिया जायगा और गिरफ़टार करना टुमारा काम ओगा।"

"बहुत खूब, सरकार बहुत खब !" कहकर हामिद अली वहाँ से बाहर निकले।

पेशकार साहब का किराये का ताँगा सड़क पर खड़ा था। सीधे उसमें जाकर बैठ गये मन में सोचने लगे कि दुनियाँ भी क्या है ? यह सेठ दामोदर प्रशाद जिसके मैं चन्द मिनटों में नाख़ते बन्द कर सकता हूँ, वक्त देख कर कैसा रंग बदलता है और इस बूढ़े हामिद अली को तो अपनी पेंशन पर भी रहम नहीं आया। अगर खो नहीं दूँ तो मेरा नाम भी पेशकार रामदयाल नहीं।

पेशकार साहब वहाँ से सीधे रामेश्वरी देवी के पास पहुँचे और जाकर पूरी स्थिति उन्हें समझादी।

"आपने बिलकुल ठीक क़दम उठाया पेशकार साहब ! मैं आपको अपना काम करने का प्रोग्राम देती जाऊँगी और आप दो-दो घंटे बाद का समय हामिद अली साहब को देते जायें। मैं उनके हाथ आने वाली नहीं हूँ। २६ जनवरी का स्वतन्त्रता महोत्सव मनाना है मुझे। ज़िले के गाँव-गाँव में उसकी

लौ जलनी ही चाहिए। मैं पूरा प्रबन्ध कर चुकी हूँ, आपको चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है।"

पेशकार रामदयाल के लिए अब सोचने को कुछ भी रह ही नहीं गया। उन्हें रामेश्वरी देवी के प्रोग्राम का सही ब्यौरा मिलता रहेगा और वह उसे कलक्टर साहब को देते रहेंगे।

बड़ी सरगर्मी के साथ रामेश्वरी देवी को गिरफ्तार करने की बात ज़िले भर के वातावरण में फैल गई। रामेश्वरी २६ जनवरी का आज़ादी-दिवस घर-घर में मनाने के लिए ज़िले के ग्राम-ग्राम का दौरा कर रही हैं।

जहाँ-जहाँ भी वह जाती हैं वहाँ-वहाँ उनका स्वागत होता है, और कुछ भेंट-पूजा भी चढ़ाई जाती है। देश को स्वतंत्र कराने की दुहाई का सहारा लेकर पूरी सरकार की पुलिस और फ़ौजों के खिलाफ़ वह सरकार के सब क़ानूनों को तोड़ कर देश की धरती पर आज़ादी से फिर रही हैं। सर को हथेली पर लिये फिर रही हैं।

हामिदअली साहब अपनी पुलिस की टुकड़ी को लिए गाँव-गाँव में तबाही मचाते फिर रहे हैं। एक पागल कुत्ते की सी दशा हो गई है उनकी। जहाँ भी पहुँचते हैं वहाँ से यही खबर मिलती है, "अभी-अभी थीं यहाँ, अभी-अभी चली गईं" और वह सर पटक कर रह जाते हैं।

हामिदअली साहब तीन बार अपने साथ काम करने वाली टुकड़ी को बदल कर देख चुके हैं कि कहीं वह टुकड़ी ही तो उनके साथ बदमाशी न कर रही हो, लेकिन कोई असर नहीं हुआ।

ज़िले की पुलिस का तो हर दाना पेशकार रामदयाल का सँभाला हुआ है। क्या मजाल जो एक इंच भी कोई इधर-से-उधर खिसक सके। शहर की चौकियों के दीवानों को कोतवाल कासिम मिरज़ा ने ऐसा सख्त कर दिया हैं कि हामिद अली साहब के कानों तक किसी बात की हवा भी पहुँच सकती।

पेशकार रामदयाल ने कासिम मिरज़ा की सिरदर्दी बचाने के लिए रामेश्वरी देवी का ध्यान गाँवों की ओर घुमा दिया था।

देहात के थानेदारों को हिदायत है कि वे हामिदअली साहब को कतन किसी काम में सहयोग न दें। बिल्कुल ऐसा ही होता है। जहाँ-जहाँ भी हामिदअली साहब जाते है, कोई यह तक नहीं समझता कि एस. पी. साहब दौरे पर आये हुए हैं। ख़ानापुरी करते हैं सब।

अजीब गत बन गई हामिदअली साहब की। पुराना मोटा शरीर इतना काम बर्दाश्त करने के क़ाबिल कहाँ हैं? वह तो वैसे ही साल भर में रिटायर

होने जा रहा था। खामखा के लिए इस सेठ के बच्चे ने जवाँमर्दी का जोश दिला दिया। अच्छे-खासे चार हज़ार मिल जाते थे, महीने पर तो क्या बुरे थे ? इस सेठ ने मुझे परेशानी में डाल दिया।

पेशकार के बच्चे की सब बातें ठीक होती जा रही हैं और मैं ही रामेश्वरी को नहीं पकड़ पा रहा। खामखा का झमेला फँसा लिया मैंने अपनी गर्दन में।

इसी परेशानी में बैठे थे एस. पी. साहब कि उनकी कोठी की बगल में एक ताँगा रुकता मालूम दिया और उन्होंने आश्चर्य-चकित होकर देखा कि पेशकार रामदयाल खड़े हैं उनके सामने।

हामिदअली साहब खड़े हो गये कुर्सी से और कौली भर कर मिले पेशकार साहब से, परन्तु पेशकार साहब के दिल में न तो कोई उभार ही आया और न कोई खुशी ही हासिल हुई। मानो कोई काठ का मोटा टुकड़ा आकर उनके सीने से लग गया हो।

और फिर उन्होंने आप-से-आप कहना शुरू किया, "भय्या पेशकार साहब ग़लती माफ़ कर दो। उस हरामखोर सेठ के चकमें में आकर मैंने कलक्टर साहब से तुम्हारी बुराई करदी।"

"चलिये कोई बात नहीं वह तो। कलक्टर साहब हमें पहचानते हैं। आपके बुराई या भलाई करने से तो कुछ बनना-बिगड़ना नहीं है।"

"इतना बुरा न मानो भय्या पेशकार साहब ! ग़लती भी तो आखिर इन्सान से ही होती है और अपनों के सामने ही ग़लती तस्लीम की जाती है। वरना तो गलती मानने की ज़रूरत ही क्या है ?" बड़ी गम्भीरता के साथ हामिदअली साहब ने कहा।

पेशकार रामदयाल अब बातों में आने वाले इन्सान नहीं हैं। एक आदमी को जिन्दगी में एक ही मौक़ा देते हैं वह। वह मौका हामिदअली साहब ने अपने आप ठुकरा दिया।

"रामेश्वरी का स्वतन्त्रता-आन्दोलन जमीन के नीचे-ही-नीचे पनप रहा है और आप उसे गिरफ्तार नहीं कर पा रहे। बड़ी ही अजीब हालत है जिले की। कलक्टर साहब के हाथ में अगर आज आपको बर्खास्त करने की ताकत हो तो एक मिनट में बर्खास्त करा सकता हूँ। अवमानित होकर तबादला कराना चाहो तो कल मौक़ा है आपके लिए। वरना तो यहाँ पिस कर रह जाओगे मियाँ एस. पी. साहब !

पेशकार रामदयाल दो बार नहीं परखता किसी आदमी को।"

हामिदअली साहब सहम गये पेशकार साहब की यह बात सुनकर।

उनके घर के अन्दर खड़ा हुआ पेशकार रामदयाल एस. पी. हामिदअली को कितना बड़ा चेलेंज दे रहा है। उनका शरीर अचेतन-सी दशा में एक ओर को ढुलक गया। उन्हें पसीना आ गया और आँखों के आगे अँधेरा छाया हुआ था।

"तुम जो कुछ करना चाहो, मुझे मंजूर है पेशकार रामदयाल ! तुम्हारे साथ मैंने विश्वासघात किया है।" हामिदअली साहब की जबान से निकला।

इन शब्दों को सुनकर पेशकार रामदयाल के दिल की जलन तो कुछ कम अवश्य हुई, परन्तु वह हामिदअली साहब से अब कोई समझौता नहीं कर सकते। हामिद अली साहब ने अपना विश्वास स्वयं खो लिया।"

अन्त ने हामिदअली साहब को यहाँ से अपमानित होकर बदल जाना पड़ा।

रामेश्वरी देवी २६ जनवरी की जिले भर की फेरी देकर किसी कार्यवश मेरठ से बाहर चली गईं।

मेरठ जिले की पुलिस के सर से एक जबरदस्त परेशानी हटी। अफ़-सरों के दिमागों को जरा आराम मिला। कितना जबरदस्त सिर-दर्द थी यह रामेश्वरी देवी मौजूदा सरकार की हकूमत के लिए।

पेशकार साहब आज कलक्टर साहब के लिए शराब का जाम भरते हुए बोले, "सरकार देखी आपने हामिदअली साहब की खसलत ? उनके साथ मैंने हमेशा बिरादराना बरताव किया, लेकिन न मालूम इन्हें आपकी चुग़ली उधर पुलिस-लाइन में करने और उधर गलत की बातें आपके कानों तक पहुँचाने में क्या मजा आता था ?

मैं इस क़िस्म के आदमी को बात करने के भी क़ाबिल नहीं समझता सरकार बहादुर !"

"टुम टीक केटा ऐ पेशकार रामडेयाल ! उश रोज टूमने डेका अमने केशा-केशा डाट-फटकार बेटलाया टा उनको। ये टुमारा ई डेम ऐ कि रामेश्वरी ऐमारा ज़िला शे भाग गेया।"

"सब आपकी मेहरबानी से हो रहा है सरकार ! पेशकार रामदयाल के इशारे पर आपका ज़िला नाचता है, यहाँ की हकूमत नाचती है। आपकी ताक़त मेरी ताक़त है सरकार ! वरना रामदयाल का अपना क्या है ? अपना तो सीने का उभार-ही-उभार है।"

"टुम शेरकार का बौट खेरखा आडमी ऐ। अम टुमको बोट पेशंड करटा ऐ। टुम जानटा ऐ कि अम अंग्रेज किशी का शाट शेराब नेई पीटा। लेकिन टुमारा शाट पीटा ऐ। टेमाम ज़िला में एक टुमारा शाट शेराब पीटा ऐ।"...

"यह मैं जानता हूँ हुजूर कि हुजूर का मुझ पर कितना बड़ा ऐतक़ादत है। आप मुझ पर कितना विश्वास करते है। और मैं जब तक इस जिस्म में प्राण हैं अंग्रेज़-सरकार का ईमानदार नौकर रहने की क़सम खाता हूँ सरकार बहादुर !

सरकार आदमी बड़ी मुश्किल से मिलते हैं और फिर जो मिलते भी हैं उनमें अपने कहने के क़ाबिल कितने हैं। हामिदअली साहब जैसे एस. पियों पर आपकी इतनी बड़ी अंग्रेजी सरकार नहीं चल रही है हुजूर ! वह तो हम जैसे अदना कांस्टेबिल और दीवान लोगों के दम पर ही चल रही है। हम सभी लोग अंग्रेज़ सरकार के दिल से ख़ादिम हैं, और शुक्रगुज़ार हैं।"

"शेरकार टुम लोगों का बोट खेयाल रकटी ऐ। टुम लोगों की बोटसी बाटें अम लोग जानटा ऐ लेकिन अमने टुम लोगों को पूरा छूट डिया उआ ऐ। टुम लोग ऐश कर शेकटा ऐ बिला पेशा, अपना टेनका को शारा-का शारा बेचा शेकटा ऐ।" आँखों-में-आँखें डालकर कलक्टर साहब ने कहा ।

पेशकार रामदयाल को आज पता चला कि कलक्टर साहब जो उन्हें अपनी नज़रों में बच्चे जान पड़ते थे, बच्चे नहीं थे। उन्हे अपने ज़िले के बूढ़े-से-बूढ़े की भी अक्ल का अन्दाज़ था।

पेशकार साहब ज़रा संभलकर बोले, "ये ही तो सब सरकार की मेहरबानियाँ हैं। सरकार क्या अपने फ़र्ज को नहीं समझती ? सरकार अपने लोगों के लिए सब कुछ करने को तय्यार रहती हैं।"

"आम लोग भी सरकार की तारीफ़ करते हैं।"

"ऐं ! टुम केशा बोलटा ऐ पेशकार रामडेयाल ! आम लोग का मेटलब ऐ जेनटा-पब्लिक[१]।"

"जी सरकार ! कौन खुश नहीं है अंग्रेजी सरकार से ? अंग्रेजी सरकार ने हमें तालीम दी, हमें रेलगाड़ियाँ दीं, मोटरें दीं, हवाई जहाज़ दिये, नौकरियाँ दीं, सरकार क्या नहीं दिया हमें अंग्रेजी सरकार ने ?" पेशकार साहब बोले।

"तो क्या एमारा राज क़ायम रहेगा इन्डुस्तान में ?"

"एक से लाख तक रहेगा कलक्टर साहब ! उसे कोई हटा नहीं सकता। हम लोगों के रहते अंग्रेजी राज जाने वाला नहीं है। हमने अपने खून से सींचा है इसे सरकार बहादुर !"

कलक्टर साहब की नज़रों में आज जितने अन्दर पेशकार रामदयाल घुस गये, उतने आज के पूर्व पहले कभी नहीं घुस पाये थे। वहाँ की हवा को भी नहीं छू पाय थे।